

**TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182386

UNIVERSAL
LIBRARY

रामायण-मनजूम

रचयिता

हकीम वाइसराय 'बहमी'

181

91.R

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81
T 91 R

Accession No. H 3485

Author ~~बाइसाय~~ तुलसीदास

Title रामायण मनजुम १९६३

This book should be returned on or before the date last marked below

रामायण मनजूम

(तुलसीकृत रामायण के उर्दू पद्यानुवाद का देवनागरी लिप्यान्तर)

हकीम चाइसराय 'वहमी'

लेखक ने सर्वाधिकार स्वरक्षित रखे हैं।

काव्यकार का नाम : हकीम वाइसराय 'वहमी'

प्रकाशक : हकीम वाइसराय 'वहमी'

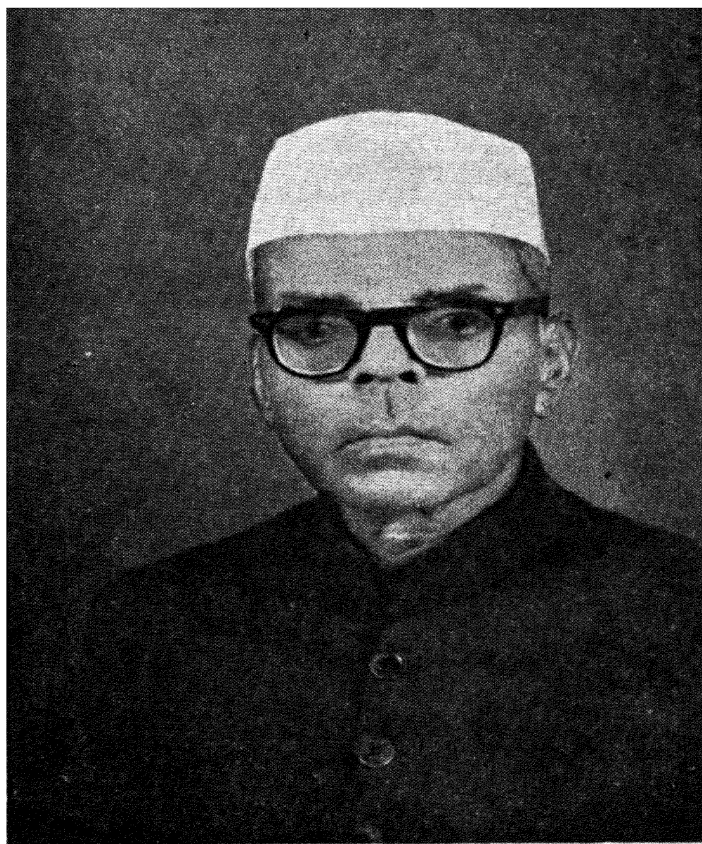
७३०, चौक मैदान खाँ, हैदराबाद (आं. प्र.)

मुद्रक : कर्मशियल प्रिंटिंग प्रेस,

८३१, बेगमबाजार, हैदराबाद

प्रकाशन का समय : मई १९६३ ई०

मूल्य : ४ रुपये



हकीम वाइसराय 'वहमी'

समर्पण

डा. बी. रामकृष्ण राव को

भूमिका

श्री हकीम वाइसराय 'वहमी' जी का पद्य-रामायण 'रामायण मन्त्रूम' मैंने देखा। यह पुस्तक छह हजार एकतुकान्त और एक ही नज़्म में लिखी गयी है। लेखक का यह प्रयास गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस का छायानुवाद है। पहले यह ग्रन्थ अरबी या उर्दू की लिपि में था; अब इसका नागरी रूपान्तर प्रस्तुत किया जा रहा है।

गोस्वामी जी के रामचरित मानस में जीवन का जितना सौन्दर्य आयोजित हो कर उतरा था उसको इस अनुवाद में वहमी जी ने यथास्थान सज्जित कर लेने का स्तुत्य प्रयास किया है। राजनीति और दर्शन, जीवन के अंग हैं। मनुष्य का चिन्तन जिन आदर्शों को अपनी सीमा के भीतर बाँध लेता है उन्हीं के बँधे हुए स्वरूप को दर्शन कहते हैं। जीवन में मनुष्य जहाँ खड़ा रहता है उससे दूर की वस्तु को वह देखता रहता है चाहे वह वस्तु उसे अभी प्राप्त न भी हुई हो। इसी को आदर्श कहते हैं। मनुष्य जैसा है वह उसका यथार्थ है। वह जैसा होना चाहता है वह उसका आदर्श रूप है।

प्रत्येक युग में संत स्वभाव, मानवता को इस आदर्श पर सामूहिक रूप से पहुँचाने का प्रयत्न करता रहता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, जरथुस्त्र, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, समर्थ गुरु रामदास इत्यादि सब महात्माओं और अवतारों ने यही कार्य किया। चैतन्य, वल्लभ, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य इत्यादि सब आचार्यों ने यही प्रयत्न किया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस और उनके समर्थ शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने इसी दिशा में प्रयास किया। योगी अरविन्द और महर्षि रमण ने मनुष्य को आदर्श की इसी दिशा में अग्रसर करने का स्तुत्य प्रयत्न किया।

सूर्य, दिन में जिस प्रकाश से दुनिया को आलोकित करता रहता है रात, आकर उसी प्रकाश के स्थान में अन्धकार फैला जाती है। महात्माओं के जीवन के द्वारा फैलाया हुआ ज्ञान का प्रकाश भी इसी तरह कालचक्र के प्रभाव से जब धूमिल पड़ने लगता है तब किसी दूसरे ज्ञान के सूर्य का उदय होता है। भगवान् कृष्ण ने इसी स्थिति को समझने के लिए अर्जुन से कहा था कि जब-जब धर्म का लोप और अधर्म का अभ्युदय होता है तब-तब मैं दुनिया के भले लोगों की रक्षा करने के लिए, बुरे लोगों का विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना करने के लिए इस पृथ्वी पर आता हूँ।

गोस्वामी तुलसीदास का रामचरित मानस अवधी भाषा में है। खड़ी बोली के ऐसे क्षेत्र में जहाँ अवधी समझने में लोगों को कष्ट होता है या अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में जहाँ हिन्दी की खड़ी बोली की केवल एक भाषा-शैली का प्रचार ही हितकर होगा, वहमी जी का यह ग्रन्थ ऐसे क्षेत्रों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। पूरे भारत में जहाँ-जहाँ के लोग उर्दू शैली की खड़ी बोली को सहज रूप में बोलते हैं, उन प्रदेशों की जनता को जीवन के सम्पूर्ण सौन्दर्य को एक ही स्थान में पा जाने में वहमी जी का यह ग्रन्थ बहुत अधिक सहायक सिद्ध होगा।

जो लोग केवल संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही जानते हैं और उर्दू के शब्द सुनते ही बिन्हें भाव समझने में कठिनाई होने लगती है, ऐसे लोग भी इस ग्रन्थ का नागरी लिपि के द्वारा यदि एक बार पढ़ जाएँगे तो उन्हें सरल उर्दू का अच्छा ज्ञान हो जाएगा।

उर्दू वाली अरबी-फ़ारसी की शैली का अधिक अभ्यास हो जाने के कारण जो लोग संस्कृत के शब्द नहीं समझ पाते उनके लिए भी यह ग्रन्थ हिन्दी के कुछ आवश्यक शब्द सीख लेने में सहायक होगा ।

वहमी जी के इस ग्रन्थ की शैली में प्रवाह है । वातालाप का नाटकीय ढंग बड़ा आकर्षक और हृदय को छूने वाला है । सबसे बड़ी बात तो यह है कि वहमी जी ने अपने जीवन में भी आदर्शों की साधना करके सतहत्तर वर्ष के इस वय में इस स्तुत्य कार्य को आरम्भ किया । जीवन को आदर्शों से सज्जित करके सतहत्तर वर्ष के वय में गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने जीवन की सतहत्तर वर्षों का साधना को रामचरित मानस के रूप में संसार को दिया था । वहमी जी ने भी प्रायः उसी वय में इस स्तुत्य कार्य को सम्पन्न किया है । इनका यह कार्य यदि घर-घर में पहुँचाया जा सके तो मुझे विश्वास है कि राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, हनुमान, वाल्मीकि, भरद्वाज, अरुन्धती, अनसूया, शबरी, मन्दोदरी तथा विभीषण का आदर्श शील हम अपने देश में उत्पन्न कर सकेंगे ।

आज के युग में खड़ी बोली में इस प्रकार के ग्रन्थों की बहुत बड़ी आवश्यकता है । हमारी पीमा और हमारे राष्ट्र का अपमान एक पड़ोसी देश कर चुका है और अब हम अपने घरों में निश्चिन्त नहीं बैठ सकते । भारतीय योग अपनी शारिरीक शक्ति से शत्रु के शरीर को ही नहीं पराजित करते थे, वरन् अपनी आत्मिक शक्ति और उसी के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुए अपने विश्वरक्षक शील से वे शत्रु के हृदय को अपने वश में करके उसके शील को भी सुधार देते थे । अपने उर्दू पड़ोसी के शील को जगन्माता शक्ति से विनम्र बनाये बिना हम विश्व की रक्षा-योजना में भाग नहीं ले सकते । वहमी जी का यह स्तुत्य प्रयास मनुष्य के हृदय को वह स्वस्थ बल प्रदान करेगा जिससे विश्व के शरीर और मन दोनों स्वस्थ होते हैं । परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि ऐसे अनेक स्तुत्य और सफल शुभ प्रयत्नों को पूरा करने के लिए उन्हें दीर्घायु बनाये ।

वंशाख कृष्ण दशमी, शुक्रवार,
संवत् २०२० । १९ अप्रैल १९६३,

—रामनिरंजन पांडेय,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उसमानिया
विश्वविद्यालय, हैदराबाद

अनुवादक के दो शब्द

मार्च १९६० में तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का उर्दू पद्यानुवाद मैंने 'रामायण-मंजूम' नाम से प्रकाशित किया था। बाद में मित्रों ने राय दी कि उसका हिन्दी संस्करण भी निकाला जाए। हिन्दी संस्करण अब आपके हाथों में है।

रामायण का महात्म्य वर्णनातीत है। यह प्रेम और दया, शील और विनय, वीरता और साहस तथा प्रीति और रीति का अद्वितीय कथानक है। विद्वानों ने इसे ज्ञान और दर्शन का भंडार कहा है। इसे पढ़ कर मनुष्य अपना लोक और परलोक दोनों संवार सकता है।

'रामायण-मंजूम' लिखने की प्रेरणा मुझे अपनी दिवंगता धर्मपरायणा पत्नी प्रेमरानी से मिली। अप्रैल १९५९ में उनका गोलोकवाम हुआ और प्रायः दस वर्ष तक वे फ़ालिज के कारण रोगशैया पर रहीं। उनकी इच्छा थी कि मैं तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का सरल उर्दू अथवा हिन्दी भाषा में अनुवाद करूँ, और यह पुस्तक उसी का फल है। दुःख इस बात का है कि उनके रहते यह पुस्तक प्रकाशित न हो सकी; सतोष इतना-सा है कि पुस्तक उनके रहते लिखी जा चुकी थी और इसके कई अंश मैंने उन्हें पढ़ कर सुनाये थे।

'रामायण-मंजूम' के इस संस्करण का सम्पादन मेरे नौजवान दोस्त श्री मुरलीधर शर्मा ने किया है और इसके प्रकाशन में भी उन्होंने बड़ी सहायता की है। मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

साथ ही, कमशियल प्रिंटिंग प्रेस के मैनेजर श्री मुनीन्द्र का भी मैं आभारी हूँ जिनके बहुमूल्य सुझाव समय-समय पर मिलते रहे हैं।

हैदराबाद,
रामनवमी, २-४-१९६३

हकीम खाइसराय 'बहमी'

अथ रामायण मनजूम

सिद्धिदाता गनपति की क्या बयाँ हों खूबियाँ, नाम ही लेने से जिनका सहल हों दुश्वारियाँ ।
शारदा जी की दया से लिख रहा हूँ यह किताब, ध्यान जिनका दिल में है और नाम है विद्वेजबाँ ।
राम का अवतार दुनिया में हुआ था इसलिए, ताकि बदकारी का दुनिया से मिटे नामोनिशाँ ।
अब श्री रघुनाथ की लीला सुनाता हूँ तुम्हें, जिसको सुन कर लोग हो जायेंगे खुर्रम शादमाँ ।

थी अयोध्या इक हुकूमत, राजा दशरथ हुकमराँ, नस्ल से सूरज के थे वो सूर्यवंशी खानदाँ ।
खानदाँ इनका बहुत मशहूर था उस दहर में, नामवर गुजरे हैं अक्सर बादशाह उनके यहाँ ।
राजा दशरथ को था हासिल हर तरह का ऐशोत्तर्ब, दबदबा उनका बड़ा था जाहो शौकत इज्जोशाँ ।
उनका हमसर कोई उस दम था न अब तक हो सका, वो महाराजा हुए मशहूर यकनाए जहाँ ।
अदल और इन्साफ में मशहूर थे मालूम थे, हर तरह उनकी रअइयन शाद थी और शादमाँ ।
वो सखी थे रहमदिल थे और शुजाअत के घनी, तूल हाँ जाये मुखन गर मैं लिखूँ सब खूबियाँ ।
मालो दौलत की कमी कुछ भी न थी राजा के घर, तीन थी उनके महल में खूबसूरत रानियाँ ।
हर तरह का चैन हासिल राजाए दशरथ को था, घर में था लेकिन नहीं कोई चिरागे खानदाँ ।
जो वशिष्ठ उनके गुरु थे, हाल सब उनसे कहा, वो दिलासा उनको दे कर यूँ हुए गौहरफशाँ ।
आप यग कीजेगा राजा चार फ़रजंद होएँगे, बात यह मेरी नहीं जाएगी हरगिज रायगाँ ।
राजा दशरथ ने किया यग आरजू अरमान से, थे शिरंगीजी ऋषि यक उनको बुलवाये यहाँ ।
जब मिला परशद यग का खीर उनको दी गयी, हो गये राजा उसे ले कर निहायत शादमाँ ।
खीर वो ले जाके दे दी रानियों को राजा ने, खायी उस परशद को वो होके शादो शादमाँ ।
कुछ असर ऐसा निहाँ था यज के परशद में, चंद ही दिन में हमल से रह गयी सब रानियाँ ।
जो बड़ी रानी थीं कौशल्या उन्हें लड़का हुआ, फिर हुआ एक और लड़का कैकेई के भी यहाँ ।
और दो लड़के हुए रानी सुमित्रा जी को भी, चार लड़के हो गये राजा हुए बस शादमाँ ।
राजये आलीक़दर बेहद हुए मसरूरो शाद, क्योंकि रोशन हो गया अब उनका आली खानदाँ ।
दूर कुलफ़त हो गयी हर एक शादाँ हो गया, शादो खुर्रम हो गये मरदोजनो पीरोजवाँ ।
जब हुए फ़रजंद पैदा जइने शाहाना रचे, क्या लिखूँ तारीफ़ उनकी मेरी ताक़त है कहाँ ।
राम कौशल्या के बेटे कैकेई के भरत थे, लक्ष्मण और शत्रुघन थे दो सुमित्रा जी की जाँ ।
परवरिश उनकी हुई चाहत से लाड़ और प्यार से, बाप फ़रजंदों पे अपने थे निहायत मेहरबाँ ।
जब हुए पढ़ने के क़ाबिल फ़िक्क की तालीम की, जो वशिष्ठ इनके गुरु थे, ये गये उनके यहाँ ।
दो गुरुजी ने भी इनको हर तरह तालीम खूब, इल्म में और फ़ज़ल में ये चार थे रश्केजमाँ ।
और सिपहगिरी में भी चारों बड़े मुश्ताक़ थे, ये शिकारी थे, अजीज इन सब को थे तीरोकमाँ ।
था कमाल हासिल इन्हें हर इल्म में हर बात में, सब फ़नून आते थे इनको थे जो जेवे खुशरवाँ ।
उस जमाने में ऋषि एक और विश्वामित्र थे, आ गये इक रोज़ वो राजा के घर पर नागहाँ ।
दर पे आके अपने आने की खबर राजा को दी, अर्ज कर बैठे महाराजा मे जा कर पासवाँ ।
जब सुना राजा ने आये हैं ऋषि घर पर मेरे, बहर इस्तक़बाल अपने घर से वो निकले दवाँ ।

की बहुत खातिर मुदारत उनकी वासद एहतमाम, यह समझ कर आये हैं घर में बुजुर्ग इक मेहमाँ ।
 उनसे जब राजा ने पूछा उनके आने का सबब, यूँ ऋषि ने उनसे की तकलीफ़ सब अपनी बयाँ ।
 मैं जहाँ जंगल में रहता हूँ कुछ ऐसे लोग हैं, जो मुझे करने नहीं देते हैं यग हरगिज़ वहाँ ।
 वो शरारत करते हैं हरदम सताते हैं मुझे, जुल्म से उनके बहुत लाचार हूँ और तंग जाँ ।
 इसलिए आया हूँ दर पर मैं बड़ी उम्मीद से, भेजिए मुझको यहाँ से कामगारो कामराँ ।
 राम और लक्ष्मण को मेरे साथ भिजवा दीजिए, ताकि मैं यग कर सकूँ और वो रहेंगे पासबाँ ।
 जब मुना राजा ने यह हैरत हुई अजबस उन्हें, रंग चेहरे का उड़ा और हो गये वो बेजबाँ ।
 आखिरस दिल थाम कर राजा ने की याँ अर्जोहाल, राम और लक्ष्मण ये दोनों हैं मेरे आरामेजाँ ।
 छोड़ कर इक लमहा दोनों को मैं रह सकता नहीं, ये न हों गर पाम मैं जिन्दा रहूँ कैसे यहाँ ।
 बहसियों से क्या मुँकाबिल हो सकें नौउम्र हैं, इनमें इतनी है कहाँ ताकत कहाँ ताबोतवाँ ।
 मैं हूँ हाज़िर और मेरी अफ़वाज हाज़िर हैं तमाम, जो रहेंगी आपके यग की महाफ़िज पासबाँ ।
 कुछ ऋषि नाराज-से राजा के कहने से हुए, और विश्वामित्र राजा से हुए कुछ बदगुमाँ ।
 कुछ वशिष्ठ आखिर में कहेके उनको राजी कर दिया, राम और लक्ष्मण को भेजे राजा हो कर शादमाँ ।
 जब चले जंगल को ये वह राह ही में मिल गयी, ताड़का नामी जो बहशी एक रहती थी वहाँ ।
 जब ऋषि ने उसको देखा हाथ से बतला दिया, ले लिए दोनों बिरादर हाथ में तीरोकमाँ ।
 काम उसका हो गया बस इक ही नावक से ख़तम, कब ख़ता करता था ऐसे तीरे अफ़ग़न का निशाँ ।
 राम या रघुनाथ जिनका नाम हैं मारें उसे, मिल गयी राहत उसे वो पायी उमरे जावेदाँ ।
 मार कर उसको ये तीनों मिल के उस जा पर गये, जिस जगह रहते ऋषि थे यग वो करते थे जहाँ ।
 राम और लछमन वहाँ पहुँचे ऋषि थे और भी, इनको आता देख कर होने लगे सब शादमाँ ।
 सब ऋषि करने लगे यग भी हवन भी शौक से, राम और लछमन लगे रहने हर इक के पासबाँ ।
 ये ख़बर सुन कर वहाँ मारीच क्रौरन आ गया, फेंका सौ योजन पे जिसको राम जी ने नागहाँ ।
 और सुबाहु का भी किस्सा ख़तम कर डाला वहीं, दूमरे बदकार भी मारे गये जो थे वहाँ ।
 ख़तम यग सब हो गये पहुँची अजियत कुछ नहीं, दी दुआ उनको मूनीने होके दिल से शादमाँ ।
 तब उलूम उनको पढ़ाये और मंत्र भी दिये, खुद बड़े कामिल थे वो और हक़ के थे वो राजदाँ ।
 राजाए मियलेश थे राजा जनक आलीक़दर, खुशरवाने दहर जिनका चूमते थे आस्ताँ ।
 इक घनूप यग कर रहे हैं अपनी बेटी के लिए, जा रहा था देखने को यग वहाँ सारा जहाँ ।
 यह ख़बर सुन कर ऋषी ने उनको चलने को कहा, बहर शिरकत ये जनकपुर हो गये तीनों रवाँ ।
 उस ज़माने में जनकपुर में बहुत ही धूम थी, जमा होते चौराफ़ से थे वहाँ पीरोजवाँ ।
 रास्ते में आश्रम एक था वहाँ कोई न था, एक पत्थर की शिला मौजूद थी लेकिन वहाँ ।
 बददुवा से बन गयी थी यह जो पत्थर की शिला, कर दिया गौतम की बीबी का ऋषीजी ने बयाँ ।
 राम ने अपने चरण जब उसके सर पर रख दिये, हो गयी जिन्दा वह फिर और आ गयी कालिब में जाँ ।
 नाम था उसका अहिल्या पैर पर उनके गिरी, स्तुति करने लगी हो कर निहायत शादमाँ ।
 तुम जगत के पालने वाले हो ऐ आका मेरे, आपकी मुझ पर दया की नज़र होवे बेगुमाँ ।
 इस क़दर कह कर वहाँ से वह रवाना हो गयी, और यह सब हो गये उस जाय से आगे रवाँ ।
 जब जनक को यह हुआ मालूम आये हैं ऋषि, दौड़ कर आये उन्हें वह ले गये अपने यहाँ ।
 राम-लक्ष्मण का तआरुफ़ उनसे करवाये मुनी, देख कर जिनको हुए राजा निहायत शादमाँ ।

पूछा राजा ने मुनी से देख कर दोनों को यों, क्या ऋषि के हैं ये जेवर या कोई शहजादगाँ। या ये ब्रह्मा तो नहीं आये हैं मेरे रूबरू, जिसकी निसबत नेति कह कर वेद हैं जादूयवाँ। चन्द्रमा को देख कर जैसे चकोर होता मही, मैं भी यों ही हो गया हूँ देख कर इनको यहाँ। जब मिली फुसंत चले वह शहर को भी देखने, दीद के मुस्ताक उनके थे जहाँ पीरोजवाँ। हो रही थी जा बजा तारीफ़ उनके खुल्क की, इनके हक़ में सब दुआगो और सब थे मदहूखाँ। चाहते थे सब कि सीता की हो शादी राम से, सब दुआ करते थे दिल से और थे सब हमजवाँ। सब से ये मिलते रहे अखलाक़ से आदाब से, देख कर ये शहर वापस आये ठहरे थे जहाँ। फिर चले यगशाला को ये देखने के वास्ते, देखने को जिसके आते थे तमाम अहलेजहाँ। फूल लाने के लिए एक दिन गये ये बाग़ में, खुश हुआ दिल में इजाजत इनको देकर बाग़वाँ। बाग़ में तालाब के नज़दीक एक मन्दिर भी था, दुखतरे राजाजी पूजा के लिए आयीं वहाँ। ये वही सीता थीं जिनका था स्वयम्बर हो रहा, उनकी हमराही में आयी थीं वहाँ कुछ लड़कियाँ। एक लड़की ने जो इन दोनों को देखा बाग़ में, लग गयी चूप-सी उसे बन्द हो गयी उसकी जवाँ। आखिरस उसने कहा सीता से जा कर हाल सय, फिर रहे हैं दो जवाँ सहने चमन के दरमियाँ। राम का जब रूप देखा हो गयीं बेखुद सिये, कुलवे नाजुक पर लगी एक चोट उनके नागहाँ। ये उन्हें कुछ दूर से देखी वो इनको दूर से, क़लब में फ़ौरन उठा दोनों तरफ़ दर्द निहाँ। वो फ़िदा इन पर हुए ये हो गयीं उन पर निसार, दिल में इन दोनों के तीरे इश्क़ ने लीं चुटकियाँ। जिस घड़ी पाजेब की आवाज़ कानों में पड़ी, राम भाई से गुस्ताख़ हुए यों गोहरफ़ाँ। कामयाबी का बजाया है यह डंका इश्क़ ने, मुझको होता है यकीं इसमें नहीं शक़ ओ गुनाँ। टकटकी बाँधे हुए देखा न झपकाई पलक, कर लिया आँखों में आने रूप सीता का निहाँ। थीं जो हमराही में देखा इस तरह सीता का हाल, ले गयीं उनको वहाँ गोरी का मंदिर था जहाँ। जा के गौरीजी की खिदमत में ये सीता ने कहा, आप माता हैं हमारी और हम पर मेहरवाँ। मेरे दिल की है जो ख़ाहिश उसको पूरी कीजिए, आप से मैं क्या कहूँ जो आप पर है सब अयाँ। थी गले में एक माला फूल की गौरी के जी, गिर गयी माला वो सीताजी के ऊपर नागहाँ। ले लिया सीता ने फ़ौरन और समझा फ़ाले नेक, ले के उस माला को वापस आयीं घर को शादमाँ। फूल ले कर राम-लछमन बाग़ से वापस हुए, आके विश्वामित्र से वो कर दिये सब कुछ बयाँ। था स्वयंबर का जो दिन उस रोज़ विश्वामित्रजी, यज्ञ भूमि को गये थे साथ दो शहजादगाँ। राम और लछमन भी विश्वामित्रजी के साथ हैं, शहर में फैली ख़बर यह सूरते बादेदवाँ। हो गये सब लोग इकट्ठा भीड़ अच्छी हो गयी, सब तमाशा देखने को आ गये पीरोजवाँ। जो बहादुर आये थे रस्मे स्वयम्बर के लिए, जमा सब आ कर हुए थे यज्ञशाला थी जहाँ। नामवर जितने भी आये थे वो सब मौजूद थे, थे कई राजा महाराजा कई थे खुशरवाँ। बैठे सब आदाब से अखलाक़ से एजाज़ से, इनको बिठलाया गया था—जेब देता था जहाँ। सीताजी को भी महल से उस जगह लाया गया, हुस्नो जेबायश की उनके क्या लिखूँ मैं खूबियाँ। राजाए आली जनक के हुक्म देने ही के साथ, उस बड़े मैदान के आया नज़ीब एक दरमियाँ। और ब आवाजे बलन्द उसने पुकारा इस तरह, फैल जाती है चमन में जिस तरह वादे रवाँ। हाज़रीन इसको सुनें राजा जनक का अहद है, अपनी बेटी उसको देंगे, जो धनुष खींचे यहाँ। राजाए आली जनक का मरतबा जाहिर किया, और सुनाया कैसा है राजा जनक का खानदाँ।

जमा थे जो सूरमा वो हो गये सब मुजतरब, वलवले थे सब के दिल में लग रही थीं बरछियाँ । वारी-वारी से उठे वो सब धनुष को खींचने, जितने राजा और महाराजा इकट्ठे थे वहाँ । जो बहादुर थे गुजाअत में बहुत मशहूर थे, कोशिशों की सबने पैहम ताकि उठ जाये कमाँ । उठाना तो दूर उसको हिलाया तक भी नहीं, हो गये नाकाम सब, जाते रहे ताबोतवाँ । इनफ़िरादन जब किसी ने भी न खींची वह कमाँ, फिर लगे उसको उठाने चन्द मिल कर राजगाँ । वह धनुष अपनी जगह से हिल भी सकता था कहीं, हो गये वह सब खाजिल और बन्द थी उनकी जबाँ । पानी-पानी हो गये मारे खिजालत के तमाम, बैठे जा कर उस जगह पहले से बैठे थे जहाँ । राजाए आली जनक ने हाल जब देखा ये सब, हो गये मायूस यों होने लगे गीहरफशाँ । प्यारी सीता की है शादी क्या मुकद्दर में नहीं, हो गया क्या हाथ खाली सूरमाओं से जहाँ । मेरी बेटी ने उठाया था धनुष एक हाथ से, मिल के सब उसको हिलाये भी नहीं ये राजगाँ । थे गुजाअत में बहुत मशहूर और मारुफ़ सब, क़वतो ताक़त का उनकी हो गया बस इन्तेहाँ । जनक के मुँह से ये जुमले जब निकलने लग गये, लक्ष्मण खामोश रह सकते थे गुस्से में कहाँ । तैश में आये, हुआ बस उनका चेहरा लाल-लाल, इस क्रदर गर्जें कि थरिये ज़मीनो आसमाँ । ये कहा—रघुवंशियों के सामने वाज़िब नहीं, इस तरह दिखलाये तेज़ी ये ज़वाँ की गरमियाँ । देख कर मजलिस की ये हालत उठे फिर रामचन्द्र, और गुरु जी ने हिदायत की कि तुम जाओ वहाँ । राम जब चलने लगे सब ख़ैरख्वाह तब खुश हुए, और जो बदख्वाह थे वो हो गये सब नीमजौ । चाहता था हर कसोनाकस कि वे हों कामयाब, राम को ये फ़ोक्रियत मिल जाय हों ये कामराँ । वो महारानी जनक की था सुनैना जिनका नाम, मुन्तज़िर थीं क्या बदलता रंग है अब आसमाँ । था खयाल उनका कि बच्चा क्या उठायेगा धनुष, इस धनुष को ये उठा ले इसमें ताक़त है कहाँ । रावण और वाना सुर जैसे जब उठा पाये नहीं, इससे क्योंकर ये उठेगा होगा कैसे कामराँ । राम की ताक़त ओ कुदरत की सुनी जो खूबियाँ, दिल को उनके चैन आया मिट गया सारा गुमाँ । नीची नज़रों से जो सीताजी ने देखा राम को, दिल में वे कहने लगीं गो बन्द थी मुँह में ज़बाँ । आज तक गौरीजी मैंने की है पूजा आप की, आप मेरे हाल पर हो जायें इस दम मेहरबाँ । राम के हाथों पर हो जाए सुबकतर यह धनुष, ये उठा लें सहल और मुतलक़ न हो बारेगराँ । बाप के इस अहदे मुश्किल को वो जब थीं सोचतीं, चोट-सी लगती थी एक सीता के दिल के दरमियाँ । कामयाबी इनको हा मिल हो उठा लें यह धनुष, और हो शरमिन्दगी खिफ़क़त नसीबे दुश्मनाँ । राम जाकर जब धनुष के पास इस्तादा हुए, और नज़र चारों तरफ़ दोड़ाई अपनी नागहाँ । सब बड़े छोटों को देखा हो रहे हैं बेकरार, और सीता को भी हर लमहा था एक बारेगराँ । जिनको इक-इक पल बरस से भी ज़्यादा तूल थी, सब अब वो कर सकें ताक़त ये थी उनमें कहाँ । खेत जब सब सूख जाएँ बादे अजौं बारिश हो खूब, फ़ायदा उससे नहीं कुछ, बात है बिल्कुल अयाँ । बाद मरने के जो प्यासे को मिले आबे हयात, है वो बेकार और कोशिश है वह ऐसी रायगाँ । सोच कर इतना धनुष की सिम्त कुछ देखे बगैर, और धनुष को हाथ में अपने उठाया नागहाँ । हाथ में उनके जो आया जगमगा उट्टा धनुष, देखने वाले ये सब समझे कि है बरके तपाँ ? किस तरह जल्दी उठाया किस तरह खींचा उसे, महेवे हैरत लोग वो सब हो गये जो थे वहाँ । जमा थे जितने वहाँ देखा उन्होंने बस यही, हाथ में ले कर खड़े हैं रामजी तीरोकमाँ । तोड़ कर फिर उस धनुष को राम ने टुकड़े किये, सख़्त और वज़नी धनुष की उड़ गई बस धज्जियाँ ।

तोड़ कर फेंका जमीं पर तब गरज ऐसी हुई, सब के सब घबड़ा उठे, खायफ़ हुआ सारा जहाँ। सब ने रक्खा हाथ कानों पर लगे सब काँपने, और जमीं हिलने लगी पहुँची सदा ता आसमाँ। जब हुआ सब को यकीं तोड़ा धनुष को राम ने, राम की जय हो, पुकारे होके वह सब शादमाँ। शादमानी के बजे डंके वहाँ चारों तरफ़, गूँज उठे शोर से जिसके जमीनों आसमाँ। शोर बरपा हो गया हरसू मुबारकबाद का, शाद और खुरम हुए सब मरदोजन पीरोजवाँ। हो गये अहले जनकपुर इससे शादाँ और खुश, और लगे करने तसद्वुक मिस्ले गौहर अपनी जाँ। किस क्रदर राजा जनक को थी मसरंत क्या कहूँ, शादमानी के निशाँ चेहरे से उनके थे अयाँ। उनकी महारानी को भी हासिल मसरंत हो गयी, और दीगर रानियाँ भी थीं महल में शादमाँ। तब पुरोहित जी शतानन्द जो जनक के थे गुरु, देख कर सीता की जानिब वो हुए गौहरफ़शाँ। जो सहेली रात दिन रहती थी सीताजी के साथ, उनको ले कर साथ अहिस्ता चली वो शादमाँ। उनकी सज धज का अदा का वस्फ़ हो क्यों कर रक़म, है कहाँ ताकत क़लम में—क्या करें उसको बयाँ। हाथ में जयमाल ले कर वो चली सखियों के बीच, राम ही थे क़त्व में और राम ही विदेजबाँ। हाथ से जयमाल वह पहना न सकती थी उन्हें, कुछ लिहाजे बज़म था और कुछ खिजा़लत दर्मियाँ। आखिरस जयमाल पहनाने को बोली इक सखी, और कहा पहना दो माला राम को अब मेरी जाँ। सुनके यह सीता गयीं जिस जा खड़े थे रामचन्द्र, डाल दी जयमाला वो इनके गले के दर्मियाँ। किस क्रदर वह जेब देती थी गले में राम के, कह नहीं सकता वो मंज़र लाख हो जादूबयाँ। सब हुए शादाँ ओ फ़रहाँ सब हुए मसरूरो शाद, सब के चेहरों से अयाँ थे शादमानी के निशाँ। राजा ओ अहले जनकपुर इससे बेहद शाद थे, फूल बरसाने लगे और हो गये गौहरफ़शाँ। एक सहेली ने कहा झुक कर कदम को चूम लो, रह गयी सीता झिझक कर क्योंकि वो थी रम्जदाँ। साकिनाने शहर को जिस दम हुई यह इत्ला, राम-सीता के स्वयम्बर में हुए ही कामराँ। शादियाने ऐश के बजने लगे चारों तरफ़, फ़िकर और अन्दोह का बाकी न था नामों निशाँ। और जो बदरुवाह थे सब दिल में अपने जल उठे, होके खिसियाने उन्हें देने लगे बस गालियाँ। गीज़ में आ कर उठे और इस तरह गोया हुए, कोई सीता को छुड़ा ले हमसे ये हिम्मत कहाँ। क्या धनुष को तोड़ने से जीत सकता है कोई, ले के शहजादी को जाये किस में है ताबो तवाँ। राम और लछमन हैं बच्चे क्रैद कर डालो इन्हें, गर जनक हो कुछ मआवन उसको डालो बेड़ियाँ। और जो राजा थे दाना सुन के हैरत में पड़े, उनसे देखी जा नहीं सकती थी ये रसवाइयाँ। बोले यों क्या ज़ाम करते हो बड़े बेशर्माँ हो, कुछ समझ सकते नहीं इस बात का सूदोज़याँ। खींचना था जब धनुष उस वक़्त तो खींचे नहीं, अब दिखाते हो शुजाअत बन गये हो पहलवाँ। तब किधर ताकत गई थी अब कहाँ से आ गई, किसने अब तुमको बना डाला बहादुर पहलवाँ। देख कर यह रंग सीता दिल में खालिफ़ हो गयीं, ले गई रानी के पास आखिर उन्हें हमजोलियाँ। राम ने सीता की उल्फ़त का जो अन्दाज़ा किया, उस और उल्फ़त के दरिया हो गये दिल में रवाँ। जब गई सीता यहाँ से वह रवाना हो गये, जाके ये बैठे वहाँ बैठे गुश्जी थे जहाँ। अब खुदा जाने नतीजा इसका क्या हो क्या न हो, सोचती दिल में थीं सीता और दीगर रानियाँ। जब कि नाहिन्ज़ार राजाओं ने बलवा कर दिया, लक्ष्मण खामोश कैसे बैठ सकते थे वहाँ। राम का पासे अदब था मुंह से कह सकते न थे, सुखं चेहरा हो गया हम सूरते बर्क़तपाँ। इस तरह घूरा उन्हें क्रहरो गज़ब से यकबयक, देखता है गीदड़ों को जिस तरह शोरे ज़ियाँ।

खलबली-सी पड़ गई बेकल हुई सब औरतें, और देने लग गई राजाओं को बस गालियाँ। भृगू वंशी एक ऋषि थे नाम उनका परसुराम, नाम से होते थे खालिफ जिसके सब अहले जहाँ। वो धनुष ला कर जनक के पास रखे थे कभी, दी थी शिवजी ने उन्हें जो वो यही थी एक कमाँ। जब धनुष टूटा खबर इसकी उन्हें भी हो गई, आ गये अपनी जगह से वो धनुष-यग था जहाँ। देख कर इनको वो राजा हो गये खामोश सब, लरजा बरअन्दाम था और बन्द थी सबकी जबाँ। जिस तरह से बाज झपटे और सब भागें बटेर, रूह हो जाये फना झाँके वो अपना आशियाँ। थे ऋषि कामिल शुजाअत में भी यकता शान थी, उनके आगे सर झुका देते थे सारे राजगाँ। उनके गोरे जिस्म पर क्या खूब सजती थी भभूत, जेब बेती थी जटा सर पर मिसाले कहकशाँ। उनके शाने दोनों ऊँचे और गले जनार था, एक काँधे पे था तेगा हाथ में तीरोकमाँ। उनके आते ही वहाँ एक खौफ तारी हो गया, सब यह कहने लग गये मैं हूँ फलाँ इन्ने फलाँ। मेहरबानी की नजर से भी अगर वो देख लें, जिसको देखें वो समझ ले अब नहीं मुझको अमाँ। जाके महाराजा जनक ने पायबोशी उनकी की, और सीता को भी बुलवाया जनाने से वहाँ। भृगु केतु ने दुवा दी देख सीता की शकल, मेहरबाँ पा कर उन्हें कुछ आ गई हरएक में जाँ। ठहरना उस जा ज्यादा कुछ मुनासिब ही न था, साथ वापस ले गई सीता को सब हमजोलियाँ। आये विश्वामित्र दोनों में बगलगीरी हुई, दोनों जानिब से हुए जाहिर मुहब्बत के निशाँ। उनके क्रदमो पर ये डाले राम और लक्ष्मण को भी, और कहा दशरथ के हैं फरजन्द ये दो नौजवाँ। देख कर वो नूर इनका, दंग से कुछ रह गये, और दुआ दी इनको यह कह कर, रहें ये शादमाँ। और जनक से इस तरह पूछा कि क्यों ये भीड़ है, पूछा यों अनजान बन कर गो वो खुद थे रमजदाँ। तब जनक ने हाल सारा दस्त बस्ता कह दिया, हाल ये सुन कर उन्हें तैश आ गया बस नागहाँ। और भी गुस्सा बढ़ा आपे से बाहर हो गये, जब कि देखा उस धनुष की उड़ गई हैं धज्जियाँ। ये कहा-नादान बतला किसने तोड़ा है धनुष, वर्ना मैं फौरन उलट दूँगा जमीनों आसमाँ। सुन के ये राजा के दिल पर खौफ तारी हो गया, मुँह से कुछ निकला नहीं और बन्द थी उनकी जबाँ। जो कि बदनीयत थे राजा वो हुए सब शादकाम, अब बनी सब कुछ बिगड़ जायेगी वो समझे यहाँ। और सुनैना जी के भी दिल में बड़ी तशवीश थी, ये हुआ ऐसा कि जिसका था न कुछ वहमोगुमाँ। राम ने देखा कि सीता और सब खायफ है अब, हाथ जोड़े उनसे वो गोया हुए जादूबयाँ। इस धनुष को जिसने तोड़ा आपका खादिम है वो, हुकुम क्या होता है उसके वास्ते हाजिर है जाँ। यों ऋषि बोले कि खादिम वो है, जो खिदमत करे, जो करे हमसे उदू वह आये मैदाँ दरमियाँ। आज इस महफिल से जल्दी वो चले जाये कहीं, वर्ना मारे जायेंगे जितने यहाँ हैं राजगाँ। बात यह सुन कर जरा लछमन को भी आई हँसी, और मुखातिब उनसे हो कर खोली अपनी यों जबाँ। गोसाईँ, हमने लड़कपन में बहुत तोड़े धनुष, आप हम पर आज तक हरगिज न थे नामेहरबाँ। इस धनुष से आपको उल्फत है इतनी किसलिए, जिस सबब से आप इतने हो गये आतिशफशाँ। यह मिला उनको जवाब ए नासमझ ओ राजपूत, यह धनुष वँसा ही है क्या जैसी वो सब थी कमाँ। लक्ष्मण जी फिर हँसे और यों दिया उनको जवाब, सब धनुष एक-सा हैं नजरोँ में मेरे ऐ पहलवाँ। यह तो था कोहना भला इसमें तो था रक्खा ही क्या, राम ने उसको समझ कर नो, छुआ था बेगुमाँ। हाथ लगते ही ये टूटा राम की तकसीर क्या, हो रहे हैं किसलिए आप ऐ ऋषि जी वेइनाँ। बोले वे बच्चा समझ कर रक रहा हूँ मारने, क्या फकत मुझको ऋषि समझा है तू—ऐ बदजबाँ।

बारहा राजाओं को मारा हूँ इन शानों के जोर, मेरी ताकत और शूजाअत है जमाने पर अर्था ।
 ये सहस्रबाहू के भी शाने कटे जिस तेग से, है मेरे काँधे पैं वह इस वक्त भी जलवा कुना ।
 दाग अब माँ-बाप को अपने न दे ऐ तिपल तू, हमिला का हम्मल गिर जाता है डर से नागहीं ।
 फिर कहा लक्ष्मण ने हँस कर वाह वाह क्या बात है, आप अपने को हैं समझे ऐ मनीजी पहलवा ।
 आप दिखलाते हैं मुझको जो कुल्हाड़ी बारहा, फूँकने से कोह उड़ जाये ये मुमकिन है कहाँ ।
 मैं नहीं बच्चा हूँ कुछ जो आप से डर जाऊँगा, तेग ही को देख कर मैंने भी खोली ही जबाँ ।
 आपके अच्छे नसब को देख कर खामोश हूँ, फर्ज से अपने नहीं टलता हमारा खानदाँ ।
 आप मारें भी तो झुक जाये ये मेरा सर अभी, कुछ नहीं नुकसान इसमें—कुछ नहीं इसमें जियाँ ।
 आपके अलफ़ाज ही खूद तेग से है तेजतर, किसलिए रखते हैं तेगा और ये तीरोकमाँ ।
 देख कर इनका अगर मैंने कहा कुछ आप से, कीजिएगा अफ़ू मेरी ऐ ऋषि गुस्ताखियाँ ।
 तब ऋषि हो कर खफ़ा कहने लगे कौशिक से ये, मौत के मुँह में ये आया क्या बचेगी इसकी जाँ ।
 ये बड़ा जाहिल निडर है और बड़ा गुस्ताख है, इसको हो जाये अभी हासिल हयाते जावेदाँ ।
 गर वचाना हो मेरी ताकत बर्बाद कर दीजिए, वर्ना फिर तोहमत न देना कर दिया है सब अर्था ।
 कह उठे लछमन कि तारिफ़ आप की हम क्या करें, आप ने खुद बारहा अपनी जबाँ से की बर्बा ।
 इस पैं भी ताकत न हो गर रोकने की ऐ मनी, और भी कह दीजिए तो सब पैं हो जाये अर्था ।
 हैं बहादुर आप हैं सन्नो शूजाअत आप में, जब देती ही नहीं हैं आपको यों गालियाँ ।
 जो कि होते हैं दिलावर मुँह से कुछ कहते नहीं, काम करते हैं फ़कत खुलती नहीं उनकी जबाँ ।
 आप हरदम मौत को मेरी बुलाते हैं करीब, हाँक कर लाने की कोशिश जायगी सब रायगाँ ।
 सुन के ये अलफ़ाज फिर बरहम हुए कुछ परसुराम, हाथ में ले कर हुए वह तेग ओ खंजर दवाँ ।
 अब तो यह लड़का सजा पाने के काबिल हो गया, अब न दें इल्जाम मुझको पीर हों या हों जवाँ ।
 अफ़ू कीजे, ये हैं बच्चे—आप साधु हैं बड़े, आगे बोले इस तरह कौशिक ऋषी जी दर्मियाँ ।
 मेरा तेगा है भयानक और मैं हूँ रहमदिल, कुछ नहीं पासे अदब लाता है ये गुस्ताखियाँ ।
 मैं तुम्हारी ही तो खातिर दर गुजर करता रहा, वर्ना सह सकता नहीं इस तरह की रसवाइयाँ ।
 बे अदब हो कोई गर लाजिम गुरु को है वही, जल्द ही से जल्द वो हल्का करे बारेगिराँ ।
 सुनके यह कौशिक ऋषी भी दिल में कुछ हँसने लगे, ये जो समझे हैं गलत है और है ख्वाबेगिराँ ।
 लक्ष्मण इस तरह उनसे फिर मुखातिब हो गये, ऐ महाराज आपके अफ़भाल हैं सब पर अर्था ।
 बाप और माँ के फ़रायज से सुबगदोशी तो थी, इक गुरु का कर्ज बाकी था जो था अब तक निहाँ ।
 उसकी बेबाकी हमारे ही तो माथे पर रही, लाइएगा हो अगर कोई यहाँ पर नुकतदाँ ।
 खोल कर थैली अभी इसकी अदाई कर सकूँ, देख भी लीजे है इसमें किस क़दर सूदोजियाँ ।
 भृगुकेतू ने सँभाला तेग को सुन कर कलाम, खीफ़ से थर्रा गये लरजाँ हुए पीरोजवाँ ।
 लखन बोले—ब्राह्मण हो इसलिए खामोश हूँ, वर्ना तेगो की तुम्हारे मैं उड़ा दूँ धज्जियाँ ।
 अपने ही घर में बड़े हैं आप हैं कुछ भी नहीं, हो गया मालूम यह हैं आप कैसे पहलवाँ ।
 साबिका तुमको बहादुर से पड़ा कोई नहीं, है यही बाइश कि करते जा रहे हो शोखियाँ ।
 सुनके ये अलफ़ाज बोले लोग सब वाजिब नहीं, ग़ौर वाजिब है कहा लोगों ने हो कर हम जबाँ ।
 मना फ़ौरन रामचन्दर ने इशारे से किया, और बुलाया पास अपने रोक दी उनकी जबाँ ।
 राम उठ कर तब ऋषी से इस तरह कहने लगे, जैसे रोशन आग पर पानी है पड़ता नागहीं ।

माफ़ इसको कीजिए, यह जानता कुछ भी नहीं, वना क्या मक़दूर इसकी और क्या ताबोतवाँ । गर खता होती है बच्चे से तो ये दस्तूर है, शाद होते हैं गुरु जी और उसके बापो माँ । सुनके ये अल्फ़ाज़ कुछ खामोश-से थे परसुराम, फिर कहा आहिस्ता कुछ लछमन ने इसके दर्भियाँ । भृगुकेतू जी के दिल में फिर बहुत जोश आ गया, वो मुखातिब राम से हो कर हुए आतिशबयाँ । भाई तो तेरा है टेढ़ा और है यह गुनहगार, हो बज़ाहिर जिस्म गोरा, इसमें है जुल्मत निहाँ । बातें ज़हर आलूद इसकी है नहीं शीरीं दहन, तुझ-सी खसलत इसमें हो इसका नहीं वहमो गुमाँ । कुछ नहीं इसको अदब मेरा न इसको खौफ़ है, यह नहीं मुझको समझता मौत का अपनी निशाँ । फिर कहा लछमन ने गुस्सा ऐ मुनीजी थूक दो, अब धनुष टूटा हुआ जुड़ जाय, मुमकिन है कहाँ । इस धनुष ही के लिए गर आप को इसरार है, इसके जुड़ जाने की भी कोशिश करेंगे हम यहाँ । हम बुलाते हैं किसी को इस धनुष को जोड़ने, है अगर सन्ना कोई और कोई कारेदाँ । ऐसा कहने से जनक पर खौफ़ तारी हो गया, कह उठे—ऐसा न कहिये गैर वाजिब है बयाँ । लोग सब कहने लगे छोटा है शहज़ादा निडर, खौफ़ से डरने लगे सब मरदोजन पीरोजवाँ । लक्ष्मण जी की ये जुरंत और दिलेरी देख कर, भृगुकेतू की जशारत हो रही थी नातवाँ । रख के एहसाँ राम पर कहने लगे यों परशुराम, तरह दे जाता हूँ मैं अब छोड़ देता हूँ यहाँ । इसकी सूरत और सीरत की यही होगी मिसाल, जैसे सोने के घड़े में ज़हर हो कोई निहाँ । सुनके ये बातें ज़रा लक्ष्मण ने फिर कुछ हँस दिया, राम ने तिरछी नज़र से उनको देखा नागहाँ । खौफ़ से भाई के लक्ष्मण जी हुए खामोश तब, जाके बैठे वह गुरु जी अपने बैठे थे जहाँ । जोड़ कर हाथ इस तरह कहने लगे फिर रामचन्द्र, आप इस बच्चे के कहने से न हो कुछ बदगुमाँ । असल में पूछो तो मुझसे भूल यह सरज़द हुई, इसमें लछमन की खता का कुछ नहीं नामोनिशाँ । जो सज़ा हो या जज़ा उसका तो मैं हकदार हूँ, जल्द सादिर कीजिए जो हुक्म हो हाज़िर है जाँ । फिर मुनी बोले कि वह गुस्सा मेरा किस काम का, जब तेरे भाई की गरदन पर न हो फंजर दवाँ । आज मेरे पास है वह तेरा जिसके खौफ़ से, लरज़बर अन्दाज़ होते हैं बहादुर पहलवाँ । हामिला का भी अभी इस्खात हो जाये हमल, और ये क्षत्री का बच्चा हो रहा है बदज़बाँ । क्यों तबियत मेरी बदली क्यों नहीं चलती है तेरा, हाथ क्यों उठता नहीं गो दिल में है सबकुछ निहाँ । रहम क्यों दिल में मेरे है इस तरह छाया हुआ, किसलिए मुझको हैं सहनी पड़ रही रसवाइयाँ, सर झुका कर फिर कहा लछमन ने बेशक ऐ मुनी, आप क्या फ़रमा रहे हैं और हैं क्यों गुलफ़िशाँ । रहम खाने पर भी इतने तेज़ हो जाते हैं जब, हालते गीज़ो गज़ब का ज़िक्र कैसे हो बयाँ । यों जनक से क्रह उठे हो कर मुखातिब परसुराम, रह नहीं सकती है अब इस तिफ़ल के क़ालिब में जाँ । मेरी नज़रों से इसे क्यों दूर कर देते नहीं, है अभी नौ उम्र लेकिन है बड़ा यह बदज़बाँ । आँख अपनी मूँद लो कोई न आयेगा नज़र, यों कहा लछमन ने उनसे होके खुद खनदा दहाँ । राम से कहने लगे इस तरह वो—ऐ बदशऊर, तोड़ कर उल्टा धनुष तू बन गया जादूबयाँ । कह रहा है सब तेरी हिम्मत पे ये भाई तेरा, और तू इस तरह बनता है हमारा मवहूवाँ । राम है जो नाम तेरा आज से वह छोड़ दे, वना हो जाये यहाँ मैदान में ही इम्तेहाँ । छोड़ कर यह सब बनावट मुझसे लड़ जी भरके आज, वना तुम दोनों का बाक़ी मैं न रक्खूंगा निशाँ । राम बोले आपके आगे है हाज़िर सिर मेरा, है मुनासिब गर तो तेरा कीजिए इस पर रवाँ । आप ही मालिक मेरे और आपका खादिम हूँ मैं, आप हैं एकता बहादुर और मैं हूँ नातवाँ ।

आपको समझा बहादुर इसलिए उसने कहा, वना वह इस तरह से होता नहीं आतिशयों। नाम से वाकिफ था लेकिन तुमको पहचाना नहीं, आ गया कुछ जोश दिल में है जो रंगे खानदा। भेष में आते मुनी के तुम, कदम वह चूमता, हो गया धोखा उसे, आये जो बन कर पहलवा। आप हैं मखदूम मेरे आपका खादिम हूँ मैं, आपके हूँ मैं बराबर, बात यह मुमकिन कहा। राम मेरा नाम छोटा आप तो हैं परसुराम, आप ताकत में बड़े हैं और मैं हूँ नातवा। एक ही गुण हम में है वह यह कि रखते हैं धनुष, आप नी गुण के हो मालिक बात है सब पर अया। आस्तिकता शम, शमा, विज्ञान, दम, तप, सरलता, ज्ञान, शोच—आगाह इनसे है हर एक खुदोंकला। की ऋषी की हर तरह मिश्रत समाजत राम ने, गीज में हँस कर कहा—तू है बड़ा रत बुल लसा। क्या मुझे खाली ब्राह्मण ही है समझा राम तू, मेरे बशरे से सिपाही के भी जोहर हैं अया। मौत के घाट उतरे मेरे हाथ से राजा कई, हो गये ताराज गुंसे हैं न बाकी अस्थिया। लश्करे जरार उनके हो गये ताराज यों, जिस तरह जलती हवन के कुण्ड में हो लकड़िया। तू ने जो तोड़ा धनुष को हो गया मगरूर भी, तेरी नजरों में ही समाता नहीं है सब जहाँ। राम यूँ कहने लगे महाराज क्या कहते हैं आप, नाज मैं क्यों कर कलूँ और मैं कलूँ क्यों शेखिया। वह पुराना था धनुष टूटा तो क्यों हैरत हुई, क्या थी उसमें आन बानो क्या थी उसमें मेरी शा। आपका गुस्सा बहुत है और खता मेरी है कम, आपके मेरे नहीं कुछ भी तनामुष दरमिया। आवे कोई गर मुकाबिल मुस्तद्द लड़ने को हैं, हम उड़ा देंगे अभी मैदाँ में उसकी धज्जिया। क्षत्रिय हो कर के अगर मैदान से भागे कोई, वह बहादुर ही नहीं है, बल्कि नंगे खानदा। खास कर मेरे घराने का यही दस्तूर है, मौत भी आ जाए तो भिड़ जाएँ उससे बेगुमा। जो ब्राह्मण से हो खायफ़ खौफ़ उसको कुछ नहीं, हर लड़ाई में वो हो जाता है खुद नुसरत निशा। राम ने जब यह कहा उनकी समझ में आ गया, हो गया नूरे हकीकत क़त्व में जलवा कुना। दे के अपना ही धनुष कहने लगे यह परसुराम, खींच कर इसको करो खत्म अब मेरा वहमो गुमा। वह धनुष उस जगह से गायब यकायक हो गया, कुछ समझ में ही न आया वह गया आखिर कहा। कुदरते कामिल की उनके हो गये वह मोतरिफ़, हो गई पैदा अक्रीदत हो गये वो शादमा। हर तरह वह राम की तारीफ़ करने लग गये, और सच्चे दिल से इनके हो गये वह मदहसूवा। आपके दर्जे से नावाकिफ़ था सब कुछ कह दिहा, इसलिए मैं बात करने में रहा हूँ बदजबा। आप दोनों भाई कर दें मेरी ग़लती को मुआफ़, दरगुज़र करके खता को बरस दें अब मेरी जा। जय का नारा फिर लगाया राम जी के नाम का, भृगुकेतू हो गए तप करने को वन की रवा। कुछ बिगड़ कर कह दिया था जिन महाराजाओं ने, देख कर यह हाल उनमें भी न थी ताबो तवा। दिल में सोचे राम जी से हार बैठे परसुराम, हम कहाँ कमजोर बुज्जदिल, राम की ताकत कहा। अपनी-अपनी जाय से जल्दी से उठ कर चल दिये, छोड़ कर सारा दिखावा, छोड़ कर सब इज्ज़ां शा। रह गये जो बाकी वो सब हो गये मसरूरो ख़ुश, राजये आली जनक बेइन्तिहा थे शादमा। और सीता का तो सब खौफ़ो खतर जाता रहा, जान के लाले पड़े थे, आ गई फिर जाँ में जाँ। पाँव त्रिश्वामित्र के पड़ कर जनक कहने लगे, आपके बाअस हुए हैं राम-लक्ष्मण कामरा। आपका जो हुक्म हो उसके मुआफ़िक़ काम हो, मुझको अब क्या चाहिए करना, यह कीजेगा बया। यों ऋषी कहने लगे जो शर्त की थी आप ने, हो गई पूरी वह पहले ही ये सब पर है अया। अब मरासिम आप शादी के करें दस्तूर से, जिस तरह बोले पुरोहित और घर की बुढ़िया।

राजाए दशरथ को भी इस बात की कीजे खबर, ताकि वह भी जल्द आ जाएँ यहाँ बाइज्जो शाँ । राजा दशरथ के यहाँ भेजे गये पैगामवर, और वहाँ सजने लगी हर एक गली, हर एक दुकाँ । हो गया हुक्म एक मंडप बनाने के लिए, हों जवाहरदार खम्भे मोतियों की हो कमाँ । नक्शकारी में भी दिखलाई गई कारीगरी, और बना ऐसा कि दुनिया में न था ऐसा मकाँ । दीद के काबिल थी उस फर्श और पदों की बहार, हर तरफ़ थे झाड़ लटके और तिलाई शमादाँ । राम और सीता की शादी हो रही हो जिस जगह, उस जगह की किस तरह रौनक करे कोई बयाँ । दूत जब पैगाम को ले कर अयोध्या आ गये, देख कर खुश हो गये उस शहर की हर एक शाँ । दर पे राजा के पहुँच कर अर्ज करवाया पयाम, याद फरमा कर किया राजा ने उनको शादमाँ । खुद ही ली राजा ने चिट्ठी हाथ में एजाज से, हो गये बेहद वो खुश और हो गये वो शादमाँ । राम-लक्ष्मण की मुहब्बत दिल पे उनके छा गई, हाथ में चिट्ठी थी लेकिन वन्द थी मुँह में ज़बाँ । कह नहीं सकते थे चिट्ठी में है क्या लिखा हुआ, और मुहब्बत के थे आँसू आँख से उनके रवाँ । आखिरस कुछ ठहर कर राजा ने चिट्ठी को पढ़ा, हो गये मुन कर खुशी की यह खबर सब शादमाँ । भरतजी थे खेलते बाहर कहीं भाई के साथ, हाल उस चिट्ठी का सुन कर दौड़ कर आये वहाँ । बाप से पूछा कि खत किसका है यह फरमाइए, हैं जो प्यारे भाई मेरे—आज-कल हैं वो कहाँ । खत में जो लिखा था मुन कर हो गये मसरूर वो, धनुष्य और भरत का दरवार था सब मदहसूवाँ । नामाबर से राम और लछमन की पूछी खैरियत, दस्त-वस्ता उसने की यों अर्ज—ए शाहे शहाँ । आप हैं तकदीर वाले आप का क्या पूछना, आपके दोनों पिसर हैं आज एकताये जहाँ । आप हम से पूछते हैं कैसे पहचाना उन्हें, सूर्य को क्या देखता है कोई ले कर शमादाँ । राजा महाराजा बहुत आये स्वयम्बर में मगर, उस धनुष को तोड़ने में राम निकले कामराँ । रावनो बानासुर जैसे भी हुए माजूर सब, आये थे जितने बहादुर हो गये वो नातवाँ । राम ने शिव के धनुष को तोड़ डाला इस तरह, तोड़ता है जिस तरह हाथी कमल की डालियाँ । हाल यह सुन कर धनुष का आ गया गुस्मा बहुत, परमुराम आये जनकपुर और थे आतिश बयाँ । आखिरस जब राम की ताकत का अन्दाज़ा हुआ, हो गये वापव हवाले कर दिये तीरोंकमाँ । राम जैसे हैं बहादुर वैसे ही लक्ष्मण भी हैं, जिनके चेहरों से हैं आसारे जवाँबस्ती अयाँ । दोनों शहजादाँ को जब से हमने देखा है शहा, अब समाता ही नहीं नज़रों में कोई पहलवाँ । गरचे दशरथ ने दिया ईनाम दूतों को बज्र, ये खिलाफ़े धर्म था इसको वो ले लेते कहाँ । खुश हुए सब लोग इनका यह तरीका देख कर, धर्म के पाबन्द पा कर इनको सब थे शादमाँ । तब महाराजा गुरु वशिष्ठ जी के घर गये, नामाबर से जो सुना था सब किया उनसे बयाँ । जो कहा राजा ने उसको नामाबर ने भी कहा, सुनके ये अहवाल वो भी हो गये बम शादमाँ । यों कहा उनसे गुरु ने तुम मुजसिम नेक हो, काम आई हैं महाराजा तुम्हारी नेकियाँ । हुक्म दे दीजे महाराजा कि सब हो इन्तज़ाम, हो बरात अब जल्द अयोध्या से जनकपुर को रवाँ । फिर महल में जाके अपने कह दिया सब खत का हाल, हो गई खुश और खुरम जिसको सुनके रानियाँ । रानियों ने अपने सीनों से लगाया ले के खत, और महाराजा ने दोहरा कर किया सारा बयाँ । फिर हुई खैरात और ईनाम भी बटने लगे, इस क़दर दौलत लुटी जैसे बहे आबे रवाँ । जब खबर शहरे अयोध्या में हुई मशहूर ये, कूचओ बाज़ार में सजने लगी हर एक दुकाँ । रंगबिरंगी थीं कमानें और परदे भी चँवर, तोरनो झालर बँधी थीं और बँधी थी झंडियाँ ।

फूल बरसाये गये हर कूचों बाजार में, इत्र से सब थे मुअत्तर और थे अम्बरफिशाँ।
 थे खड़े हर जा नक्रीब आदाब कहने के लिए, और कहीं बैठे हुए थे ब्राह्मण भी वेदख्वाँ।
 अब रवाना हो रही है यह अयोध्या से बरात, चोट डंके पर लगी चलने लगा आगे निशाँ।
 हो गया मालूम सबको चल रहा है अब जूलूस, औरतें गाने लगीं मिल कर मृदारकबादियाँ।
 भरत ने आ कर किया खुद अस्तबल में इन्तजाम, क्या कहूँ मैं किस क्रूर खुशरंग थे अस्पेदवाँ।
 एक से था एक घोड़ा तेज अपनी चाल में, चाल भी ऐसी थी उनकी जैसे चमके बिजलियाँ।
 एक घोड़े पे थे राजा भरत जी भी खुद सवार, और जो घोड़े थे बाकी उन पे थे सब नौजवाँ।
 हो गये सब लोग जब इस तरह घोड़ों पर सवार, साथ हर घोड़े के पैदल चल रहे थे दो जवाँ।
 और रथों की किस तरह तारीफ़ लिख सकते हैं हम, फ़र्श ज़र्रीं जिनमें था बजती थी जिनमें घंटियाँ।
 और हाथी भी ज़िलों में चल रहे थे सैकड़ों, थी अमारी भी बरंगे सव्जो मुखों जाफराँ।
 सब लवाजिम थे शहाना पालकी भी खास थी, जिसमें बैठे थे ऋषी भी और ब्राह्मण वेददाँ।
 अपने-अपने मरतबे से हो गये उन पर सवार, ऊँट भी घोड़े भी थे रथ भी थे और थी गाड़ियाँ।
 और दो रथ आ गए आरास्ता पैरास्ता, एक में थी सादगी और दूसरे में इज्जो शाँ।
 पहले रथ में तो गुरुजी को बिठाया ग्राह ने, दूसरे में खुद हुए रौनकफिजा जलवाकुनाँ।
 शंख की आवाज़ जब गूँजी तो आगे बढ़ चले, वज्र रही थी और बाजों की तरह शहनाइयाँ।
 हो रहे थे लुफ़ से खेल और तमाशे जा बजा, थे जवाँमर्दी के करतब देख कर सब मदहूख्वाँ।
 और जो बहुरूपिये थे रूप भरते थे वो खूब, देख कर जिनको हँसी से लग रही थी हिचकियाँ।
 हर तरफ़ छाई खुशी थी और शुगूँ भी नेक थे, ऐसे वो ज़ाहिर हुए जिनका न था कोई गुमाँ।
 राजा दशरथ आ रहे हैं जब वहाँ पहुँची खबर, उनकी अगवानी की होने लग गई तैयारियाँ।
 जा बजा खेमे लगे और पुल भी दरिया पर बने, और नौकर भी मुकर्रर हो गये राहतरसाँ।
 आ गई जब कुर्ब में शहरे जनकपुर के बरात, पेशवाई को चले अहले जनकपुर शादमाँ।
 खाने-पीने का बहुत सामान भिजवाया गया, और सवारी के लिए हाथी भी और अस्पेदवाँ।
 जेवर और कपड़े भी भिजवाये गये थे भेंट में, और चीज़ें भी थीं लेकिन हम करें क्या-क्या बयाँ।
 ये तहायफ़ पेश जब राजा की खिदमत में हुए, देख कर इनको हुए महाराजा दशरथ शादमाँ।
 जिन को जो देना था उसमें से उन्हें भी दे दिया, मखमलो कमलाबो अतलस भी बँटा और परनियाँ।
 बँट गया ईनाम जब फिर बढ़ गई आगे बारात, जिस जगह जनवासा था वो ले गये इनको वहाँ।
 ऐसा आलीशाँ जनक ने उनको जनवासा दिया, जो कि खुद के और दशरथ के भी था शायाने शाँ।
 हर तरह के ऐश का सामाँ वहाँ मौजूद था, था किसी को भी न उस सामान का शानों गुमाँ।
 लोग अपनी अपनी जा पर जब फ़रोक़स हो गये, हो गये मसरूफ़ खातिर में हर एक के मेज़बाँ।
 बाप के आने की दोनों को हुई जिस दम खबर, राम और लक्ष्मण हुए बेताब जाने को वहाँ।
 खौफ़े विश्वामित्र से कुछ कह नहीं सकते थे वो, दिल में उलफ़त थी पिदर की बन्द थी लेकिन जवाँ।
 जब मूनी पर हाल बेताबी का उनके खुल गया, खुश हुए होने लगे आँसू मुहबत के रवाँ।
 लेके दोनों शाहजादो को मूनी उस जा चले, राजये आली अयोध्या के फ़रोक़स थे जहाँ।
 राजा दशरथ ने जो देखा आये हैं कौशिक ऋषी, और दोनों दिल के टुकड़े है बसद इजलालोशाँ।
 दौड़ कर आये मुनी के वो क्रदम को चूमने, और हुए बेताब फर्ने ऐश से शाहेंशहाँ।
 दी मुनी ने उनको सीने से लगा कर के दुआ, बाप की ताज़ीम की झुक कर मिले शहजादगाँ।

दोनों बेटे बाप के कदमों पे जा कर गिर गये, देख कर उनको हुए महाराजा दशरथ शादमाँ ।
 था जुदाई का जो उनको रंज वह सब मिट गया, हो गई हासिल खुशी फिर आ गई कालिब में जाँ ।
 जो वशिष्ठ उनके गुरु थे उनसे भी बढ़ कर मिले, और जो थे ब्राह्मण वो भी हुए सब शादमाँ ।
 अपने भाई भरत से और शत्रुघन से भी मिले, किस कदर थी उनमें उलफ़त हो नहीं सकती बयाँ ।
 और सब छोटे बड़ों से भी मिले फिर रामचन्द्र, था तरीका मिलने का हर एक के शायानेशाँ ।
 सब ने जब राजा को देखा चार फरज़न्दों के साथ, इन्द्रयादे शौक से होने लगे वो गुलफ़शाँ ।
 एक दिन शादी से पहले आ गई थी यह बरात, छा गई थी शहर पर गोया बहारे जावेदाँ ।
 राजा दशरथ की हर एक जा कर रहे तारीफ़ थे, राजए मिथिलेश के भी लोग थे सब मदहूँखाँ ।
 राम और सीता की वह जोड़ी निहायत खूब है, सब यही कहते थे सब के था यही विरदे ज़बाँ ।
 सब यही कहते थे सीता जो यहाँ जब आएँगी, उनके लेने को ये दोनों भाई आएँगे यहाँ ।
 हमको हासिल इनका दरशन इस तरह हो जाएगा, घन हमारे भाग हैं यह है उसी की खूबियाँ ।
 शत्रुघन और भरत का भी हो रहा था जिक्रखैर, हो रही थी गुप्तगू पुरलुफ़ सबके दरमियाँ ।
 भरत तो है राम के बिलकुल मुताबिक शक्ल में, शत्रुघनजी पर हुआ करता है लछमन का गुमाँ ।
 चारों शहजादों की शादी हो हमारे शहर में, कहते थे आपस में यह मिथिलापुरी के साकिनाँ ।
 था महीना यह अवन का और थी हेमन्त ऋतु, अच्छी सायत चाहते थे वाकिके सँयारगाँ ।
 थे पुरोहित जो शतानन्द शौक से आगाज़ की, राजये आली जनक के हुक्म से तैयारियाँ ।
 जब कि शादी का यहाँ सामान सब कुछ हो गया, अर्ज जनवासे में करवाई गई, आवें यहाँ ।
 हुक्म दशरथ ने दिया खुश होके चलने के लिए, चोट डंके पर लगी और हो गये वो सब रवाँ ।
 ब्राह्मण साधू जो थे सब शाद थे वरशाश थे, ऐशो इशरत का समाँ चारों तरफ़ जलवाकुनाँ ।
 हुस्ने नौशा देख कर हर शरस दीवाना हुआ, सब यही कहते थे कर दें राम पर कुर्बान जाँ ।
 जेतरोँ मलबूस शाहाना थे जिनके जिस्म पर, और चेहरे पर थी रीनक हुस्न की बिलकुल अयाँ ।
 भाई सब उनके थे अपने अपने घोड़ों पर सवार, जो दिखाते जा रहे थे चाल में भी शोखियाँ ।
 अस्पे नौशा की बयाँ तारीफ़ कर सकते नहीं, लाख लस्सानी करे कोई अगर रतबुल लसाँ ।
 जब बरात आयी जनक जी के महल के कुर्ब में, शोर से बाजाँ के गूँज उठे जमीनों आसमाँ ।
 औरतें जो माहूँ थीं अपनी मीठी राग से, गा रहीं थी फ़र्ते शादी से मुबारकबादियाँ ।
 देख कर नौशाह को होने लगे सब शादमाँ, एक महारानी सुनैना और दीगर रानियाँ ।
 सास दरवाजे पे आके ले गई नौशाह को, सब मरासिम की अदा हसबे तरीके खानदाँ ।
 शादीखाने में बिठाया शान से नौशाह को, थे जहाँ मौजूद सारे अक़बबा और मेहमाँ ।
 लालो माँती और कपड़ों की कमी कोई न थी, वार कर नौशाह पर से दे रहे थे दोस्ताँ ।
 राजा दशरथ की तवाजे की जनक जी ने बहुत, एक से थे एक बढ़ कर शादो खुर्रम समधियाँ ।
 लाके बिठलाया वशिष्ठ को और विश्वामित्र को, सब को बुलवाया जनक ने होके बेहद शादमाँ ।
 राजा दशरथ की बड़ी तारीफ़ और तौसीफ़ की, जज़बये अख़लाक़ से दी नज़र भी शायानेशाँ ।
 और जितने थे बराती की मुदारात उनकी भी, जिनको जो देना था दे कर हो गया खुश मेज़बाँ ।
 कुल पुरोहित थे शतानन्द उनसे ये बोले वशिष्ठ, लाइए दुल्हन को जा कर देर है अब क्यों यहाँ ।
 जब खबर अन्दर गई दुल्हन को बाहर भेजने, निकली दुल्हन को लिए गाती हुई हमजोलियाँ ।
 हो नहीं सकता बयाँ दुल्हन के उस सिंगार का, औरतें दुनिया की सब कर दें निछावर अपनी जाँ ।

मुझसे दुल्हन का कोई पूछे अगर हुस्नो जमाल, कर सकूँ उसको बयाँ, मुझमें ये ताकत है कहाँ । जब दुल्हन को लाके बिठलाया गया दूल्हे के पास, वेद के मंतर पढ़े मौजूद जो थे वेददाँ । और भी जो जो मरासिम घर में होते आये हैं, दोनों जानिब से हुए पूरे बतजें खानदाँ । वेदपाठी जो ब्राह्मण थे वो करवाये हवन, जिसकी खुशबू से महक उठे जमीनों आसमाँ । तब सुनैनाजी महारानी को बुलवाया गया, बेबदल थी जिनकी सजधज थी अनोखी जिनकी शाँ । बैठी जब आ कर जनक के पास ये बाँयें तरफ़, सामने नौशह के रक्खी दो सुनहरी धालियाँ । पैर दूल्हा और दुल्हन के धोये अपने हाथ से, और कन्यादान दे कर हो गये वो शादमाँ । तब पुरोहित दोनों जानिब के कराये शास्त्रोचार, और गठ-बन्धन हुआ और पड़ गई फिर भाँवरों । हाथ से नौशह ने सेंदुर जब दिया दुल्हन के सर, उसकी है तफ़सील लिखने से मेरी कासिर जब्बाँ । दूल्हा और दुल्हन को एक मसनद पे बिठलाया गया, देव कर इनको हुए महाराज दशरथ शादमाँ । फिर जनक ने मांडवी श्रुतकीर्ति और उर्मिला, उनको भी बुलवा लिया जो तीन थी शहजादियाँ । उनके भाई कस्व ध्वज की थी जो बेटी मांडवी, भरत से शादी हुई थी जिनमें लाखो खूबियाँ । और सोता की बहन छोटी जो वो थीं उर्मिला, करके शादी उनकी लक्ष्मण से हुए सब शादमाँ । हो गई उनकी भी शादी शत्रुघ्न राजा के साथ, थीं श्रुतकीर्ति जो तीसरी बाकी वहाँ । देखा जब चारों बहू को चारों फर्जन्दों के साथ, हो गये महाराजा दशरथ शादमानो कामराँ । तीनों शहजादों की भी शादी हुई उस शान से, जिस तरह की हमने आगे राम की शादी बयाँ । फिर जहेज अनवाअ और अक्साम का लाया गया, उनकी मैं तफ़सील कुछ भी कर नहीं सकता बयाँ । थे जवाहर बेबहा और खिलजतें अनमोल थीं, रथ भी थे गाये भी थीं हाथी भी थे अस्पे दवाँ । सारा ये सामान पेशे राजाए दशरथ हुआ, देख कर जिनको हुए महाराजा दशरथ शादमाँ । जो मुलाजिम मुस्तहक थे उनको मुँह माँगा दिया, उनका पल्लो भर दिया जो थे गरीबो बेकसाँ । बच गया जो कुछ वह जनवासे में सब भेजा गया, तब जनक जी दस्तबस्ता यों हुए गौहरफशाँ । जो ब्राह्मण आप सब हैं उनका एक नौकर हूँ मैं, आपकी कुछ हो सके सेवा यह मुमकिन है कहाँ । फिर मुखतिब हो के दशरथ से जनक ने यह कहा, ऐ करमकरमाय बन्दा ऐ शफ़ोके मुखलिसाँ । आप से रिश्ता जो जोड़ा हो गई इज्जत बड़ी, बढ़ गया खतबा हमारा बढ़ गई है इज्जो शाँ । आज से हम दोनों भाई हो गये अदना गुलाम, है हुक्मूत आप ही की, आप ही हैं हुक्मराँ । मेरी चारों लड़कियाँ अब आपकी बहूएँ हुई, कीजिए इन पर इनायत और रहिए मेहरबाँ । आप जो तकलीफ़ फर्मा कर यहाँ पर आये हैं, दरगुजर करने के काबिल है मेरी गुस्ताखियाँ । राजा दशरथ ने जनक की भी बड़ी तारीफ़ की, दोनों समधी एक-से थे एक बढ़ कर शादमाँ । हो के फ़ारिश फिर गई जनवासे को वापस बरात, दूल्हा दुल्हन को उठा कर ले गई हमजोलियाँ । जेवरो मलबूस से थे किस क़दर आरास्ता, हुस्न की नौशह के हो सकती नहीं खूबी बयाँ । फिर जनाने में भी पूरे हो गये सारे रसम, होते आये जो अदा हसबे रिवाजे खानदाँ । थे जो हमसिन रस्म की लँकोर की फ़ौरन अदा, कर रहे थे सब बराबर वाले मिल कर शोखियाँ । दूल्हा और दुल्हन को जनवासे में फिर लाया गया, आ गई गोया चमन में फिर बहारे जावेदाँ । शाद और आबाद ये चारों दुल्हन-दुल्हा रहें, दे रहे थे यह दुवा दिल से उन्हें पीरोजवाँ । फिर बसद फ़र्तें खुशी मेहमान सब तशरीफ़ लाये, क्योंकि तैयारी वहाँ दावत की थी शायाने शाँ । राजा दशरथ के जनक ने पाँव धोये हाथ से, पाँव ओरों के भी धोये मिल के बैठे समधियाँ ।

सैकड़ों अक्साम के खाने वहाँ मौजूद थे, जोकि हो सकते थे मुश्किल से नसीबे खुशरवाँ ।
 थीं कई नमकीन चीजें और मीठे बेशुमार, चार हैं अक्साम जो खाने में मशहूरे जहाँ ।
 चूसने के चाबने के चाटने पीने के भी, बस यही अक्साम हैं आगे हुआ जिनका बयान ।
 पुरतक्कलुफ़ थी जियाफत पुरतक्कलुफ़ इन्तज़ाम, क्यों न हो मेहमान सब खुश जब जनक हों मेज़बाँ ।
 जब कि आगाज़े तनावुल समधियों ने कर दिया, और मजाक़न समधनों में हो रहीं थी गालियाँ ।
 जिनको सुन कर हँस रहे थे राजा दशरथ और सब, क्योंकि ये थीं वक्त्र की वेबाक़ियाँ गुस्ताखियाँ ।
 पा के खाने से फ़रागत लोग सब उठ कर चले, हाथ मुँह धो कर लिये पान और फूल और इत्रदाँ ।
 ख़त्म जब खातिर हुई वापिस गये जनवासे को, हो गये महाराजा दशरथ शादकामो शादमाँ ।
 जिस तरह से धूम और यह शान की दावत हुई, मूढ़ताँ ऐसे हुए जलसे जनक जी के यहाँ ।
 राजा ने मुनियों को बुलवाया गुरु से करके अर्ज, और की हर तरह ख़िदमत जो कि थी शायाने शाँ ।
 ब्राह्मण जो थे उन्हें बख़्शे जवाहर और गाय, दी दुआ राजा को सबने हो के बेहद शादमाँ ।
 हर मुलाज़िम को उम्मीदों से भी ज़्यादा मिल गया, राजाए दशरथ थे मातहतो के अपने क़द्रदाँ ।
 राजा दशरथ हर घड़ी कहते थे विश्वामित्र से, आप ही की मैं दया से हो गया हूँ शादमाँ ।
 राजा दशरथ वापसी के वास्ते कहते थे रोज़, रोक रखते थे बहुत इसरार करके मेज़बाँ ।
 सब जनकपुर इस तरह था मख़ज़ने ऐशोसरूर, नित नई तक्रोब थी हर रोज़ और जलसे वहाँ ।
 यों ही जब कुछ रोज़ गुज़रे तब शतानन्द ने कहा, राजा दशरथ को इजाज़त दीजिए जो हों रवाँ ।
 वापसी की जब ख़बर फैली जनकपुर शहर में, दिल उदास होने लगे और छा गयीं ख़ामोशियाँ ।
 ठहरने का खाने-पीने का हुआ सब इन्तज़ाम, राह के आराम की होने लगी तैयारियाँ ।
 कर दिया लालो जवाहर सीमोज़र राजा के साथ, हाथी और गायें भी थी और भैंस और अस्से दवाँ ।
 इस तरह सब कुछ जनक ने फिर मूक़र्रर दे दिया, हो गया सब साज़ो सामाँ यह अयोध्या को रवाँ ।
 जब ख़बर इस ख़ुबसती की हो गई रनिवास में, हो गई अफ़सुर्दा दिल पज़मुर्दा सूरत रानियाँ ।
 कहती थीं वो गोद में सीता को ले कर प्यार से, तुम रहो हर वक्त्र शादो कामगारो कामराँ ।
 और अटल बन कर रहे क़ायम तुम्हारा यह सुहाग, तुम रहो शौहर के ताबे वह तुम्हारे क़द्रदाँ ।
 तुम श्वसुर की सास की हर दम रहो ख़िदमतगुज़ार, मज़िये शौहर पे चल कर खुश रहो और शादमाँ ।
 बीवियों के जो फ़रायज़ हैं वो सिखलाये गये, दुल्हनों से मिल के शादाँ हो गई सब रानियाँ ।
 भाइयों के साथ मिलने राम अन्दर आ गये, सास ने मोती निछावर किये हो कर शादमाँ ।
 राम ने माँगी इजाज़त घर को जाने के लिए, सास की आँखों से होने लग गये आसूँ रवाँ ।
 दुल्हनों को शाहज़ादाँ के हवाले कर दिया, मुँह से कुछ कहने न पायीं हो गई वो बेज़बाँ ।
 राम ने भी सास को अपनी तसल्ली दी बहुत, बात ऐसी की जो थी मीठी भी और राहतरसाँ ।
 दुल्हनें जाती हुई यों अपनी माँओं से मिलीं, जिस तरह कम उम्र बछड़ी छोड़ती हैं अपनी माँ ।
 तोता-मैना जिनको सीता ने रखा था पाल कर, पिंजराँ से कह रहे थे, प्यारी सीता है कहाँ ।
 जब परिन्दे हिज़्र में उनके थे इतने बेकरार, क्यों न हो इन्सान बेकल, बात है बिल्कुल अयाँ ।
 राजाए मिथलेश भी भाई के हमरह आ गये, साबिरो जाबित थे लेकिन कुछ न था ताबोतवाँ ।
 पालकी मँगवा ली जब सब दुल्हनों से मिल चुके, और बिठलाया हर एक दुल्हन को उसके दरमियाँ ।
 जो फ़रायज़ उनके थे वो सब उन्हें बतला दिये, और समझाया उन्हें जो था तरीक़े खानदाँ ।
 सैकड़ों नौकर दिये साथ उनके जाने के लिए, जब हुई ख़ुसत तो आये देखने पीरोजबाँ ।

उनको पहुँचाने वज्जीरों को लिए राजा गये, हो गये दशरथ रवाना बढ़ चला आगे निशाँ। राजा दशरथ कह रहे थे यह जनक से बार बार, आप अब तकलीफ़ फर्मियें न मेरे मेहरबाँ। आखिरस दशरथ उतर कर रथ से अपने रुक गये, तब जनक कहने लगे इनसे कि ऐ शाहेशहाँ। आपने इज्जत बढ़ाई मेरी और तौकीर की, आपका ममनूँ रहूँगा जिस्म में जब तक है जाँ। राजा दशरथ ने भी समधी-की बड़ी तारीफ़ की, उनके गुण और शील गाने लग गये थे, मदहुरखाँ। चारों दामादों से भी राजा जनक जा कर मिले, मिल के विद्वामित्र से भी हो रहे थे शादमाँ। जब जनक वापस हुए बढ़ती चली आगे बरात, मंजिलों पर ठहरती पहुँची अयोध्या थी जहाँ। जब अयोध्या के करीब आये तो दी डंके पे चोट, जिस कदर बाजे खुशी के थे हुए सब नगमाखाँ। जब खबर पहुँची अयोध्या में कि आती है बरात, हो गये सब शादोभूर्रम हो गये सब शादमाँ। महले शाही की तो रौनक का बयाँ मुमकिन नहीं, शहर का था हर मकान आरास्ता, हर एक दुकाँ। जब महल पर राजाए दशरथ के ये पहुँची बरात, पेशवाई के लिए आयी महल से रानियाँ। ऊद और काफूर इतना जल रहा था वेशुमार, हर तरफ़ फैला हवा में उसकी खूशबू का घुआँ। औरतें जिस दम छतों से देख कर हट जाती थीं, यों नज़र आता था जैसे हैं चमकती बिजलियाँ। चारों दुलहन और दूल्हों को ले गये रनिवास में, सब मरासिम की अदा हसबे रिवाजे खानदाँ। पाये अन्धा आँख या बीमार पाये जब शफा, उनको जैसी हो खुशी वैसी हो खुश थी रानियाँ। राजा दशरथ ने दिये कपड़े जवाहर सीमोज़र, हो गये खुश पाके ये इनाम अवध के साकिनाँ। और भी जो थे बराती उनको भी तोहफ़े मिले, जिसने जो माँगा वो पाया हो गये सब शामदाँ। हर ब्राह्मण और गाधीपुत्र की सेवा हुई, जिनके थे मरहने मिन्नत राजा और सब रानियाँ। और की खातिर गुरु की अपने हस्बे मरतबा, नेग ले कर दीं दुआएँ हो गये फ़ौरन रवाँ। थे सवासन और नेगी भी वहाँ आये हुए, इस कदर पाया न था जिसका उन्हें शानोगुमाँ। और थे मेहमान जितने वो भी सब रुखसत हुए, राजा दशरथ ने किया हर इक को बेहद शादमाँ। राजाए दशरथ भी खुद रनवास में तशरीफ़ लाये, हर बहू को हर पिसर को देख कर थे शादमाँ। जो मुदारात और खातिर राजा दशरथ की हुई, कर रहे थे सब बयाँ राजा जनक की खूबियाँ। बात खासा वो थी रुखसत हो गये बाक़ी जो थे, ले के गुलदस्ते गुलों के और इत्रो पानदाँ। दुलहनों को हर तरह आराम देने कह दिया, रानियों से यह कहा रखना निहायत शादमाँ। राजा दशरथ जब गये आराम करने ख्वाबगाह, रतजगा करने लगी मिल कर महल की रानियाँ। दूसरे दिन लोग सब हाज़िर हुए दरबार में, और शहज़ादे भी सब मौजूद थे नुमरत निगाँ। गुरु वशिष्ठ कौशिक ऋषी जी को भी बुलवाया गया, धर्म के सब शास्तर मजलिस में करते थे बयाँ। रोज़ ऐसी ही खुशी से हर घड़ी कटने लगी, हर तरफ़ छाई अयोध्या में बहारे जावेदाँ। चन्द दिन रह कर वहाँ कौशिक ऋषी राही हुए, जिस जगह रहने थे ये, था आश्रम इनका जहाँ। राम की शादी के सुनले गर कोई कुछ वाक़यात, हर तरह फूले-फले वो और हो वह शादमाँ। जब हुई ये शादियाँ सब, राजा दशरथ शाद थे, और खुश थीं शाद थीं रनवास में सब रानियाँ। अहलियाने मुत्क भी सब शाद थे आवाद थे, हर तरह का ऐश था मसरूर थे पीरोजवाँ। सब की ख्वाहिश थी कि राजा राम को दें सलतनत, अपने जीते जी बना दें राम को वो हुक्मराँ। रोज़ सुनते थे रिआया की दिली ख्वाहिश को वो, हर कोई करता बयाँ था रोज़ उनकी खूबियाँ। शान की मैं राजा दशरथ का बयाँ क्यों कर कहूँ, सारी दुनिया पे था जिनके नाम का सिक्का रवाँ।

एक दिन ऐसा हुआ आइना ले कर हाथ में, अपने चेहरे को जो देखा, थी जईकी कुछ अर्था। राम को राजा बना दूँ और मैं आराम लूँ, यह खयाल आया महाराजा के दिल में नागर्हा। जा के राजा ने गुरु से अपना मंशा कह दिया, जो छुपा था दिल में उसको कर दिया उन पर अर्था। कुल अजीजो बन्धुर्वा सारे वजीर और सब अमीर, याने थी सारी रिआया राम जी से शादमा। आपकी किरपा से राजा ने कहा सब मिल गया, आपकी सेवा से मैं हूँ हर तरह से कामर्वा। अब मेरी जो आरजू है इसको पूरा कीजिए, राम को मसनदनशीं करके बना दो हुक्मर्वा। आपकी किरपा से ख्वाहिश हो जो ये पूरी मेरी, खत्म हो जाये कि या बाकी रहे उम्मे रवा। सुन के थे गुरुदेव बोले आरजू अच्छी है ये, राजगद्दी की करो महाराज अब तैयारियाँ। जब गुरु जी से इजाजत मिल गई महाराज को, महल से आकर हुए दरबार में जलवा कुना। सब रिआया और वजीरों को भी बुलवाया गया, हाजिरे दरबार शाही सब हुए पीरोजवा। यों कहा महाराज ने सबको अगर मंजूर हो, राम को युवराज करके कीजिएगा हुक्मर्वा। हाथ जोड़े सब वजीरों ने कहा राजा से यों, आपने यह खूब सोचा, हो गये हम शादमा। आपका यह हुक्म सबके वास्ते है जाँफिन्ना, दीजिए जल्दी इजाजत ता करें तैयारियाँ। जिस तरह कहते गुरु हैं आप कीजे इन्तजाम, राजाए दशरथ ने यों फरमाया हो के शादमा। शहर में होने लगी तैयारी सब और इन्तजाम, राजगद्दी के लिए था जिस कदर शायाने शा। चौ तरफ जब यह खबर फैली तो सब खुश हो गये, हो गये बेइन्तिहा खुश सब अवघ के साकिना। राम को भी कुछ सुगून अच्छे नजर आने लगे, होके सीता से किया इशार्द यों खंदावर्हा। भरत को जा कर हुआ अर्सा बहुत ननिहाल में, मैं समझता हूँ कि जल्दी लौट आयेंगे यर्हा। भरत से कितनी मूहब्बत है मैं कह सकता नहीं, वह नहीं हैं पास मेरे, तो नहीं आरामें जा। महल शाही में खबर इस शादमानी की हुई, हो गयी मसरूरो शादी सब महल की रानियाँ। खैर और खैरात जैसी चाहिए होने लगी, बेहिसाब इनाम दीं हर एक को हो कर शादमा। काम यह ऐसा करे जिसमें हो इसका फायदा, यह दुआ दी राम को और हो गयीं खुश उनकी माँ। राजा दशरथ ने कहा उपदेश दीजे राम को, गुरु वशिष्ठ आये महल में राम रहते थे जर्हा। राम ने जब यह सुना घर पर गुरु जी आये हैं, आये इस्तकबाल को और ले गये बाइज्जो शा। उनकी खातिर की बहुत और हाथ जोड़े यह कहा, आपके तसरीफ लाने से है बारीनक मकाँ। आप खुद तशरीफ लाये यह बड़ी तकलीफ की, याद फरमाते मुझे हाजिर मैं हो जाता वर्हा। आपका जो हुक्म हो तामील को हाजिर हूँ मैं, आप क्यों तशरीफ लाये ऐ गुरु जी हैं—यर्हा। सुनके यह खुश हो गये गुरुदेव यों कहने लगे, क्यों न इस तरह कहोगे तुम हो नूरे खानदा। आज महाराजा बनाते आपको युवराज हैं, हो रही हैं राजगद्दी की बड़ी तैयारियाँ। व्रत और पूजा हवन भी आपको लाजिम है आज, और जिन बातों को कहना था किया उनसे बर्या। जब गये वापस गुरु जी दिल में सोचा राम ने, चार बेटे बाप के हैं फ़क़ हममें है कर्हा। सब हुए पैदा बराबर और सब एकसाँ पढ़े, सबका बचपन मिल के गुजरा सब की हो गई शादियाँ। राजगद्दी एक ही को क्यों मिले क्या बात है, यह नहीं अच्छा हकीकत में है तर्जो खानदा। राम से मिलने को आये लक्ष्मण जी भी वहीं, जो बहुत ह्शशाश और बहशाश थे और शादमा। चौ तरफ आनन्द छाया था खुशी छाई हुई, बज रहे डंके खुशी के थे गवैये नग्माख्वा। चाहते थे सब कि आ जाये भरत ननिहाल से, ता शरीके जलसा होकर आन का देखें समर्वा।

खत्म हो जाये ये रात और सुबह भी हो जाये जल्द, ताजपोशी की वो सायत देख लें पीरोजवाँ । देवताओं को अवध की यह खुशी भाती न थी, सरस्वती के पैर पड़ते थे वो हो कर हमझबाँ । चाहते थे ताजपोशी में पड़े बाधा कोई, छोड़ दे कर राज, वन को राम हो जाएँ रवाँ । सरस्वती सुन कर बुरी ख्वाहिश निहायत दंग थी, कुछ नहीं कहती थी मुख से बन्द थी गोया जबाँ । सब ने मिल कर उनकी विनती की बड़ी मिन्नत के साथ, भेद जो उसमें छूपा था सब किये उनसे बयाँ । फिर ये सरस्वती ने समझा राम जाएँ वन अगर, हाथ से उनके सज्जा पायेगा हर इज्जारसाँ । धर्म के जो हैं मुखालिफ़ जुल्म के आदी हैं जो, उनका ये बाकी न रखेंगे कोई नामों निशाँ । इल्म का चर्चा बढ़ेगा, कद्र होगी इल्म की, जब कि यह किस्सा लिखेंगे शायरे जादू बयाँ । सोच कर यह सरस्वती शहरे अयोध्या को गयीं, जिस तरह कोई बला आती है त्रिलकुल नागहाँ । कैकेई की एक दासी मन्थरा नामी जो थी, कर दिया उसकी समझ को सरस्वती ने रायगाँ । मन्थरा ने शहर में देखा कि हलचल है बहुत, शादो खुर्रम थे निहायत सब अवध के साकिनाँ । पूछने पर उसके जब उस पर सबब जाहिर हुआ, सीने में उसके लगी लाखों करोड़ों बछियाँ । उसने सोचा रात ही में चाल कुछ ऐसी चलो, काम ये होने न पाये, रंग बदले आसमाँ । कैकेई के पास जा बैठी बहुत हो कर उदास, और उस बदकार की आँखों से आँसू थे रवाँ । साँस लम्बी ले रही थी मुँह से कुछ कहती न थी, कैकेई ने वजह पूछी बन्द थी उसकी जबाँ । हँस के पूछा कैकेई ने क्या लखन ने मारा है, क्योंकि तेरी गुप्तगू होती है गर्म ऐ बदजबाँ । फिर भी वह खामोश थी, रानी को इससे डर हुआ, फिर भी नागन ने निकाला आह का अपनी धुवाँ । चारों फ़रजंदों की पूछी खैरियत रानी ने जब, तन बदन में आग उसके लग गयी वस नागहाँ । मन्थरा ने यों कहा किस मुँह से किस बल पर कहूँ, मेरी किस्मत ही बिगड़ बैठी है मुझसे नागहाँ । राम को बस छोड़ कर आराम ही किसको नसीब, कर रहे हैं राजाएँ दशरथ जिन्हें अब हुक्मराँ । आज कौशल्या से बढ़ कर कोई खुशकिस्मत नहीं, देख लो खुद जा के अपनी आँख से सब इज्जोशाँ । भरत बाहर हैं तुम्हें तो फ़िक्र उनकी कुछ नहीं, ऐशो राहत में पड़ी रहती हो हरदम शादमाँ । उसकी इन बातों से रानी हो गई नाराज कुछ, डाँट कर बोली कि घरफोड़ी न बकबक कर यहाँ । काने, लँगड़े, कूबड़े होते हैं सब दिल के बुरे, औरतों को इसमें है तरजीह मर्दों पर अयाँ । इतना कह कर कैकेई ने हँस दिया फिर कह उठी, मन्थरा मैं तेरी बातों से नहीं हूँ बदगुमाँ । बाख़बर करती हूँ तुझको इससे तू आगाह हो, ताजपोशी राम की होगी मुझे राहत रसाँ । जो बड़ा भाई हो, हो जाते है महकूम उसके सब, इस अमल के आज तक आदी है अहले खानदाँ । राम की इस ताजपोशी की जो सच्ची है खबर, मैं तुझे इनाम वो दूंगी जो हो शायाने शाँ । कुछ बड़ापन राम कौशल्या को देते ही नहीं, उनकी नज़रों में है सब माँओं की इज्जत बेगुमाँ मेरी खातिर है बहुत मलहूज मेरे राम को, बारहा मैंने लिया है इसका उनसे इस्तेहाँ । राम भी प्यारा है मुझको और सीता भी अजीज, क्यों हुई जाती है इस शुभ कार्य से तू नीमजाँ । भरत की तुझको कसम है साफ़ कह दे मन्थरा, क्या सबब है इस खुशी से हो रही है बदगुमाँ । यह कहा उसने कि कहना जिस क्रदर था कह दिया, उसके आगे बोलने में बन्द है मेरी जबाँ । जो खुशामद करते हैं करते हैं मुँह देखी जो बात, हाँ वही रहते हैं अच्छे और शादो शादमाँ । है नसीबा ही बुरा मेरा शिकायत क्या करूँ, मुझको क्या राजा बने कोई, कोई हो हुक्मराँ । जो मेरा दर्जा है वह हरगिज़ बदल सकता नहीं, कह दिया था सोच कर कुछ आपका सुदोजियाँ ।

कैकेई बोली थी बातों का असर लेने लगी, उसकी तीनत में भी कुछ होने लगी तब्दीलियाँ। आजिजी से कैकेई रानी जो पेश आने लगी, मन्थरा समझा हुआ अब कारगर मेरा बयाँ। यों कहा—क्या पूछती हो मुझसे रानी बार-बार, नाम घरफोड़ी मेरा रखा है तुमने मेरी जाँ। साफ कहती हूँ लगा कर कान तुम सुन लो इसे, जो समझती हो नहीं बाकी रहेगा वह समौ। राम सीता तुमको प्यारे और उनको तुम अजीज, वह जमाना चल बसा, बाकी रहेगा अब कहाँ। दिन पलट जाते किसी के हैं तो बस चलता नहीं, खुद मुखालिफ वे भी बन जाते हैं, जो थे मेहरबाँ। आपकी सौतन है कौशल्या फ़क़त इस घात में, जब मिले मौका तो पहुँचाये मज़रत और जियाँ। नाज अपने हुस्न पर है तुमको रानी कैकेई, तुम समझती हो कि राजा तुम पे हैं मारिफ़ता जाँ। तुम भरोसा मत करो राजा हैं नीयत के बुरे, देवने में तो नज़र आते हैं वो शीरीदहाँ। तुम बहुत सीधी हो कौशल्या बहुत चालाक है, उनकी सब चालाकियाँ हैं बरतर अज़ वहमो गुमाँ। भरत को भिजवाया बाहर पहले कहके राजा से, और राजा को फ़राहम कर लिया इस दरमियाँ। वह समझती है कि तावे हैं मेरी सब सौतनें, उनके हक़ में है फ़क़त एक कैकेई वारेगराँ। नाज है जिनको बहुत शोहर की अपने चाह पर, अपने दिल में इम लिए वह वृग़्ज रखती है निहाँ। देख सकती हैं नहीं कौशल्या इसको आँख से, राजाए दशरथ जो तुम पर हैं निहायत मेहरबाँ। इन्तहाये होशियारी से चली हैं चाल यह, भरत के रहने में उनका काम बनता था कहाँ। जब कि वह इस जा नहीं है उसने यों ठहरा लिया, शान से पूरा कराया अपना मन्शा नागहाँ। राम की गद्दीनशीनी किसको है भाती नहीं, और मैं भी इसमे होती हूँ निहायत शादमाँ। मुझको जो डर है वह आइन्दा का है ऐ कैकेई, फल मिलेगा उमको उल्टा जो कि है ईज़ारसाँ। अलगरज हर बात उल्टी उनको समझाने लगी, और झूठे क्रिस्ते भी कहने लगी वह वदज़बाँ। गुप्तगू ने मन्थरा की खो दिये रानी के होश, क्योंकि होनी ही थी ऐसी, रंग बदले आसमाँ। मन्थरा कहने लगी—क्या अब भी तुम समझी नहीं, जानवर भी हैं समझते अपना जब सूदोजियाँ। पन्द्रह दिन हैं हो गये इस काम को होते हुए, आप पर जाटिर हुआ है आज यह राजे निहाँ। और वह भी मैंने जब तुमसे कहा जाहिर हुआ, मैं नमक खाई हुई हूँ इसलिए खोली जबाँ। खोफ़ मुझको कुछ नहीं, कहती हूँ तुम से साफ़-साफ़, राम हो जाएँ अगर कल मल्लनत पर हुक्मराँ। तुमको भी घर से निकाला जाएगा बस इस तरह, फेंक दी जानी हैं जैसे दूध पर से मक्खियाँ। भरत और तुम दोनों मिल कर उनकी सेवा गर करो, फिर तो शायद दोनों मिल कर रह सकोगे तुम यहाँ। क़दखाने में पड़ेंगे भरत, तुम तकलीफ़ में, और लक्ष्मण को करेंगे नायब अपना बेगुमाँ। मन्थरा की ऐसी बातें सुनके कैकेई डरी, काँते वह लग गई और खुशक थी उसकी जबाँ। मन्थरा ने जब यह देखा खोफ़ से धर्रा गई, दम न रुक जाये कहीं रानी का इस दम नागहाँ। हो गया ऐसा तो हो जाएगा उल्टा काम सब, मैंने भी जितना किया हो जाएगा सब रायगाँ। मन्थरा ने कह के कुछ रानी को फिर तसकीन दी, कुछ सुनाये उसको क्रिस्ते और सुनाई दास्ताँ। तब तो रानी को बहुत कुछ उसपे आया एतबार, यह न समझी, है यह दुश्मन या है मेरी मेहरबाँ। यों कहा रानी ने सच कहती है तू ऐ मन्थरा, कुछ सुगुन भी बदनज़र आते हैं मुझको बेगुमाँ। मुझको सपने भी नज़र आते हैं कुछ मनहूसी के, यह मेरी थी भूल जो रक्खा इन्हें तुझसे निहाँ। आज तक मैंने किसी का भी बुरा चाहा नहीं, मझपे क्यों ऐसी मुसीबत आ गई है नागाहाँ। जाके मैं माँ-बाप के घर उम्भ भर रह जाऊँगी, मैं रहूँ सौतन से दव कर मुझसे है मुमकिन कहाँ।

फिर बड़ी मित्रत समाजत कैकेई ने उसकी की, मन्थरा कहने लगी क्यों हो रही हो स्वस्ताजाँ। आपके शीहर सलामत आपके सर पर रहें, तुम को दिन दूनी तरक्की हो, रही तुम शादमाँ। जो बुराई आपकी चाहेगी खुद फल पाएगी, जब से यह मैंने सुना है नींद आँखों में कहाँ। ज्योतिषी से मैंने पूछा तो कही उसने यह बात, भरत ही राजा बनेंगे और होंगे हुक्मराँ। मैं तुम्हें तरकीब बतलाती हूँ रानी कैकेई, तुम पे राजा निछावर करते है अपने कल्बो जाँ। कैकेई कहने लगी तू जो बहे मैं वह करूँ, तू यकी कर मन्थरा, मुझसे न हो अब बदगुमाँ। छोड़ दूँ वेटे को अपने छोड़ दूँ तुम्हें को भी, तू जो कह कुँ में गिर जाऊँ मैं जा कर नागहाँ। मन्थरा ने जब यह देखा चल गया रानी पे दाँव, फिर तो कोई शक रहा उसको न रानी से गुमाँ। हाथ जोड़े यों कहा तुमने कहा था एक बार, याद है या तुम उसे भूली हुई हो मेरी जाँ। राजाएँ दशरथ ने दो वरदान थे तुम को दिये, कीजिए पूरा उन्हें अब तावने राहत रसाँ। राम को जंगल मिले और भरत पाये सलतनत, अपनी सीतन की जगह हो जाओ तुम खुद शादमाँ। राम की राजा क्रम खा लें तो कहना बात ये, काम की तकमील को है रास्ता यह दमियाँ। मन्थरा बदजात ने कह मुनके राजा कर दिया, कर दिया रानी को ब्रेह्म राम जी से बदगुमाँ। जेवर और कपड़ों को फेको और खफा हो जाओ तुम, जाके सो जाओ महल में और करो आँसू रवाँ। कैकेई के हक में कुवड़ी जान से प्यारी हुई, बोली-दूरन्देज तू है और तू है नुकनदाँ। तुझसे बढ़ कर मुझको प्यारा कोई दुनिया में नहीं, मैं वही जाती थी बस तूने बचाया नागहाँ। मेरे दिल की आरजू पूरी अगर हो जाय यह, आँव की पुनली बना कर मैं खूँगी बेगुमाँ। कह के यह बिखरा दिया रानी ने सब अपना सिंगार, सो गई बिस्तर पे अपने जाके बा आहो फुगाँ। कैकेई थी इस तरह अपने महल में रो रही, उस तरफ थी शहर में सब जश्न की तैयारियाँ। हो रहा है क्या, खबर इसकी किसी को भी न थी, था महल हंगामे इशरत से वारीनक मकाँ। राम के साथी जो थे सब जा रहे थे उनके पास, कह रहे थे हो मूवारक होके वेहद शादमाँ। चार जानिब था मसरत का समा छाया हुआ, शाद थे छोटे-बड़े और मर्दोजन पीरोजवाँ। बह रही थी शहर में हरसू हवा आनन्द की, कैकेई अपने महल में थी मगर मातमकुनाँ। हो अगर नासेह दुश्मन फिर बुराई क्यों न हो, अकल हो जाती अकलमन्दों की भी है रायगाँ। जब महल में कैकेई के शाम को राजा गये, उस जगह पाया नहीं हर रोज रहती थी जहाँ। जब सुना यह गमकदे में रो रही रानी है आज, उड़ गये राजा के होश और हो गये वो नीमजाँ। डर गये गुस्से से औरत के महाराजा बहुत, सर झुका देते थे जिनके आगे सारे राजगाँ। सह नहीं सकते थे राजा काम के फूलो की मार, उफ़ नहीं करते थे जो सीने पे खा कर बलियाँ। खौफ़ से राजा गये डरते हुए रानी के पास, हाल यह उनका जो देखा खो दिये ताबो तवाँ। फेंक कर जेवर व कपड़े थी जमीं पर लोटती, दिल में था रजो अलम और लव पे थी आहो फुगाँ। उसकी सूरत इस तरह उस वक़्त आती थी नज़र, जैसे बेया, बाद शीहर के रहे नालकुनाँ। कैकेई के पास जा कर राजा यों कहने लगे, क्या सबब है रंज का मुझको बताओ मेरी जाँ। इतना कह कर रानी को जो हाथ से छूने गये, हाथ को उनके झटक कर हो गई आतिशबयाँ। देखती थी इस तरह जैसे हो नागन गुस्सावर, और डसने के लिए अपनी निकाले वह जवाँ। इस अमल से राजा दशरथ ने बुरा माना नहीं, और यह समझे कि यह सब नाज हैं और शोखियाँ। चन्द्रमुख, नाजुक तबीयत, खुशबदा, नाजुकखराम, कर तू अपने रंज का बेशास्ता मुझसे बयाँ।

किसने की तोहीन तेरी मौत किसकी आ गई, किसने जाने की नरक में अपने की तैयारियाँ । कौन-से मुहताज को राजा बना दूँ आज मैं, कौन-से राजा के पैरों में मैं डालूँ बेड़ियाँ । हो वहादुर से बहादुर भी तेरा दुश्मन अगर, चीर कर मैं फेंक दूँ औरों का है ही क्या बयाँ । वक्फा तेरे वास्ते है सब रियाया और अजीज, धन भी और औलादो इकबालो हुकूमत, मेरी जाँ । कुछ बनावट है नहीं, खाता क्रसम हूँ राम की, जो हो तेरी आरजू जल्दी से कर मुझसे बयाँ । जब कहा राजा ने इतना हो गई वो दिल में खूश, बम गया आँसू का बहना हो गई खन्दादहाँ । उठ के बैठी और पहना अपना जेवर और लिबास, हँस के देखी राजाएँ दशरथ को हो कर शादमाँ कैकेई को खूश जो देखा राजा दशरथ ने कहा, है खुशी का आज दिन यह, तू भी हो जा शादमाँ । शहर के हर एक मक़ाँ में है खुशी छाई हुई, राम को कल मैं बना दूँगा अवध का हुक्मराँ । ऐसी अच्छी बात सुन कर तुझको भी होगी खुशी, यह सुखन सुनते ही रानी हो गई बस तिप्ता जाँ । टाल दी रानी ने बात और मुस्करा कर रह गई, अपनी चालाकी यह राजा पर न होने दी अयाँ । राजा उसकी चाल को हरगिज समझ सकते न थे, क्योंकि थी उस्ताद उसकी मन्थरा मौजिज बयाँ । फेर कर मुँह अपना राजा की तरफ़ कहने लगी, मैं जो माँगूँगी—मुझे मिलने में उसके है गुमाँ । वह जो दो वादे किए थे आपने मुझसे कभी, आज तक फरमाइए पूरा किया उनको कहाँ । यों कहा राजा ने मतलब मुझपे अब जाहिर हुआ, दिल में रक्खा तुमने उनको मुझ से माँगा है कहाँ । बेवफ़ाई का मुझे इल्जाम यों हरगिज न दो, चार वादे ले लो तुम, दो के एवज में मेरी जाँ । है यही दस्तूर रघु के खानदाँ का आज तक, दम निकल जाये तो जाये टल नहीं सकती ज़बाँ । सूदमंदी है सचाई की अयाँ हर एक पर, झूठ से बढ़ कर ज़माने में नहीं कोई ज़ियाँ । इसलिए मैंने क्रसम खाई है तुझसे राम की, राम से बढ़ कर नहीं कोई मुझे आरामेजाँ । इस तरह राजा से जब मजबूत वादा ले लिया, कैकेई करने लगी फिर अपने मक़सद को बयाँ । अर्ज की—महाराज है यह मेरी पहली आरजू, भरत की हो राज गद्दी, हो वही अब हुक्मराँ । दूसरी जो आरजू है वह भी प्यारी है मुझे, दस्त-बस्ता वह भी कह देती हूँ ऐ शाहेशहाँ । छोड़ कर यह महल-नगरी राम जंगल में रहें, और चौदह साल वह फिरते रहें बेखानेमाँ । बात यह सुन कर बड़ी हैरत में राजा पड़ गये, जिसका उनको हो न सकता था कभी वहमो गुमाँ । हो गये खामोश एकदम जदं चेहरा हो गया, गिर गई जैसे यकायक ताड़ पर बर्कें तयाँ । हाथ माथे पर वो रख कर सोचने कुछ लग गये, दिल में अपने कह रहे थे, हो गया क्या नागहाँ । मेरे दिल की आरजू पूरी जो होने को थी अब, कर दिया कमबख्त रानी ने उसे अब रायगाँ । हाय रानी की समझ पर कैसे पत्थर पड़ गये, बीज बरबादी का बोया है अवध के दरमियाँ । फल मिला उसका, जो औरत पर भरोसा था मुझे, कल के दिन होने को क्या था, हो गया क्या नागहाँ । इस तरह राजा को जब रानी ने देखा सोच में, गुस्से में आयी बहुत और यों हुई आतिश बयाँ । भरत क्या बेटा तुम्हारा है नहीं, ऐ बादशाह, दाम दे कर लाये हो क्या तुम मुझे अपने यहाँ । बात यह मेरी तुम्हें क्यों कर लगी है तीर-सी, क्यों नहीं कहते हो कुछ, अब बन्द कर ली क्यों ज़बाँ । नाज अपने दिल में है तुमको सचाई का बहुत, साफ़ अब इन्कार ही कर दो, कहो या मुझ से हाँ । मुझसे जो वादे किये थे, कीजिए पूरा उन्हें, खुद सचाई की कहा करते थे मुझसे खूबियाँ । वादा करना आपने आसान समझा था बहुत, क़ौल से फिर जाइए, कर लीजिए झूठी ज़बाँ । जो बुजुर्गों ने कहा कर के दिखाया आपने, वो सचाई पर तसद्दुक अपनी कर देते थे जाँ ।

कैकेई ने इस तरह कुछ सख्त उनको कह दिया, जस पर छिड़का नमक जैसे किसी ने नागहाँ। राजा दशरथ जो धरम के नाम पर देते थे जाँ, साँस ठंडी ले के सर पकड़ा किया जन्ते फुगाँ। कहा यों मारा मुझे तूने निहायत बेतरह, जिससे बचने का नहीं बाकी रहा कोई निशाँ। गस्सावर कैकेई उनको इस तरह दिखलायी दी, म्यान से बाहर कोई तलवार जैसे हो अयाँ। राजा दशरथ ने यह सोचा यह बुरी तलवार है, यह तो ले कर ही रहेगी इक न इक दिन मेरी जाँ। सब करके नरम शब्दों में यह राजा ने कहा, ऐ मेरी राहतरसाने दिल, मेरी आरामे जाँ। क्या नहीं तुझको भरोसा मुझ पे अजराहे खुलूम, भरत हो या राम राजा, दोनों हैं ये मेरी जाँ। मैं कसम शंकर की खा कर कह रहा हूँ तुमसे यह, दूत को कल सुबह होते ही कहूँगा मैं रवाँ। जब भरत और शत्रुघन पंगाम मेरा पायेंगे, अपनी वो ननिहाल से आ जाएँगे अल्दी यहाँ। देख कर मैं अच्छी सायत और अच्छा कोई दिन, भरत को ही बना दूँगा मैं यहाँ का हुक्मराँ। राम को हरगिज न थी ख्वाहिश हुकूमत की कभी, भरत से उसको है उल्फत उसपे है वो मेहरबाँ। मेरे ही पेशे नजर छोटे-बड़े का था लिहाज, जिस तरह इस रस्म के पाबन्द हैं अहले जहाँ। साफ़ कहता हूँ कि कौगल्या की कुछ साजिश नहीं, तुम से बिन पूछे किया जो, हो गया वह रायगाँ। भरत को अब जल्द ही बिठलाऊँगा मैं तख्त पर, थूक दो गस्से को अपने, हो भी जाओ शादमाँ। दूसरी ख्वाहिश तुम्हारी है बड़ी तकलीफ़-दे, तुमने क्यों सोचा नहीं इस माँग का सुदोजियाँ। तुमने जो कुछ कह दिया है सच है वो या है मजाक, राम की थी क्या खता इसमें करो मुझसे बयाँ। सारी दुनिया राम की तारीफ़ करती है बहुत, और तुम भी राम पर रहती थीं हरदम मेहरबाँ। क्या इनायत तेरी उस पर आज तक झूठी ही थी, क्या हुआ वह जोशे उल्फत, खो गया आखिर कहाँ। यह हँसी की बात हो या हो हकीकत की, मगर, सोच कर माँगो जो तुमको माँगना हो, मेरी जाँ। भरत की मैं ताजपोशी देख लूँ आँखों से जल्द, यह तमन्ना रह न जाए मेरे दिल के दरमियाँ। है बहुत आसान नामुमकिन भी मुमकिन हो सके, राम को देखे बिना पर चैन पाऊँगा कहाँ। राम ही पर है मेरी इस जिन्दगी का इनहसार, सुन के ये अलफ़ाज कैकेई के गये ताब्रतवाँ। हो गई आपे से बाहर और उट्ठी यों भड़क, आग में घी जिस तरह पड़ने से हो चिंगारियाँ। यों लगी राजा से कहने लाख हीले कीजिए, चालवाजी आपकी यह चल नहीं सकती यहाँ। कौल पूरा कीजिए या साफ़ कह दीजे नहीं, यह मुझे अच्छी नहीं मालूम होती ईनोआँ। राम साधू, तुम सयाने—राम की माँ भी भली, हो गई है आज अलत मुझ पे इन सबकी अयाँ। राम गर बन को न जाए कल फ़कीरी भेस में, आपकी रुसवाई होगी, और मैं दे दूँगी जाँ। खा के पेंचोताव वो अपनी जगह से उठ गई, गुप्तगू उसकी थी राजा के लिए ईजारसाँ। राजा यह समझे कि शायद मौत मेरी आ गई, इस तरह जो हो गया है यकबयक गम का सम्राँ। फिर भी राजा ने बिठा कर उसकी मिन्नत की बहुत, और कहा ऐ कैकेई, तू बन न नंगे खानदाँ। दुश्मनी में राम की क्यों जान लेती है मेरी, चाहती है और जो कुछ ले ले मुझसे मेरी जाँ। जिस तरह भी हो सके तू राम को बन में न भेज, उम्र भर पछतायेगी, हो जायगी मातम कुनाँ। जब यह देखा काम बनने की कोई सूरत नहीं, गिर गये बेचैन हो कर, छा गई बेहोशियाँ। था जबाँ पर राम-राम और आँठ थे सूखे हुए, जैसे पानी के बिना मछली तड़पती नागहाँ। इस दशा को देख कर थी कैकेई पिघली नहीं, और कहा—ख्वाहिश पे मेरी, किस लिए करते थे हाँ। खर्च भी हो कुछ नहीं, दाता भी कहलाये कोई, गाल फूले रहें हँस भी दे कोई, मुमकिन कहाँ।

जंग में लड़ने को जा कर जो कभी घायल न हो, क्यों उसे कहिए बहादुर कब वो होगा पहलवाँ । काम लीजे सब से या क्रील से फिर जाइए, औरतों की तरह यों कीजे न फरयादो फुगाँ । उनको आ सकता नहीं औलादो दौलत का खयाल, क्रील के पक्के जो हैं, फिरते नहीं दे कर जबाँ । राजा फरमाने लगे—सच तो यह है ऐ कैकेई, मौत मेरी तुझसे यह कहला रही है बेगुमाँ । भरत करने का नहीं इस राजगद्दी को कबूल, फिर नहीं मालूम क्या-क्या रंग बदले आसमाँ । तू अयोध्या की तबाही पर जो यों तैयार है, फिर बसेगी एक दिन नगरी यही बा इज्जोशाँ । भाई सब तावे रहेंगे राम ही होगा बड़ा, उमका ही सिक्का चलेगा और वो होगा हुकमराँ । मेरा यह अफसोस और बदनामी तेरी रह जाएगी, उम्र भर इनको भुला पाएँगे ना अहले जहाँ । जो तेरा जी चाहे कर, मैं कुछ नहीं कहता तुझे, अब न मुझको भुँह दिखा, हो मेरी आँखों से निहाँ । जिन्दगी भर अब न मुझसे बात करना तू कभी, याद रख ऐ शर की पुतली फितनागर इज्जारसाँ । वजहे बरबादी ए ताजो तरुत तू हो कर रही, ता कथामत जगत सारा तुझे देगा गालियाँ । इस तरह फर्मा के राजा गिर गये बस फर्श पर, और वह खामोश थी खुलती न थी उसकी जबाँ । जिस तरह बेपर के है पंछी तड़पता बेतरह, राजा दशरथ थे तड़पते, राम था विरदेजबाँ । चाहते थे वे सुबह होने न पाये आज की, राम से जा कर न कोई हाल ये करदे बयाँ । अपने पुरखा सूर्य से यों प्रार्थना करने लगे, रोशनी सुबह की दुनिया पर न कीजंगा अयाँ । आप की ही है अयोध्या, यह अगर बरबाद हो, आप कर लेंगे गवारा, यह नहीं मुझको गुमाँ । यों तड़पते ही तड़पते सुबह होने लग गई, और दरवाजे पे वजने लग गई शहनाइयाँ । हो गये डचोढ़ी पर हाज़िर भाट और चारण सभी, रागनी बाजों की राजा के लिए थी सोजे जाँ । राजा दशरथ को ये सामाने खुशी थे नापसन्द, जैसे जेवर सती के तनपर बनें वारेगराँ । आ गये डचोढ़ी पे राजा के मूलाजिम और वजीर, बोले यों—सोते हैं अब तक किसलिए शाहेशहाँ । रोज हो जाते थे वो बेदार पिछली रात में, जाके ले आये सुमित्र इस वक्त कैफ़ीयत यहाँ । जब महल में वो गये, देखा कि नक्शा और है, इससे पहले तो कभी देखा न था ऐसा समाँ । पूछते हैं तो कोई उनको नहीं देता जवाब, कोई कहता ही न था उनसे कि राजा है कहां । राजा और रानी जहाँ थे, आखिरस उस जा गये, देख कर राजा की हालत खो दिये ताबो तवाँ । खौफ के मारे वजीर उनसे न कुछ भी कह सके, कैकेई बिगड़ी बहुत और इस तरह खोली जबाँ । रात भर राजा को मेरे नींद आई ही नहीं, कुछ सबब कहते नहीं, बस राम है विरदेजबाँ । जाके अब जल्दी, यहाँ ले आइएगा राम को, आप पर हो जाएँगे अस्वाब इसके सब अयाँ । वो समझ बैठे कि रानी ने बिगाड़ा है ये काम, देख कर राजा की हालत हो गये जल्दी रवाँ । सोचते जाते थे दिल में राम से क्या काम है, किसलिए राजा ने उनको अब बुलाया है यहाँ । फ़िरक में डूबे हुए थे पैर उठता ही न था, जब गये बाहर तो चेहरे से उदासी थी अयाँ । वजह इनसे पूछते थे लोग, ये खामोश थे, हो गये उस जगह हाज़िर राम रहते थे जहाँ । राम ने देखा सुमित्र आते है मेरे पास जब, उनका स्वागत करके उनको ले गये अपने यहाँ । याद फरमाया यहाँ राजा ने है, बोले वजीर, रामचन्दर हुकम सुनते ही हुए फौरन रवाँ । सादगी से जा रहे थे राम उनके साथ जब, देख कर कहने लगे सब, ये नहीं शायाने शाँ । राम ने देखा कि राजा हैं निहायत बेकरार, उनकी हालत दूसरी है लय पे है आहोफ़ुगाँ । पास उनके कैकेई है और वे बेचैन हैं, बात करने की भी उनमें है नहीं ताबोतवाँ ।

इससे पहले राम ने ऐसा कभी देखा न था, जानने ही वो न थे, होनी हैं क्या दुश्चारियाँ। फिर भी कुछ मौका मइल पा कर लिया हिम्मत से काम, दस्त बस्ता कैकेई से यों कहा—ऐ प्यारी माँ। पिता के इस रंज का क्या है सबब बतलाइए, ताकि हो तदवीर उसकी और मिले आरामे जाँ। चाहते हैं तुमको राजा, कैकेई ने यों कहा, छोड़ कर तुमको जियें ये, ऐसा मुमकिन है कहाँ। मुझसे दो वादे किये थे, मैंने जो चाहा कहा, वक्त ईफा कर रहे हैं मुझसे नाहक ईनो आँ। इक तरफ़ बेटे की उल्फत, इक तरफ़ बादे का डर, कैफ़ियत दो हो गई हैं इनके दिल के दरमियाँ। तुम अगर चाहो तो कठिनाई अभी आसान हो, और राजा की परेशानी भी जाये नागहाँ। कड़वी-कड़वी बात कहती जा रही थी कैकेई, राम जी के हक में था हर लपज तीरे बेकमाँ। अपनी बातों के चलाती जा रही थी तीर वो, और राजा बन रहे थे उनके तीरों का निशाँ। राम जी बोले कि माँ-बाप की खिदमत करे, है वही औलाद लायक और इज्जे खानदाँ। जाऊँगा जंगल खुशी से मैं, मुझे कब उज्ज है, मैं उसे पूरा करूँगा, हुक्म जो दें बाप-माँ। जंगलों में जब रहूँगा होगा मुनियों से मिलाप, क्यों खुशी मुझको न होगी भरत हो गर हुक्मराँ। मेरे अच्छे भाग्य से मौका ये हाथ आया मुझे, मान लूँगा इसको मैं, इसमें छुपी हैं खूबियाँ। कोई जाहिल से भी जाहिल हो तो क्यों छाड़े इसे, ऐसा मौका फिर सुनहरी हाथ आता है कहाँ। सिर्फ़ इनकी बात का महाराज को क्यों रंज है, है तआमूल इसमें मुझको हो रहा है कुछ गुमाँ। हैं यहाँ राजा बहूत साविर भी दूरन्देश भी, क्या कोई मुझसे हुई है भूल सरजद कहिए माँ। कह रहे थे राम अपने दिल की बातें साफ़-साफ़, कैकेई दिल की बुरी थी, हो रही थी बदगुमाँ। राम के अल्फाज सुन कर यह कहा, खा कर क्रसम, दूसरा कोई सबब मुझ पर नहीं इसका अयाँ। फर्ज से तुम अपने टल जाओ कभी मुमकिन नहीं, हुक्म से माँ-बाप के फिर जाओ, ये होता कहाँ। मैं निछावर तुम पे जाती हूँ करो तुम काम वह, इग बुझापे में न खो बैठें ये अपनी खूबियाँ। इनके अच्छे भाग्य से तुम-सा पिसर पैदा हुआ, अब न इनकी हों जमाने में कहीं रसवाइयाँ। कैकेई जो कह रही थी यह बुरी नीयत में सब, राम को अल्फाज उसके थे बड़े राहतरसाँ। जो महाराजा को बेइशरी थी वो जाती रही, राम हाजिर है, कहा उनमे वजीरे नुक्ता दाँ। बात यह सुन कर वहाँ राजा ने आँखें खोल दीं, उठ नहीं सकते थे वो अब, इस कदर थे नातवाँ। जब मुमित्र उनको उठा कर सामने बिठला दिये, राम चरणों पर गिरे अपने पिदर के नागहाँ। अपनी छाती से लगाया राम को महाराज ने, मुँह से कुछ कहते न थे, थे आँख से आँसू रवाँ। दुखभरे इतने थे मुँह से कह नहीं सकते थे कुछ, अधमरा-सा हो के तड़पा जा रहा था मुर्गेजाँ। और बुझा करते थे जंगल को न जाये यह कभी, राम रह जायें मकाँ में टाल दे अपनी जवाँ। जो मुझे पाप इससे होगा उसको सह लूँगा जरूर, इग जमाने में मेरी गो लाख हों रसवाइयाँ। राम ने देखा पिता को अपने बेहद रंज है, कैकेई कुछ और कह देगी अगर इम दरमियाँ। इसलिए वो हाथ जोड़े बाप से कहने लगे, कीजिए मुझ पर दया और उफ़ू हों गुस्ताखियाँ। बात है बिलकुल ज़रासी आप क्यों है बेकरार, दी खबर ऐसी किसी ने भी न पहले से यहाँ। आपकी हालत जो देखी माँ से पूछा हाल सब, होके वाकिफ़ वजह से मैं हो रहा हूँ शादमाँ। इस खुशी के वक्त ऐसा रंज क्यों करते हैं आप, जल्द जंगल की तरफ़ कर दीजिए मुझको रवाँ। करके मैं तामील इसकी जल्द आऊँगा पलट, दीजिए मुझको इजाजत आप हो कर शादमाँ। माँ से अपनी मैं इजाजत ले के आता हूँ अभी, चूम कर चरणों को फिर हो जाऊँगा वन को रवाँ।

इस तरह कह कर वहाँ से राम जल्दी चल दिये, शहर में फैली खबर यह जिस तरह बादे रवाई। यह खबर जिसने सुनी हैरतजदा-सा रह गया, हर कसो नाकस की आँखों से हुए आँसू रवाई। आग जंगल में लगे सब जानवर हों बेकरार, कर रहे थे सब अयोध्या वाले यों आहोफ़ग़ाँ। काम सब कुछ बन गया था क्या हुआ यह वक्त पर, कह के यह सब कँकेई को दे रहे थे गालियाँ। जो न होना चाहिए कमबलत करती है उसे, किस तरह उसने बिगाड़ा काम सारा नागहाँ। राम प्यारे थे हमेशा उसको अपनी जान से, खाक में उसने मिला दी अयोध्या की इज्जो शाँ। मकर औरत का कभी मालूम हो सकता नहीं, है बहुत मुश्किल कि हो जाये अयाँ, जो है निहाँ। कोई कहता था कि राजा को तो ये जेबा न था, कँकेई क्या थी, हुए क्यों इतने पावन्दे जबाँ। कँकेई है अपनी हठ पर राजा उसके बस में हैं, इसलिए राजा को ये सहनी पड़ी कठिनाइयाँ। कोई कहता था कि राजा का नहीं इसमें कसूर, कोई उनके पुरखों की करता बयाँ था खूबियाँ। कोई कहता था कि इसमें भरत भी शामिल हैं क्या, कोई तो खामोश-सा था बन्द थी गोया जबाँ। कोई कहता था कि हरगिज बात यह मुमकिन नहीं, भरत और हैं राम दो कालिब, मगर है एक जाँ। चाँद से भी आग बरसे और अमृत जहर हो, राम के वो हो मुखालिफ़, यह तो झूठा है गुमाँ। जो बड़ी बूढ़ी थी, कँकेई को समझाने लगीं, कह रहे थे सब, मगर वो मानने वाली कहाँ। राम को तुम भरत से बढ़ कर थीं अब तक चाहतीं, आज क्यों कर, कर रही हो राम को जंगल रवाई। आज तक सीतन से अपनी तुम रही हो मेल से, और कौशल्या से अब क्यों हो गयी हो बदगुमाँ। कब रहेंगे घर में सीता और लछमन राम बिन, और यह भी गौर मुमकिन है, भरत हो हुक्मराँ। और यह भी है नहीं मुमकिन कि राजा जो सकें, इस तरह सारी अयोध्या की तबाही है अयाँ। इस तरह तू गौर करके अपने हठ से बाज़ आ, भरत को दे तलत, लेकिन राम को रख ले यहाँ। राम को स्वाहिश नहीं है ताज की और तलत की, कुछ न वो साजिश करेंगे, गर वो रह जाएँ यहाँ। चाहती हो तुम अगर राजा से यह वर माँग लो, छोड़ कर घर राम रह जाएँ गुरु जी के यहाँ। तुम अगर कहना हमारा यह न मानो कँकेई, लाभ के बदले तुम्हें हो जाएगा हासिल जियाँ। राम क्या हैं वन के लायक, क्या कहेंगे सब तुम्हें, काम जल्दी यह करो, जिससे हो खुश सारा जहाँ। अयोध्या से राम का सम्बन्ध कुछ ऐसा ही है, जिस तरह सूरज हो दिन को, जिस्म को परकार जाँ। इस तरह जो औरतों ने लाख समझाया उसे, कँकेई, कुबड़ी की जो शागिद थी, सुनती कहाँ। कुछ न देती थी जवाब इसका किसी को कँकेई, और सब उस पर उड़ाती जा रही थीं फ़क्तियाँ। डालती थी सब पे गुस्से की नज़र यो कँकेई, जैसे भूखी शेरनी देखे हिरन की टोलियाँ। सब ने जब देखा कि समझाना उसे बेकार है, उठ गई उस जा से सब और लगीं देने गालियाँ। लोग रंजीदा थे सब और इस तरह थे बेकरार, सूखे दरिया में तड़प उठनी हैं जैसे मछलियाँ। राम हो कर खुश वहाँ से अपनी माँ के आये पास, मिट गयी सब फ़िक्र उनकी खो गये वहमोगुमाँ। फ़िक्र थी उनको बराबर के हैं भाई चार हम, क्या बड़ापन मुझको है, मैं ही बनूँ क्यों हुक्मराँ। कँकेई के हुक्म से वह फ़िक्र अब जाती रही, पिना हैं खामोश और खुलती नहीं उनकी जबाँ। राज के जंजाल से भी उनको छुटकारा मिला, मिल गया आराम इनको हो गये वो शादमाँ। पाँव पर जा कर वो माँ के अपने सर को रख दिये, देख कर लड़के को अपने माँ थी बेहद शादमाँ। दे रही थी ज़र-जवाहर वार कर जन पर से खूब, और मुहब्बत के थे आँसू उनकी आँखों से रवाई। गोद में ले राम को वो प्यार करने लग गयी, इज्जदियादे शीक से था दूध छाती से रवाई।

किस क्रूर वो शाद थीं इसकी यही होगी मिसाल, जिस तरह नादार को मिल जाय दीलत नागहाँ। फिर कहा लड़के से अपने कब है बेटा वह घड़ी, तब पर बैठोगे तुम और मैं रहूँगी शादमाँ। जिस घड़ी के वास्ते है इन्तेज़ार हर शमश को, जल्द बतलाओ उसे तुम, ऐ मेरे आरामे जाँ। मैं निछावर तुम पे हो जाऊँ, नहा लो जल्द अब, मेरे बेटे बैठ कर कुछ नाश्ता कर लो यहाँ। जब मुहब्बत से भरे अलफ़ाज़ कानों में पड़े, हाथ जोड़े अपनी माँ से यों हुए गौहर फ़शाँ। बाप ने मुझको दिया है आज से जंगल का राज, चैन रो अब मैं रहूँगा ख़ुरमो शादा वहाँ। अपनी ख़ुशनूदी से अब मुझ को इजाज़त दीजिए, वन में जाने से मेरे दहशत न खायें मेरी माँ। जल्द ही ये बीत जाएँगे मेरे चौदह वरस, हुक्म की तामील करके लौट आऊँगा यहाँ। आप मेरे वास्ते कुछ भी न अन्देशा करें, लौट कर आऊँगा जब, देखेंगे मुझको शादमाँ। बात यह सुन कर हुई कौशल्या रानी दंग-सी, नर्म थे अलफ़ाज़ गो चुभते थे दिल के दरमियाँ। जिस तरह बारिश के पानी से जवासा सूख जाए, इस तरह थीं राम के अलफ़ाज़ से मुश्क उनकी माँ। कुछ जलन दिल की कही जाती नहीं उस वक़्त की, जिस्म था थर्रा रहा, थे आँख से आँसू रवाँ। फिर कहा बेटे से राजा प्यार करते थे तुम्हें, खुद यही तुमको बनाना चाहते थे हुयमराँ। क्या किया अपराध जो जंगल में जाने को कहा, क्या सबब इसका हुआ है तुम करो मुझसे बयाँ। राम का मंशा जो पाया कह दिये सब वाक़यात, था वजीरे सलतनत का एक लड़का जो वहाँ। जब हुआ मालूम यह सब हो गई गूंगी-सी वो, कर नहीं सकता हूँ उनके हाल का मैं कुछ बयाँ। घर में रख सकती नहीं, जाने को कह सकती नहीं, दोनों बातों से उन्हें होने लगा दर्द निहरी। धर्म को मैं छोड़ कर गर रोक लूँगी राम को, भाइयों में रंग होगा और बढ़ेगी तल्लियाँ। वन को जाने को भी कहना है मसीबत ही मुझे, थीं ये दो बातें ही बस उनकी तबीयत पर गिराँ। हुक्म शौहर का वजा लाना समझती थी ज़रूर, राम में और भरत में है फ़र्क ही कोई कहाँ। थाम कर दिल फिर कहा कौशल्या जी ने राम से, तुम करो तामील जो कह दें पिता, ऐ मेरी जाँ। राज के बदले मिले वन, इसका कुछ भी दुःख नहीं, भरत और महाराज को तुम बिन मिले राहत कहाँ। बाप ही का हुक्म होता और गर मैं रोकती, वन का जाना मुल्तवी कर देते तुम, ऐ मेरी जाँ। बाप और माँ ने दिया है हुक्म जाने के लिए, वन को तुम समझो अयोध्या से बहुत राहतरसाँ। सब करेंगे आ के खिदमत जितने हैं वन के परिन्द, लोग जंगल के जो हैं वो हैं तुम्हारे बाप-माँ। उम्र आखिर में मुनासिब है कि जंगल में रहे, है फ़क़त अफ़सोस इसका तुम अभी हो नौजवाँ। है बड़ी तकदीर जंगल की, अवध है बदनसीब, कर रहा है इस तरह से जो तुम्हें वन को रवाँ। मैं अगर हमराह चलने के लिए वनको कहूँ, रोक लेने की है यह तरकीब, ये होगा गुमाँ। दिल का टुकड़ा मेरा मुझसे ये कहे—वन जाऊँगा, और मैं यह सुन रही हूँ बैठ कर, ऐ मेरी जाँ। यों दिखावा करके क्यों मैं रोक लूँ इस राह से, जाओ लेकिन भूलना हरगिज़ न मुझको मेरी जाँ। देवताओं की रहे तुम पर इनायत की नज़र, और पितर अपने रहें तुम पर हमेशा मेहरबाँ। आँख के तारे हो सबके छोड़ कर तुम इस तरह, जा रहे हो तुम खुशी से आज वन को, मेरी जाँ। काम सबके आ गयी थी नेकियाँ हमने जो कीं, क्या मुगीबत आ गयी, कैसा भयानक है समाँ। इस तरह कहती हुई क्रूरमाँ पे गिरके राम के, खुद को बदक्रिस्मत समझ कर रो रही थीं उनकी माँ। दुख उन्हें था किस क्रूर, यह कोई कह सकता नहीं, दी तसल्ली राम ने, चरणों में गिर कर नागहाँ। हाल जब यह सब सुना सीता भी फ़ौरन आ गयी, पाँव छू कर सास के खामोश वह बैठी वहाँ।

सास ने दिल से दुआ दी और उनको देख कर, हो गयीं बेचैन, आँखों से हुए आँसू रवाई। सोचती सीता थी बैठी यों ज़मीं को देखती, मेरे शौहर आज वन को होने वाले हैं रवाई। साथदारी इनकी देगा कौन अब है देखना, जान ही यह साथ जाएगी मेरी, या ज़िस्मों जाँ। पैर के नाखून से वो थीं ज़मीं को खोदतीं, कैफ़ियत जो लिखूँ उनकी, मुझमें ताक़त है कहाँ। हाल सीता का बयाँ बयों कर करूँ उस वक़्त का, नीची नज़रें उनकी थीं, आँखों से आँसू थे रवाई। उसकी हालत देख कर माँ ने कहा यों राम से, यह बहू सबको है प्यारी और है आरामे जाँ। किसकी बेटी है, बहू किसकी है, यह जाहिर है सब, जान से बढ़ कर इसे मैं चाहती हूँ बेगुमाँ। इस शजर को मैंने पाला लाड़ से और चाह से, फूलने फलने का इसके हो रहा था अब समाँ। कुछ नहीं मालूम क्या मंजूर है भगवान को, इसको अब बरबाद करने आ रही हैं आँधियाँ। तख़्त पर से यह कभी उतरी ज़मीं पर भी नहीं, दीप की बाती मिलाना था इसे बारेगराँ। मैंने अपनी जान से बढ़ कर रखा इसको अजीज़, और हमेशा हर तरह रहती थी इसकी निगहबाँ। साथ चलने के लिए वह कह रही है वन को अब, हुक्म क्या होता है इसके वास्ते अब मेरी जाँ। क्या मुनासिब होगा इसका साथ भी ऐसी जगह, शेर, हाथी और जंगली जानवर फिरते जहाँ। वास्ते जंगल के, भील और कोल हैं पँदा हुए, है जिगर पत्थर का जिनका और हैं जो सख़्तजाँ। और जो औरत तपस्विन हो उसे मौजूँ हैं यह, जिससे छूटा हो ज़माना—जिसने छोड़ा हो जहाँ। देख ले बन्दर अगर तसवीर में डर जाए जो, ऐसी सीता किस तरह वन में रहेगी, मेरी जाँ। यह अगर घर में रहे, आराम मुझको भी मिले, जो मुनासिब हो करो, सब कर दिया तुम पर अयाँ। माँ की प्यारी-प्यारी बातें राम को अच्छी लगीं, और वे अल्फ़ाज़ बोले जो कि थे राहत रसाँ। फिर मुखातिब होके सीता की तरफ़ कहने लगे, जो मुसीबत वन में पेश आती हैं तुम पर है अयाँ। क़ायदा यह था कि माँ के सामने कुछ ना कहें, वक़्त की देखी नज़ाक़त, यों हुए गौहरफ़साँ। दिल लगा कर तुम सुनो शहज़ादी मेरी बात ये, तुम न लाना दिल में अपने और कुछ वहमोगुमाँ। ख़रियत मेरी और अपनी चाहती हो तुम अगर, मान लो कहना मेरा, रह जाओ घर ही में यहाँ। हुक्म की तामील होगी सास की खिदमत के साथ, और श्वसुर की रोज़ सेवा कर सकोगी बेगुमाँ। उनका दिल बहला सकोगी, उनको तुम समझाओगी, होगी जब बेचैन मुझको याद करके मेरी माँ। मैं कसम खा कर तुम्हें कहता हूँ, ऐ प्यारी मेरी, छोड़ता माँ के लिए ही तुमको हूँ मैं बस यहाँ। बात मानोगी तो इसमें फ़ायदा हर तरह है, गर करो इसरार चलने को तो इसमें है ज़ियाँ। मैं पिता के हुक्म की तामील करके आऊँगा, दिन गुज़र जाते हैं जल्दी, कुछ नहीं इसमें गुमाँ। हठ अगर करती हो चलने, सामने तकलीफ़ है, धूप, जाड़ा और बारिस है वहाँ आफ़ाते जाँ। रास्ते में खार हैं, कंकर बहुत हैं, घास है, गर न हों पैरों में जूते चल सके कोई कहाँ। पैर नाजूक हैं तुम्हारे किस तरह तुम चल सको, रास्ते में जब मिलेंगे सैकड़ों कोहेगराँ। गार और दरें नदी-नाले मिलेंगे सैकड़ों, देखने से जिनके हो जाता है इन्साँ नीमजाँ। जानवर जंगल में जो रहते हैं उनके शोर से, सन्न और हिम्मत रहे इन्सान के दिल में कहाँ। खाक पर सोना पड़ेगा बर्षा से ढाँकोगी तन, कन्द मूलो फूलो फल ही खाने को मिलते वहाँ। और इसका भी क्या निश्चय, वो हमेशा मिल सकें, वक़्त पर मिलते हैं सब कुछ, बात है बिल्कुल अयाँ। और वो इन्सान जंगली जोकि इन्साँ को भी खाएँ, जंगलों में फिरते रहते हैं सदा बेखानमाँ। और पहाड़ों का भी पानी सर्द होता है बहुत, अलगरज तकलीफ़ें जंगल है न मुहताज़े बयाँ।

साँप रहते हैं भयानक और पक्षी खौफनाक, और लुटेरों की भी रहती हैं वहाँ पर टोलियाँ। तुम निहायत नर्मदिल हो और हो नाजुक मिजाज, खौफ से जंगल में थरति हैं नामी पहलवाँ। नामुनासिब है कि तुम को साथ ले जाऊँ मैं वन, मोतरिज होंगे वो मुझ पर लोग हैं गो नुक्तादाँ। मान सरवर में हमेशा है जो रहती हंसनी, खारे दरियाँ में वो रह कर जी भी सकती है कहाँ। आम के जो झाड़ पर कोयल सदा है कूकती, क्या वह रेगिस्तान में हो सकती खुर्रम शादमाँ। अपने शौहर का गुरु का जो न मानेगी कहा, दिल में पछताती रहेगी और न होगी शादमाँ। राम का कहना था सीता के लिए गो नेक राय, लेकिन उनके वास्ते वह था नहीं राहतरसाँ। जानकी जी को तो कुछ इसका नहीं सूझा जवाब, चाहते शौहर हैं मुझको छोड़ना समझी यहाँ। सास के वह पैर छू कर इस तरह कहने लगी, दरगुजर कीजे महारानी मेरी गुस्ताखियाँ। गर चे शौहर ने दिया है मुझको अच्छा मस्वरा, सह सकूँ उनकी जुदाई, मुझमें ताकत है कहाँ। राम से हो कर मुखातिब फिर कहा सीता ने यों, ऐ बहादुर मेरे प्यारे, ऐ मेरे राहतरसाँ। आप से हो कर जुदा बैकुंठ भी मुझको मिले, है नहीं बैकुंठ वह मुझको नरक है बेगुमाँ। ख्वाह वह बन्धू हो कोई ख्वाह वह बेटा ही हो, हों ससुर या सास या भाई बहन या बाप-माँ। पति पर अधिकार जिसका है नहीं, मजलूम है, सब नज़र आते हैं उसको सुरते बर्कतयाँ। रुपया, दोलत और हुकूमत और सारी जायदाद, हो न शौहर, तो हैं औरत के लिए सब रायगाँ। ऐश बीमारी है, दुनिया है जहन्नुम यह मुझे, ऐ मेरे मालिक नहीं गर आप, तो राहत कहाँ। जैसे पानी है नदी में और तन में जान है, है तआलुक इस क़दर शौहर के जन के दरमियाँ। आप ही के साथ रह कर, देख कर मुंह आपका, हर तरह मैं खुश रहूँगी और रहूँगी शादमाँ। मुझको जंगल भी नज़र आयेगा जैसे शहर इक, झोंपड़ी मुझको नज़र आयेंगी बारौनक मकाँ। सब परिन्दे भी नज़र आयेंगे मुझको रिश्तेदार, बस नज़र आता रहेगा ऐशो राहत का समाँ। देवता वन के जो हैं होंगे महाफ़िज मेरे सब, सेज पत्तों घास की होगी मुझे राहतरसाँ। मुझको खाने को मिलेंगे कन्दो मूलो फूलो फल, मिस्ले महले शाही होंगे कोह भी राहतरसाँ। आपके क़दमों को अपने सर पे रख कर हर घड़ी, जैसे चकवी शाद रहती है, रहूँगी शादमाँ। आपने मुझको सुना दी वन की सारी दास्तान, और जो तकलीफ़ होती है, वो सब करदी बयाँ। सब मिला कर वह मुझे इतनी नहीं तकलीफ़दे, जिस क़दर होगी जुदाई आप की ईज़ारसाँ। ग़ौर फरमा लीजिए लेकिन मुझे ले चलिए साथ, और ज़्यादा अर्ज करने की मुझे ज़ुरंत कहाँ। रहमदिल हैं आप और है सारी बातें जानते, आप से कोई नहीं हैं राज़ेदिल मेरा निहाँ। गर अयोध्या में मुझे चोदह बरस छोड़ेंगे आप, यह समझ लीजे कि बचने की नहीं फिर मेरी जाँ। राह चलने में थकावट कुछ नहीं होगी मुझे, आप के जब मैं चरन चूमूँगी हो कर शादमाँ। आपकी खिदमत कलूँगी मेरे मालिक रात दिन, आपको तकलीफ़ कुछ होने न दूँगी हर ज़माँ। आपको पंखा झलूँगी पैर धोऊँगी मुदाम, देख कर मैं मोहनी सूरत को हूँगी शादमाँ। और मगन हर दम रहूँगी आपकी सेवा से मैं, वज़त मुझको रंज सहने का मिलेगा ही कहाँ। घास पत्तों की बना लूँगी हमेशा सेज मैं, पैर दाबूँगी, रहूँगी आप ही की निगहवाँ। आप जब होंगे तो मुझ पर कौन डालेगा नज़र, शेरनी को देख ले खरगोश, यह ज़ुरंत कहाँ। आपको जंगल है जेबा, मुझको सेवा आपकी, आप तो हैं मर्दे मँदाँ और मैं हूँ नातवाँ। यह कठिन अलफ़ाज़ सुन कर जो रही हूँ किस तरह, खदशाए फ़रक़त से अब तक क्यों न निकली मेरी जाँ।

इतना कह कर हो गयी सीता निहायत बेकरार, बात भी सुन के जुदाई की, ये मुमकिन था कहाँ । राम ने देखा कि इनको घर में छोड़ूँगा अगर, जिन्दगी इनकी नहीं बाकी रहेगी बेगुमाँ । राम ने उनसे कहा अब फ़िकरो ग़म को छोड़ दो, साथ चलने की ज़रा जल्दी करो तैयारियाँ । राम ने सीता को अपनी इस तरह समझा लिया, गिर पड़े फिर अपनी माँ के पाँवों पर वो नागहाँ । दी दुआ माँ ने कहा, जल्दी से आना लौट कर, और सबको शाद करना, ऐ मेरे आरामजाँ । क्या मेरी तकदीर पलटेंगे कभी परमात्मा, क्या यह जोड़ी मेरे आगे होगी फिर जलवाकुनाँ । शुभ दिन वह कौन-सा होगा मेरे बेटा कहो, जब कि देखेगी तुम्हारी शकल फिर यह खस्ताजाँ । लाल और रघुवर तुम्हें कह कर पुकारूँगी मैं कब, देख कर सूरत यह प्यारी हूँगी मैं कब शादमाँ । राम ने देखा कि माँ अपनी बहुत है बेकरार, ग़म की सिहत से था उनको बात करना भी गिराँ । राम ने उनको तसल्ली दे के समझाया बहुत, खींच सकता ही नहीं उस वक़्त का मैं कुछ समाँ । पैर पड़ कर सास के सीता ने ऐसी अर्ज की, आपकी ख़िदमत करूँ, है मेरी किस्मत में कहाँ । वक़्त यह ख़िदमत का था, जाना मगर वन को है अब, मेरे दिल की आरजू यह रह गयी दिल में निहाँ । जो नसीबे का लिखा है, हो के रहता है ज़रूर, आपकी मुझ पर इनायत की नज़र हो बेगुमाँ । बात यह सुन कर बहू की सास बेकल हो गयीं, हाल कुछ उस वक़्त का लिखे कोई मुमकिन कहाँ । सास ने सीने से सीता को लगाया बार-बार, की नसीहत और उनसे यों हुई गौहरफ़शाँ । ज़ेरे साया अपने शीहर के रहो हर वक़्त शाद, आव हो जिस वक़्त तक गंगा में जमना में रवाँ । सदेक दिल से फिर दुआएँ सास ने सीता को दीं, और अदब से पैर छू कर हो गई मोता रवाँ । जब कि लक्ष्मण पर हुए हालात यह सब मुनक़शिफ़, हो गए बेताब, आँखों से हुए आँसू रवाँ । दौड़ कर वह गिर गये क्रदमों पे आके राम के, और उलफ़त के सबब बाकी न थे ताबो तवाँ । मुँह से कुछ कहते न थे, खामोशियाँ थी छा गयीं, बेकरारी के निशाँ थे उनके चेहरे से अयाँ । माहिए बेआब जैसा उनका दिल बेचैन था, सोचते थे अपने दिल में, हो गया क्या नागहाँ । क्या कहेंगे भाई मुझको बस इसी की फ़िक्र थी, साथ रखेंगे मुझे या छोड़ जाएँगे यहाँ । राम ने देखा कि भाई हाथ जोड़े हैं खड़े, तोड़ कर संसार से नाता वह अपना बेगुमाँ । राम ने उनसे कहा जो पेश आगे आएगा, है वह जाहिर तुम पे सब, ठहरो यहीं तुम भाईजाँ । जिन्दगी है कामयाब उसकी जो फ़ौरन मान ले, जो कहें स्वामी, गुरु, और हुक्म जा दें बापमाँ । घर में रह कर ही करो माँ-बाप की ख़िदमत अदा, वे तआमुल मान लो मेरा कहा यह मेरी जाँ । शत्रुघन और भरत घर पर अब नहीं मौजूद हैं, बाप अपने हो गये हैं अब जइफ़्रो नातवाँ । बाप को सदमा है मेरा ग़म तुम्हारा भी जो दूँ, ऐसी हालत में कहेंगे क्या मुझे अहले जहाँ । मुल्क सब हो जाएगा बरबाद होंगे सब तबाह, तुम अगर घर पर रहोगे, होंगे सबके पासवाँ । इसलिए ठहरो यहीं और सबको तुम आराम दो, वना क्या इसका नतीजा होगा है तुम पर अयाँ । रहती है जिसकी रियाया रंज और तक़रीफ़ में, दाख़िजे दोज़ब हुआ करते है ऐसे हुक्मराँ । राम की लक्ष्मण ने सारी गुप्तगू जब यह सुनी, उड़ गये होशोहवास और खो गये ताबोतबाँ । राम की बातों से लक्ष्मण यों हुए अफ़मुदाँ दिल, जैसे पाले से सुकड़ जाता कमल है नागहाँ । कुछ जवाब उनको न सूझा हो गये वह बेकरार, राम के चरणों पे सिर था और थे आँसू रवाँ । यों कहा है आप मालिक और मैं सेवक हूँ एक, आप से मैं कुछ कहूँ, मुझमें यह ताकत कहाँ । छोड़ देंगे आप गर मुझको नहीं इसरार कुछ, घर में रहने की समझ में आ गयी सब खूबियाँ ।

अपनी बद वक्ती के बाअस उसके मैं लयक नहीं, धर्म पर चलने हैं जो होते हैं वो अजमतनिश। आपके साथे में मालिक मैं पला हूँ आज तक, आपही मेरे गुरु हैं, आप ही हैं बाप-माँ। जिस कदर सम्बन्ध है दुनिया में बतलाये गये, आप ही पर खत्म हैं सब, कुछ नहीं इसमें गुमाँ। कायदे और रीत सब उसको सुनाना चाहिए, जो हो काबिल उनके, जो हो दिल से उनका कद्रवाँ। सक्ते दिल से मैं तो सेवक आर हूँ खिदमतगुजार, छोड़ जाना ऐसे खादिग को है फिर जायज कहाँ। राम ने देखा कि भाई हो रहे हैं बेकरार, अपने सीने से लगा कर यों हुए गौहरफ़शाँ। जाओ जल्दी अपनी माता से इजाजत ले के आओ, देर कुछ होने न पाये जल्द होना है रवाँ। इतना सुनते ही परेशानी हुई सब उनकी दूर, हो गये मसरूर बेहद, हो गया दिल शादमाँ। लक्ष्मण जल्दी गये माता सुमित्रा जी के पास, अपने सर को रख दिया चरणों पे उनके नागहाँ। लक्ष्मण से हाल जब पूछा सुमित्रा जी ने कुछ, इन्तेदा से इन्तेहा तक कर दिया उनसे बयाँ। जब सुना यह वाक्या इस तरह से वह डर गयीं, जिस तरह डरते हिरन हैं, जब जले वन नागहाँ। लक्ष्मण थे सोचते दिल में कि यह क्या हो गया, मुश्किल जाने को कहेंगी या नहीं अब मेरी माँ। राम और सीता की उलफ़त उनके दिल में थी बहुत, और राजा के तसव्वुर ने किया महबे फ़गाँ। पीट कर सर को सुमित्रा ने कहा—अफ़सोस है, हाथ पापिन कैंकेई ने कर दिया क्या नागहाँ। आ गई उनकी समझ में कुछ नज़ाक़त वक़्त की, और मूलातिव होके लक्ष्मण से हुई गौहरफ़शाँ। राम तुमको चाहते हैं, बाप के मानिन्द हैं, समझो वैदेही को तुम ऐ मेरे प्यारे अपनी माँ। राम का जिस जा ठिकाना हो अयोध्या है वहीं, हो जहाँ ख़ुशी की तनवीर, दिन भी हो वहाँ। जा रहे हैं वन को जब सीता भी भरे राम भी, फिर जरूरत कुछ नहीं है तुमको रहने की यहाँ। बाप-माँ भाई-गुरु मालिक तुम्हारे राम हैं उनके अहकामात पर कुर्बान कर दो अपनी जाँ। लोग है दुनिया के प्यारे राम के बाअस हमें, इसलिए तुम भी चले जाओ वहाँ, वह हों जहाँ। साथ उनके जाओ, जंगल में रहो सेवा करो, अपने जीवन का करो यों लुत्फ़ हालिस मेरी जाँ। राम की सेवा में बंटा जो तुम्हाग ध्यान है, मैं हूँ किसमत की धनी, कुर्बान तुम पर मेरी जाँ। जिसका का बेटा भक्त निकले, है वही माँ खुशनसीब, वना इस जनने से बेहतर है जने कोई न माँ। तुम करो खिदमतगुजारी वन मे रह कर उनके साथ, यह तुम्हारे ही मुक़द्दर को हैं सारी खूबियाँ। ऐश और आराम में हरगिज़ न पड़ना ऐ पिसर, उनकी खिदमत में लगे रहना हमेशा बंगुमाँ। हर तरह आराम हासिल होगा जंगल में तुम्हें, राम-सीता साथ हैं, वन कर तुम्हारे बाप-माँ। है यही मेरी हिदायत काम करना तुम वही, राम-सीता को न हो जिससे कोई जहमत वहाँ। राम को घरदार का आने न पाये कुछ खयाल, ऐसी खिदमत तुम करो जिससे रहे वह शादमाँ। इस तरह रानी सुमित्रा ने हिदायत की उन्हें, और दुआ दे कर ये फरमाया कि हो जाओ रवाँ। पंर पड़ कर माँ के वो जल्दी रवाना हो गये, ताकि फिर कोई रुकावट हो न पैदा दरमियाँ। राम और सीता जहाँ थे उस जगह लक्ष्मण गये, देख कर दोनों को दिल में हो गये बस शादमाँ। राम को आदाब करने का सरफ़ हासिल किया, हो गये तीनों रवाँ, एवाने शाही था जहाँ। शहर में हर एक कहता था कि यह क्या हो गया, वन गया था काम जो, किस तरह बिगड़ा नागहाँ। हर कसोनाकस का दिल बेचैन था चेहरा उदास, रंज में डूबे हुए थे और थे महबे फ़गाँ। हाथ मलता था कोई और पीटता था सर कोई, और महल पर हो रहे थे जमा सब खुदों कलाँ। लोग सब बेचैन थे जैसे कि बेपर हो परिन्द, कसरते गम से दुखी थे और थे मातमकुनाँ।

कसरे शाही पर रियाया का लगा बढ़ने हुजूम, रंज और सदमे का आलम कर नहीं सकता बर्या । रामचन्द्र लाये हैं तशरीफ़ जब बोले वज़ीर, सुनते ही यह खो गये राजा के सब ताबोतवा । जब पड़ी दोनों पे नज़रें हो गये बेचैन वो, हाथ इन तीनों को किस दिल से कर्ह वन को रवा । ये तड़पते राजा दशरथ मुंह से कुछ कहते न थे, थी जलन दिल में छुपी और लब पे थी आहो फ़ुग़ा । राम ने फिर अपना सर चरणों पे बालिद के रखा, और फिर वन की इजाज़त मांगी बा इज्जे बर्या । की गुज़ारिश राम ने हो दस्तबस्ता बाप से, ये खुशी का वक़्त है, क्यों आप हैं महबेफ़ुग़ा । राम को राजा ने पास अपने बिठा कर यों कहा, होके रहता है वही, तकदीर में है जो निहा । जो करता जिस तरह पाता है वैसा ही वो फल, आज यह बर अक्स इसके हो रहा है क्यों यहाँ । हो खता सरज़द किसी से, और सज़ा पाये कोई, है यह परमेश्वर की लीला बहतरख़ वहमोंगुमा । जिस क्रदर मुमकिन हुआ राजा ने समझाया बहुत, और कोशिश की न होने पाये बन को ये रवा । आखिरस देखा कि अपनी बात के पक्के हैं राम, रुक नहीं सकते किसी के रोकने से वो यहाँ । फिर तो राजा ने लिया सीता को छाती से लगा, और जंगल की जो थीं तकलीफ़ सब कर दी बर्या । सब सुनाया उनको जो आराम था आठों पहर, बाप के घर में हो या ससुरे के घर में पुत्रिया । राम के चरणों में सीता का लगा था दिल तमाम, बन उन्हें प्यारा था, कुछ भाता न था अपना मक़ा । लोग जो मौजूद थे उस वक़्त समझाने लगे, वन में पेश आती हैं क्या-क्या मुश्किलें-दुश्वारिया । मंत्री सुमंत जी ने और गुरु जी ने कहा, दी इजाज़त वन को तुमको राजा दशरथ ने कहा । ससुर सासैं और गुरु जो कुछ कहें तुम वह करो, इस तरह सब ने कहा सीता से हो कर हमज़बा । ये मुहब्बत के वचन सीता को नामरगूब थे, हो गयीं बेचैन वह बाक़ी न था ताबोतवा । जानकी के मुंह से कुछ अल्फ़ाज़ तो निकले नहीं, कँकेई गुस्से में आयी, उठ गयी वह नागहाँ । और मुनियों का लिबास इसके मुक़ाबिल रख दिया, राम से हो कर मुखातिब इस तरह खोली ज़बा । जान से बढ़ कर तुम्हें राजा जो रखते हैं अज़ीज़, तुम को वन को भेज देंगे, यह तो मुमकिन है कहा । कौल जाये आबरू जाये कि मिट जाये सबाब, तुम को जंगल को नहीं हरगिज़ करेंगे वे रवा । इस तरह तुम ग़ौर करके जो मुनासिब हो करो, राम ये अल्फ़ाज़ सुन कर हो गये बस शादमा । राजा दशरथ को लगे अल्फ़ाज़ ये मानिन्दे तोर, सोचते थे क्यों नहीं अब भी निकलती मेरी जा । आ गया राजा को ग़श और लोग सब बेचैन थे, सूझता कुछ भी न था जाते रहे ताबोतवा । जो लिबास उनके लिए मुनियों का था लाया गया, राम उसको पहन कर जल्दी हुए वन को रवा । साथ सीता और लक्ष्मण को लिए फिर रामचन्द्र, वन को जाने के लिए सब से मिले वो शादमा । मिल के वे तीनों रवाना कसरे शाही से हुए, और पहुँचे शादमा ये सब गुरुजी थे जहाँ । लोग जितने थे वहाँ सब हो रहे थे बेक्रार, राम के कहने से सब की आ गयी कालिब में जा । ब्राह्मणों को दान दे कर खुश किया श्रीराम ने, नौकरों को भी किया इनाम दे कर शादमा । सौंप कर सब को गुरु को यों कहा फिर राम ने, आपकी इन पर इनायत की नज़र हो बेगुमा । हाथ जोड़े रामचन्द्र और विनती सबसे की, हर तरह तुम सब रहो महाराज के राहत रसा । ऐ अयोध्या के निवासी आप सब ऐसा करें, हिज़र में मेरे नहीं बेचैन सब खुदों कला । पाँव छू कर फिर गुरु के और सब को चूम कर, हो गये शादाँ ब फरहाँ रामजी बन को रवा । ज्यों ही वह चलने लगे कोहराम-सा एक मच गया, पीटने छाती लगे, करने लगे आहो फ़ुग़ा । और लंका में उधर होने लगे सब बद सुगून, देवता कुछ रंज में थे और कुछ थे शादमा ।

राजा दशरथ की गशी कुछ दूर होने लग गयी, और यों कहने लगे निकली नहीं क्यों मेरी जाँ। हो के राजा ने मुखातिब यों कहा दीवान से—ले के रथ सौमित्र तुम जल्दी से हो जाओ रवाँ। रथ में बिठला कर उन्हें ले जाओ वन में हर तरफ़, चार दिन समझा-बुझा कर लाओ फिर वापस मकाँ। बात के अपने धनी रह कर न आये राम गर, अर्ज करना तुम कि सीता को वो भेजें बेगुमाँ। खौफ़ से जंगल के सीता जिस घड़ी डर जाएगी, मेरा यह पैगाम तुम सीता से भी करना बयाँ। सास के घर में कभी रहना, कभी माँ बाप के, इस तरह समझा-बुझा कर इसको फिर लाना यहाँ। वह अगर आजाएगी मुझ को तसल्ली होगी कुछ, वना यह समझो कि बचने की नहीं यह मेरी जाँ। इस तरह कहते हुए राजा को फिर गश आ गया, वो ज़मीं पर गिर गये करते हुए आहोफ़ुगाँ। हुक्म सुनते ही ये फ़ौरन रथ को ले कर चल दिये, शहर के बाहर वो तीनों जा के ठहरे थे जहाँ। और कह-सुन कर किया उन तीनों को रथ पर सवार, याने फ़ौरन हो गये वो सब अयोध्या से रवाँ। राम को जाते हुए देखा जो अहले शहर ने, साथ चलने लग गये करते हुए आहोफ़ुगाँ। राम के समझाने पर भी कुछ नहीं थे मानते, लौटते थे, फिर पलट जाते थे चलते नागहाँ। मर्द औरत रो रहे थे और सब थे बेकरार, छा गई थी इक उदासी और भयानक था समाँ। उनको था समझाने घर अहबाब मानिन्दे उदू, झाड़ भी और फूल-फल कुम्हला रहे थे नागहाँ। जानवर जितने थे सब अपनी जगह खामोश थे, गोया था तस्वीर का आलम वो मंज़र वो समाँ। फूल फल बागों में जितने थे वो सब मुरझा गये, इस तरह बाग़े अवध में आ गयी फ़सले ख़िज़ाँ। कैकई ने भीलनी बन कर लगा दी आग सब, जिस सबब से यह अवध में मच गयी आहोफ़ुगाँ। लोग सब कहने लगे हम सब रहें किस वास्ते, राम सीता और लक्ष्मण जब नहीं रहते यहाँ। इस तरह कहते हुए सब लोग हमराह हो गये, रह गये घर में वही जो बच्चे थे या नातवाँ। राम ने देखा रियाया आ रही है मेरे साथ, इनको उसका दुःख हुआ और वह हुए गौहरफ़शाँ। उनको समझाया बहुत कुछ और मनाया राम ने, धर्म के सब तौर भी करने लगे उनसे बयाँ। राम की उल्फ़त के मारे वो नहीं वापस गये, राम की भी बन्द आखिर हो गयी मुँह में ज़बाँ। गम में सब डूबे हुए थे और थकावट राह की, सो गये सब रात में, ठहरे वो थे जा कर जहाँ। जब बजे बारह तो गाफ़िल नींद में थे सब पड़े, राम जी ने मंत्री से कह दिये राजेनिहाँ। रथ को ले कर चल पड़ो आहिस्ता जब सोते हैं सब, बात बनने की नहीं इसके सिवा अब बेगुमाँ। राम लक्ष्मण और सीता हो गये रथ पर सवार, मंत्री ने रथ चलाया चल दिये वो नागहाँ। सुबह उठ कर सबने देखा राम उस जा थे नहीं, और रथ का ढूँढ़ने से भी नहीं पाया निशाँ। हर तरफ़ थे देखते, रोने लगे सब रंज से, हाय थी लब पर हर एक के और थे मातमकुनाँ। डूब जाता है कोई जैसे जहाज़ एक माल का, ताजरीं को रंज कितना हो, जो हो ऐसा ज़ियाँ। जीस्त पर अपनी मलामत कर रहे थे लोग सब, और कहते थे कि बिन रघुनाथ के जीना कहाँ। वो हुए वापस अयोध्या को निहायत रंज से, रंज और सदमे का उनके हो नहीं सकता बयाँ। इस तवक्को पर कि चौदह साल जब हो जाएंगे, राम के दर्शन करेंगे इसलिए थी तन में जाँ। चैन और आराम छोड़ा सबने उनके वास्ते, चकवा चकवी की नज़र में फिर रही थी दास्ताँ। राम-सीता हो के राही पहुँचे शृंगावेरपुर, और गंगा जी के दर्शन करके थे उतरे वहाँ। मिलके सबने दण्डवत्-प्रणाम गंगा को किया, देख कर गंगा की लहरें हो गये सब शादमाँ। वाक़यात और हाल गंगा का कहा तफ़सील से, राम ने गंगा की ख़ूबी और बड़ाई की बयाँ।

सब नहाये, दूर उनकी सब थकावट हो गयी, पी के जल गंगा का वो सब हो गये बस शादमाँ । राम की ऐसी है लीला जो समझ से है परे, पार हो जाता है वेड़ा उसका जो है रमजदाँ । गोह लोगों का था राजा, नाम था जिसका निषाद, जब खबर उसने ये पायी राम आये हैं यहाँ । भाई-बन्धों को सब अपने जमा उमने कर लिया, और तहायफ़ ले के हाज़िर हो गया जल्दी वहाँ । कर दिया सब पेश बाद आदाब के, लाया था जो, देख कर रघुनाथ की सूरत हुआ बस शादमाँ । राम ने उमको बिठाया पाम, पूथी खैरियत, गुफ्तगू को उमसे जो थी राम के शायाने शाँ । अत्र की धन और दौलत मुल्क है सब आपका, आपके तशरीफ़ लाने से हुआ मैं शादमाँ । शहर में तशरीफ़ ले चलिए दया कीजे हुज़ूर, ताकि बढ़ जाए नज़र में सबकी मेरी इज्जोशाँ । राम ने ऐसा कहा मुझको नहीं इन्कार था, हुक्म से मैं बाप के अपने हूँ बेताबोतदाँ । काटना है साल चौदह बस इसी इक़ भेष में, किस तरह मैं पाँव रक्खूँ फिर शहर के दरमियाँ । हो गया खामोश राजा, लोग इनको देख कर, थे ताज्जुब में, बयाँ करते थे सारी खूबियाँ । कोई कहता था कि वो माँ-बाप कैसे इनके हैं, होनहार आने पिसर को कर दिया बन को रवाँ । कोई कहता था कि अच्छा ही हुआ अपने लिए, इस बहाने से ही ये तशरीफ़ ले आये यहाँ । राम-सीता के ठहरने के लिए राजा ने फिर, जाय कर दी मुन्तख़िब एक झाड़ के नीचे वहाँ । उसने ले जा कर दिखाई रामचन्द्र को जगह, देखते ही जिसको बेहद हो गये वो शादमाँ । शहर के जो लोग थे सब अपने घर वापस गये, लग गये वो लोग भी सब अपने कामों में वहाँ । घास-पत्तों की बनायी गोह ने एक सेज भी, और फल पानी भी ला कर रख दिया उनके यहाँ । कन्दमूलो फल इन्होंने खाये बेहद शौक से, राम जब लेटे कदम लक्ष्मण ने दाबे बेगुमाँ । राम को नींद आ गयी सामंत भी सोने लगे, वन के पहरेदार लक्ष्मण रात भर थे निगहवाँ । करके राजा ने मुकर्रर पहरे, यह ताक़िद की, हर तरह से सब रहें इनके महाफ़िज़ निगहवाँ । आप खुद तलवार बाँधे चल दिया लक्ष्मण के पास, काट दी सब रात ले कर हाथ में तीरोकमाँ । राम को सोते हुए खाली जमीं पर देख कर, रंज गुज़रा उसके दिल पर हो गये आँसू रवाँ । कह उठा—महाराजा दशरथ का जो है शाही भवन, उससे बेहतर आज दुनिया में नहीं कोई मकाँ । हर तरह से वह सजा था और था आरास्ता, थे जवाहर के जहाँ फानूस रोशन बेगुमाँ । थे जड़ाऊ तख़्त जिसका तोसकी जरतार थी, राम जो सीता के साथ आराम करते थे जहाँ । घास पर जो आज सीताराम हैं सोये हुए, देख कर यह चैन क्योंकर आएगा मुझको यहाँ । बाप-माँ, अहले अवध, नौकर तमाम और अकरूवा, थे महाफ़िज़ रात दिन, रहते थे उनके निगहवाँ । बाप जिनके हैं महाराजा, जनक, दशरथ स्वसुर, आज वो सीता जमीं पर सो रही हैं क्यों यहाँ । राम और सीता को यह जंगल तो मौजू ही नहीं, सच है जो लिक्खा है क्रिसमत में वो होता है अयाँ । कैकेई की बुराई का ही नतीजा है यह सब, राम और सीता को जिसने कर दिया वन को रवाँ । उसने दुनिया भर को रंजीदा किया इस काम से, सूर्यवंशी खानदाँ में हैं यह नंगे खानदाँ । यों कहा लक्ष्मण ने उससे यह शिकायत है फ़िज़ूल, भाई, दुःख और सुख कोई देता नहीं हमको यहाँ । अपने ही कर्मों का मिलता भी है फल हर एक को, इस तरह से ज्ञान की बातें उन्होंने की बयाँ । हो बुराई या भलाई और जुदाई या मिलाप, जीना-मरना, दोस्त-दुश्मन, हैं ये सब स्वाबे गिराँ । जर जमीनों मुल्कों दौलत और जहन्नम या बहिस्त, और दुनिया भर के जितने काम हैं पिनहाँ अयाँ । असल में अज्ञान का असबाब है दुनिया तमाम, देखने-सुनने में हो या बायसे वहमोगुमाँ ।

स्वाभ में कोई अगर महाराजा हो जाए गरीब, या किसी कंगाल को मिल जाए दौलत बेगुमाँ। काम दुनिया के हैं सब यों ही समझना चाहिए, क्योंकि बेदारी में हैं बेकार यह सुदोजियाँ। दर्द दुख और रंज का करना गिला बेकार है, और शिकायत करके ओरों से न होना बदगुमाँ। लोग दुनिया के फैसे माया के हैं जंगल में, काम दुनिया के हैं उनके हक में एक स्वाबेगिराँ। इस अँधेरी रात में बम जागता जोगी ही है, छोड़ कर दुनिया को हो जाता है आखिर रमजदाँ। याद में परमात्मा की जो लगा दे अपना दिल, है वही बेदार हर सोये हुए के दरमियाँ। लक्ष्मण जी रात भर उससे योंही कहते रहे, सुबह तक करते रहे वो ज्ञान की बातें बयाँ। राम उठे नींद से, जब सुबह का तड़का हुआ, हाथ-मुँह धो कर नहा कर हों गये फ़ारिग वहाँ। दूध से बड़के जटा बाँधी जो लक्ष्मण-राम ने, देख कर इसको हुए मुमंत के आँसू रवाँ। दस्त बस्ता अर्ज की उसने कि, ऐ मालिक मेरे, जो महाराजा के हैं अहकाम करता हूँ बयाँ। रथ पर बिठला कर जरा जंगल दिखा कर आपको, और गंगा में निलहा कर लाओ वापस बेगुमाँ। राम लक्ष्मण और सीता जल्द वापस आ सकें, फ़िक्र का और रंज का बाकी न हो शानोगुमाँ। कहते-कहते राम के चरणों पे एकदम गिर गये, तपुल के मानन्दि करने लग गये आहोफ़ुगाँ। और कहा लाजिम है करना आपको इस वक़्त वह, मूलक की कायम रहे जिसमे बहारे जावेदाँ। राम ने उनको उठाया और समझा कर कहा, धर्म से हैं आप याफ़िक्र खूब, और हैं रमजदाँ। शिव व ध्वज राजा हरिश्चन्द्र व रंतिदेवो बली, ये यहाँ राजा हुए मशहूर आफ़ाके जहाँ। धर्म के पाबन्द थे ये और टले हर्गिज नहीं, गरचे पेश आयी इन्हें इम राह में दुश्वारियाँ। है सचाई का धर्म में सबसे बड़ कर मरतवा, शास्त्रों और वेदों में इसकी बयाँ हैं खूबियाँ। कैसी आसानी से मैंने धर्म को है पा लिया, छोड़ दूँ इसको अगर सारी खराबी है अयाँ। आप से मैं क्या कहूँ कहना ज़्यादा है फ़िज़ूल, बाप के चरणों पे गिर कर आप यों कीजे बयाँ। अब नहीं कोई ज़रूरत फ़िक्र करने की उन्हें, हर तरह आराम राहत से है हम तीनों यहाँ। आप भी मेरे बड़े हैं, इल्तेजा है आप से, काम ऐसा कीजिए, हों वाप मेरे शादमाँ। गुफ़तगू दोनों की सुन कर थे वहाँ जिनने निषाद, हो गये बेचैन और करने लगे आहोफ़ुगाँ। लक्ष्मण जी तल्लू बातें कुछ जो करने लग गये, दखल दे कर राम ने बस रोक दी उनकी जवाँ। दे के फिर सौगन्ध अपनी यों कहा मुमंत रो, आप जा कर ये न हर्गिज बाप से कीजे बयाँ। बोले फिर मुमंत यों राजा ने यह भी है कहा, है ये नामुमकिन कि सीता सह सके दुश्वारियाँ। बस यही लाजिम है तुम को, भूल मत जाना कहीं, जिस तरह भी हो सके सीता को ले आना यहाँ। वर्ना मेरी जिन्दगी की कुछ नहीं उम्मीद है, जिस तरह पानी न होने से हैं मरती मछलियाँ। बाप के घर में रहे वह या रहे समुराल में, जिस जगह चाहे रहे. हरजा रहेगो शादमाँ। जिस तरह राजा ने मुझ से यह कहा है क्या कहूँ, आजिजी उनकी नहीं हो सकती है मुझसे बयाँ। राम जी ने बाप के पैगाम को जब सुन लिया, हो के सीता से मुखातिब यों हुए गोहरफ़शाँ। तुम अगर घर लौट जाओ सब अजीजी अक़रबा, मेरे माता-पिता क्या सारा अवध हो शादमाँ। सुनके ये अल्फ़ाज़ शीहर के कहा सीता ने यों, ऐ मेरे मालिक, वहाँ क्या आप तो हैं नुक्तादाँ। जिसम से परछाई हो जाए अलग मुमकिन नहीं, रोशनी मुरज न हो तो रह भी सकती है कहाँ। इस तरह सीता ने की शीहर से अपने इल्तेजा, मंत्री से फिर मुखातिब हो के यों खोली जवाँ। यह नहीं लाजिम है मुझको आप को मैं दूँ जवाब, आप हैं मेरे बड़े भी और मुझ पर मेहरबाँ।

दस्त बस्ता आप से यह इत्तेजा करती हूँ मैं, आप कुछ बिगड़ें न मुझ पर, हों न मुझ से बद्गुमाँ। छोड़ दूँ चरणों को शीहर के तो फिर मेरे लिए, हेच हैं सब अकम्बा और हेच है सारा जहाँ। बाप मेरे महाराजा हैं कि जिनके सामने, सर झुका देते हैं मारे खौफ के सब खुशरवाँ। उस पिता का घर भी मेरे मन को भाता है नहीं, मेरे शीहर गर न हों, मुझको मिले राहत कहाँ। और श्वसुर मेरे महाराजा हैं कोशलराज हैं, इन्द्र जिनके सामने अपने को समझे नातवाँ। राजधानी ऐसे राजा की अयोध्या का कयाम, सब अजीजो अकम्बा और साम सब हों मेहरवाँ। सब खुशी आरामो राहत कुछ नहीं हैं काम के, छोड़ कर चरणों को इनके कब मिले आगम जाँ। साथ इनके मैं रहूँगी बस यहीं आगम है, रास्ते में पेश आये भले ही दुस्वारियाँ। सास ससुरे के मेरे चरणों को छू कर यों कहें, वह परेशाँ कुछ न हों, अच्छी रहूँगी मैं यहाँ। मेरे शीहर और देवर साथ है दोनों मेरे, दोनों पर है नाज मुझ को, दोनों मेरे पासवाँ। राह की मुझ को थकावट है न कोई फिक्र है, हर तरह मैं खुश रहूँगी, हर तरह मैं शादमाँ। मंत्री यह बात सुन कर हो गये बस बेक्रार, आँख से आँसु थे जारी, बन्द थी मुँह में जवाँ। राम ने समझाया उनको और तसल्ली दी बहुत, लेकिन इनकी गुप्तगू उनको न थी राहतरसाँ। सीता जी हो जाएँ वापस उनका ये इसरार था, राम जी कब मानते थे, इसपे कब करते थे हाँ। हो गये मजबूर वो वापस अकेले लौटने, राम के आगे किसी की पेश चलती थी कहाँ। हो के वो मायूस लौटे उस जगह से इस तरह, जैसे व्यापारी कोई लूटा गया हो नागहाँ। हाँकते हैं रथ को वे घोड़े नहीं चलते मगर, हिनहिना कर देखते पीछे हैं हो कर नीमजाँ। जब निपादों ने ये देखा हो गये वो बेकरार, वन के रहने वालों की आँखों से आँसु थे रवाँ। जानवर जिनकी जुदाई में हों इतने बेक्रार, किम तरह जिन्दा रहेंगे लोग सब और बाप-माँ। राम ने इनको भी समझा कर रवाना कर दिया, और खुद गंगा पे आये जिस की मौजें थी रवाँ। नाव लाने के लिए जब बोले वे मल्लाह से, हाथ जोड़े अर्ज की उसने कि ऐ शाहेशहाँ। आप को मैं जानता हूँ क्या छुपाते मुझसे हैं, चरण-रज से आप की पत्थर में पड़ जाती है जाँ। आप के चरणों से पत्थर की गिला इन्साँ बनी, नाव तो मेरी है लकड़ी की ये सब पर है अयाँ। अगर ये इन्साँ बने तो मेरा क्या होगा हुजूर, छंटे-छांटे वच्चे हैं, कैसे पलेगी उनकी जाँ। ये मेरी रोजी का जरिया, पेट इससे पलता है, भूखों मर जायेगा दमके बिन हमारा खानदाँ। आप को जाना अगर है पार, बैठें, नाव में चरण धो डालूँ मैं पढले, मिटे सब बहमोगुमाँ। पैर धो कर आप के मैं नाव पर बिठलाऊँगा, आप से मैं कुछ न लूँगा है मेरी कुबनि जाँ। मैं कसम खा कर हूँ कहता आपकी दशरथ की भी, हवाह लक्ष्मण मार डालें, तीर से ले मेरी जाँ। बात यह मल्लाह की सुन कर हूँसे कुछ रामचन्द्र, और कहा वह काम कर, जिससे न हो तेरा जियाँ। जल्द पानी लाके धो ले पैर, और ले जा हमें, पार कर दरिया के, यह सायत न जाए रायगाँ। पार गंगा के लगाने कह रहे हैं आज वो, जिनकी ताकन और लीला मानता है सब जहाँ। दौड़ कर ले आया पानी धो लिये उनके कदम, राशनसीवी पे थे उसकी देवता हसरतकुनाँ। पैर धो कर खूद पिया पानी दिया औरों को भी, और बिठा कर नाव में उनको चला बस शादमाँ। था निपादों का भी राजा साथ और लक्ष्मण तो थे, राम सीता हो गये दरिया किनारे से रवाँ। कर गये जब पार दरिया और उतरे नाव से, रेत पर दरिया की जा कर रुक गये सब नागहाँ। गिर के चरणों पर खड़ा जब हो गया मल्लाह वह, राम ने सोचा कि देना चाहिए कुछ बेगुमाँ।

राम की यह बात दिल की ताड़ ली सीता ने जब, हाथ की अपनी अँगूठी बस निकाली नागहाँ। राम ने ले कर अँगूठी यों कहा मल्लाह से, यह सिला खिदमत का ले कर जाओ तुम अपने मक़ाँ। वह पकड़ कर पैर बोला मेरे पालनहार हो, मेरी किस्मत सो रही थी, हो गयी बस्ते जवाँ। मैंने मजदूरी बहुत की आज तक लेकिन मुझे, आज ही यह मिल गयी भरपूर मजदूरी यहाँ। आज लेना कुछ नहीं मैं चाहता हूँ आप से, वासी में आप जो दोगे वो लूँगा बेगुमाँ। बावजूद इसरार के कुछ भी नहीं उसने लिया, राम आशीर्वाद दे कर कर दिये उसको रवाँ। फिर नहाया रामजी ने और पूजा शिव की की, और सीता ने कहा गंगा से ऐ आवे रवाँ। अर्ज है यह मेरे शौहर और देवर खुश रहें, आप की पूजा कर्हूँगी हो के फिर मैं शादमाँ। यों जवाब उनको मिला गंगा से—प्यारी जानकी, हैं अयाँ सारे जमाने पर तुम्हारी खूबियाँ। मुझसे तुम क्या माँगती हो, दे भी सकती हूँ मैं क्या, फिर भी कहती हूँ कि तुम लौटोगी हो कर शादमाँ। जो तुम्हारी कामना हो दिल की सब बर आएगी, वस्त्र दुनिया में तुम्हारे होंगे हर लहजा बयाँ। यह दुआ गंगा की सुन कर हो गयी सीता जी खुश, बन गया सब काम उनका हो गयी वो कामराँ। राम ने जब गोह का वापस पलट जाने कहा, मुनते ही वह हो गया अफ़सुर्दा दिल और नीमजाँ। आपके हमरह रहूँगा रास्ता बतलाऊँगा, और जो खिदमत हो ज़ेबा कर सकूँगा बेगुमाँ। आप जिस जंगल में जा कर ठहरना चाहेंगे सब, मैं बना दूँगा कुटी पत्तों की अच्छी इक वहाँ। कुछ दिनों रह कर मैं खिदमत आपकी कर लूँ ज़रा, आप फिर जो हुकम देंगे होगा वह शायानेशाँ। राम ने हमरह उसको ले लिया सुन कर ये बात, पा लिया अमर्नि दिल और हो गया वह शादमाँ। उसने अपनी जाति के लोगों को फिर बुलवा लिया, माजरा उनको कहा और कर दिया सबको रवाँ। राम लक्ष्मण और सीता गोह को ले साथ में, बढ गये आगे किनारे से हुए बन को रवाँ। झाड़ के नीचे हुआ उस रोज़ उन सब का मुक़ाम, गोहो लक्ष्मण ने किया सब इन्तेज़ाम अच्छा वहाँ। राम ने फिर सुबह तीरथराज के दर्शन किये, नाम जिसका है प्रयाग और जिसकी लाखों खूबियाँ। जिस जगह जाने से हासिल होते हैं चारों पदार्थ, कल्ब रोशन हो सचाई और श्रद्धा से जहाँ। किला वह मजबूत ऐसा है कि जिसको ख़ाब में, पाप जो दुश्मन है उसको पा सके मुमकिन कहाँ। और जो तीरथ हैं सब करते हैं उसकी चाकरी, पाप की सेना है जिससे भाग जाती बेगुमाँ। और संगम ही सिंहासन अक्षवट है छत्र एक, देख कर जिसको मुनी और सब के दिल हो शादमाँ। गंगा और जमना की लहरें झिल रही मिसले चँवर, जिनके दर्शन से मूसीबत का मिटे नामोनिशाँ। उसकी खिदमत करते हैं साधू जो है पुण्यात्मा, आरजू उनकी है बस इतनी हमेशा बेगुमाँ। पाप हो जाते हैं गायब जिसकी बरकत से मुदाम, ऐसे तीरथ राज के दर्शन से थे सब शादमाँ। फिर रहे थे जब ये बागीचे को बन को देखते, राम ने तीरथ की अज़मत अपने मुँह से की बयाँ। त्रिवेणी पर आये सब और स्नान से फ़ारिग हुए, और पूजा शिव की करने हो गये फिर शादयाँ। इस जगह से राम लक्ष्मण और सब उस जा गये, आश्रम मशहूर भारद्वाज ऋषि का था जहाँ। राम को देखा मुनी ने दण्डवत करते हुए, हो गये मशहूर बेहद हो गये वो शादमाँ। अपने सीने से लगा कर दी दुआ दिल से उन्हें, और समझा यह कि हैं किस्मत की अपनी खूबियाँ। उनको बिठलाया, नवाज़े और खातिर की बहुत, कन्द मूल ऐसे दिये जिससे कि हो शीरीं दहाँ। राम सीता और लक्ष्मण गोह ने खाये ये कन्द, और थकावट दूर हाने से हुए सब शादमाँ। यह कहा उनसे मुनी ने नर्म अल्फ़ाज़ों में—राम, आज जप और तप हमारे हो गये पूरे यहाँ।

आपके दर्शन से बढ़ कर और कोई शै नहीं, आज दिल की आरजू पूरी हुई है बेगुमाँ। राम ने तारीफ़ की उनकी निहायत शौक़ से, और सबसे कह सुनायी फिर मुनी की खूबियाँ। और कहा जिस पर मेहरबाँ आप होते हैं, मुनी, सर झुका देता है उसके सामने सारा जहाँ। राम के आने की जब फैली खबर उस तीर्थ में, लोग इकट्ठा हो गये सब उनके दर्शन को वहाँ। राम फिर सबसे मिले सब इनसे मिल कर खुश हुए, करके दर्शन इनके वाप हो गये पीरोजवाँ। सब वहीं आराम करके सुबह बाद स्नान के, फिर इजाजत ली मुनी से और हुए आगे रवाँ। राम ने पूछा मुनी से जाऐँ हम किम राह से, यों कहा जिम राह से जाओगे होगे कामराँ। जब मुनी ने राह बतलाने को शिष्यों से कहा, साथ जाने को हथारों हो गये हाज़िर वहाँ। राम से थी सब को उलफ़त, इसलिए कहते थे यह, राह सब देखी हुई हैं जानते हैं सब निशाँ। साथ जाने चार लोगों का हुआ इनमें चुनाव, और मुनी से ली इजाजत, हो के निकले शादमाँ। जब गुज़रते थे किसी ये गाँव से चलते हुए, दौड़ कर आते थे इन को देखने को सब वहाँ। राम ने वापस किया चारों को थोड़ी दूर से, और ये सब शादोखुरम हो गये वापस रवाँ। जो रहा करते थे जमनाजी के तट पर लोग सब, जब मुना आये निपाद हमराह हैं दो नौ जवाँ। एक हसीन औरत भी हमराही में इन दोनों के है, दौड़ कर आये वो इनको देखने को बेगुमाँ। जानना यह चाहते थे कौन हैं, कहते न थे, देख कर वह दिग ही दिग में हो रहे थे शादमाँ। जो बड़े बूढ़े थे जिनको हाल सब मालूम था, वह गये पहचान इनको, कर दिया सब कुछ बयाँ। सब हुए रंजीदा बेहद जब हुआ मालूम यह, वाप के अहकाम से बन को हुए हैं ये रवाँ। एक छोटा सा तपस्वी जिसका चेहरा पुर जलाल, नम थीं दोनों आँखें उसकी, गिर गया आकर वहाँ। राम ने उसको उठाया और फिर लिपटा लिया, खुश किया उसको बहुत, और हो गया वह शादमाँ। फिर मिला लक्ष्मण से भी वह गोहीं के राजा से भी, और गिरा चरणों पे सीता के यकायक बेगुमाँ। राम के दर्शन से हासिल हो गई उनकी खुशी, हम बता सकते नहीं उसका कोई नामोनिशाँ। लोग आपस में वहाँ करते थे ऐसी गुप्तगू, जिन्होंने भेजा इन्हें वन, कैसे हैं वो वाप-माँ। हो गये सब दंग और मोहित हुए बेहद सभी, देख कर तूर इनके चेहरों का और इनकी खूबियाँ। राम ने समझा बुझा कर गोह को जाने कहा, हम को तानील में वह हो गया वापस रवाँ। राम सीता और लक्ष्मण आगे बढ़ने लग गये, राह में करते चले जमना को अज्ञमत का बयाँ। राह में जो राहरो मिलते थे इनको देख कर, पूछते थे आप है कौन और जाते हैं कहाँ। आप में तो शाहजादों के से हैं आसार सब, वन में पैदल फिर रहे हैं इस तरह क्यों बेगुमाँ। शेर हाथी फिरते हैं हरदम भयानक हम जगह, आपके हमराह औरत भी है नाजुक नातवाँ। साथ चलने के लिए कहिए तो हम तैयार हैं, हम भी आएँगे वहाँ तक आप जाते हैं जहाँ। रामने कह सुनके उनको राह से वापस किया, सब की आँखों से मगर होने लगे आँसू रवाँ। राह में जो लोग दर्शन से हुए थे मुस्क्रीद, खूबिए किस्मत का उनका कर नहीं सकते बयाँ। राम सीता और लक्ष्मण के जिन्हें दर्शन मिले, खुशनामों उनसा है कौन, और ऐसी किस्मत हैं कहाँ। रास्ते में देखते जाते थे सब जंगल पहाड़, हर परिन्दा और दरिन्दा मिल रहा था दरमियाँ। राम जी का जब किसी कस्बे से होता था गुज़र, दौड़ कर सब मर्द और औरत चले आते वहाँ। इस तरह वो खुश थे जैसे उनको पारस मिल गया, दूसरों का भी वे कहते, जल्द आ जओ यहाँ। कोई तो पीछे चले जाता था सीता राम के, कोई चुप हो कर खड़ा था बेवजह और बेगुमाँ।

कोई बड़ के झाड़ के नीचे बिछा देता था घास, और कहता था कि दम ले लीजिए थोड़ा यहाँ। जर्फ़ में पानी कोई लाता था पीने के लिए, और कहता था कि थोड़ा पीजिए पानी यहाँ। रामने देखा कि सीता भी थकी माँदो हैं कुछ, झाड़ के नीचे वाँ बैठे, आ गये पीरों जवाँ। राम का तेजस्वी चेहरा देख कर वो शाद थे, जिसकी है तारीफ़ और तीभीक बेहून-अजबयाँ। और लक्ष्मण का भी चेहरा था निहायत पुर जलाल, वो नज़र आने थे सबको सूरते मेहेनयाँ। सर पे आती थी जटा मिसले मुकट सबको नज़र, देव कर सुग थे पर्मीना उनके चेहरों पर रवाँ। राम सीता और लक्ष्मण को थे ये सब घूरते, और करते थे इन्ही पर सब निछावर अपनी जाँ। सब मुहब्बत के थे प्यासे, वो थे ऐगा देखने, जिस तरह देखे हिरन रौशन किसी जा शमादाँ। औरतें जाती थीं सीता के करीब और खीफ़ से, पुछ न मकनी थी उनका नाम, उनका खानदाँ। पैर सीता के वो छू लेती थी जा कर बार-बार, रोव सं खुलती न थी लेकिन किसी की भी जवाँ। बाअदब हो कर कहा —रानी ज़रा बनलाइए, ये जो दो बँडे हुए हैं खूब मूरत नीजवाँ। किस क़दर पुरनूर चेहरा है रसीला आँखें है, इक अनोखी शान इनकी हर अदा से है अयाँ। आपके ये कौन हाँते है हमें मालूम हो। बेअदब हग लोग है, हों अफ़ू सब गुस्ताखियाँ। मुसकुरायाँ दिल में सीता और कुछ शर्मा गयीं, सोचनी थी दिल में, कैसी पड़ गयी आफ़त में जाँ। नाम शीहर का बताने शर्म दामनगीर थी, गर रहें ख़ामोश तो हो जाएगी ये बदगुमाँ। मृगनैनी थी जो सीता आखिरस कहने लगी शर्म हायल थी, मगर इन पर भी कुछ खोली जवाँ। छोटे जो देवर हैं मेरे नाग इनका लक्ष्मण, वह जो गोरे रंग के है मूबसूरत नीजवाँ। अपने नज़रों के इशारे से दिखा कर राम को, यों कहा—यह है मेरे 'वो', मुसकुरा दी देवियाँ। सुनके इतना इतने वह सब औरतें खश हो गयीं, जिम तरह जर पा के हो जाते हैं मुफ़लिस शादमाँ। और कहती थीं रहे कायम तुम्हारा यह सुहाग, है जमीं जब तक ये कायम और जमीं पर आगमाँ। और मुहब्बत की नज़र तुम पर रखे शीहर मुदाम, हो नजर अन्ताफ़ की, हम पर रहो तुम शादमाँ। वापसी में आप फिर दर्शन हमें देना ज़रूर, आपके सेवक है हम, करते है सद्के अपनी जाँ। जो मुनासिब था दिया सीता ने भी उनको जवाब, हो गये वो सब निहाल और हो गये सब शादमाँ। राम का रुख देख कर लक्ष्मण खड़े चलने हुए, सबसे बोले राह जाने को करो हम पर अयाँ। सबके चेहरों पर उदासी छा गयी जब यह गुना, राम लक्ष्मण और सीता हो रहे हैं अब रवाँ। सब खुशी सायब हुई और हो गये रंजीदा दिल, जिस तरह दौलत किसी की छिन गयी हो बेगुमाँ। सन्न से बम काम ले कर दिल दड़ा अपना किया, रास्ता बतला दिया किस सिम्त से हों वे रवाँ। राम सीता और लक्ष्मण खन्दा पेशानी के साथ, सब से मिल-जुल कर वहाँ से हो गये फ़ौरन रवाँ। लौटते थे जब घरों को लोग हाँते थे उदास, और कहते थे कि हैं सब काम जग के रायगाँ। चाँद को रोगी बनाया और ख़ारा बहर को, है अजब लीला किया शहजादाँ को वन को रवाँ। ऐसे लोगों के नमीयों में अगर बनवास है, फिर महल ऐवानो ड्योड़ी का है रहना रायगाँ। जब जमीं पर और पत्ताँ पर हैं सोते लोग ये, सेज सुन्दर होगी फिर किसके लिए राहत रसाँ। जब यह नंगे पैर चलते जा रहे हैं राह में, फिर यह रथ किस के लिए है फील और अस्पेदवाँ। झाड़ के नीचे बसर होती अगर ऐशों की है, वयों बने यह कसर आन्नीशान मिसले आसमाँ। ऐसे तेजस्वी पुरुष पहने अगर मुनिशों का भेष, किसलिए कमखावो अतलस और है यह पनियाँ। ये जो खाते फिर रहे हैं कंद मूल और फूल फल, किसलिए खाने पकाते हैं लज़ीज अहलेजहाँ।

हमने दुनिया में बहुत कुछ है सुना, देखा मगर, हस्तियाँ ऐसी जो सच पूछो तो मिलती है कहाँ। उनका सानी कोई दुनिया में नहीं जब बन सका, लाके जंगल में किया परमात्मा इनको निहाँ। सब यह कहते थे कि क्रिस्मत के धनी हम लोग हैं, इनके दर्शन से हुए हैं कामगारों कामराँ। और कहते थे कि जंगल में ये कैसे जाएँगे, अलगरज हर एक की आँखों से आँसू थे रवाँ। कोई कहती थी अगर भगवान सुन ले मेरी बात, मैं यह चाहूँगी रहे ये मेरी आँखों में निहाँ। लोग जो आये नहीं, दर्शन नहीं वों पा सके, देख लेते इनको, उनकी ऐसी क्रिस्मत थी कहाँ। बाद इसके आये जो वह दौड़ कर आगे गये, चूम कर चरणों को उनके हो गये सब शादमाँ। जितने भी माजूर थे जाने से जो मजबूर थे, रह गये अफ़सोस करते, हाथ मलते बेगुमाँ। रास्ते में बस्तियों से इनका होता था गुज़र, लोग दर्शन पा के हो जाते थे खुर्रम शादमाँ। जब उन्हें मालूम होता वन को जाने का सबब, राजाओरानी के होते थे वह शाकी बेगुमाँ। कोई कहता था कि राजा ने किया अच्छा ये काम, जिसके बाअस इनके दर्शन पाये हमने नागहाँ। बापोमाँ और गाँव इनका क़ाबिले तारीफ़ है, और वह जा भी मुक़द्दस है, ये जाते हैं जहाँ। हर तरफ़ जंगल में होता है इन्हीं का ज़िक्र खैर, और हर एक गाँव में होती बयाँ हैं खूबियाँ। रास्ते में देखते जाते थे जंगल की बहार, राम लक्ष्मण और सीता होते थे जिस दम रवाँ। राम लक्ष्मण को किया खालक ने पंदा खूबतर, हो रही है जिनकी जंगल में बयाँ यह खूबियाँ। रास्ते में इस तरह लोगों को खुश करते हुए, राम सीता और लक्ष्मण होते जाते थे रवाँ। सामने थे राम और पीछे थे भाई लक्ष्मण, बीच में दोनों के सीता चल रही थी बेगुमाँ। बीच में दोनों के यह जो थी यह है इसकी मिसाल, जिस तरह माया ब्रह्म और जीव के हो दरमियाँ। या ये समझो चन्द्रमा मौजूद हों और बुध भी हों, रोहनी बैठी हुई हो साथ में जलवा कुन। नक्शे पा को राम के हर एक क़दम पर देखती, पैर इन पर पड़ न जाए हो रही थीं यों रवाँ। लक्ष्मण जो राम और सीता की हमराही में थे, वह बचा कर चल रहे थे इनके पैरों के निशाँ। राम लक्ष्मण और सीता की मुहब्बत देख कर, सब दरिन्दे और परिन्दे हो रहे थे शादमाँ। हो गया दर्शन जिसे बस उसका बेड़ा पार था, मिल गयी उसको नजात और हो गया वह कामराँ। आज भी जो याद करले ख़्वाब ही में देख ले, बिल यकीं उसको मयस्सर हो हयाते जावेदाँ। राम ने देखा कि चलते-चलते सीता थक गयी, एक बड़ का झाड़ था और एक कुआँ भी था वहाँ। ठहर कर उस जा इन्होंने खा लिये कुछ कन्द-मूल, रात भर रह कर वहाँ से हो गये तड़के रवाँ। राह में वह देखते थे वन को और तालाबों को, आश्रम था वाल्मीकि जी का ये सब पहुँचे वहाँ। राम ने देखा मुनी की है जगह रहने की ख़ूब, ख़ूबसूरत है पहाड़ और वन में पानी भी वहाँ। थे कमल फूले हुए उन पर थे भीरे गूँजते, सब परिन्दे और चरिन्दे शादोखुर्रम थे जहाँ। राम ने देखा यह मंज़र अपने दिल में खुश हुए, वाल्मीकि ने भी सुना, हैं राम जी आए यहाँ। पेशवाई के लिए उनकी वो आगे आ गये, राम जी ने अर्ज की दण्डोत् बढ़ कर नागहाँ। देख कर इनको मुनी बेहद हुए मसरूरो शाद, ले कर आये आश्रम में इनकी हो कर शादमाँ। अपने मेहमानों को खाने को दिये वो कन्दमूल, और सोने के लिए इनको जगह भी दी वहाँ। वाल्मीकि जी के मन का हाल कहना है मुहाल, देख कर वह राम की सूरत थे बेहद शादमाँ। राम जी ने उनसे अपना हाल सारा कह दिया, किस तरह कैकेई ने उनको किया वन को रवाँ। बाप-माँ के हुक्म की तामील मुझसे हो गयी, और होने वाले हैं भाई भरत अब हुक्मराँ।

खुशनसीबी से हमारी सब यह सामाँ बन गया, आप यह बतलाइए हम जा के ठहरें अब कहाँ। हो अगर कोई मुनी हमसे न उनको दुख मिले, क्योंकि गुस्सा भी मुनी का होता है ईजा रसाँ। राम की यह बात सुन कर वाल्मीकि खुश हुए, और फ़रमाने लगे तुम हो चिराग़े खानदाँ। आप ज्ञानी वेद के हैं और मर्यादा पुरुष, आपकी कृपा से ही मिलता है यह सारा जहाँ। और लक्ष्मण जी जो हैं वे शेष के अवतार हैं, जिनकी कर सकता नहीं हूँ मैं बर्याँ कुछ खूबियाँ। आप दोनों ने लिया औतार है इस वास्ते, ता सजा पायें वह दुनिया में जो हैं ईजा रसाँ। आपकी तारीफ़ करने की मुझे ताक़त नहीं, इसको लिखने की कलम में है मेरे ताक़त कहाँ। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर आपके ताबे है सब, आपकी माया है बाला, आप सब पर हुक्मराँ। आप जिसको चाहते हैं आपको पाता है वह, जो भगत है आपका रहता है हरदम शादमाँ। आप ने औतार दुनिया में लिया किस वास्ते, भेद इसका जानते हैं लोग जो है रमजदाँ। लोग जो नादान हैं समझे हैं राजा आपको, और जो ज्ञानी हैं, उन पर भेद है यह सब अयाँ। आप जो कुछ कर रहे हैं ठीक है इस रंग में, काम वैया चाहिए, जैसा कि बाँधा है समाँ। पूछते हो मुझसे यह क्यों—मैं कहाँ जा कर रहूँ, वह जगह है कौन-सी रहते नहीं हो तुम जहाँ। फिर भी सुनलो मुझसे रहने की जगह है कौन-सी, जिस जगह रहना है तुमको उसका करता हूँ बयाँ। आपकी तारीफ़ जो सुनते हैं अपने कान से, फिर भी वह भरते नहीं नदियों के जैसे बेगुमाँ। उनके दिल में आप कीजोगा मुक़ाम ऐ राम जी, फ़ज़ से जो आपके होते हैं हरदम शादमाँ। याद करते हैं जो खाने और पीने में तुम्हें, सर झुका देते गुरु के सामने हैं बेगुमाँ। देवी की पूजा जो करते हैं लगा कर अपना मन, जो ब्राह्मण के हुआ करते हैं दिल से कद्रदाँ आप ही का जिनको रहता है भरोसा रात दिन, आप ही का नाम जिनके रहता है बिरदे जबाँ। जो हवन तर्पण करें या जो ब्रह्म भोजन करें, दान देते हैं ब्राह्मण को जो हो कर शादमाँ। जो गुरु को आप ही-सा जान कर हैं पूजते, और उन पर अपनी कर देते निछावर हैं जो जाँ। करके सब कुछ फिरभी उसके फल की इच्छा ना करें, हासिले मकसूद का जिनको न हो शानोगुमाँ। आपके चरणों में जिनका दिल लगा हो रात-दिन, आप ऐसों के ही दिल में जाके रहिए बेगुमाँ। काम, क्रोध और मद न हो और मोह भी अभिमान भी, लोभ और माया का जिनमें न हो कुछ शानोगुमाँ। जिनको दुःख और सुख नज़र आते बराबर हों मुदाम, और हों सबके लिए आरामदेह राहत रसाँ। सोच के करते हैं बातें और जो कहते हैं सच, आपकी तीसीफ़ में रहते हैं जो रतबुललसाँ। ग़ैर की दौलत को जो कोई समझता ज़हर हो, जानता है ग़ैर औरत को बहन और अपनी माँ। ग़ैर की तकलीफ़ को देखे जो कोई दर्द से, ग़ैर के आराम को देखे जो हो कर शादमाँ। आपको मालिक गुरु साथी जो समझा है कोई, आप ही को जो समझता है वह अपने बाप-माँ। आप सीता और लक्ष्मण जाके रह जाएँ वहीं, उनका दिल ही आपके रहने की जा है बेगुमाँ। जो बुराई छोड़ कर करते भलाई के हैं काम, गाय माता और ब्राह्मण पर हैं रहते मेहरबाँ। आपको अच्छा समझ कर खूद को जो समझे बुरा, आपके सेवक पै करता हो फ़िदा जो अपनी जाँ। आप को जो याद करता हो उसे कब चाहिए, जात पाँत और धन हुक्मत इज़्जो दौलत खानदाँ। स्वर्ग हो या हो नरक कुछ इम्तियाज़ उसको नहीं, आप हों नैनों में जिसके रात दिन जलवाकुनाँ। जानोदिल से आपका सेवक जो हो ऐसे का दिल, आपके रहने के काबिल हैं वही बेहतर मकाँ। प्रेम जिसको आपसे सच्चा हो लेकिन बेग़रज़, उसके मन में आप बसिए और हो जाएँ निहाँ।

वाल्मीकि ने बता दी इस तरह रहने की जा, राम उनकी गुप्तगू से थे निहायत शादमाँ। फिर कहा उनसे मुनी ने राम जी सुनिएगा अब, हाउते मौजूदा की निसबत भी करता हूँ बयाँ। चित्रकूट है एक पर्वत आप उस जा जाइए, हर तरह की है सहूलत और वन भी है वहाँ। उस जगह मंदाकिनी नामी नदी भी एक है, जो कि गंगा जी के जल की एक धारा है वहाँ। उसको अनुसूया ने अपने तप के बल जारो किया, अन्नी जो की वो हैं बीबी आज मगहूरे जहाँ। जिसके जल से पाप हो जाते हैं गायब इस तरह, त्रिम तरह बच्चों को खाती डाकिनी है नागहाँ। अरी रहते हैं वहाँ पर और भी अक्सर ऋषी, रात दिन करते हैं जप तप योग यग वह बेगुमाँ। आप चलिए उस जगह पर्वत को इज्जत दीजिए, और जा कर कीजिएगा आप सबको शादमाँ। वाल्मीकि की बात सुन कर और उसको मान कर, राम सीता और लक्ष्मण हो गये थे सब रवाँ। ये गये मंदाकिनी में और किए स्नान सब, राम ने दिल में यह सोचा, अब ठहर जाएँ यहाँ। लक्ष्मण जी तब चले उत्तर नदी प के करीब, देख आये थे धनुष की तरह एक नाला रवाँ। वह धनुष ऐसा था जिससे पाप रूपी जानवर, खम व दम और दान से बनते थे तीरों का निशाँ। चित्रकूट है एक शिकारी जो कि आगे था खड़ा, और निशाने से बुराई की था करता धज्जियाँ। राम को ले जाके लक्ष्मण ने दिखाई वह जगह, राम ने जब उसको देखा हो गये बस शादमाँ। देवता सब वन के आये उस जगह खद भील कौल, घास और पत्ते फ़राहम कर दिये ला कर वहाँ। खूबसूरत शौपड़ी दो जल्द वनवायी गयी, एक छोटी खूबसूरत दूसरी थी एक कलाँ। राम सीता और लक्ष्मण जिसमें करते थे क्रयाम, उस जगह की खूबियाँ हम कर नहीं सकते बयाँ। देवता और नाग किन्नर आये मिलने चित्रकूट, राम के प्रणाम से वो हो गये सब शादमाँ। देवताओं ने निहायत आजिजी से अर्ज की, अपनी जो तकलीफ़ थी, की राम जी से सब बयाँ। राम ने उनको तसल्ली दी दिलासा भी दिया, अपने अपने घर गये वो हो के शादो शादमाँ। राम का आना सुना जब आये मिलने के लिए, सब ऋषि भी और मुनी भी और हर पीरोजवाँ। मंडली आती हुई देखी ऋषि की राम ने, राम ने दण्डोत् की उन सबको हो कर शादमाँ। हो के खुश इनको लगा लेते थे सीने से मुनी, और दुआ देते थे तुम हो शादकामों कामराँ। देख कर लक्ष्मण को सीता राम को होते थे खूग, और समझते थे कि किस्मत की हैं अपनी खूबियाँ। राम ने सबको रवाना कर दिया खातिर के बाद, मंडली सब की रवाना हो गयी वापस रवाँ। राम के आने से बेखौफ़ी खतर सब हो गये, जग व तप अपनी जगह करते थे हो कर शादमाँ। कौल भीलों ने सुना जब राम आये चित्रकूट, कन्ध मूल और फल वो ले कर आये हो कर शादमाँ। इनको जिसने था न देखा वह था सबसे पूछता, और जो देखा हुआ था हाल करता था बयाँ। जो तहायफ़ साथ लाये थे दिये वे राम को, देखते ही तेज उनका छा गयी खामोशियाँ। हाथ जोड़े सब खड़े थे सामने तसवीर-से, दिल में उनके थी उभंगे और थे आँसू रवाँ। राम ने भी प्रेम से की गुप्तगू उन सब के साथ, और वह कहते थे—मालिक आप आये हैं यहाँ। यह हमारे ही मुकद्दर से तो आना है हुआ, आपके चरणों से सब को मिल गया आरामेजाँ। यह दरिन्दे और चरिन्दे और जंगल के परिन्द, आपकी तारीफ़ में हैं रात दिन रतबुललसाँ। आपने रहने की अपने यह जगह की है पसन्द, शादो खुरंम रह सकेंगे हर जमाने में यहाँ। हम रखेंगे हर तरह महफूज हर तकलीफ़ से, हम यहाँ के हल से बाकिफ़ हैं और हैं राजदाँ। आपको हम वन में लेजा कर कराएँगे शिकार, आपकी खिदमत बजा लाने को हैं सब बेगुमाँ।

आपके इरशाद की तामील को हाज़िर हैं हम, हुक्म देने में ताम्मुल हो न ऐ शाहेशहाँ। राम उनकी बात को सुनते तवज्जो से थे यों, जिस तरह है बाप सुनता अपने बच्चों का बयान। राम ने भी गुप्तगू की नमी व एखलाक से, सुनके जिसको हो गये सब भील खुरम शादमा। राम सीता और लक्ष्मण उस जगह रहने लगे, और जो आये थे उनको कर दिया वापस रवा। राम जब से आ कर उस जंगल में रहने लग गये, हो गया सरसब्ज वह छाई बहारें जावेदा। चलती रहती थी हमेशा हर तरफ़ वाजे बहार, और भीरे गूँजते रहते थे वन के दरमियाँ। कोयल और तोते पपहिये और चकवे भी चकोर, दिल लुभाने वाली ये सब बोलते थे बोलियाँ। शेर हाथी हो कि बन्दर या कि हो कोई हिरन, मिलके सब आपस में रहते थे मिसाले दोस्ता। जितने वन दुनिया में थे सब उसके आगे हेच थे, और नदी नाले थे सब मंदाकिनी के मदहूवा। वह हिमालय जो कि है मशहूर—या दीगर पहाड़, सब यह कहते थे कि विध्याचल बना इज्जतरसा। उस जगह के सब परिन्दे जानवर डाली व झाड़, ऐसे फूले जिनकी खूबी देव करते थे बयान। जानदारों को तो दर्शन से मिला दर्शन का फल, और बेजानों को रजवरणों की थी राहतरसा। हम बड़ाई क्या करें उस कोह के एजाज की, रामचन्द्र ने किया जा कर मुक़ाम अपना जहाँ। छोड़ कर आये अयोध्या को थे जिस जा रामचन्द्र, किस तरह हम कह सकेंगे उस जगह की खूबियाँ। रामचन्द्र की इताअत में थे लक्ष्मण जी मुदाम, याद उनको घर कभी आया न अपने बाप-माँ। और सीता भी रहा करती थी हरदम शादकाम, याद उनको भी कभी आये न अहले खानदा। देख कर शीहर का मुखड़ा इस तरह रहनी थीं शाद, जिस तरह है चाँद से रहती चकोरी शादमा। राम की अपने से उल्फत देख कर वह शाद थीं, इसलिए उनको अयोध्या से था वन राहतरसा। साथ शीहर का जो था, थी झोपड़ी प्यारी उन्हें, जानवर ऐसे थे प्यारे जैसे अहले खानदा। ऋषि-पत्नी सास थीं, और वसुर थे ऋषिगण सभी, कन्दमूल और फल पे होता उनको अमृत का गुमा। सेज पत्तों की हज़ारों सेज से बेहतर थी वह, साथ शीहर का उन्हें हर तरह था राहतरसा। राम की पत्नी से क्योंकर हो न मुमकिन इस तरह, ऐश और आराम का उनको न था शानोगुमा। राम भी वह काम करते जिससे भाई लक्ष्मण, और सीता भी रहें हर वक्त शादोशादमा। दिल लगा कर लक्ष्मण सीता सुना करते थे सब, राम जो किस्से कहानी रोज़ करते थे बयान। याद आ जाती अयोध्या की कभी या भरत की, या कभी जब याद आ जाते उन्हें थे बाप-माँ। फ़िक्र में और सोच में थे डूब जाते रामचन्द्र, और भरत का नाम रहता था फ़क़त विरदे जबा। सोच कर फिर खुद नज़ाक़त वक्त की रहते थे चुप, भाई और पत्नी से करते रहते थे किस्से बयान। अलगरज वह इस कुटी में इस तरह थे शादकाम, जैसे रहता इन्द्र है अमरावती में शादमा। जिस तरह पलकें हैं आँखों की महाफ़िज रात दिन, राम सीता और लक्ष्मण के थे रहते निगहबा। राम सीता का रहा करता था लक्ष्मण को खयाल, जैसे अपने जिस्म का होता है जाहिल क़दरदा। राम जो सबको थे प्यारे और ये सब को अजीज, इस तरह वन में रहा करते थे हो कर शादमा। राम की जैसे गुज़र होती थी सब कुछ कह दिया, किस तरह सुमंत लौटा अब सुनो मुझसे बयान। देखता क्या है कि रथ है, मंत्री हैं बेकरार, राम को जब छोड़ कर वापस निषाद आया—यहाँ। हो गया बेचैन वह भी देख कर यह कैफ़ियत, मैं नहीं उस वक्त का कुछ हाल कर सकता बयान। उसने जब देखा कि वापस आ गया तनहा निषाद, हाय का नारा था लब पर राम था विरदे जबा। हाय लक्ष्मण हाय सीता हाय प्यारे रामचन्द्र, इस तरह कहते हुए करता था वह आहो फुगा।

रथ के घोड़े हिनहिनाते—उस तरफ़ ये दौड़ते, हो गये थे जिस तरफ़ राम और सीता रहीं। जिस तरह बेचैन पंछी हो, न हों गर उसको पर, रथ के घोड़े मुञ्जतरिब थे और थे आँसू रहीं। दाना और चारा नहीं खाते थे घोड़े मुतलकन, देख कर ये लोग सब करने लगे आहोफुर्ग। कुछ सँभल कर बोले यूँ सुमंत से राजा निषाद, सन्न से कुछ काम लीजें आप तो हैं नुकतादा। कुछ सुनाये उनको क्रिस्से और समझाया बहुत, आखिरस ला कर बिठाया उनको रथ के दमियाँ। हाँक सकते थे नहीं घोड़ों को अपने हाथ से, इस क्रदर वह राम के दुख में हुए थे ननातवाँ। इस क्रदर घोड़े थे बेकल राह पर चलते न थे, जंगली जैसे कोई घोड़े जूते हों नागहाँ। देखते जाते पलट कर थे वे पीछे दम बदम, राह चलने में वे ठोकर खा रहे थे बेगुमाँ। राम लक्ष्मण का किसी के मुँह से सुन लेते जो नाम, प्यार से वह देखते जाते थे उसको बेगुमाँ। अलगरज घोड़े बहुत बेचैन थे और बेक्रार, उनकी बेचैनी की हालत हो नहीं सकती बयाँ। देख कर राजा ने मंत्री और इन घोड़ों का हाल, चार अच्छे नीकरों को कर दिया हमरह रवाँ। भेज कर सबको हुआ रंजीदा दिल वह इस क्रदर, हो नहीं सकता है उसके हाल का कोई बयाँ। जानिबे मुल्के अवध रथ को लिए जाते थे वो, देख कर घोड़ों को हो जाते थे खुद जारी कुनाँ। सोचते थे मंत्री जीना मेरा बेकार है, राम की फुरकत में क्यों जाती नहीं है मेरी जाँ। जिस्म मेरा बन गया है पाप का भंडार एक, क्यों न दो टुकड़े मेरे इस जिस्म के हों नागहाँ। हाथ मलते थे वो अपने और छाती पीटते, जिस तरह कंजूस ने खोयी हो दौलत नागहाँ। या कोई हो सूरमा जो जंग में जाये मगर, भाग कर भँदान से वापस हुआ हो बेगुमाँ। या कोई अच्छा ब्राह्मण सुरा बोके से पिये, और फिर पछताये खुद—करने लगे आहोफुर्ग। नेकलू बीरत कोई शौहर से अपने हो जुदा, जिन्दगी अपनी उसे हो जाती है बारिगिराँ। यों ही थी सुमंत जी के मन में ज्वाला और जलन, मूँद ली थी आँखें लेकिन अक्ल थे पंहुमरवाँ। अक्ल हैराँ, कान बहरे, होठ थे सूखे हुए, रंज और दुख दर्द से वो हो गये थे नीमजाँ। जब गुजर जाएँगे चौदह साल वो फिर आएँगे, इस भरोसे पर निकलती ही नहीं थी उनकी जाँ। रंग चेहरे का उड़ा था ऐसे आते थे नज़र, कल माँ का बाप का जैसे हुआ हो नागहाँ। जा रहा हो नरक में कोई पापी जिस तरह, सोचता जाता है कैसे राह में वह बेगुमाँ। सोचते जाते थे जा कर मैं अयोध्या क्या करूँ, लोग मेरी शकल तक देखें नहीं मुमकिन वहाँ। क्या जवाब मैं उनको दूँगा लोग सब पूछें अगर, राम और सीता कहाँ है और लक्ष्मण हैं कहाँ। उनकी माताएँ जो पूछेंगी तो दूँगा क्या जवाब, कौन-सा होगा जवाब ऐसा मेरा राहतरसाँ। गाय माता जिस तरह नौजाद बछड़े के लिए, दौड़ कर आएँ, अगर आएँ वहाँ भी उनकी माँ। मुझको कहना ही पड़ेगा राम-सीता-लक्ष्मण, कोई भी वापस न आये हो गये वन को रवाँ। हाथ मुझको हर कसोनाकस से यह कहना पड़ा, हैं ये गोया लौट कर आने की मेरी खूबियाँ। दुख-भरे महाराज जब पूछेंगे क्या बोलूँगा मैं, किस तरह उनको सुनाऊँ जा के सारी दासताँ। वन को वह तीनों गये मालूम हो जाये अगर, बस तड़प कर ही निकल जाएगी उनकी अटकी जाँ। राम की फुरकत में मेरी जान क्यों जाती नहीं, त्रास सहने के लिए कालब में है यह मेरी जाँ। इस तरह वह सोचते तमसा नदी पर आ गये, कर दिया कह-सुनके उन चारों निषादों को रवाँ। शहर में होते थे दाखिल इस तरह छुपते हुए, जैसे हो कातिल गुरु या, गो-ब्राह्मण का निहाँ। दिन गँवाया झाड़ के नीचे ठहर कर एक जगह, शहर में दाखिल हुए जब रात का छाया समाँ।

जब महल पर शाह के पहुँचे तो रथ को छोड़ कर, हो गये चुपके से खामोशी के साथ अन्दर रवाँ। हो गयी मालूम जिनको इनके आने की खबर, दौड़ कर आने लगे वो रथ खड़ा था वह जहाँ। देख कर घोड़ों को बेकल हो गये सब बेकरार, जैसे पानी की कमी से हैं तड़पती मछलियाँ। ये अकेले आये हैं सुन कर हुए बेचैन सब, छा गयी सब पर उदासी हो गये सब नीमजौ। शहर की ड्योढ़ी उन्हें लगती थी जैसे एक मसान, रानियाँ सब पूछती थीं हो के बताबोतवाँ। मंत्री जी को इसका कुछ उत्तर नहीं था सूझता, आँख से दिखता न था और बन्द थी उनकी जबाँ। सामने जो इनके आता था वह उससे पूछते, यह बताओ हमको तुम राजा हमारे हैं कहाँ। देख कर इनको निहायत मुजतरिब और बेकरार, महल में कौशल्या जी के ले गयीं सब दासियाँ। वो यहाँ राजा को जा कर देखते हैं इस तरह, जैसे अमृत के बिना हो चन्द्रमा जलवा कुनाँ। फेसी जेवर कुछ नहीं था, थे जर्मीं पर लोटते, साँस लम्बी ले रहे थे, छापी थी खामोशियाँ। आबदीदा हो रहे थे हर घड़ी हर लमहा वो, मुजतरिब हो कर वो खो देते थे सब ताबोतवाँ। जिस तरह संपांती पर जलने से बेकल हो गया, यों ही राजा के तड़पता जिस्म में था मुर्जौ। हाय राम और राम प्यारे कह रहे थे बार-बार, राम-लक्ष्मण-जानकी के नाम थे बिरदेजबाँ। मंत्री जी ने बाअदब होके किया प्रणाम जब, सुनके उठ बैठे और पूछा राम मेरा है कहाँ। जिस तरह डूबे हुए को कुछ सहारा मिल गया, उनको सीने से लगाया गरचे आँसू थे रवाँ। यों मुखातिब हो के राजा ने कहा सुमंत से, ऐ मेरे सच्चे, वफ़ादार और मेरे मेहरबाँ। खैरियत का राम-लक्ष्मण का सुनाओ मुझको हाल, राम-लक्ष्मण किस तरह हैं, और सीता है कहाँ। उनको पलटा कर हो लाये, या कि बन में छोड़ कर, सुनके यह थे मंत्री की आँख से आँसू रवाँ। वो गुणों का राम के थे जिफ़र करते बार-बार, और कहते थे वह उनका हाल हो मुझसे बयाँ। राजगद्दी दूंगा कह कर बन को भिजवाया उसे, राम इस पर भी न था ग्रमगीन—ना कुछ शादमाँ। मझ-सा पापी हाय दुनिया में न होगा कोई और, ऐसे बेटे के बिछड़ने पर न क्यों जाती है जाँ। राम-लक्ष्मण हो जहाँ मुझको भी पहुँचा दो वहाँ, वर्ना थोड़ी देर में तन से निकल जाएगी जाँ। मुझको अब जल्दी दिला दो मेरे बच्चों की शकल, और उनकी कैफ़ियत मुझसे करो जल्दी बयाँ। सब करके मंत्री भी इस तरह कहने लगे, आप पंडित हैं महाराज और ज्ञानी वेददाँ। आप साबिर हैं फ़कीरों का रहा हर वक़्त साथ, जानते हैं दुःख व सुख क्या हैं व क्या सूदोजियाँ। जिन्दगी और मौत—प्यारों का बिछड़ना या मिलाप, अपने-अपने कर्म की गोया हैं सब पाबन्दियाँ। काम ज्ञानी का है कि आराम में हँसता रहे, और जब तकलीफ़ में हो वह रहे जारी कुनाँ। दोनों हालत में रहे वह एक-सा ज्ञानी है जो, आप भी अब सब से लें काम ऐ शाहेशहाँ। यों कहा तमसा नदी पर उनका पहला था मुक़ाम, दूसरा उस जा हुआ जिस जा कि गंगा हैं रवाँ। दोनों भाई और सीता पानी पी कर रह गये, और गंगा जो पे जा कर कर लिया स्नान ध्याँ। केवट आया और खिदमत इनकी अच्छी तरह की, रात को सिंगीर ही में रह गये सब बेगुमाँ। दूसरे दिन सुबह बड़ का दूध मँगवाया गया, अपने अपने सिर पे दोनों ने जटा बाँधी वहाँ। राम के कहने से केवट ने फराहम कर दी नाव, सीता पहले राम फिर उसमें हुए जलवाकुनाँ। बाद इसके लक्ष्मण ले कर इजाजत राम से, चढ़ गये उस पर लिए एक हाथ में तीरोकमाँ। बेकरारी देख कर मेरी कहा यों राम ने, बाप की खिदमत में आदाब अजँ कीजँ बेगुमाँ। पैर छू कर यह भी कहना फ़िकर, कीजँ कुछ न आप, राह और जंगल में हर जा हम रहेंगे शादमाँ।

आपके एहकाम की तामील करके आऊँगा, आपके परताप से हर जा रहूँगा शादमाँ ।
 और सब माताओं से भी आप करना इत्तेजा, फ़िकर का उनको न कुछ बाक़ी रहे नामोनिशाँ ।
 बाप के आराम का सबको रहे हरदम लिहाज़, कीजिए वह काम जिससे खुश रहें और शादमाँ ।
 अज़ करना यह गुरु जी से कि वह उपदेश दें, जो कि हों महाराज को हर तरह से राहतसर्राँ ।
 शहर के लोगों को कहना मुझको होगा वह अजीज, जिसकी खिदमत से महाराजा रहेंगे शादमाँ ।
 भरत से मेरा संदेश यह कहो जब आये वह, रीत से हरगिज़ न हटना भाई बन कर हुक्मराँ ।
 जानोदिल से तुम रियाया परवरी करते रहो, और समझो हूँ बराबर जितनी हूँ सब अपनी माँ ।
 बाप-माँ की और सबकी हर तरह सेवा करो, बाप को कुछ सोच का हरगिज़ न हो शानोगुमाँ ।
 लक्ष्मण कुछ सलूत कहने को थे कि रोका राम ने, और क्रसम दे कर कहा कहना न जा कर यह वहाँ ।
 जानकी भी दस्तबस्ता अज़ करने को जो थीं, हो गये लब बन्द आँखों से हुए आँसू रवाँ ।
 राम का रुख देख कर केवट ने किशती दी बढ़ा, इस तरह वो चल दिये और मैं रहा मातमकुनाँ ।
 किस क्रदर तक्रलीफ़ मुझको है कहूँ क्या आप से, जिन्दा रह कर आपसे यह कर रहा हूँ सब बयाँ ।
 इस क्रदर कहते हुए वो हो गये खामोश कुछ, आँख में आँसू भर आये बन्द थी मुँह में जबाँ ।
 सारथी से सुन के यह राजा ज़मीं पर गिर गये, माहिये बेआब से तड़पे ज़मीं पर नागहाँ ।
 रानियाँ रोने लगीं और शोर बरपा हो गया, कर नहीं सकता कोई उस वक़्त की हालत बयाँ ।
 शोर अन्दर का सुना जब मच गया कोहराम एक, शहर का हर आदमी हो कर रहा नालाकुनाँ ।
 राजा दशरथ के तमाम आज्ञा हुए बेकार से, दम लबों पर आ गया और खुशक थी मुँह में जबाँ ।
 जिस तरह पानी न हो तो सूख जाता है कमल, यों ही राजा के भी सब जाते रहे ताबोतवाँ ।
 देखा कौशल्या ने सूरज डूबने को आ गया, वक़्त की देखी नज़ाक़त, यों हुई गोहरफ़ाँ ।
 ऐ महाराजा निहायत सन्न से अब काम लो, राम सीता की जुदाई बहर है एक बेकराँ ।
 यह अयोध्या है जहाज़ और आप ही मल्लाह हैं, यात्री सब लोग हैं बैठे हैं इसके दमियाँ ।
 आप हिम्मत गर करेंगे पार हो जायेगी नाव, वनाँ हम सब डूब जाएँगे ये है बिल्कुल अयाँ ।
 इत्तेजा मेरी यह सुन लें आप ऐ आक्रा मेरे, राम लक्ष्मण और सीता फिर मिलेंगे बेगुमाँ ।
 सुनके रानी के वचन राजा ने आँखें खोल दीं, जैसे पानी गिर के बिजली की तड़प हो रायगाँ ।
 करके हिम्मत राजा उठ बैठे कहा बतला सुमंत, राम मेरा है कहाँ लक्ष्मण व सीता हैं कहाँ ।
 हो के बेकल रो रहे थे राजा दशरथ बार-बार, रात की थी हर घड़ी सबके लिए बारेगिराँ ।
 याद राजा को तपस्वी का वह क्रिस्सा आ गया, जिसने दी थी बददुआ राजा ने फर्माया बयाँ ।
 इस तरह कहते हुए राजा हुए बेचैन फिर, और कहा है राम मेरा लख्तेदिल आरामेजाँ ।
 जब नहीं वह पास तो यह जिन्दगी बेकार है, किसलिए बाक़ी रखूँ यह अपना तन और अपनी जाँ ।
 हाय प्यारे राम तुम से छूट कर अर्सा हुआ, तुम कहाँ हो और लक्ष्मण और सीता है कहाँ ।
 राजा दशरथ की जबाँ पर राम ही का नाम था, और महाराजा हुए बैकुण्ठ को आखिर रवाँ ।
 सच जो पूछो जीने मरने का मज़ा उनको मिला, जिन्दगी में देख कर उनको हुए ये शादमाँ ।
 और मरे भी तो फ़क्रत उनके ही सदमें से मरे, खुशनसीबी कर नहीं सकता कोई इनकी बयाँ ।
 रानियाँ गिर कर ज़मीं पर रो रही थीं ज़ार-ज़ार, और राजा की बयाँ करती थी सारी खूबियाँ ।
 वहाँ पर शाही मुलाज़िम जो थे सब रोने लगे, और बाहर लोग सब होने लगे मातमकुनाँ ।
 हर गली कूचे में मातम एक पल में छा गया, सब यही कहते थे डूबा आफ़ताबे खानदाँ ।

और यही कहते थे दुनिया में अंधेरा छा गया, कैकेई को मर्दोजन सब दे रहे थे गालियाँ। इस तरह वह रात गुजरी जब सबेरा हो गया, हो गये सब जमा ज्ञानी और मुनी जो थे वहाँ। गुरु वशिष्ठ आये, हुए खामोश सुन कर उनसे सब, जब कि बातें ज्ञान की कुछ की गुरुजी ने बयीं। तेल भर कर नाव में रख दी गयी राजा की लाश, भरत को लाने किया दूतों को भी फ़ौरन रवाँ। और कहा राजा के मरने का न कहना हाल कुछ, बस यही कहना कि दोनों भाई आ जाएँ यहाँ। हुक्म सुन कर यह गुरु का चल दिये पैगाम वर, इस तरह जाते थे जल्दी जिस तरह अस्पेदवाँ। जब से होने लग गये उल्टे अयोध्या में ये काम, भरत को भी स्वाब पड़ते थे नहीं अच्छे वहाँ। सुबह उठ कर रोज़ करते थे वो इनका तज़करा, रात में जब देखते थे वो कोई स्वाबेगिराँ। ब्राह्मण भोजन हुआ करता था, देते दान थे, और रुद्र अभयंक भी होता कभी था बेगुमाँ। और दुआ करते थे भाई दोनों और सब अकुरबा, खैरियत से हाँ अयोध्या में हमारे बाप—माँ। पहुँच कर पैगामवर ने भरत से जा कर कहा, आप को आने गुरु ने है कहा जल्दी वहाँ। भरत ने पैगाम जब अपने गुरु का यह सुना, दिल में करके याद गनपति के हुए फ़ौरन रवाँ। रास्ते में जो नदी नाले पहाड़ उनको मिले, तेज़ रफ़्तारी से जाते उनके थे अस्पेदवाँ। सोचते जाते थे मैं जल्दी पहुँच जाऊँ अवध, हो अगर मुमकिन तो मैं उड़ कर चला जाऊँ वहाँ। हर घड़ी उनके लिए मालूम होती थी बरस, अलगरज चलते हुए वह आ गये कुर्बेमकाँ। सब नज़र आने लगे उनको वहाँ पर बदसुगुन, खर सियार उल्टी ही अपनी बोलते थे बोलियाँ। सब नदी तालाब सूखे और बगीचे ख़ुश्क थे, और वहशतनाफ़ था शहरे अयोध्या का समाँ। जानवर जितने थे आते थे नज़र वे सब दुःखी, भरत हैराँ हो गये बस देख कर ऐसा समाँ। शहर से सब मद-औरत रंज में डूबे हुए, जिस तरह खोयी किसी ने अपनी पूँजी नागहाँ। राह में मिलते थे जो कहते नहीं थे मुँह से कुछ, सिर झुका कर चुपके बाजू से वो हो जाते रवाँ। भरत को भी पूछने में कुछ तआम्मल हो गया, क्योंकि उनके दिल में बढ़ने लग गए वहमोगुमाँ। रास्ते बाज़ार में रौनक नहीं बाक़ी थी कुछ, आग जैसे लग गयी हो हर तरफ़ एक नागहाँ। जब सुना कैकेई ने कि भरत उसका आ गया, वह निहायत हो गई मसरूर खुश और शादमाँ। आरती ले कर वो दरवाज़े पर आयी दौड़ कर, शत्रुघ्न और भरत को वह ले गयी अपने मकाँ। भरत ने देखा कि घर में हर कोई है रंज में, जिस तरह पड़ जाए पाला कमल—दल पर नागहाँ। कैकेई थी एक ही जो खुश नज़र आती थी कुछ, भीलनी जैसे लगा कर आग होती शादमाँ। देख कर लड़के को रंजीदा वो यों थी पूछती, मेरे मँके में तो सब हैं लोग शादोशादमाँ। कैफ़ियत उनकी सुना कर भरत ने फिर यों कहा, खैरियत से तो यहाँ हैं मेरे अहलेखानवाँ। भरत ने पूछा मेरी माँएँ कहाँ हैं और बाप, और सीता प्यारे भाई राम लक्ष्मण हैं कहाँ। कैकेई ने अपने बेटे की जबाँ से जब सुना, अपनी आँखों से बनावट के किए आँसू रवाँ। और जवाब ऐसा दिया जो तीर—सा उनको लगा, इस तरह आशाज़ कर दी उसने अपनी दास्ताँ। प्यारे बेटे काम सब मैंने बनाए ख़ूब थे, मन्थरा ने भी मदद की मेरी बेवहमोगुमाँ। क्रुदरतन कुछ काम थोड़ा—सा बिगड़ कर रह गया, हो गये बैकुण्ठ को महाराजा दशरथ जी रवाँ। इस क्रुदर सुनते ही दुःख से हो गये वो बेकरार, और जमी पर गिर पड़े करते हुए आहोफ़ुगाँ। आप जन्नत को गये मैंने मगर देखा नहीं, राम को भी—हैफ़ है—साँपा नहीं शाहेशहाँ। फिर ज़रा उठ कर वो बँटे और सँभल कर यों कहा, मौत का कारण हुआ क्या कुछ कहो तो मेरी माँ।

जहर भर दे चीर कर सीता कोई जिस तरह यों, कैकेई ने भरत से कर दी बर्षा सब दासता । जब भरत ने सुना भाई राम वन को चल दिये, बाप का गम भूल कर चुप हो गये वो नागहीं । और समझे सब खराबी का हूँ बाअस मैं बना, हो गये खामोश वो और बन्द थी मुँह में जबी । देख कर बेटे को हैराँ फिर वो समझाने लगी, जखम पर जैसे नमक छिड़का हो कोई नागहीं । ऐ पिसर महाराज के दुख की जरूरत है नहीं, ज़िन्दगी में वो रहे हरदम निहायत शादमाँ । हर तरह का सुख उठाया थे वो पाबन्दे घरम, और मर कर हो गये हैं बिलयकीं जन्नतनिशाँ । काम लो हिम्मत से और रंजों अलम को छोड़ दो, और तुम हो जाओ अब मुल्के अवध के हुक्मराँ । भरत ने जब यह सुना उनकी हुई वह कैफ़ियत, जखम पर जैसे किसी ने रखी हों चिनगारियाँ । साँस लम्बी ले कर उसने यों कहा हे पापनी, कर दिया बरबाद तूने हाथ मेरा खानशाँ । ऐसी बदनीयत अगर थी मुझको ज़िन्दा क्यों रखा, मैं हुआ जिस वक्त पैदा क्यों न ले ली मेरी जाँ । काट कर तू पेड़ को, पत्तों को है जो सोंचती, फ़ायदे के बदले तू ने कर दिया मेरा ज़ियाँ । राम लक्ष्मण से हों भाई और दशरथ से हों बाप, सूर्यवंशी नामवर मशहूर मेरा खानदाँ । क्या कलूँ तकदीर को, कुछ बस मेरा चलता नहीं, कोख से तेरे हुआ पैदा मैं, तू है मेरी माँ । यह बुराई जिस घड़ी दिल में तेरे पैदा हुई, टुकड़े-टुकड़े हो गया क्यों दिल न तेरा नागहीं । जब किये वरदान दो महाराज से तू ने तलब, क्यों न कीड़े पड़ गये मुँह में न क्यों टूटी जबी । किस तरह राजा ने तुझ पर कर लिया था एतबार, अज़ब क्या मरने से पहले हो गयी उनकी रवाँ । औरतों की चाल कुछ आती समझ में है नहीं, दाँव उनके पेंच उनके समझ आते हैं कहाँ । थे महाराजा हमारे तो निहायत शादा दिल, किस तरह थे वो समझ सकते तेरी चालाकियाँ । राम जिसको हो न प्यारा कौन है दुनिया में वह, ऐसा कोई भी नहीं जो है न उनका मदहसवाँ । ऐसे अच्छे राम की तू क्यों मुखालिफ़ हो गयी, सच बता तू कौन है ऐ बदनसी ईज़ारसाँ । कोई हो तू सामने से मेरे जा फ़ौरन निकल, अब न दिखला मुझको मुँह तू अपना नंगे खानुदाँ । राम की तू है मुखालिफ़ तुझसे मैं पैदा हुआ, मुझसे बढ़ कर कोई पापी होगा दुनिया में कहाँ । है मेरी क्रिस्मत ही फूटी मैं किसी से क्या कहूँ, और कुछ कहना मेरा तुझसे है बिलकुल रायगाँ । शत्रुघ्न ने ये सुना जब और गुस्से में भरे, थे खड़े भाई के आगे बन्द थी मुँह में जबी । आ गयी कुबड़ी वहाँ जब जेवरो मलबूस में, उनको इसकी ये नहीं अच्छी लगी गुस्ताखियाँ । जैसे ज़लती आग में डाला गया हो थी कहीं, वह भड़क उठे उसी दम जिस तरह बरक़ेतयाँ । खींच कर एक लात मारी शत्रुघ्न ने ज़ोर से, चीख मारी, गिर गयी कुबड़ी ज़मीं पर नागहीं । उसका सिर फूटा, कमर टूटी, गये कुछ दाँत टूट, खून भी कुछ उसके मुँह से लग गया होने रवाँ । कौखती उसने कहा अफ़सोस मैंने क्या किया, मिल रहा है क्या भलाई का सपर मुझको यहाँ । जब ये कुबड़ी ने कहा उनका बढ़ा गुस्सा मज़ीद, बाल सिर के खींच कर उसको घसीटा नागहीं । भरत ने उसको छुड़ाया और दोनों भाई फिर, रानी कौशल्या की खिदमत में हुए फ़ौरन रवाँ । जिस्म पर रानी के देखा था बहुत मैला लिबास, उड़ गया था रंग चेहरे का भी उनके बेगुमाँ । रंज में डूबी हुई थी वह निहायत बेक्रार, जिस्म दुबला हो गया था और नहीफो नातवाँ । जिस घड़ी देखा भरत को दौड़ कर चलने लगी, आ गया चक्कर ज़मीं पर गिर गयीं वो नागहीं । भरत ने हालत जो देखी हो गये बेचैन खुद, गिर के चरणों पर वो माँ के यों हुए गोहरफ़साँ । बाप मेरे हैं कहाँ बतलाइए अम्मा मुझे, राम सीता और लक्ष्मण भाई मेरे हैं कहाँ ।

कैकई पैदा हुई क्यों हाथ दुनिया में अबस, बाँझ हो जाती तो बेहतर था मेरी कमबस्त माँ।
 कोख से जिसके हुआ पैदा हूँ मैं वह बदनसीब, अपने प्यारों का मुखालिफ़ और नंगे खानदाँ।
 कोई पापी मुझ-सा दुनिया में न होगा दूसरा, जिसके कारण आप ऐसी हो गयी हैं खस्ता जाँ।
 बाप है बैकुण्ठ में और भाई है वन में मेरे, मेरे ही कारण हुई है सब खराबी बेगुमाँ।
 मेरे जीने पर है लानत दीजिए धुतकार आप, मैं बना सबके लिए तकलीफ़दे ईज़ारसाँ।
 भरत की बातें ये सुन कर कुछ सँभल कर उठ गयीं, अपने सीने से लगाया और आँसू थे रवाँ।
 इस तरह उनसे मिली जैसे कि आये राम हों, शत्रुघ्न को भी बिठाया पास अपने नागहाँ।
 रंज था गो उनके दिल में थी मुहब्बत भी मगर, देख कर यह हाल उनका लोग सब थे मदहश्वाँ।
 पोंछ कर बेटे के आँसू यों कहा फिर भरत से, सब से तुम काम लो सद्के तुम्हारी तुम पे माँ।
 वक़्त की देखो नज़ाकत धैर्य से कुछ काम लो, सोच कर करमों को तुम अब छोड़ दो वहमोगुमाँ।
 मेरी ही तकदीर उल्टी है किसे मैं दोष दूँ, इस क्रूर दुःख होने पर बाक़ी है मेरे तन में जाँ।
 और क्या होने को है यह भी नहीं मालूम अब, उसको क्या मंज़ूर है यह बात है बिलकुल निहाँ।
 ज़ेवर और कपड़ों को फेंका बाप के एहक़ाम से, भेस मुनियों का पहन कर हो गया बन को रवाँ।
 राम को इसकी खुशी थी और न इसका रंज था, बस गया था एक ही उसकी निगाहों में समौ।
 रंज था उसको न कोई चल दिया आनन्द से, सुन के ये सीता भी हमरह हो गयी उसके रवाँ।
 लक्ष्मण भी साथ जाने को हुए जब मुस्तइद, राम ने रोका बहुत लेकिन वो रुकता था कहाँ।
 राम सबको सिर झुका कर खुश व खुर्रम चल दिये, राम लक्ष्मण और सीता हो गये बन को रवाँ।
 वो गये बन को मगर मैं यों ही बैठी रह गयी, मैं गयी साथ आह उनके और न हमरह मेरी जाँ।
 मुझको आती ही नहीं है शर्म यह अफ़सोस है, किस सआदतमन्द लड़के की मैं कहलाती हूँ माँ।
 जीने मरने के मज्जे राजा ने पाये खूब ही, जो रही हूँ देख कर भी हाथ मैं ये सख्तियाँ।
 सुन के कौशल्या की बातें भरत रोने लग गये, लोग सब करने लगे रनिवास में आहो फुगाँ।
 भरत और शत्रुघ्न दोनों ही बहुत बेचैन थे, दोनों भाई रो रहे थे और थे मातमकुर्ना।
 रानी कौशल्या ने सीने से लगाया दोनों को, और समझाया मनाया उनको बाहुस्ने बयाँ।
 भरत जी ने भी पुराणों और वेदों में जो है, कुछ कथाएँ अपनी हालत के मुआफ़िक़ की बयाँ।
 नेक नीयत उनकी थी, वो हाथ अपने जोड़ कर, रानी कौशल्या के आगे यों हुए गौहरफ़साँ।
 क्रतु से माँ-बाप के फरज़न्द के जो पाप हो, खून से बच्चे के या जन के जो होता है जियाँ।
 ज़हर जो देता किसी राजा को या हो दोस्त को, या जो गौशाला जला दे या ब्राह्मण का मर्काँ।
 सिर्फ़ कहने से हों या दिल से हों या हों कर्म से, पाप होते जिस क्रूर दुनिया में हैं खूदोकराँ।
 हो अगर इस काम में मेरा ज़रा-सा भी लगाव, उनके सहने के लिए तैयार हूँ मैं मेरी माँ।
 जो नहीं भगवान की पूजा किया करता कभी, जिन को और शैतान को जो पूजते हैं हर ज़माँ।
 जो सजा उनकी है मैं भी हूँ उसी का मुस्तहक़, दूसरों की लोग जो खाते हैं अक्सर चुगलियाँ।
 वेद को जो बेचते हों या मुखालिफ़ वेद के, दूसरों के पाप जो लोगों पर करते हैं बयाँ।
 धोखाबाजी जो हैं करते या हैं होते गुस्ताबर, लालची बदकार बदखू बेअमल और बदगुमाँ।
 दूसरे के धन पे या औरत पे रखते हों नज़र, जो फ़कीरों से रहा करते हों हरदम बदगुमाँ।
 रास्ते पर जो नहीं चलता हो कोई बदनसीब, जिसकी पूजा का खयाल आता नहीं हो बेगुमाँ।
 जानते कुछ भी नहीं लेकिन बताते हैं बहुत, झूठ कहते हैं जो लोगों से कि हूँ मैं बेवदाँ।

वह सजा मुझको मिले जो उनको मिलनी चाहिए, कुछ अगर वाकिफ मैं पहले से था इससे मेरी माँ।
 सदेक दिल से भरत ने जो कुछ कहा, सब ने सुना, रानी कौशल्या ने समझा कर कहा ऐ मेरी जाँ।
 जानो दिल से राम को प्यारे हो और हो तुम अजीज, और तुम करते हमेशा हो निछावर उनपे जाँ।
 राम के प्यारे हो तुम और राम तुमको है अजीज, इस तरह हरदम रहे तुम दोनों एक कालिब दो जाँ।
 चन्द्रमा से जहर बरसे आग पानी से गिरे, जानवर दरियाई को भाये नहीं आबे रवाँ।
 ज्ञान हो जाने पे भी ज्ञानी को लालुब हो मगर, राम के तुम हो मुबालिफ़ ये तो मुमकिन है कहाँ।
 जो कोई इस बात का मलजिम तुम्हें ठहराएगा, होगा बद अंजाम उसका वह न होगा शादमाँ।
 इस तरह कहते हुए छाती से फिर लिपटा लिया, दूध छाती से और आँसू आँख से बस थे रवाँ।
 रात सारी इस तरह रोते हुए गुजरी तमाम, कसर था मातमकदा और लोग थे मातमकुनाँ।
 वामदेव आये, वशिष्ठ आये, और आये सब वजीर, और महाजन जो अवध के खास थे बासिन्दगाँ।
 जिस तरह कहना था लाजिम गुरु वशिष्ठ जी ने कहा, भरत को उपदेश दे कर कुछ कथाएँ की बयाँ।
 अब तआमल सब से कुछ काम लो ऐ भरत तुम, और ये सोचो कि क्या करना है तुमको अब यहाँ।
 यों गुरु का कहना सुन कर भरत उस जा से उठे, और तैयारी शुरू करने को कह शायाने शाँ।
 गुस्ल करवाया गया राजा की पहले लाश को, और फिर रखी गयी थी वह बीयाँ के दमियाँ।
 रोका माँओं को जो लेना चाहती थीं सती-व्रत, राम के दर्शन के खातिर रुक गयीं सब रानियाँ।
 गूगल और काफूर, अगर की बतियाँ सन्दल भी था, टोकरों से भरके थे लाये गये सब बेगुमाँ।
 और चिता तैयार सरयू के किनारे पर हुई, जैसे ये जन्त में जाने की बनी हों सीढ़ियाँ।
 इस तरह उनके जलाने की हुई क्रिया तमाम, फिर नहा कर दे कर तिल अनजन हुए वापस रवाँ।
 वेद के अहकाम पर पूरा हुआ क्रिया करम, भरत ने दस दिन किया हस्वे रिवाजे खान दाँ।
 जिस तरह कहते गुरु थे भरत ने वैसा किया, बल्कि उससे भी ज़ियादा भरत था आलीनिशाँ।
 गाय भी, हाथी भी और घोड़े भी बरुशे दान में, ज़र भी, ज़ेवर भी जमीं भी और गल्ला भी मकाँ।
 अपनी उम्मीदों से बढ़ कर दान पाया विप्र ने, भरत ने जो कुछ दिया मुमकिन नहीं उसका बयाँ।
 जब फरागत हो गयी एक रोज अच्छा देख कर, गुरु वशिष्ठ खूद आये और बुलवाया वजीरों को वहाँ।
 सब महाजन और उमरा आ गये दरबार में, भरत की और शत्रुघ्न की भी हुई तल्बी वहाँ।
 अपने पहलू में बिठा कर भरत से कहने लगे, धर्म के जो थे तरीके कर दिये उनसे बयाँ।
 कैंकैई ने जो किया सब कुछ गुरु ने कह दिया, फिर हुए वह राजा दशरथ के निहायत मदहस्रवाँ।
 किस तरह राजा ने अपने कौल को पूरा किया, और महुबत के एवज दी जान अपनी बेगुमाँ।
 राम की तारीफ़ करते वक़्त आँसू आ गये, लक्ष्मण सीता की हमदर्दी भी कर दी सब बयाँ।
 दिल भर आया जब मनी का अश्क जारी हो गये, और कहा यह होने वाली होके रहती है अयाँ।
 है वही होता जो कुछ मंजूर हो भगवान को, नेकनामी हो कि बदनामी हो या सूदोजियाँ।
 तुम बताओ इस सबब से हम किसे इल्जाम दें, किससे हम नाराज हों और किससे हो हम बदगुमाँ।
 राजाए भरहूम का हम गम करें ये है अवस, उस ब्राह्मण का करे गम जो नहीं है वेदखाँ।
 छोड़ कर अपने फ़रायज चैन में लग जायें जो, ज़िन्दगी जिनकी रहे इशरत तलब राहत रसाँ।
 ऐसा महाराजा न हो इन्साफ़ का पाबन्द जो, और रैयत को नहीं रखता हो अपनी शादमाँ।
 और वह बनिया जो रख कर मालोज़र कन्जूस हो, ऐसे ही लोगों का करना चाहिए गम बेगुमाँ।
 शूद्र का हो गम अगर करना तो ऐसे का करें, जो ब्राह्मण को न माने और करे गुस्ताखियाँ।

बोलाता हो जो क्यादा खुदसिताई जिसमें हो, इल्म की और फ़ज़ल की करता हो अपने शोख़ियाँ । और वह औरत दगा जो अपने शौहर से करे, ब्रह्मचारी छोड़ दे ब्रह्मचर्य की पाबन्दियाँ । वह गृहस्थी लालची जो धर्म से हट कर चले, और संन्यासी जो दुनियाँ में फँसा हो बेगुमाँ । छोड़ कर तप लग गया हो चैन में जो वानप्रस्थ, या जो चुगली का हो आदी और हो ईज़ारसाँ । बेसबब गुस्से में आये, बाप-माँ और भाई का, अरकबा का और गुरु का हो उदू जो बेगुमाँ । जिसको हरदम दूसरों की हो खराबी का खयाल, जिनको दुनियाँ भर में प्यारे अपने ही हों जिसो जाँ । भूल कर करते न हों भगवान् की पूजा कभी, ऐसे लोगों का है ग्राम लाजिम बिला वहमोगुमाँ । राजाएँ दशरथ नहीं थे रंज के लायक कभी, जिनकी नेकी और खूबी है जमाने पर अयाँ । कोई दुनिया में नहीं उनसा हुआ है आज तक, और न आइन्दा होगा कोई उनसा हुक्मराँ । इन्द्र और दिग्पाल ही क्या, ब्रह्मा विष्णु और महेश, राजा कौशल राज की करते बयाँ है खूबियाँ । उस महाराजा की कोई कर सके तारीफ़ क्या, राम लक्ष्मण और तुम जैसे पिसर हो बेगुमाँ । वे मुकुन्दर के धनी थे उनका ग्राम बेकार है, उनकी मंशा पर अमल करके बनो इज्जतरसाँ । बाप के अहकाम की तामील लाजिम है तुम्हें, तुम को राजा ने अवध का कर दिया है हुक्मराँ । कौल की तकमील में जो राम को भिजवा दिया, और खुद मुल्के अदम की राह ले ली बेगुमाँ । जान उनको थी न प्यारी, बात थी उनको अजीज, तुम को पाबन्दी है लाजिम, बात है बिलकुल अयाँ । बाप ही के हुक्म की तामील में जब परसुराम, कल कर डाले थे माँ को जानता है सब जहाँ । और ययाति के पिसर ने उम्र दे दी बाप को, हुक्म की तामील की—जिसमें न था कोई जियाँ । वाजबी नावाजबी का ध्यान जिसके दिल में हो, बाप के अहकाम का जो शरस होगा क़दरदाँ । जिन्दगी में वह रहेगा शाद और खुरम मुदाम, बाद मरने के वह होगा बिलयकीँ जन्नत निशाँ । तुमको भी लाजिम है पाबन्दी करो अहकाम की, छोड़ दो ग्राम हाथ में ले लो हुक्मत की इनाँ । खुश महाराजा की होगी रूह पाओगे सबाब, कुछ नहीं है दोष तुम पर बात है बिलकुल अयाँ । वेद में और शास्त्र में भी है यही लिखा हुआ, बाप जिस बेटे को चाहे कर सकेगा हुक्मराँ । बात मेरी सच सग़्न लो और इसको मान लो, मैं मुहब्बत से हूँ कहता, छोड़ दो आहोफ़ुगाँ । कोई पंडित भी न बोलेगा कि ये है कुछ ग़लत, राम-सीता जब सुनेंगे वो भी होंगे शादमाँ । खुश रहेगी जब रिआया आपके जेरे नगीं, शाद हो जाएँगी कौशलया व दीगर रानियाँ । जो तालुक राम से तुमको है सुन लेगा कोई, वह भी इससे खुश रहेगा वह भी होगा शादमाँ । राम जब आएँगे वापस राज दे देना उन्हें, और तुम खिदमत में लग जाना उन्हीं की बेगुमाँ । अर्ज करते थे ये सब कहना गुरु का मानिए, हाज़िरे दरबार जो अरकाने दीलत थे वहाँ । राम जब आएँगे जो होगा मुनासिब कीजिए, हाथ में फिलहाल ले लीजें हुक्मत की इनाँ । रानी कौशलया भी यों कहने लगी—मेरे जिगर, अब नहीं है वक़्त जो करते रहो आहोफ़ुगाँ । जो गुरु कहते हैं उसको मान लो ऐ भरत तुम, फ़िक्र अब कोई न करना और न कुछ वहमोगुमाँ । राम बन में और राजा स्वर्ग में जलवाफ़गन, और होते जा रहे हो इस तरह तुम खस्ताजाँ । सब रिआया और बरावा का सहारा हो तुम्हीं, जो रही है देख कर तुम को ही अब हर एक माँ । वक़्त को जानो शनोमत, सन्न से अब काम लो, ऐ पिसर, तुम पर निछावर करती हूँ मैं अपनी जाँ । ग्राम ग़लत सबका करो, कहना गुरु का मान लो, और खबरमीरी करो बन जाओ सबके पासबाँ । भरत ने खामोश हो कर सबका कहना सुन लिया, गुप्तगू यह उनको भायी और थी राहत रसाँ ।

सबकी बातें इस तरह सुन कर हुए बेचैन वो, फर्तें ग्राम से उनकी आँखों से हुए आँसू रवाँ। देख कर हालत ये उनकी लोग सब बेचैन थे, उनकी उत्फ्रत और अक्रीदत के हुए सब मदहलवाँ। सब से फिर काम ले कर दस्त बस्ता हो गये, और नरम अलफ़ाज में फिर यों हुए गौहरफ़शाँ। की हिदायत है गुरु ने और माँ ने भी कहा, मुत्फ़िक हैं सब अजीज, इससे रियाया हमजबबाँ। चाहता हूँ मैं भी ऐसा ही कल्लू इस वास्ते, हुक्म जो देते गुरु हैं और मेरी प्यारी माँ। उसकी है तामील लाज़िम वह हो वाज़िब या न हो, वर्ना सब बरबाद हो जाती हैं अपनी नेकियाँ। दे रहे हैं आप सब मुझको मुनासिब मशवरा, लेकिन इससे कुछ नहीं मिलता मुझे आरामेजाँ। आप सबसे इत्तेजा है पहले सुन लें अज्जें हाल, हो मेरी तकरीर से हरगिज न कोई बदगुमाँ। बाप हैं जन्नतनशी और राम-सीता वन में हैं, आप सब मुझको बनाना चाहते हैं हुक्मराँ। क्या मेरी कोई भलाई आप हैं समझे हुए, या कोई काम आपका निकलेगा इससे बेगुमाँ। राम-सीता की कल्लू खिदमत तो मेरा है भला, माँ की बद खसलत से अब तक हो गया जो रायगाँ। गौर काफ़ी कर लिया है मैंने हर एक बात पर, राम की खिदमत मुझे होगी बहुत राहतरसाँ। राम और सीता ओ लक्ष्मण को न देखूंगा अगर, फिर न हल्का हो सकेगा ग्राम का यह बारेगराँ। ईश्वर को जानने लाज़िम हैं बैरागी बने, गर न हों कपड़े तो ज़ेवर जेब देता हैं कहाँ। जिस्म गर बीमार हो तो चैन हैं सारे फिज़ूल, खूँसुरत जिस्म है किस काम का गर हो न जाँ। यों ही मेरे वास्ते है राम का होना ज़रूर, वर्ना सब बेकार है यह मरतबा और इज्जोशाँ। इसलिए दीजें इजाज़त जाऊँ उनके पास मैं, है छुपी इसमें भलाई और मज़मिर खूबियाँ। कुछ न कुछ होगी ज़रूर इसमें भलाई की गरज, आप जो मुझको बनाना चाहते हैं हुक्मराँ। कैकई हैं वालिदा मेरी निहायत बदनसीब, गोया मेरे राम के है दुश्मनी एक दमियाँ। ऐसे राजा से मिलेगा फ़ायदा क्या आपको, आप खुद फरमायें कब है बात यह राहतरसाँ। है जो पाबन्दे धर्म उसको ही ज़ेबा राज है, यह ज़मीं धँस जाएगी गर मैं बनूंगा हुक्मराँ। राम-सीता जिसके कारण राहीए सहरा हुए, मुझसा पापी कोई दुनिया में न होगा बेगुमाँ। वन के जानिब राम को भिजवा दिया महाराज ने, उनकी फुर्कत में हुए खुद आज जन्नत को रवाँ। हाय मैं कमबरत हूँ अक्ल और समझ रखते हुए, सुन रहा हूँ अपने कानों से ये सारी दासताँ। राम को घर में न पा कर रंज सबका देख कर, जिस्म से मेरे निकल जाती नहीं क्यों मेरी जाँ। किस क़दर पत्थर का दिल है क्या बताऊँ आपको, मेरा दिल फ़ौलाद से भी हो गया बढ़ कर गिराँ। काम है मुशकिल से भी मुशकिल, नहीं मेरी खता, क्योंकि लोहे की जो ताक़त है वह पत्थर में कहाँ। कैकई के पेट से पैदा हुआ मैं बदनसीब, इसलिए है राम की फुर्कत में भी बाक़ी ये जाँ। और नहीं मालूम आगे देखना है क्या मुझे, राम को भेजा है जिसने वन को वह है मेरी माँ। बाप को मेरे रवाना कर दिया वँकुण्ठ को, और खुद बेबा बनी बैठी है कैसी शादमाँ। खुद हुई बदनाम औरों पर मुसीबत डाल दी, सब रियाया और बराया को किया मातमकुनाँ। राजगद्दी पर बिठाया उसने मुझको शोक्र से, काम ये सब करने वाली है फ़क़त मेरी ही माँ। और इससे क्या ज़्यादा चाहिए मेरे लिए, फिर मुझे तुम क्यों बनाना चाहते हो हुक्मराँ। मैंने यह माना कि मैं हूँ कैकई का लख्तेडिल, आप सब शायद इसी कारण हैं इसके हमजबबाँ। ईश्वर की ही तरफ़ से बन गये सब मेरे काम, दखल फिर क्यों आप सब देते हैं नाहक दमियाँ। हो कोई बीमार गर और काट ले बिच्छू उसे, हो नहीं सकता है मैं देना कभी राहतरसाँ।

माँ के रिश्ते से मुझे खिल्लत मिले तो है बजा, बाप की मुझसे मगर मिट जाएगी सब इज्जतों।
 राम का भाई बना कर क्यों मुझे पैदा किया, क्यों दिया रुतबा मुझे खालिक ने ऐसा बेगुमाँ।
 सबको गर मंजूर है कि मैं ही अब राजा बनूँ, जिस तरह चाहे कहो क्या रोक सकता हूँ जब।
 जुज मेरी माँ के नहीं करता कोई इसको पसन्द, चाहते हैं राम और सीता को अर्वाबि जहाँ।
 लोग जिसको फ़ायदा समझे हैं वह नुकसान है, यह मेरी तक्रदोर की हैं सारी बद उनवानियाँ।
 आप जो कुछ कह रहे हैं ठीक हो सकता है वह, क्योंकि हैं सब लोग मेरे जानिसार और मेहरबाँ।
 राम की माँ का भी कहना है निहायत वाजबी, जो निहायत नर्म दिल हैं और मुझ पर मेहरबाँ।
 और गुरु जी तो हमारे ज्ञान के भण्डार हैं, जिनकी नज़रों में समाता ही नहीं सारा जहाँ।
 वह भी मेरी राजगद्दी के लिए तैयार हैं, ईश्वर ही जब खफ़ा हो दोस्त हो क्यों कर जहाँ।
 राम-सीता के सिवा कोई यह कह सकता नहीं, इस बुराई में मेरी शिरकत नहीं है बेगुमाँ।
 ऐसी बदनामी को मैं बेशक सुनूँगा शोक से, क्योंकि पानी जिस जगह हो, होती कीचड़ है वहाँ।
 कुछ नहीं है इसकी परवाह लोग यह समझें अगर, आकिबत का सोचता ही मैं नहीं सूदोजियाँ।
 मेरे दिल में है जो सोजिश है वह बस इस बात की, राम और सीता के हक में मैं हुआ ईज़ारसाँ।
 ज़िन्दगी का फल हकीकत में तो लक्ष्मण को मिला, छोड़ कर सब कुछ जो करदी राम पर कुर्बान जाँ।
 फ़ायदा क्या यों जो मैं पछता रहा हूँ रात दिन, मैं हुआ पैदा कि वन को राम को कर दूरवाँ।
 दस्त बस्ता इत्तेजा सबसे यही करता हूँ मैं, राम के दर्शन न हों तो चैन हासिल हो कहाँ।
 और कोई बात मुझको सूझती ही अब नहीं, सुबह कल होते ही दर्शन को मैं हो जाऊँ रवाँ।
 मैं बुरा हूँ और खराबी का भी कारण मैं हुआ, जब चरण उनके पकड़ लूँगा वो होंगे शादमाँ।
 वो मुरीवत मुहब्बत और रहम के भण्डार हैं, अपने दुस्मन के लिए भी वह नहीं ईज़ारसाँ।
 गो बुरा हूँ मैं मगर भाई तो उनका हूँ ज़रूर, उनका सेवक हूँ नहीं इसमें किसी को भी गुमाँ।
 यह समझ कर है भलाई मुझको जाने दीजिए, और दुआ कीजें होजें मैं कामगारो कामराँ।
 इत्तेजा सुन कर मेरी और अपना सेवक जान कर, राम वापस राजधानी को चले आएँ यहाँ।
 जो हुआ पैदा हूँ मैं बेअक्ल माँ के पेट से, छोड़ देंगे मुझको वह इसका नहीं मुझको गुमाँ।
 भरत की यह गुफ़्तगू सबको पसन्द आयी बहुत, राम से जो प्रेम था उनको हुआ सब पर अयाँ।
 जो जुदाई राम की सहते हुए जलते थे सब, हो गये वो ये वचन सुन कर निहायत शादमाँ।
 माँ गुरु अरकाने दीलत और जितने लोग थे, हो गये मससूर, और थे भरत के सब मदहलवाँ।
 था जबाँ पर सबके यह ऐ भरत इस में शक नहीं, तुम हो प्यारे राम जी के और हो तस्कीने जाँ।
 माँ की करतूतों से तुम पर ऐब कोई गर रखे, वह नरक की आग में जलता रहेगा बेगुमाँ।
 कुछ मणी को साँप के पापों से मतलब है नहीं, उसके ऐबों का नहीं जिससे ताल्लुक बेगुमाँ।
 वन को चलिए भरत जी यह राय अच्छी है बहुत, गम के दरिया में जो डूबे थे बचा ली उनकी जाँ।
 मोर जैसे सुन के बादल की गरज हैं नाचते, मर्द और औरत अवध के हो गये सब शादमाँ।
 दूसरे दिन सुबह चलने का इरादा कर लिया, भरत की तारीफ़ थी हर एक के बिरदे जब।
 भरत को आदाब करके होके खम पेशे गुरु, हो गये सब लोग वापस अपने-अपने घर रवाँ।
 दम गनीमत भरत का है—कहते जाते थे यही, उनके औसाफ़े हमीदा करते जाते थे बयाँ।
 सब यह कहते थे कि यह सूरत बहुत अच्छी हुई, घर ही में रहने कहा जिसको हुआ वह खस्ताजाँ।
 सब यही कहते थे चलने को हमें रोको नहीं, कौन होगा जो न चाहेगा हयासे जावेदाँ।

राम के चरणों से बाबिस्ता न होवे जिनका प्रेम, जल वो जाएँ माल, दौलत, दोस्त, भाई, बाप-माँ ।
 लग गयी सजने सवारी मुस्तलिफ़ अक़साम की, सुबह को चलने की बस होने लगी तैयारियाँ ।
 भरत ने घर जा के सोचा राज घर और जायदाद, राम की सब मिल्क है इसमें नहीं शक ओ' गुमाँ ।
 इन्तज़ाम इनकी हिफ़ाजत का है मुझ पर लाज़िमी, वर्ना बदनामी मेरी इसमें सरासर है अयाँ ।
 फ़र्ज सेवक का है मालिक की करे सेवा ज़रूर, लाख उस पर नुक़ताचीं हों बेख़िरद अहलेजहाँ ।
 जिन पे था कामिल भरोसा उनको बुलवाया गया, हो नहीं सकता था उनकी जात पर शक ओ' गुमाँ ।
 जो था जिस लायक किया तफ़रीज उसके काम वह, कह दिया सब को रहें अच्छी तरह से पासबाँ ।
 सब को बसला कर फ़रायज़ अपने-अपने काम के, भरत फिर उस जा गये रहती थी कौसल्या जहाँ ।
 भरत ने देखा नहींफ़ो नातवाँ हैं सब की सब, शम में हैं डूबी हुई राजा की सारी रानियाँ ।
 पालकी तैयार करने का हुआ इशार्द जब, हो गयी तैयार फ़ौरन, थी बहुत राहतरसाँ ।
 शहर के सब लोग चलने के लिए थे जागते, सब के दिल में था यही अब जल्द हो जाएँ रवाँ ।
 सुबह होते ही वज़ीरों को बुलाया भरत ने, और कहा अब ताजपोशी की करो तैयारियाँ ।
 वन ही में हो जाएगी बस राजगद्दी राम की, गुरु वशिष्ठ उनका तिलक कर देंगे वन में बेगुमाँ ।
 सुन के यह अहकाम सब सामाँ इकट्ठा हो गया, क्या बताऊँ हाथियों घोड़ों रथों की आन बाँ ।
 गुरु वशिष्ठ और उनकी बीबी हो गये पहले सवार, उनके पीछे और सब थे ब्राह्मण-ज्ञानी रवाँ ।
 शहर वाले भी खुशी से थे रथों पर सब सवार, पालकी हर एक सुन्दर थी, थीं जिन पर रानियाँ ।
 शहर का जब इन्तज़ाम अच्छी तरह से कर दिया, भरत जी और शत्रुहन दोनों हुए वन को रवाँ ।
 राम के दर्शन के प्यासे इस तरह थे लोग सब, जैसे हाथी घोड़े पानी की तरफ़ तिशनादहाँ ।
 राम सीता वन में हैं जब भरत को आया खयाल, छोड़ कर अपनी सवारी हो गये पैदल रवाँ ।
 लोग भी उतरे सवारी से ये मंजर देख कर, भरत जी के प्रेम के दिल से हुए सब मदहस्रवाँ ।
 लोग पैदल चल रहे हैं देखा कौसल्या ने जब, भरत के नज़दीक जा कर यों हुई गौहरफ़साँ ।
 मेरा कहना मान लो तुम रथ पै हो जाओ सवार, ऐ मेरे लखतेजिगर तुम पर निछावर मेरी जाँ ।
 तुम अगर पैदल चलोगे यह भी पैदल जाएँगे, यों ही सब हैं गमज़दा और हो गये हैं नातवाँ ।
 माँ का कहना सुनते ही सर उनके क्रदमों पर रखा, चढ़ गये रथ पर वे दोनों हो गये जल्दी रवाँ ।
 है जहाँ तमसा नदी पहला हुआ उनका मुक़ाम, दूसरा उस जा हुआ, थी गोमती बहती जहाँ ।
 कोई तो था दूध पीता कोई करता था फ़लार, कोई खाता था फ़ख़त सबही में खाना बेगुमाँ ।
 चैन और आराम छोड़े लोग सब थे इस तरह, राम की फ़ुक़्त में वह करते थे सब पाबन्दियाँ ।
 रात को तमसा किनारे लोग सब ठहरे रहे, और तड़का होने से पहले हुए वन को रवाँ ।
 चलते-चलते आ गया नज़दीक जब शृंगवेरपुर, राजा ने जब यह सुना करने लगा दिल में गुमाँ ।
 किसलिए हैं भरत वन को जा रहे क्या काम है, कुछ बुराई आ गयी है इनके दिल के दमियाँ ।
 क्या सबब है फ़ौज भी ले ली है अपने साथ यह, मुझको होता है यही शक और होता है गुमाँ ।
 वह समझते हैं कि लक्ष्मण-राम को मारूँ अगर, मैं अटल बन जाऊँगा मुल्के अवध का हुबमराँ ।
 यह खिलाफ़ आर्दन के चल कर हुआ बदनाम जब, अब तो खोनी ही पड़ेगी इस को शायद अपनी जाँ ।
 रण में कोई राम को है जीतने वाला नहीं, देवता हों, दैत्य हों वो, या कि हो सारा जहाँ ।
 भरत ने ऐसा अगर सोचा तो हैरत ही है क्या, जहर की बेलों से अमृत फ़ल निकलता है कहाँ ।
 गोहू के राजा ने ऐसा सोच कर सबसे कहा, मुस्तइद हो जाएँ मेरे लोग सब जल्दी यहाँ ।

नाव जितनी हैं यहाँ सब उनको कब्जे में करो, और डुबा दो उनको रोको घाट सारे बेगुमाँ । भरत से लड़ने को सब तैयार हो जाएँ अभी, और मरने के लिए हो जाएँ आमामा यहाँ । मैं लड़ूँगा भरत से दिल खोल कर मैदान में, पार गंगा के न जाने दूँगा उनको बेगुमाँ । साहिले गंगा पै मरना और वह भी जंग में, राम की खिदमत में अपनी जब निकलती है ये जाँ । राम ही के भाई के हाथों से मारा जाऊँगा, मैं समझ लूँगा कि है यह खूबिये वक्ते जवाँ । अपने मालिक के लिए मैं जान कर दूँगा निसार, हर दो हालत में रहूँगा कामगारो कामराँ । साधुओं की मंडली में हों नहीं जिसका शुमार, राम के चरणों में जो रखता नहीं है अपना ध्याँ । जिन्दगी बेकार है उसकी जमीं पर बोझ है, वह कुल्हाड़ी बन के काटेगा दरखते खान्दाँ । इस तरह वह सोच कर लड़ने को आमामा हुआ, नाम ले कर राम का ली हाथ में तीरो कमाँ । और कहा सब भाइयो तैयार अब हो जाओ तुम, जंग से फेरे न मुँह कोई हमारा पहलवाँ । बोल उठे सब खुशी से आपका जो हुक्म हो, हम बजा लाने को हैं तैयार अच्छे हुक्मराँ । और हिम्मत भी बढ़ाने लग गये आपस में वो, हो गये आदाब करके गोह सब वापस रवाँ । एक से वह एक बढ़ कर थे बहादुर जंगजू, हाथ में अपने लिये फिरते थे सब तीरो कमाँ । पहन कर वे कवच और सिर पर चढ़ाये खोप सब, और सीधी कर रहे थे अपनी-अपनी बछियाँ । कोई तो है मशक करता फेंक के तलवार को, और कोई उड़ रहा था जैसे पट्टेचे आसमाँ । इस तरह तैयार हो कर जम गये वह सफ़बसफ़, हो गये आ कर खड़े राजा के आगे बेगुमाँ । यों कहा राजा ने देखो भाइयो धोखा न हो मौत से कोई न घबराये हमारा पहलवाँ । बोल उठे सब कि क्यों हैं आप घबराये हुए, हम भरत की फ़ौज की बस उड़ा देंगे धज्जियाँ । जितने छोड़े होंगे उनकी फ़ौज में या सूरमा, उनका बाकी ही नहीं रक्खेंगे हम नामोनिशाँ । जान जब तक तन में है हम मुँह न फेरेंगे कभी, हर तरफ़ सब को नज़र आयेगी धड़ और मुंडियाँ । देख कर उनकी उमंगे हुक्म राजा ने दिया, जंग का बाजा बजाने की करो तैयारियाँ । इतना बस कहते ही बायें तरफ़ से छींका कोई, कामयाबी का सुगूँ है कह उठे सब नुक़तादाँ । एक बूढ़ा उनमें था उसने कहा बेहतर है ये, भरत से पहले मिलो मुज्जमिर है इसमें खूबियाँ । ये भी मुमकिन है कि तुमको जंग की नीबत न आय, भरत जाते हों मनाने राम को शायद वहाँ । सुन के राजा ने कहा यह बात बेशक ठीक है, काम जल्दी में अगर कर दें तो मुमकिन हैं जियाँ । भरत का मंशा नहीं मालूम हो जब तक हमें, जंग करना होगा अपने वास्ते नुक़सारसाँ । भरत से जा कर हूँ मिलता भेद ले आता हूँ मैं, रोक लो सब धार को तैयार ठहरो तुम यहाँ । उनकी क्या नीयत है जब मालूम यह हो जाएगा, वह अदू बन कर हैं आये, या के मिस्ले मुखलिसाँ । सोच कर हम करेंगे जिस तरह वाजिब होगा तब, उससे मैं हो जाऊँगा वाकिफ़ जो है राजे निहाँ । बुझनी-उल्फ़त छुपाने से नहीं छुपती कभी, साथ ले चलने तहायफ़ उसने की तैयारियाँ । कन्द मूल और फल किये तैयार उसने और परिन्द, टोकरीं में भर के भँगवाई गयी थी मछलियाँ । ले के सब सामान मिलने को रवाना हो गया, और सुगुन अच्छे नज़र आने लगे उसको वहाँ । गुरु वशिष्ठ को उसने देखा और किया प्रणाम जल्द, नाम अपना लेकर उन पर कर दिया सब कुछ अयाँ । यह समझ कर राम का प्यारा है उसको दी हुआ, और मुनी ने भरत से उसको मिलाया बेगुमाँ । भरत ने जब यह सुना रथ से वे नीचे आ गये, गोह ने आदाब करके अर्ज की मैं हूँ फलाँ । भरत ने उसको जमीं पर से उठाया जल्द ही, और सीने से लगाया मिस्ले लक्ष्मण बेगुमाँ ।

और सच्चे दिल से जाहिर प्रेम को अपने किया, देख कर उनकी मुहब्बत लोग सब थे मदहूश। गोह के राजा की किस्मत को कहें सब धन्यवाद, देवता सारीफ़ करते और थे गीहरफ़सा। और कहते थे जमाने में जो सबसे नीच है, छाँव पड़ जाये तो बाजिब है नहाना बेगुमाँ। राम के भाई हैं मिलते उससे कितने प्रेम से, बन गया यह नीच कितना आज है इज्जत निशा। राम का जो नाम लेता है मुहब्बत से कभी, पाप सारे उसके हो जाते हैं बिल्कुल बेनिशा। राम ने सीने से ऐसे गोह को लिपटा लिया, क्यों न उसकी क्रूर होगी क्यों न होगा कामरा। आबे गंगा में जो मिल जाती है आ कर कर्मनास, कौन उसको है नहीं सिर पर छिड़कता बेगुमाँ। वाल्मीकिजी नाम उल्टा राम का जपते हुए, ब्रह्मा का रुतबा जो पाया जानता है सब जहाँ। बेवकूफ़ हो या कोई हो नीच या हो चांडाल, नाम ही जपने से पाते हैं हयाते जावेदाँ। हर जमाने में यही दस्तूर दुनिया का रहा, कुछ नहीं इसमें ताज्जुब जानता है सब जहाँ। किसको रुतबा और इज्जत राम ने बख़शी नहीं, सुनके कहना देवता का लोग थे सब शादमाँ। इस क्रूर उल्फ़त से जब दोनों मिले भरतो निषाद, भरत ने फिर खैरियत भी उससे पूछी बेगुमाँ। भरत के एखलाक जब देखा निषादे नेक ने, उसको हैरत हो गयी और बन्द थी मुँह में जबाँ। फ़िक्र थी कुछ उसको दिल में प्रेम था दिल में भरा, था ब हरसूरत वह अपने जी में बेहद शादमाँ। दस्त बस्ता हो के राजा भरत से कहने लगा, ऐ मेरे आका, तुम्हारे हो गये दर्शन यहाँ। आपके दर्शन से हासिल हो गयी सब खैरियत, पीढ़ी दर पीढ़ी रहूँगा शाद और शादी कुना। राम ने मुझ जैसे को अपनाया ऐसा देख कर, जो अजीब उनको न होगा कब रहेगा शादमाँ। मैं था कपटी और बुद्धिल और था मैं बेवकूफ़, राम ने अपना लिया और हो गया मैं कामरा। शत्रुह्न उससे मिले जिस दम यह कह उठा निषाद, फिर गया वह बाअदब हो कर जहाँ थीं रानियाँ। रानियों ने दी दुआ जैसे कि लक्ष्मण आ गये, और कहा लाखों बरस जीते रहो और शादमाँ। और नगर के लोग भी सब शाद और खुरम हुए, जिस तरह लक्ष्मण के मिलने से वे होते शादमाँ। दर हकीक़त ज़िन्दगी का लूफ़ तो पाया यही, राम ने उसको गले मिल कर किया इज्जत निशा। सुन के हर एक से बढ़ाई अपनी, बेहद शाद था, और सब को ले गया वह हो के खुश अपने यहाँ। लोग सब हाज़िर थे ज्यों ही यह इशारा कर दिया, उनको ठहराने की होने लग गयी तैयारियाँ। भरत काँचे पर दिये थे हाथ जाते शहर में, देख कर शृंगवेरपुर को हो गये वो शादमाँ। उनका चलना इस तरह आता था हर एक को नज़र, इत्तेजा उलफ़त मुजस्सिम चल रहे हों बेगुमाँ। इस तरह चलते हुए सब लोग पहुँचे राम घाट, था जो गंगा का किनारा राम ठहरे थे जहाँ। शादमानी की न थी कुछ भरत जी की इन्तेहा, जब सुना उनने कि भाई राम ठहरे थे वहाँ। लोग सब पानी नहा कर आखिरस फ़ारिग़ हुए, भरत ने गंगा के पड़ कर पैर यों खोली जबाँ। आप की बरकत से गंगा हो मेरा ऐसा नसीब, राम के क्रदमाँ में हरदम हो लगा यह मेरा ध्या। जब हुआ मालूम यह सब लोग फ़ारिग़ हो गये, हो गये फिर भरत सब को ले के उस जा से रवा। लोग सब जा कर हुए जब अपने डेरों पे मुक़ीम, भरत ने सब की खबर मालूम कर ली बेगुमाँ। दोनों भाई फिर गये महारानी कौशल्या के पास, पैर दाबे गुप्तगू भी की जो थी राहत रसा। भाई से अपने कहा माँ की खबर लेते रहो, जिस क्रूर है रानियाँ रनवास में, हैं अपनी माँ। कह के इतना शत्रुह्न से भरत राही हो गये, गोह के राजा को खुद बुलवा लिया अपने यहाँ। हाथ में हाथ उसके दे कर चल रहे थे भरत जी, पूछते जाते थे लक्ष्मण राम ठहरे थे कहाँ।

जिस जगह सोये थे सीता, राम, लक्ष्मण देख कर, भरत की आँखों से आँसू हो गये फ़ौरन रवाँ । देख कर यह प्रेम उनका हो गया बेचैन वह, ले गया उस झाड़ के नीचे वो सोये थे जहाँ । सेज सज्जे की बिछी थी जिस जगह सोये थे राम, सिर झुकाया भरत ने चूमा जमीं को बेगुमाँ । राम के चरणों की मिट्टी को लगाया आँख में, प्रेम उनका किस क़दर था कर नहीं सकता बयाँ । कुछ सुनहरी तार सीता के गिरे साड़ी के थे, उनको अपने सिर पर रक्खा हो के बेहद शादमाँ । दिल भर आया उनका और यों गोह से कहने लगे, हिप्प में सीता के इन तारों में अब रीनक कहाँ । राम के दुःख में हुए बेहाल जैसे लोग सब, मर्दोजन मुल्के अयोध्या के और सब पीरो जवाँ । जिनकी बेटी है ये सीता नाम उनका है जनक, आज दुनिया में नहीं कोई है उन-सा हुक्मराँ । और किस महाराज की है ये बहू मैं क्या कहूँ, नाम नामों जिनका दशरथ जो हैं फरुदे खुशरवाँ । और बीबी हैं ये किसकी नाम जिनका राम है, जिनकी अजमत का नहीं हो सकता है मुझसे बयाँ । ऐसी सीता जमीं पर सोयी थी, सुन कर बात यह, जिस्म से मेरे निकल जाती नहीं क्यों मेरी जाँ । और लक्ष्मण भाई मेरे काबिले तारीफ़ हैं, चाहते जिनको अवध के लोग सब और बाप-माँ । जो बहुत नाजुक बदन हैं उम्र गुजरी चैन में, आज जंगल में उठाते हैं वो कैसी सक्तियाँ । मैं कठोर इतना हूँ दिल का देख कर यह हाल भी, कुछ नहीं मालूम होता है मुझे बारेगिराँ । राम के अवतार से है साथ यह सब हो गये, बाप माँ अहले अवध उस्ताद अहले खानदाँ । देख कर एखलाक जिनके सुन के जिनकी गुप्तगू, हो मुखालिफ़ भी तो जाता है उनका मदहलवाँ । हों करोड़ों शेष या वह हों करोड़ों सरस्वती, हो नहीं सकती बयाँ हैं जिनसे उनकी खूबियाँ । सो रहे हैं वह जमीं पर आज ऐसे रामचन्द्र, क्या है परमेश्वर की मर्जी कर नहीं सकता बयाँ । जिनको महाराजा ने पाला अपनी जाँ से भी अजीब, जानते ही जो न थे तकलीफ़ का नामोनिशाँ । साँप जैसे हो मणो का और पलक आँखों की हों, उनकी जितनी माँयें हैं—रहती थी जिनकी निगहबाँ । हाय जंगल में हैं फिरते आज ऐसे रामचन्द्र, कन्दमूल और फल वह खा कर जी रहे हैं बेगुमाँ । सब खराबी की ये जड़ है कैंकेई अफ़सोस है, कर दिया अपने पती को हाय जिसने बदनमाँ । और सौ धिक्कार है मुझ पर हूँ ऐसा बदनसीब, मौजबे तकलीफ़े आक्रा मैं हूँ नंगे खानदाँ । सुन के बातें भरत की कहने लगा राजा निषाद, राम से है प्यार तुमको वो हैं तुम पर मेहरबाँ । यह तो चतुराई जमाने की हुई है आसकार, आप क्यों बेवजह करते इसमें हैं शक ओ गुमाँ । ईश्वर की थी ये मरखी इसमें कुछ चारा न था, कर दिया अक्ल और समझ को कैंकेई की रायगाँ । आप की तारीफ़ करते राम जी थे बारबार, रात भर बस आप ही का जिक्र था बिरदेजबाँ । मैं कसम खा कर हूँ कहता फ़िक्र कीजै कुछ न आप, हर तरह होगा भला और आप होंगे कामराँ । राम हैं दिल के घनी भी और हैं वो ज्ञानवान, सोचिएगा अब नहीं सोजाइएगा बेगुमाँ । गोह की बातें ये सुन कर कुछ तसल्ली-सी हुई, भरत उस जा से हुए फिर अपने डेरे को रवाँ । मर्दोजन सारे अवध के देखने उस जा गये, राम, लक्ष्मण और सीता आ के ठहरे थे जहाँ । और चक्कर था लगाता जा के इस जा हर कोई, कोई देता था हज़ारों कैंकेई को गालियाँ । भरत के औसाफ़ की तारीफ़ करता था कोई, राजा दशरथ की मुहब्बत कोई करता था बयाँ । सब यही कहते थे बेशक हम बड़े हैं बदनसीब, गोह के राजा की करते थे बयाँ सब खूबियाँ । रात भर ऐसे ही गुजरी सुबह जब होने लगी, पार दरिया करने होने लग गयी तैयारियाँ । सबसे पहले नाव पर बिठला दिया गुरुदेव को, दूसरी जो थी नयी उस पर चढ़ी सब रानियाँ ।

हो गये सब लोग जब इस तरह किस्ती में सवार, थे सभी इस पार से उस पार जाने को रवा। पार दरिया को किया फारिग जरूरत से हुए, रहनुमाई में निपादों के हुए पैदल रवा। पीछे-पीछे चल रही थी रानियों की पालकी, शत्रुहन् से कह दिया उनके रहें यह निगहबा। आप खुद पैदल थे चलते रास्ते में भरत जी, जो थे हमराही में उनके मुस्तलिफ अस्पेदवा। अर्ज करते थे ये खादिम अस्प पर चढ़ जाइए, भरत ने उनसे कहा मुझसे यह मुमकिन है कहा। राम तो पैदल गये हैं और मैं जाऊँ सवार, काम लूँगा मैं न हाथी और घोड़ों से यहाँ। फ़र्ज नौकर का बजा लाना नहीं आसान है, चाहता है दिल मेरा मैं सर के बल जाऊँ वहाँ। भरत की यह बात सुन कर हो गये बेचैन सब, जो प्रेमी थे वे होते जा रहे थे नीमजी। सेपहर को भरत पहुँचे इस तरह प्रयाग में, राम ही का ध्यान था और राम ही बिरदे जबा। पड़ गये पैरों में छाले जैसे पाला कमल पर, चल रहे पैदल थे वह और थे दुखी पीरो जवा। हो गया मालूम जब त्रिवेणी पर सब आ गये, फिर किया स्नान राजा भरत ने फ़ौरन वहाँ। साँवली जमना की लहरें और गंगा की सफ़ेद, देख कर यह मेल दोनों का हुए वो शादमा। जोड़ कर यों हाथ गंगा और जमना से कहा, आरजू पूरी हुआ करती है तुम से बेगुमा। हूँ मैं क्षत्री माँगना लाजिम नहीं मुझको मगर, माँगने को भीख हूँ मैं खोलता अपनी जबा। क्या बुराई वह नहीं करता जो खुद होता है बद, और भलों का काम है झूठी नहीं देते जबा। अर्थ धर्म और काम की और मोक्ष की ख्वाहिश नहीं, राम के कदमों में मेरा तन रहे और मेरी जा। रोज़ दूनी हो मुहब्बत मुझको अपने राम से, ख्वाह वो मुझको बुरा समझें, रहें वो बदगुमा। जब तपा करता है सोना आब बढ़ जाती है खूब, खिदमते मखदूम से होता है सेवक कामरा। यह जवाब उनको मिला, हे भरत तुम हो नेक खूँ, राम के तुम भक्त हो और हैं वो तुम पर मेहरबा। तुम से बढ़ कर कोई दुनिया में नहीं प्यारा उन्हें, फ़िक्र करने की जरूरत ही नहीं तुमको यहाँ। सुनके त्रिवेणी का कहना भरत का दिल खुश हुआ, भरत की तारीफ़ में सब देवता थे गुलफ़शा। वानप्रस्थ और ब्रह्मचारी और गृहस्थ सन्यास भी, भरत की तारीफ़ में सब हो गये थे हमजबा। आखिरस पहुँचे वो भारद्वाज जो के आश्रम, भरत ने प्रणाम करके सर झुकाया बेगुमा। दौड़ कर उनको मुनी जी ने उठाया अपने हाथ, और आशीर्वाद दे कर हो गये वो शादमा। उनको बिठलाया गया और भरत बैठे शीक से, दिल मुहब्बत से भरा था और थे वो शादमा। सोचते थे दिल में पूछेंगे मुनी तो क्या कहूँ, किस तरह मैं हाल अपना उनसे कर दूँ सब बया। फ़िक्र में डूबे हुए देखा मुनी ने भरत को, कह दिया ऐ भरत हम पर हाल है सब कुछ अया। जो भी इच्छा प्रभु की है पूरी होती है जरूर, इसमें चलती ही नहीं इन्सान की कुछ इनोआ। अपनी माँ के काम से तुम कुछ दुखी हरगिज न हो, अक्ल जिनकी सरस्वती जी ने थी कर दी रायगा। कोई तुम को ऐब इसमें दे नहीं सकता कभी, बल्कि दुनिया में तुम्हारे लोग होंगे मदहलबा। है यही दस्तूर जग का. वेव में भी है लिखा, बाप जिसको तस्त दे होता वही है हुक्मरा। राजाए दशरथ यकीनन थे सचाई के स्वरूप, ज़िन्दगी में ताज पहनाते तो होते शादमा। बस खराबी तो यही है राम बनवासी हुए, यह खबर सुन कर हुए बेहद दुखी अहलेजहा। होनहार ऐसी ही थी यह सब हुआ उसके सबब, ना समझ रानी हुई बदनाम इसमें बेगुमा। ऐब थोड़ा भी लगायेगा अगर कोई तुम्हें, उसको साधू कीन बोलेगा, वो है ज्ञानी कहा। तुम अगर करते हुक्मत भी तो नावाजिब न था, राम भी सुनते तो हो जाते थे वो भी शादमा।

अब तो तुमने जो किया है वह निहायत खूब है, राम की खिदमत तुम्हें होगी बहुत राहत रसों। राम के चरणों से उल्फत यह तुम्हारा धर्म है, तुम-सा खुश किस्मत जहाँ में कोई होता है कहाँ। तुम पिसर महाराजा दशरथ के हो भाई राम के, फिर तुम्हारी जात में होती न क्यों कर खूबियाँ। राम के दिल में मुहब्बत है तुम्हारी घर किये, राम, लक्ष्मण और सीता हैं तुम्हारे मदहस्वाँ। मैंने अन्दाज़ा किया वह आये जब प्रयाग में, मस्त रहते थे तुम्हारी याद में वह बेगुमाँ। राम को है प्यार तुमसे इस क्रदर ऐ भरत जी, जिस क्रदर मूरख को हो संसार से दिलचस्पियाँ। राम का इसमें नहीं है खास कोई वड़प्पन, जिनसे पलता उनका खादिम और उनका खानदाँ। राम की उल्फत मुज्जसिम तुम हुए पैदा भरत, यह भेरा है एतकाद और कह रहा हूँ बेगुमाँ। तुम समझते अपने दिल में हो कि बदनामी हुई, हम समझते हैं कि तुम हो कामगारो कामराँ। राम की भक्ति जो पाने का किया तुमने खयाल, यह सगूने नेक है अच्छा ही होगा सब समाँ। आपके यश की ज़िया है लाजवालो दायमी, चाँदनी की मिसल यह घट सकती बढ़ सकती कहाँ। रोज़ बढ़ती ही रहेगी रोशनी इस चाँद की, राम के परताप से हरगिज़ न होगी यह निहाँ। रातदिन रोशन रहेगी चाँदनी इस चाँद की, कँकेई का काम राह बन नहीं सकता यहाँ। राम की उल्फत में हर दम चाँद यह भरपूर है, और गुरु भी आपके यश में रहेंगे क्रदरदाँ। कर दिया तुमने मुनव्वर इस ज़मीं को चाँद से, फ़ौज़ पाएँगे इसी एक फ़ौज़ से अहले जहाँ। राजा भागीरथ ने गंगा को ज़मीं पर ला लिया, ज़िमकी कर सकते नहीं हैं हम बर्गों कुछ खूबियाँ। राजाएँ दशरथ की क्या तारीफ़ और तौसीफ़ हो, कोई दुनिया में नहीं था उनके जैसा हुक्मराँ। कैसे खुश किस्मत थे वो फरज़न्द जिनका राम है, शिव भी जिनको देखते रहते हैं हरदम बेगुमाँ। नेक नामी उनसे भी बढ़ कर है पायी आपने, बात यह सब पर है जाहिर और है बिलकुल अयाँ। जैसे पारस रख के भी करते रहें गुरवत का खौफ़, वैसे तुम अब हो रहे हो अपने दिल में बदगुमाँ। झूठ कहने की हमारी तो नहीं आदत कभी, हम उदासी हैं तपस्या में रहे हैं शादमाँ। हमको दुनियादारी से मतलब नहीं कोई रहा, राम के दर्शन से पायी है हयाते जावेदाँ। उनके दर्शन का यह फल है आप से मिलना हुआ, धन्य है इस प्रयाग को—किस्मत की हैं ये खूबियाँ। भरत, क्या तारीफ़ की जाये तुम्हारे काम की, महबे हैरत कर दिया है तुमने सबको बेगुमाँ। बात यह सुन कर मुनी की लोग सब मसरूर थे, देवता तारीफ़ करके हो गये सब गुलफ़शाँ। हर तरफ़ जब इस तरह गूँजी सदा तारीफ़ की, भरत को भी चैन आया हो गये वो शादमाँ। आँख में आँसू थे उनके और दिल में राम थे, दस्तबस्ता हो के मुनियों से हुए गौहर फ़शाँ। जमा हैं इस जा मुनी सब और यह तीरथ राज है, झूठ कहने की किसी को है नहीं ताक़त यहाँ। कुछ नहीं है फ़िक्र मुझको अपनी माँ के काम की, और न बदनामी की अपनी फ़िक्र है कुछ बेगुमाँ। लोक और परलोक बिगड़े मेरा इसका डर नहीं, बाप के मरने का भी मुझको नहीं शम बेगुमाँ। राम और लक्ष्मण से लड़के जिनके हो जी हौसला, सारी दुनिया पर हुई जाहिर हैं जिनकी खूबियाँ। ऐसे महाराजा के मरने का करें क्यों शोक हम, राम की फुर्क़त में दे दी जिसने अपनी प्यारी जाँ। फ़िक्र मुझको इसकी है कि राम-लक्ष्मण-जानकी, फिर रहे जंगल में नंगे पैर हैं बेखानदाँ। वेश में मुनियों के रह कर रोज़ फल खाते हैं वो, सर्दी और गर्मी में सोते हैं वो वन के दमियाँ। दुख इसी का है मुझे, और फ़िक्र है इस बात की, दर्दों शम से मिल नहीं सकती मेरे दिल को अयाँ। फ़ायदे के वास्ते माँ ने मेरी सब कुछ किया, सूद के बदले मुझे हासिल हुआ उससे ज़िया।

खुश हुए सुन कर मुनी—कहने लगे भारद्वाज, राम के दर्शन से हो जाओगे तुम अब शादमाँ । इस तरह उनको दिलासा दे के फिर कहने लगे, आप सब मेहमाँ हमारे आज हो जाएँ यहाँ । कन्दमूल और फल जो हाज़िर हैं उन्हें कीजै क़बूल, आप मेहमाँ हैं हमारे आपके हम मेज़बाँ । भरत ने सोचा कि बेढ़ब हो गयी है बात यह, हाथ जोड़े और मुनी से यों किया अर्जबयाँ । आपका जो हुक्म हो तामील को हाज़िर हूँ मैं, यह जवाब उनका सुना और हो गये बस शादमाँ । कन्दमूलो फल ले आएँ शिष्यों से यह कह दिया, चल दिये वह काम पर सब हो के बेहद शादमाँ । फिर मुनी जी ने यह सोचा हमने रोका भरत को, उनकी मेहमानी भी लाज़िम है जो हो शाहानेशाँ । आपका क्या हुक्म है फरमाइए कहने लगीं, हाथ जोड़े हो के हाज़िर ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ । राम की पुरक़त में भरत और शत्रुहन ग़मगीन हैं, साथियों को अपने ले कर आज आये हैं यहाँ । इन्तज़ाम ऐसा हो उनकी दूर सब तकलीफ़ हो, हर तरह आराम में हों हर तरह राहतरसाँ । भरत का रुतबा जो सोचा फ़िर उनको भी हुई, किस तरह मेहमानी इनकी हम करें शायानेशाँ । वह मुनी का हुक्म सुन कर सिर झुकाये बाअदब, पल ही भर में कर दिया तैयार आलीशाँ मकाँ । हर तरह के चैन सुख का उस जगह था इन्तज़ाम, और सेवक भी थे हाज़िर जो कि थे राहत रसाँ । देवता भी देख कर जिसको थे ललचाये हुए, हर तरह का साज और सामाँ इकट्ठा था वहाँ । ऐसा था सामाँ मुहैया स्वर्ग में भी जो न हो, जैसी ज़िमको चाहिए थी मिल गयी चीज़ें वहाँ । साथियों का जबकि पहले हो गया सब इन्तज़ाम, भरत भी डरे में आये और अहले खानदाँ । कूवते शैबी से एक पल में ही सब कुछ हो गया, यह मुनी की थी करामत बरतरज वहमोगुमाँ । भरत भी यह देख कर हालत हुए कुछ दंग से, यम, कुबेर और इन्द्र को भी ऐसा सुख हासिल कहाँ । थे बिछोने और कपड़े बाग-बागीचे बहुत, बावली, तालाब और नहरें थी जिनके दामियाँ । थे परिन्द अक्साम के और फूल रंगबिरंग के, सारे मेवे भी रसीले मिसले अमृत बेगुमाँ । मुस्तलिफ़ अक्साम के खुश जायका खाने भी थे, देख कर सब लोग थे अंगुस्ते हैरत दर वहाँ । इन्तज़ाम ऐसा था जिससे लोग दिल में खुश हुए, राम के दुख में उन्हें लेकिन ये भाता था कहाँ । अल गरज वह रात बस योंही गुज़ारी भरत ने, क्योंकि सामाने खुशी वो चाहते ही थे कहाँ । सुबह तीरथराज के स्नान से फारिग हुए, और मुनी से रुखसती माँगी मये हमराहियाँ । रास्ता बतलाने वाकिफ़कार लोगों को लिया, हो गया यह काफ़िला उस जा से फिर आगे रवाँ । गोह राजा से मिलाये हाथ चलते थे भरत, जिस तरह उल्फ़त मुज्जसिम चल रही हो बेगुमाँ । पैर में जूता न उनके और सिर पर था ज छत्र, पूछते जाते थे उससे राम की सब दास्ताँ । दिल में उनके प्रेम का दरिया उमड़ जाता था बस, जब वह बतलाता था सीता-राम ठहरे थे यहाँ । प्रेम इनका देख कर सब देवता मद्दाह थे, अस्ते में लोग उन पर कर रहे थे गुलफ़िसाँ । छाये बादल थे हवा चलती थी धीमी राह में, राम को भी यह सहूलत थी न हासिल बेगुमाँ । रास्ते में जिस क़दर मिलते थे उनको जानदार, हो गये सब खुश व खुरम कामगारो कामराँ । क्यों न हो जब भरत जी हैं राम को दिल से अजीज़, राम ही के नाम से होता है इन्सा शादमाँ । राह में आसानियाँ क्यों हो न उनके वास्ते, राम के ये भाई हैं यह बात है बिलकुल अयाँ । इन्द्र को यह दगदगा था भरत के अतवार से, राम के दिल में मूरोवत आ न जाए बेगुमाँ । भरत की खातिर जो वापस घर को जाएँ रामचन्द्र, जिस क़दर अब तक किया है होगा यह सब रायगाँ । शौं कहा अपने गुरु से कीजिए अब काम वह, जिस तरह भी हो न हो, आपस में मिलना बेगुमाँ ।

भरत में भक्ति बहुत है राम में खातिर बहुत, इस लिए ऐसा न हो उल्टा न हो जाए समी। कीजिए तदबीर ऐसी काम ये होने न पाए, अपने मन की बात पूरी हो और हम हों कामरी। इन्द्र की इस बात से गुरुदेव भी हँसने लगे, और समझे हैं अकलमन्दी की इनकी खूबियाँ। और मुखातिब उनसे हो कर यों कहा ऐ देवराज, राम के सेवक से ये लाजिम नहीं गूस्ताखियाँ। उनसे चालाकी करें तो उसका उल्टा फल मिले, नफ़ा कैसा काम हो जाएगा सब नुक़सारीस। उस घड़ी कुछ राम की मन्शा का था इसमें लगाव, अब अगर ऐसा करोगे तुम न होगे शादमी। राम से कोई बुराई गर करे कुछ डर नहीं, भक्त की अपने बुराई सुन ही सकते हैं कहीं। राम का हैं नाम जपते रात दिन दुनिया के लोग, भरत का खुद नाम जपते राम जी हैं हर जमा। इसलिए ऐसी बुराई का न हो हरगिज खयाल, वर्ना दुनिया में बुराई आपकी होगी अया। इसलिए कहना हमारा मान लो ऐ देवराज, राम को हैं भक्त प्यारे वो हैं उन पर मेहरबा। दुश्मनी की ना कपट की है नहीं आदत मगर, काम को वह देख कर करते दया है बेगुमा। बादे मुर्दन तार देते हैं न हों जो कोई भक्त, और जो हों भक्त उसको रखते हैं वो कामरी। इसलिए दिल से खयाल ऐसा निकालो जल्द तुम, भरत के चरणों में अपना दिल लगाओ बेगुमा। राम के भक्तों में ऊँचा मरतबा है भरत का, दूसरों की यह भलाई से हैं रहते शादमा। देवताओं की है खातिर राम के पेशेनज़र, भरत उनके हुक्म के बाहर हों ये मुमकिन कहीं। इन्द्र से सुरगुरु जब इस तरह से कहने लगे, दग दगा दिल का मिटा और हो गये वो शादमा। भरत की तारीफ़ अपने मुँह से वो करने लगे, आसमा से फूल वर्षा कर हुए वह मदहसबा। इस तरह थे भरत चलते जा रहे उस राह में, प्रेम उनका देख कर होता था हर एक शादमा। साँस लम्बी खींच कर जब नाम लेते राम का, खुदबखुद आता नज़र है हर सिम्त उलफ़त का समी। अपनी हमराही को ले कर राह में करते मुक़ाम, आखिरस पहुँचे वहाँ जमना जो बहती थी जहाँ। देख कर जमना को फ़ौरन राम की याद आ गयी, दिल भर आया सब का और आँखों से आँसू थे रवा। लोग जब थे गमज़दा यह भरत को आया खयाल, ठहर कर हम क्या करें यह वक़्त होगा रायगा। हम अगर जल्दी पहुँच जाएँ तो दर्शन हो सके, फ़िक्र और गम का नहीं बाक़ी रहे नामोनिशा। रात में जमना पे ठहरे हो गया सब इन्तेज़ाम, किशतियाँ भी सारे घाटों से तलब कर ली यहाँ। सुबह होते ही रवाना हो गए सब नाव पर, पार दरिया कर गये थे जितने अहले कारवा। हो के फारिया सब ज़रूरत से वहीं से चल दिये, और हुआ यह काफ़िला उस जा से फिर आगे रवा। सबसे पहले थे मुनी अपनी सवारी पर सवार, और उनके पीछे थे अहले अयोध्या सब रवा। शत्रुहन और भरत पैदल चल रहे थे सबके बाद, गोह का राजा भी चलता जा रहा था दर्मिया। लोग कुछ पैदल भी हमराही में उनके साथ थे, नाम सीता-राम और लक्ष्मण का था बिरदे जबा। इनके आने की खबर सुन कर चले आते थे जल्द, राह में जो लोग रहते और थे जिनके मका। गाँव की वह औरतें आपस में थीं यों पूछती, राम, लक्ष्मण ही से आते हैं नज़र यह बेगुमा। लेकिन इनका तो नज़र आता नहीं उन-सा लिबास, और सीता भी नज़र आती नहीं हैं दरमिया। साथ इनके देखिए सेना भी चतुरंगी है एक, इनके चेहरों पर उदासी है, नहीं दिल शादमा। इस तरह जब एक ने उनसे कहा सब माजरा, दूसरी ने हाल सारा कर दिया उनसे बया। और कहा ये भरत हैं जो हुक्मरानी छोड़ कर, जा रहे हैं राम की वापस बुला लाने मका। इस तरह कह कर भरत जी की बड़ी तारीफ़ की, और बया करने लगीं हर इक से उनकी खूबियाँ।

अपनी क्रिस्मत पर थे नाजाँ उनकी सूरत देख कर, कहते थे कि कौकेई क्योंकर बनी है इनकी माँ । कोई कहती थी कि रानी की नहीं तकसीर कुछ, होने वाली बात जो होती हैं, टलती है कहाँ । यों ही हर एक गाँव में आपस में होती गुप्तगू, देख कर सब लोग खुरम और होते शादमाँ । इस तरह तारीफ़ अपनी और भाई राम की, सुनते जाते राह में थे, होते जाते थे रवाँ । रास्ते के लोग अपने को थे कहते खुशनसीब, भरत के दर्शन से हो जाते थे वो जब शादमाँ । बाअदब होते थे वह जिस जा कि रहते थे मुनी, और रुक जाते थे तीरथगाह होते थे जहाँ । माँगते थे अपने ही दिल में वह आशीर्वाद यह, राम के चरणों में हरदम हो मेरा दिल बेगुमाँ । भील कोल उनको थे मिलते और वनवासी कहीं, ब्रह्मचारी और संन्यासी कहीं जलवाकुनाँ । जो कोई मिलता था उनसे पूछते जाते थे ये, राम लक्ष्मण जानकी जी वन में रहते हैं कहाँ । वह निहायत शाद हो जाते थे यह सुन कर जवाब, राम लक्ष्मण जानकी को हमने देखा शादमाँ । चलते-चलते इस तरह आखिर हुआ एक जा मुकाम, सुबह होते ही वहाँ से भी हुए ये सब रवाँ । जिस तरह थी राम से मिलने की स्वाहिश भरत को, यों ही सब साथी भी उनके थे तड़पते बेगुमाँ । रास्ते में सब सुगून अच्छे नज़र आने लगे, और उमंगें बढ़ती जाती उनके दिल के दमियाँ । मस्त सब दर्शन के प्यासे चल रहे थे राह में, दिल में यह कहते थे मिल जाए हयाते जावेदाँ । जब नज़र आने लगा कामदगिरी का वह पहाड़, राम का सच्चा सखा यह कह उठा बस नागहाँ । कोह के नीचे बहा करती है पै नामी नदी, राम लक्ष्मण और सीता हैं रहा करते वहाँ । देख कर उस कोह को सब लोग शादाँ हो गये, जय का नारा भी लगाया हो के हर एक हम जबाँ । इस तरह वह खुश हुए जैसे कि लक्ष्मण राम आज, फिर अयोध्या की तरफ़ चलने की हैं तैयारियाँ । भरत को कितनी खुशी थी कोई कह सकता नहीं, बल्कि शायर के लिए मुश्किल है लिखना वह समाँ । अल गरज दो कोस ही उस रोज़ वह सब चठ सके, और ठहरे एक जगह पानी वगैरह था जहाँ । राम भी अपनी जगह जागे थे पिछली रात से, और सीता ने भी देखा स्वाब शब में एक वहाँ । साथियों को भरत ले कर आ रहे हैं इस जगह, राम की फुर्त में उनके है नहीं ताबोतवाँ । लोग सब हैं गमज्जरा और सास हैं सब दुव भरी, राम ने जब यह सुना आँखों से आँसू थे रवाँ । अपने भाई से कहा ताबीर इसकी है यही, कुछ खबर हमको बुरी मालूम होगी नागहाँ । फिर नहा कर हो गये फारिश वो पूजा पाठ से, और बैठे जाके सारे साधुओं के दमियाँ । देखते क्या हैं कि उत्तर की तरफ़ एक घूल है, और गर्दालूद है उस सिम्त का सारा समाँ । मुजतरिब हो कर चले आते परिन्दे और-तयूर, राम ने सोचा कि इसका क्या सबब है बेगुमाँ । गौर ही करते थे वह इतने में आये भील कोल, और सारा माजरा आ कर किया उनसे बयाँ । राम ने ज्यों ही सुना वो हो गये खुश और शाद, शादमानी के निशाँ चेहरे से उनके थे अयाँ । राम को ये भी खयाल आया क्यों आते हैं भरत, फिर हुआ मालूम लश्कर साथ है एक बेकराँ । बाप के अहकाम का उनको हुआ कुछ तो खयाल, कुछ लिहाजे भरत भी उनके था दिल के दमियाँ । दगदगे में पड़ गये थे इस तरह जब रामचन्द्र, सूसता कुछ भी न था और बन्द थी मुँह में जबाँ । आखिरस उनको खयाल आया भरत हैं अक्लमंद, मेरे कहने से नहीं बाहर वो होंगे बेगुमाँ । देखा लक्ष्मण ने कि भाई राम हैं कुछ फ़िक्र में, वक्त की देखी नज़ाकत यों किया अजबियाँ । आपके इरशाद से पहले ही कहता हूँ मैं कुछ, वक्त पर कहना नहीं सेवक की हैं गुस्ताखियाँ । आप तो सब जानते हैं क्या कहूँ मैं आपसे, फिर भी जो कुछ मुझको है मालूम करता हूँ बयाँ ।

बेसबब ही आप सब पर रहभ करते हैं मुदाम, आपको है प्रेम सबसे आप सब पर मेहरबाँ। मरतबा पा कर जो नादाँ भूलता है हैसियत, है यही दस्तूर जग का कुछ नहीं शक्को गुमाँ। आपके चरणों में अब तक भरत का था दिल लंगा, बात ये बिलकुल है जाहिर जानता है सब जहाँ। तख्तेशाही मिल गया है आज उनको आपका, आपके बदले हुए हैं वो अवध के हुक्मराँ। देख कर यह आर जंगल में हैं तनहा फिर रहे, और जंगल में हैं सहते फिर रहे दुस्वारियाँ। हैं धरम के रास्ते से हट कर अब वह चल रहे, आ गयी है कुछ बुरायी उनके दिल के दमियाँ। सोच कर ऐसी बुरायी जोड़ कर सारा समाज, फ़ौज के हमराह दोनों भाई आते हैं यहाँ। हाथी, घोड़े और रथ भी साथ क्यों लाते थे वह, हैं बुराई पर वो आमामा बिला शक्को गुमाँ। भरत की इसमें फ़कत बतलाइए तक्रसीर क्या, कौन पागल हो नहीं जाता है बन कर हुक्मराँ। चन्द्रमा, राजा नहुष से और राजा बेन से, जो हुए अफ़आले उदू हैं आज तक सब पर अयाँ। इन्द्र, त्रिशंकु सहस्रबाहू हुए वदनाम सब, हो गये जामे से बाहर थे ये सारे हुक्मराँ। भरत ने ऐसा किया तो क्यों ताज्जुब कीजिए, कर्जों दुश्मन का न बाकी चाहिए नामोनिशाँ। हाँ ज़रूर इसमें हुई है भरत से भूल इस क्रदर, आपको समझा हुआ है वह नहींफो नातवाँ। आज मैदाँ में उसे मालूम सब हो जाएगा, आप कैसे हैं बहादुर और हैं शेरजियाँ। इस क्रदर कहते हुए आपे से बाहर हो गये, राम के चूमे क्रदम और यों हुए आतिश बयाँ। मेरे कहने को बुरा समझो न तुम मालिक मेरे, भरत ने हमसे बहुत बेजा हैं की गुस्ताखियाँ। हम कहाँ तक सह सकेंगे क्यों रहे खामोश हम, आप हैं हमराह और है हाथ में तीरोकमाँ। जाति का छत्री हूँ रघूकुल खानदाँ का फर्द हूँ, आपका सच्चा है सेवक जानता है सब जहाँ। धूल से बढ़ कर नहीं है कोई शौ हलकी मगर, लात लगने से वह चढ़ जाती है सिर पर बेगुमाँ। यह कहा, और बाअदब हो कर खड़े जब हो गये, वीरता के सब निशाँ चेहरे पे उनके थे अयाँ। बाँध कर अपनी जटा तरकस कमर में बाँध कर, जल्द ही वह ले लिये फिर हाथ में तीरोकमाँ। आपकी सेवा का फल मैं आज पाऊँगा ज़रूर, भरत को नीचा दिखाऊँगा मैं मैदाँ दमियाँ। दोनों भाई आज मैदाँ में गिरेंगे लौटते, फल मिलेगा उसका जो की आपसे गुस्ताखियाँ। ये भी अच्छा ही हुआ सारा समाज आया है साथ, आज मैं पिछला भी बदला लूँगा सबसे बेगुमाँ। जिस तरह शदहाँ लबे चुंगल में फँसते बाज के, और कुचलता हाथियों के झुण्ड को शेर जियाँ। भरत को मय शत्रुह्न मारूँगा मैं मैदान में, आये शंकर भी मदद को तो उड़ा दूँ धज्जियाँ। राम की खा कर क्रसम कहता हूँ यों कहने लगे, ऐसे गुस्से से वो गरजे जिस तरह बर्कतवाँ। उनकी यह सौगन्ध सुन कर और गुस्सा देख कर, लोग सब डरने लगे और हो गये बस नीमजौ। आसमाँ से देवता इस तरह कहने लग गये, कौन है तुम-सा बहादुर और तुम-सा पहलवाँ। काम कोई भी जो कीजै ग़ौर करके कीजिए, वर्ना जल्दी में खराबी का है अन्देशा निहाँ। सुन के यह आवाज लक्ष्मण भी ज़रा चुप हो गये, राम सीता ने भी की दिलजोई उनकी बेगुमाँ। राम लक्ष्मण से मुखातिब होके यों कहने लगे, तुमने जो कुछ है कहा इसमें नहीं शक्को गुमाँ। तख्ते शाही का नशा किसको होता है नहीं, कौन है वह जो नहीं मगरूर बन कर हुक्मराँ। साधुओं की जो सभा में है रहा करता कोई, नशे से ऐसे वही बचता है बेशक बेगुमाँ। भरत जैसा नेक इन्साँ कोई दुनिया में नहीं, वह फ़कत मुल्के अवध ही के बने है हुक्मराँ। ब्रह्मा और विष्णु व शिव का भी अगर दर्जा मिले, नशाए शरबत न होगा उनको हरगिज़ बेगुमाँ।

है जो नामुमकिन से नामुमकिन वह हो सकती है बात, भरत को होगा घमण्ड इसका नहीं शानोगुर्मा । मैं क्रसम खा कर तुम्हारी और अपनी जान की, बिलयकीं कहता हूँ यह मानो इसे तुम मेरीजाँ । भरत जैसा नेक भाई कोई दुनिया में नहीं, जिसने दुनिया पर करी जाहिर हैं अपनी खूबियाँ । भरत की तारीफ़ करते हर तरह थे रामचन्द्र, कहते-कहते राम के जाते रहे ताबोतवाँ । राम की वह गुप्तगू सुन कर हुए सब लोग दंग, और कहने लग गये हैं राम इन पर मेहरबाँ । भरत ही की जात से है धर्म की रक्षा हुई, उनकी खूबी और कोई कह ही सकता है कहाँ । सुनके कहना देवता का राम सीता लक्ष्मण, किस कदर मसरूर थे ये कर नहीं सकता बयाँ । और यह भी हाल सुनिए भरत और सारा समाज, जिस जगह मन्दाकिनी थी जाके ठहरे सब वहाँ । ले के सबसे यह इजाजत दोनों भाई और निषाद, हो गये उस जा रवाँ थे राम और सीता जहाँ । सोचते जाते थे दिल में मेरी माँ के काम से, हाय मुझको है ये सहनी पड़ रहीं दुस्वारियाँ । मेरा आना सुन के सीता, राम और लक्ष्मण कहीं, जिस जगह हैं अब न हो जाएँ वहाँ से भी रवाँ । माँ के बाअस वह जो समझेंगे वो वाजिब है मगर, अपना सेवक जान कर मुझ पर रहेंगे मेहरवाँ । स्वाह मुझ पर हो इनायत की नज़र या हों खफ़ा, दोनों हालत में मेरे सिर पर है उनकी जूतियाँ । इस तरह थे दिल में उनके मुखतलिफ़ आते खयाल, और आगे वो बढ़े जाते थे दोनों भाइयाँ । सोचते थे माँ की करतूतों से वापस लौट जाएँ, सोच कर फिर राम की खसलत वो होते थे रवाँ । इस्तियाके दीद में वह तेज़ भी चलते कभी, जिस तरह बहता नदी में तेज़ है आबे रवाँ । भरत की यह देख कर हालत था मुजतर गोहराज, हो गया बेचैन और बस खो दिये ताबोतवाँ । रास्ते में कुछ सुगुन अच्छे नज़र आने लगे, कह उठा—दुख दर्द सारे दूर होंगे बेगुमाँ । आखिरस चलते हुए जब भरत पहुँचे आश्रम, देख कर वन और पहाड़ी हो गये वो शादमाँ । आसमानी हो कि सुल्तानी मुसीबत आये जब, रहना अपनी जा किसी को होता है ईजारसाँ । दूसरी जा जब किया करता है वह नकले मुकाम, शाद और मसरूर हो जाता है बस जा कर वहाँ । राम के रहने से वह वन इस तरह शादाब था, जिस तरह हो खुश रिआया नेक हो गर हुक्मराँ । उसकी है तफ़सील ऐसी वन है गोया सलतनत, है वहाँ वैराग दीवाँ और विवेक है हुक्मराँ । नेम और दम हैं सिपाही कोह दारूल सलतनत, समृद्धि और शांति दोनों वहाँ की रानियाँ । ये जो राजा हैं इसे हर तरह का हासिल है चैन, राम के चरणों के बाअस ये है हरदम शादमाँ । मोह रूपी है जो राजा इस पर हो कर फतह याब, कर रहा है यह हुक्मत कामगारो कामराँ । सलतनत में हर तरह का ऐश और आराम है, है मूसीबत मुल्क में गोया नसीबे दुश्मनाँ । जानवर भी और परिन्दे हैं रिआया मुल्क के, हम कहाँ तक कह सकें, मुमकिन नहीं इसका बयाँ । शेर, हाथी और घीदड़, भैंस, गायी है मुती, ऐसे राजा की शना करना है लाज़िम बेगुमाँ । नहर में पानी है बहता फ़ील है चिवाड़ते, गोया नक्कारे बजाते जा रहे है वो वहाँ । चकवा और तोता, पपीहा, हंस, कोयल और चकोर, बोलते हैं अपनी बोली होके बेहद शादमाँ । छोड़ कर ये बैर अपना मिल के रहते हैं ये सब, गोया राजा के यही हैं फौज के सब पहलवाँ । मोर भी है नाचते भीरे भी करते है गुंजार, गोया उनकी सलतनत में हैं हजारों खूबियाँ । फूल फल और बेलबूटे ताजओ सरसब्ज हैं, हर तरह का सबको हासिल है वहाँ आरामे जाँ । वन के जो हिस्से हैं वो गोया है सूबे मुल्क के, और मुनी जितने हैं, हैं सब उस जगह के साकिनाँ । राम जिस टीले पे थे जब देखी उसकी यह बहार, भरत बेहद खुश हुए और हो गये बस शादमाँ ।

जिस तरह कोई तपस्वी खत्म तप होने के बाद, उसका फल पा कर हुआ करता है दिल में शादमाँ ।
 दीड़ कर केवट वहाँ पर चढ़ गया ऊँची जगह, आम और जामुन के बतला कर दरस्त उनको वहाँ ।
 और कहा—एक झाड़ बड़ का आ रहा है जो नजर, जिसका साया है घना फल लाल हैं जिसके अर्थाँ ।
 एक नदी के है किनारे झाड़ पे वाँ है हुआ, रामो सीता ने बनायी है कुटी अपनी वहाँ ।
 और तुलसी के बहुत से झाड़ भी ऊगे हुए, जिसको सीता और लक्ष्मण ने लगाया है वहाँ ।
 बड़ के साये के है नीचे एक वेदी भी बनी, बैठते हैं राम और सीता उसी के दमियाँ ।
 रोज आते हैं मुनी भी सब इसी बड़ के तले, वेद और पुराण को करते हैं जो हरदम बर्याँ ।
 कैफ़ियत यह सुनके और सारी बहारें देख कर, भरत की आँखों से आँसू हो गये फ़ौरन रवाँ ।
 सिर झुका कर दोनों भाई चल रहे थे राह में, किस क्रदर था प्रेम उनमें हो नहीं सकता बर्याँ ।
 राम के चरणों का नक्शा देख लेते थे वो जब, धूल आँखों में लगाते हो के बेहद शादमाँ ।
 जानवर और सब परिन्दे देख कर हैरान थे, गोह भी हैरतजदा कुछ हो रहा था बेगुमाँ ।
 राह बतलाने में भी कुछ भूल उससे हो गयी, आखिरस फ़िर राह सीधी मिल गयी उनको वहाँ ।
 जो कि कामिल और साधू थे वो सब मद्दाह थे, भरत की तारीफ़ करते थे वो हो कर हमजबदाँ ।
 उनको लक्ष्मण ने न देखा चूँकि जंगल था घना, भरत ने खूद देख ली जा राम रहते थे जहाँ ।
 आश्रम में पहुँचते ही उनका दुःख सब मिट गया, ईश्वर को पा लिया हो जैसे योगी रमजबदाँ ।
 भरत ने देखा कि लक्ष्मण राम के आगे खड़े, पूछते जाते थे जो कुछ वो ये करते थे बर्याँ ।
 जटा सिर पर कमर में उनके मुनियों का लिबास, और तरकश है कमर में हाथ में तीरोकमाँ ।
 साधुओं की टोलियाँ हैं और मुनी हैं जमा सब, राम और सीता भी बैठे हैं उन्हीं के दमियाँ ।
 अपने हाथों से धनुष को फेरते जाते थे राम, जिसकी जानिब देख ले ये उसका दिल हो शादमाँ ।
 मंडली में इस तरह दिखते थे सीता-रामचन्द्र, सच्चिदानन्द और भक्ति दोनों हों जलवाकुनाँ ।
 भरत भी और शत्रुहन भी गोह का राजा निषाद, भूल कर रंजों अलम दिल में हुए सब शादमाँ ।
 रहम कीजँ रहम कीजँ इस तरह कहते हुए, गिर पड़े नीचे ज़मीं पर नाम था विरदे ज़बाँ ।
 लक्ष्मण आवाज़ से पहचान कर कहने लगे, भरत हैं यह तो मुझे मिलना है इनसे बेगुमाँ ।
 फ़र्ज खिदमत का भी उनके दिल में था बेहद खयाल, जोड़ कर हाथ अपने भाई से किया अर्जबर्याँ ।
 राम का हल था जिघर पीछे से उसके आये थे, इसलिए उनको नजर वो लोग आते थे कहाँ ।
 करते हैं प्रणाम आक्रा आपको यह भरत जी, सुनते ही उत्फ़त में डूबा राम का दिल नागहाँ ।
 वो उठे अपनी जगह से हो के कुछ बेहाल से, एक जगह कपड़े गिरे और एक जगह तीरो कमाँ ।
 राम ने उनको ज़मीं पर से उठाया ज़ब्र से, और छाती से लगाया उनको अपने बेगुमाँ ।
 देख कर दोनों का मिलना लोग थे हैरतजदा, बल्कि शायर के लिए मुशकिल है लिखना वह समाँ ।
 इज्जदियादे शौक़ से दोनों थे भाई बेकरार, कुछ वुरायी का न था दोनों तरफ़ नामोनिशाँ ।
 इस हक्कीकी प्रेम का कोई बर्याँ कैसे करे, सिर्फ़ अलफ़ाज़ों से क्यांकर शेर में आये समाँ ।
 भरत की और राम की उत्फ़त बड़ी मजबूत थी, ब्रह्मा विष्णु और महेश इसको ये पा सकते कहाँ ।
 देवता डरने लगे जब देखा उनका यह मिलाप, जब गुरुने उनको समझाया मिटे शकओ गुमाँ ।
 शत्रुहन से राम मिल कर बाद केवट से मिले, भरत और लक्ष्मण मिले दोनों निहायत शादमाँ ।
 शत्रुहन से फिर मिले लक्ष्मण निहायत शौक़ से, और केवट से मिले हो कर बहुत खन्दाहदाँ ।
 जो मुनी मौजूद थे उनका किया आदर-प्रणाम, शत्रुहन और भरत आशीर्वाद पाये बेगुमाँ ।

शत्रुहन् और भरत सीता जी के चरणों पर गिरे, हाथ सिर पर रख दिया सीता ने हो कर मेहरबाँ। जब दुआ सीता ने दी दिल उनका बेहद खुश हुआ, वलवले सब मिट गये और मिट गये वहमोगुमाँ। हर कोई खामोश था कहता नहीं था मुँह से कुछ, तब तो केवट ने अदब से झुकके यों खोली ज़बाँ। सब नगर के लोग सेवक और सरदाराने फ़ौज, गुरु वशिष्ठ आये हुए हैं आपकी आयी हैं माँ। शत्रुहन् को पास सीता के रखा और खुद चले, जब हुआ मालूम आये हैं गुहजी भी यहाँ। लक्ष्मण और राम दर्शन करके गुरु महाराज के, दण्डवत करने लगे वो होके बेहद शादमाँ। उनको छाती से गुरु ने भी लगाया दौड़ कर, और केवट ने भी अपना कह दिया नामोनिशाँ। फिर गुरु जी ने लगाया अपने सीने से उसे, जिस तरह लूटी हुई उल्फ़त मिली हो बेगुमाँ। देवता सब मौतरिफ़ थे नीच केवट-सा नहीं, मरतवा आला मुनो जी का भी था सब पर अयाँ। ऐसे कमतर शरुस से मुनीराज कैसे मिल लिये, राम की जिस पर नज़र हो क्यों न हो वह कामराँ। राम ने देखा अवध के लोग जो आये हैं सब, सबके दिल कुम्हलाये हैं और लोग सब हैं नीमजाँ। जिससे जैसा चाहिए मिलना था उन सबसे मिले, राम-लक्ष्मण से वो मिल कर हो गये सब शादमाँ। फिर वो सब अहले अयोध्या जा के केवट से मिले, और कहते थे कि क्रिस्मत की हैं उसकी खूबियाँ। राम ने देखा कि अपनी माँएँ सब गमगीन हैं, कोंपलों पर जैसे पाला पड़ गया हो नागहाँ। सबसे पहले राम जा कर कैकेई माँ से मिले, गिरके क़दमों पर मिटायें उनके सब शत्रुको गुमाँ। दूसरी माँओं से भी जा कर मिले फिर रामचन्द्र, और समझा कर कहा वह सब करें ज्वत्तेफ़ुगाँ। आयी थी अर्धवती भी साथ गुरु-पत्नी जो थी, राम लक्ष्मण जा के उनमे भी मिले जल्दी वहाँ। और भी जो ब्राह्मण थे उनकी पत्नी साथ थीं, दोनों भाई मिले उनसे कर दिया बस शादमाँ। फिर सुमित्रा जी की जा कर गोद में बैठे ये दो, जैसे एक कंगाल को धन मिल गया हो बेगुमाँ। फिर ये दोनों जाके कौशल्या के चरणों पर गिरे, प्रेम के बाअम नहीं जिनके रहे ताबोतवाँ। दोनों बेटों को लिया रानी ने सीने से लगा, जैसे वर्षा, उनकी आँखों से हुए आँसू रवाँ। जैसे गूंगा कह नहीं सकता किसी का जायका, इस तरह शायर को नामुमकिन है वह खींचे समाँ। राम जी ने कहा गुरु जी से कि आश्रम को चलें, और फर्माया गुरु ने सबको तुम ठहरो यहाँ। अपनी हमराही में वो ले कर चले कुछ खाम लोग, आश्रम चलने की करने लग गये तयारियाँ। ब्राह्मण अरकाने दौलत और गुरु भी साथ थे, राम-लक्ष्मण भरत जी थे और थी हर एक माँ। आ के सीता ने क़दमबोसी गुरु जी की जो की, दी दुआ उनको गुरु ने हो के बेहद शादमाँ। बीवियाँ मुनियों की जितनी आयी थीं उनसे मिलीं, कुछ अक्कीदत का मैं उनकी कर नहीं सकता बयाँ। मुँह जो देखा अपनी सासों का परेशाँ हो गयी, दर्द से बोली दिखाया आसमाँ ने क्या समाँ। वो भी जब सीता को देखीं हो गयीं रंजीदा दिल, और यह समझीं कि जो होनी है वह टलती कहाँ। बढ़ के सीता तब क़दमबोस अपनी सासों की हुई, चश्म नम उनके हुए आँखों से आँसू थे रवाँ। सास सब उनकी दुआ देती थी दिल और जान से, तू रहे हरदम सुहागन अपने घर में शादमाँ। देख कर सासों की हालत ये हुई रंजीदा दिल, और इनको देख कर रंजीदा दिल थी रानियाँ। तब गुरु ने बैठ जाने के लिए सबसे कहा, और कुछ हालत जमाने की भी की सबसे बयाँ। राजाएँ दशरथ के मरने का किया इजहार फिर, जिसको सुन कर राम ने बेहद किये आहोफ़ुगाँ। खुद को बाअस उनके मरने का बता कर रामचन्द्र, हो गये बेचैन बेहद खो दिये ताबोतवाँ। लक्ष्मण रोने लगे सीता भी रोने लग गयीं, मच गया कोहराम रोने लग गयी सब रानियाँ।

आज ही राजा मरे हों इस तरह कोहराम था, रो रहे थे लोग ये सब और ये मातमकुन। तब गुरु जी ने भी की तफ़हीम उठ कर राम की, सूये जू मन्दाकिनी उठ कर हुए ये सब रवा। जा के दरिया के किनारे नहा कर फ़ारिग हुए, है वही मन्दाकिनी जिसकी हो खूबी क्या बया। रंज से खाना न पानी राम ने उस दिन लिया, गो गुरु ने भी कहा सब ही रहे तिस्नादही। दूसरे दिन से हिदायत की गुरु ने जिस तरह, सक्के दिल से राम उस पर थे मजाम्मल बेगुमा। जिस तरह वेदों में हैं अहकाम किरिया कर्म के, राम उनको बजा लाये बिलाशक वहुमों गुमा। नाम से जिनके हैं होते शुद्ध पापी लोग सब, वह नहा कर शुद्ध होते हैं मैं करता हूँ बया। जब फरागत इससे पायी और दो दिन हो गये, राम अब अपने गुरु से यों हुए गौहरफ़र्शा। लोग सब तकलीफ़ में हैं फूल फल खाते हुए, रंज में हैं शत्रुह्न और भरत और हर एक मा। वापसी मुल्के अवध को है मुनासिब आपकी, राजा हैं अमरावती में आप बैठे हैं यहाँ। है अयोध्या सूनी-सूनी लोग सब हैरान हैं, कीजिए मुझको क्षमा मुझसे हुई गुस्ताखिया। यह जवाब उनको मिला ऐ राम तुम कहते हो ठीक, लोग सब रंजीदा दिल हैं और हैं मातमकुन। घर्म के तुम हो समुन्दर और दया के धाम हो, देख कर कुछ दिन तुम्हें ये लोग होंगे शादमा। राम की यह बात सुन कर लोग सब डरने लगे, डूबते को जैसे हो दरिया में किस्ती नागहाँ। बात यह सुन कर गुरु की कुछ दिलासा-सा हुआ, या कहो बादे मवाफ़िक़ आ गयी फ़ौरन वहाँ। पैसबी नहीं में करते रोज़ थे स्नान सब, राम के दर्शन से होते लोग थे सब शादमा। रोज़ जाते थे वो वन और पर्वतों को देखने, जिस जगह तकलीफ़ और दुख का न था नामोनिशा। नदी और नाले वहाँ बहते थे मीठे आब के, और हवा चलती थी ठंडी हर तरह राहतरसा। झाड़ सायेदार और फलदार थे हर जा खड़े, और पत्थर की शिलें हर जा पड़ी थी बेगुमा। और कमल तालाब में चारों तरफ़ आते नज़र, सब परिन्दे बोलते थे अपनी-अपनी बोलिया। रहने वाले वन के जो थे यह वही थे काले भील, शहद भरके ले के आये फूल-फल की डालिया। ला के आगे रख के सब के और वर्यां करके खवास, दाम लेने से वो हो जाते थे मुनकिर बेगुमा। आप साधू हैं हमारे प्रेम को पहचानिए, इस तरह कहते थे वो सब उनसे हो कर शादमा। आपके दर्शन से हम सबको मिली है जिन्दगी, राम जी भी हैं निषादों पर निहायत मेहरबा। हम जो तोहफ़े ले के आये हैं ये हैं नाचीज सब, गर कबूल उफ़तद जिहे इज्जोशरफ़ ऐ राजगा। भील दे सकते ही क्या हैं बगों हीजम के सिवा, खविये किस्मत हमारी है कि आये हो यहाँ। है बुरी खसलत हमारी और बुरे अतवार हैं, चोर और डाकू है हम यह जानता हैं सब जहाँ। आपके कपड़े व बर्तन जो नहीं हमने चुराए, है यही खिदमत हमारी बात है बिल्कुल अया। पाप करते हैं हमेशा फिर भी हम मुहताज हैं, हम नहीं कुछ जानते नेकी की हैं क्या खूबिया। राम के दर्शन से हम लोगों ने पायी है नजात, पाप सारा कट गया है हो गये हैं शादमा। जब सुनी अहले अवध ने इन सबों की गुप्तगू, हो गये महाह उनके और सबसे शादमा। गुप्तगू का तौर उनका राम से उनका खलूस, देख कर थे शाद सब मँजिन पीरोजबा। राम ही की दया का है यह सबब कहते थे सब, नाव जैसे लोहे को ले कर के तैरे बेगुमा। अलग्ररज़ आनन्द से फिरते थे सब अहले अवध, मोरो मेंढक जिस तरह बारिश में फिरते शादमा। दिन गुजरते कुछ उन्हें मालूम होता ही न था, मर्दोज़न मुल्के अवध के थे बहुत शादीकुन। हर घड़ी तैयार सीता उनकी खिदमत के लिए, खुद की सासे तीनों आयीं थी अयोध्या से यहाँ।

इस क्रम की उनकी सेवा हो गयी वो सब सुखी, और दुआ दे कर बर्षा करती थीं उनकी खूबियाँ। राम-लक्ष्मण और सीता की शहादत देख कर, थी पशेमाँ कैकेई, था उसके बसरे से अर्था। चाहती थी पीत अपनी या जमी में छुा रहे, आरजू उसकी ये पूरी हो भी सकती थी कहाँ। राम के जो हैं मुखालिफ चैन उनको कब मिले, लोक में और वेद में यह बात है बिलकुल अर्था। राम घर वापस चलेँगे या नहीं यह फिक थी, लोग सब मुलके अवध के सोचते थे बेगुमाँ। भरत को ना नींद थी, ना भूख थी, थे बेकरार, जैसे बेपानी के कीचड़ में फँसी हो मछलियाँ। सोचते थे माँ के बाअस यह खराबी हो गयी, ताजपोशी राम की अब कैसे की जाए यहाँ। वह गुरु के हुक्म को हरगिज न टालेंगे कभी, गर कहें उनको गुरु हो जाएँगे वापस रवाँ। राम का मंशा न हो गर ऐसी सूरत में. गुरु, हुक्म देंगे या न देंगे मुझको है शक ओ गुमाँ। माँ के कहने से भी शायद रामचन्दर मान लें, वह करें मजबूर लेकिन ये भी मुमकिन है कहाँ। दास हूँ मैं तो मेरा कुछ जोर चल सकता नहीं, बदनसीबी से मेरी है घिर गयी बदबस्तियाँ। मैं अगर कुछ जिद करूँ ये भी मुझे वाजिब नहीं, क्योंकि सेवक के लिए अच्छी नहीं गुस्ताखियाँ। राय कोई भरत के दिल में नहीं कायम हुई, रात गुजरी यों ही उनके था नहीं आरामें जाँ। दूसरे दिन सुबह फ़ारिग जब हुए सब काम से, भरत की तलबी हुई फ़ौरन गुरु जी के यहाँ। भरत भी हाजिर हुए और लोग भी सब आ गये, तब गुरुजी ने किया आग्रह अपना यों बर्षा। रामचन्दर कौन है यह अब सुनें सब हाजरीन, उनके मैं औतार की करता बर्षा हूँ खूबियाँ। ये सेचाई के हैं हामी और मर्यादा पुरुष, उनका है औतार दुनियाँ के लिये राहतरसाँ। बाप-माँ के और गुरु के हुक्म को हैं मानते, है बुरों के बेखकन नेकों पर हैं ये मेहरबाँ। जानते आईन हैं दिल में मुहब्बत है भरी, ब्रह्मा, विष्णु शिव ही क्या यह जानता है सब जहाँ। राम की मंशा पे चलना यह हमारा धर्म है, यह समझ कर आप जो मंजूर हो कीजे बर्षा। ताजपोशी राम की मंजूर है सब को मगर, किस तरह वापस अयोध्या को वो हों ये हो बर्षा। वह गुरु की बात सुन कर लोग सब खामोश थे, कुछ जवाब उनको न सूझा बन्द थी सबकी जवाँ। भरत ने तब हाथ जोड़े और खड़े भी हो गये, और कहा मशहूर है यह सूर्यवंशी खानदाँ। हो गये कितने यहाँ राजा हैं इसमें नामवर, ये भी सब दुनिया में आये इनके भी थे बाप माँ। अपने-अपने काम के लायक उन्होंने पाया फल, बात यह बिलकुल है जाहिर कुछ नहीं शक ओ गुमाँ। आपकी कृपा अगर हो कष्ट सारे दूर हों, चैन हो सबको मयस्सर है यह मगहूरे जहाँ। आप जो चाहें वो कर सकते हैं ऐ स्वामी मेरे, आप का जो हुक्म हो टल जाए यह मुमकिन कहाँ। आप मुझसे पूछते हैं राय—ऐ मेरे गुरु, मेरी किस्मत की समझता हूँ ये हैं बदबस्तियाँ। भरत के मुँह से जो निकले प्रेम रस अलकाज यह, गुरु वशिष्ठ के दिल को भाये और हुए वो शादमाँ। और कहा उनसे गुरु ने आपका कइना है ठीक, राम की मंशा से बाहर काम हो मुमकिन कहाँ। बात है एक और भी कहता हूँ अगर मंजूर हो, मुझको कहने में तअम्मल हो रहा है बेगुमाँ। आधे की हैं छोड़ देते आधा पाने के लिए, इस तरह होता है आया है यह दस्तूरे जहाँ। राम लक्ष्मण और सीता फिर अयोध्या को चलेँ, शत्रुहन और भरत दोनों बन को हो जाएँ रवाँ। बात ऐसी अच्छी सुन कर भरत भी और शत्रुहन, हो गये दोनों सुखी और हो गये वो शादमाँ। इनको ऐसा हो गया मालूम दशरथ जी उठे, और अयोध्या के हुए हैं राम चन्दर हुक्मराँ। दूसरों को कायदा उसमें रहा—नुकसाँ था कम, रानियों की एक हालत थी बहर सूरत अर्था।

भरत कहने लग गये तामील इसकी हो ज़रूर, उम्र भर वन में रहूँगा मैं बिला कुछ इनोआँ ।
 रामचन्दर और सीता जानते सब भेद हैं, आपके औसाफ़ आली भी है बरतरअज बयाँ ।
 आप जो कुछ कह रह हैं हो अगर सच्ची ये बात, कीजिए तामील की इसकी अभी तैयारियाँ ।
 जब मुनी ने यह सुना हैरतजदा से रह गये, लोग ख्वाहिश इनकी सुन कर हो गये सब शादमाँ ।
 एक गहरा था समुंदर भरत जी का प्रेम यह, किस्तीए अकले मुनी जी पार कर सकती कहाँ ।
 भरत की यह गुप्तभू उनको बहुत आयी पसन्द, लेके सब को वो गये थे रामचन्दर जी जहाँ ।
 राम ने प्रणाम करके दी गुरु जी को जगह, और गुरु के हुक्म से सब लोग भी बैठे वहाँ ।
 यों गुरु जी ने कहा हो कर मुखातिब राम से, आप सब कुछ जानते हैं जो दिलों में है निहाँ ।
 राम वह बतलाइए जिसमें भला हो मूलक का, माँ तुम्हारी खुश रहे और भरत भी हों शादमाँ ।
 जो दुखी हो राय दे सकता नहीं अच्छी कभी, और जुवारी दाव अपना सोचता है हर जमाँ ।
 फिर मुनी से राम ने यह दस्त-बस्ता अजं की, आप का जो हुक्म होगा है वही इफ़्तत निशाँ ।
 आपके तो हुक्म की तामील में हाज़िर हूँ मैं, और जिसको आप जो कहिए करे बेईनोमाँ ।
 यों मुनी जी ने कहा कहना तुम्हारा है दुस्त, भरत के अतवार से है गौर की ताक़त कहाँ ।
 अक़ल मेरी दंग है इनकी अक़ीदत के सबब, पासे खातिर उनका रखने से नहीं रसबाइयाँ ।
 भरत का जो कुछ हो कहना गौर से सुन लीजिए, बाद इसके कीजिए हों जिसमें मुझमिर खूबियाँ ।
 भरत पर जो थी दया की दृष्टि उसको देख कर, राम का दिल शाद था और हो गये वह शादमाँ ।
 यों कहा फिर राम ने खा कर कसम—ए नाथ जी, भरत के जैसा कोई भाई हुआ ही है कहाँ ।
 जो गुरु सेवक है वह तो हर तरह है खुशनसीब, आपकी उस पर दया की है नज़र तुफ़ाँ बराँ ।
 भाई के मुँह पर कल्ले तारीफ़ यह है ना दुस्त, उनका कहना मान लेने में हैं बेशक खूबियाँ ।
 फिर मुनी हो कर मुखातिब भरत से कहने लगे, दिल में जो कुछ हो तुम्हारे भाई से कर दो बयाँ ।
 सुनके कहना यह गुरु का पाके मन्शा राम का, भरत समझे यह कि सर पर है मेरे बारे गिराँ ।
 मुँह से कुछ निकला नहीं वह ईस्तादा हो गये, दस्ताबस्ता थे खड़े आँखों से आँसू थे रवाँ ।
 और कहा जो कुछ भी कहना था मेरा सब नाथ ने, कह दिया है और ज़यादा क्या कल्ले अब मैं बयाँ ।
 अपने मालिक का मुझे सब हाल यह मालूम है, वह कभी खता से भी होते नहीं हैं बद गुमाँ ।
 मुझ पर तो हर दम इनायत की नज़र उनकी रही, खेल में भी उनके गुस्से का न था नामोनिशाँ ।
 मैं तो बचपन से हमेशा साथ उन ही के रहा, और वो हर दम रहे मुझ पर शफ़ाक़ो मेहरबाँ ।
 खेलने में भी कभी मैं हार जाता था अगर, आप खुद मुझको बना देते थे वह नुसरतनिशाँ ।
 आज तक मैंने कभी उनसे नहीं की इल्तेजा, उनके दर्शन का हूँ मैं प्यासा नहीं ताबोतबाँ ।
 होने वाली बात थी, भगवान को मंज़ूर था, माँ के ज़रिये पेंच डाले मेरे उनके दमियाँ ।
 ऐसा कहना मेरे मुँह से मुझको ज़ेबा भी नहीं, कह सके कोई किसी की क्या बदी और खूबियाँ ।
 नेक हूँ मैं और माँ ही बद यह कहना पाप है, काली धूँवी भी कहीं हो सकती है गीहूर फ़शाँ ।
 दोष देना यों किसी को ख़्वाब में भी है ग़लत, बदनसीबी को समझता हूँ मैं एक बारे गिराँ ।
 मैंने नासमझी से माँ को मुत्तहिम नाहक़ किया, मैं बना तकलीफ़दे उनके लिए ईजा रसाँ ।
 एक ही है बात की उम्मीद मेरे वास्ते, राम जी हैं मेरे मालिक और गुरु जी मेहरबाँ ।
 साधुओं की है ये मजलिस और तीरथ का मुकाम, प्रेम है या है बनावट कर नहीं सकता बयाँ ।
 झूठ और सब से मेरे वाकिफ़ गुरु जी हैं मगर, राम को भी मेरी निसबत है नहीं शानोनुमाँ ।

देखा जा सकता नहीं है मुझसे सब माँओ का गम, और अब के लोग भी करते हैं सब आहोक्रुगाँ । बाप ने तो जान दे दी बात रखने के लिए, माँ की नासमझी से वाकिफ हो गया सारा जहाँ । सब खराबी का सबब मैं हूँ मुझे मालूम है, इसलिए मैं सह रहा हूँ खुद पे इतनी सख्तियाँ । राम लक्ष्मण और सीता वन को पैदल ही गये, सुन के यह तकलीफ अब भी है मेरे कालिब में जाँ । जो निषादों के हैं राजा देख कर उनका ये प्रेम, मेरे दिल की क्यों नहीं उड़ जाती है अब घञ्जियाँ । हो गया मालूम मुझको इस जगह आने से सब, जी रहा हूँ इसलिए कि सह सकूँ रसवाइयाँ । राम-लक्ष्मण और सीता के मुखालिफ मैं जो हो, उससे बढ़ कर और दुनिया में मिले पापी कहाँ । भरत की यह गुप्तगू उलफतभरी सबने सुनी, हो गये बेताब सब और छा गई खामोशियाँ । तब बशिष्ठ उनसे पुरानी कुछ कथा कहने लगे, भरत की दिलजोई की जिससे मिटे शक ओ गुमाँ । बाद उनके रामचन्दर इस तरह कहने लगे, भाई नाहक इस तरह तुम हो रहे हो परेशाँ । जो कि होनी है कभी टलती नहीं है बात यह, ईश्वर ही जानता है राजे दुनिया बेगुमाँ । माझी और हाल, और मुस्तकबिल के सब पुण्यात्मा, तुमसे नीचे हैं, बुलन्दी तुमको है उन पर अयाँ । दिल में भी कोई अगर तुम पर गुमानेबद करे, लोक और परलोक में उसके अमल हों रायगाँ । कैंकई माता को जो बदनाम करते हैं फिजूल, साधुओं के वह कभी रहते नहीं हैं दमियाँ । नाम ले ले जो तुम्हारा कष्ट उसका दूर हो, जिन्दगी में खुश रहे वह और मर कर शादमाँ । सच है कहता भाई मैं और शिव भी हैं इसके गवाह, है जमीं कायम तुम्हारे ही सबब से बेगुमाँ । बेसबब तुम हो रहे हो इस तरह रंजिदा दिल, दुश्मनी हो या मुहब्बत छुप ही सकती है कहाँ । जानवर जाते हैं मुनियों के बुलाए बेधड़क, भाग जाते हैं शिकारी से बचा कर अपनी जाँ । जानवर पहचानते हैं दोस्त और दुश्मन को जब, फिर न क्यों इन्सान पर यह बात हो बिलकुल अयाँ । भाई मैं आदत तुम्हारी जानता हूँ खूब खूब, क्या कल्ले मजबूर हूँ और बन्द है मेरी जबाँ । बाप ने छोड़ा मुझे वादा निभाने के लिए, कोल को अपने निभाया और दे दी अपनी जाँ । हुक्म उनका टाल देना मैं समझता हूँ वुरा, उससे बढ़ कर फिक्र है मुझको तुम्हारी मेरी जाँ । इसलिए अब जिस तरह चाहोगे तुम हाजिर हूँ मैं, क्योंकि कहना है गुरु जी का यही ऐ मेरी जाँ । साफ़ दिल से जो कहोगे वह कल्लेगा आज मैं, राम के अलफाज सुन कर हो गये सब शादमाँ । इन्द्र ने सोचा कि काम है अब बिगड़ने के लिए, देवता सब दिल ही दिल में हो रहे थे भीमजाँ । फिक्र उनको थी कि भक्तों पर दया करते हैं राम, याद करते थे वह दुर्वासा ऋषी की दासताँ । उससे पहले जब कि थे तकलीफ में सब देवता, हो गये नरसिंह जी प्रह्लाद के कारण अयाँ । काम अब भी देवताओं का भरत के हाथ है, गुप्तगू होने लगीं यों इन सबों के दमियाँ । बस यही तदबीर हमको आ रही है एक नजर, भक्त की सेवा से होते राम खुद हैं शादमाँ । इसलिए अब चाहिए कि भरत को अपनाएँ हम, जिसके बाअस राम जी हो जाएँ हम पर मेहरबाँ । देवताओं के गुरु कहने लगे अच्छा है यह, भरत की भक्ति से बेशक आप होंगे कामराँ । राम के सेमक का जो दिल में तुम्हारे है खयाल, फिक्र सारी छोड़ कर हो जाएँ अब सब शादमाँ । भरत को समझो ये तुम वह राम की परछाई हैं, राम को है उनसे उलफत उनपे हैं ये मेहरबाँ । उनकी ऐसी गुप्तगू से राम को भी फिक्र थी, हो गया मालूम इनको क्योंकि ये थे रमजदाँ । भरत ने सोचा कि सब कुछ बोझ मेरे सर रहा, राम के अहकाम की तामील है शायानेशाँ । छोड़ करके कौल अपना रखा मुझ पर इन्हिसार, किस क्रदर यह मेहरबानी है, यह है बिलकुल अयाँ ।

हाथ जाड़े भरत ने और राम जी से अर्जुन की, आपकी नजरे करम है और गुरु हैं मेहरबाँ । बलबला मेरा मिटा अब खीफ मुझको कुछ नहीं, खीफ से या मेरी बदवस्ती से मैं था नीमजाँ । माँ की गुमराही से जो बरबाद मैं था हो गया, आपने अपना के मुझको फिर बचा ली मेरी जाँ । आपकी जब हो दया तो फिर मुझे कुछ डर नहीं, कोई कहता हो मुझे बद, या मुखालिफ हो जहाँ । ना मुखालिफ ना मुआफिफ आप रहते हैं मुदाम, आपके साथे से हो जाता है इनसाँ कामराँ । आपकी भी और गुरु की देख कर खुद पर दया, फिक्र दिल में कुछ नहीं बाकी रही अब बेगुमाँ । नीच है वह जो कि मालिक को तो रखे फिक्र में, फायदे का अपने ही देखा करे ख्वाबेगिराँ । फर्ज सेवक का यही है वह करे सेवा मुदाम, छोड़ कर सब ऐशो राहत खुद सहे दुस्वारियाँ । वापसी से आपकी सब की भलाई है जरूर, आपकी मन्शा पे चलना है मुनासिब बेगुमाँ । अर्ज मेरा एक मारुजा है वह सुन लीजिए, फिर अमल कीजें वही, जिसमें हो मुज्जमिर खूबियाँ । आपको मंजूर हो तो दीजिए इज्जत हमें, ताजपोशी का लिये आये हैं सामाँ हम यहाँ । शत्रुह्न को साथ दे कर भेज दीजें मुझको वन, लौट कर घर आप कीजें मुल्क भर को शादमाँ । शत्रुह्न और लक्ष्मण को वर्ना घर को भेजिए, आपके हमराह मैं रह कर बनूँ इज्जत निशाँ । वर्ना सीता जी को ले कर आप घर को जाइए, और हम तीनों बिरादर बन को हो जाएँ रवाँ । मेरे मालिक जिस तरह मंजूर हो कीजें अमल, कह दिया है आपसे मैंने नहीं रक्खा निहाँ । मेरे सर रख दी है सारी जिम्मेदारी आपने, गो उठा सकता नहीं हर चन्द यह बारेगिराँ । अर्ज करना कुछ ज्यादा है ठिठ्ठाई का सबब, ऐसे सेवक को कहा करते हैं सब आतिश जवाँ । आप हैं जो रहम दिल, इस वास्ते सुनते हुए, प्यार भी करते हैं मुझको और हैं मेरे मदहसनाँ । आप जो फरमाएँगे उस पर अमल होगा जरूर, हो भलाई जिसमें सब की खुश रहे सारा जहाँ । भरत की यह गुप्तगू सुन कर हुए सब लोग खुश, आसमाँ से देवता उन पर हुए सब गूलफशाँ । सोचने सब लग गये क्या राम अब देंगे जवाब, वननिवासी चाहते थे राम रह जाएँ यहाँ । राम कुछ कहने न पाये सोच में कुछ पड़ गये, मुन्तजिर सब लोग थे और बन्द थी उनकी जवाँ । यह खबर आयी कि कुछ क्रासिद जनक के आये हैं, सुनते ही इसको वशिष्ठ ने सबको बुलवाया वहाँ । वो जो आये राम को देखा मुनी के भेस में, दिल दुखा उनका हुए कुछ आँख से आँसू रवाँ । गुरु वशिष्ठ उनको बिठा कर इस तरह कहने लगे, खैरियत से तो हैं महाराजा जनक आली निशाँ । करके वह प्रणाम यों कहने लगे महाराज जी, आपका यह पूछना उनकी खुशी का है निशाँ । वर्ना सारी शादमानी चल बसी दशरथ के साथ, जिनके मर जाने से गमआलूदा है सारा जहाँ । ऐ गुरुजी खास कर मुल्के अवध और जनकपुर, हो गये हैं बेसहारा, अब वह रौनक ही कहाँ । सुनके मरना राजा दशरथ का हमारे लोग सब, हो गये बेचैनो मुज्जतर और हैं मातमकुनाँ । राजाएँ आली जनक का हाल क्या था क्या कहूँ, गरचे साबिर थे मगर सब खो चुके ताबोतवाँ । बालबाजी सुनके रानी की हुए हैरान वो, और हुआ मालूम जब यह, भरत होंगे हुक्मराँ । हो गये बेहद दुखी वो जब खबर यह भी सुनी, छोड़ कर घर को हुए हैं राम जी वन को रवाँ । फिर महाराजा ने अपने सब मशीरों से कहा, मुझको क्या करना है लाजिम कीजिए मुझसे बयाँ । सुनके यह काया पलट जो कुछ अयोध्या में हुई, मेरा जाना है मुनासिब या मैं वो जाऊँ यहाँ । लोग सब खामोश थे देते न थे कोई जवाब, खुद महाराजा ने सोचा क्योंकि वो हैं नुक्तेदाँ । चार जासूसों को बुलवाया, हुआ यह उनको हुक्म, जल्द हो जाएँ अवधपुर को यहाँ से वो रवाँ ।

राम जाने की वजह से भरत का क्या है खयाल, यह खबर ले कर वो आये, हो न जाहिर यह वहाँ ।
 दूत जा कर राजमें सब हाल से वाक्फिर हुए, भरत के तौर और तरीके उन पर हुए बिलकुल अया ।
 जब हुए राही अयोध्या से वो सूये चित्रकूट, जल्द वह भी लौट कर आये जनकपुर बेगुमाँ ।
 आके राजा से कहा तफसील से अहवाल सब, कैफियत यह सुनके राजा के न थे ताबोतवाँ ।
 शाह के अकाने दोलत और गुरु सब अकहबा, फ़िरक में डूबे हुए थे बन्द थी सब की जबाँ ।
 सब से कुछ काम फिर राजा जनक जी ने लिया, भरत के अफ़आल सुन कर हो गये वो मदहसबाँ ।
 जो बहादुर थे सिपाही और भरोसे के भी थे, उनको बुलवा कर कहा घर के रहें वो निगहबाँ ।
 रथ ब घोड़े और हाथी साथ सब अपने लिये, हो गये मिथिलापती मिथिलापुरी से फिर रवाँ ।
 रास्ते में भी महाराजा कहीं ठहरे नहीं, सुबह वो प्रयाग में आ कर नहाये बेगुमाँ ।
 लोष सब स्नान करके जबकि जमना पार आये, हाल सब मालूम करने हमको भेजा है यहाँ ।
 इस क्रदर कह कर जमीं पर सर उन दोनों ने रखा, और गुरु जी पर हुए हालात सब बिलकुल अयाँ ।
 जल्द वापस उनको जाने के लिए फ़रमाये वो, साथ दोनों के किया दो-चार भीलों को रवाँ ।
 यह खबर सुन कर कि आते हैं यहाँ राजा जनक, राम को कुछ फ़िरक थी अहले अवध थे शादमाँ ।
 कैकई अफ़सोस के बाअस थी घुलती जा रही, क्या कहे किस से कहे वह, बन्द थी उसकी जबाँ ।
 लोग सब समझे कि आ जाएँ अगर राजा जनक, चार दिन हम और सब रह जाएँगे मिल पर यहाँ ।
 इस तरह वह दिन भी गुज़रा, दूसरे दिन लोग सब, सुबह उठ कर करते थे स्नान पूजा वो वहाँ ।
 सब हुआ यह माँगते थे राम ही राजा बनें, और सीता जी बनें रानी हमारी बेगुमाँ ।
 सब तरह फूले फले शादाब हो आबाद हो, पाये तख़्त उनका अयोध्या हर तरह बाइज्जो शाँ ।
 राम ओहदा दें वही अहदी का भाई भरत को, हमको आँखों से दिखा भगवान् ऐसा तू समाँ ।
 कामयाबी से करें वो राज अयोध्यापुरी का, इनके ही दोरे हुकूमत में मरें हम शादमाँ ।
 आरजू सुन कर अयोध्यावासियों की इस तरह, दंग हो जाते थे जानी और मनी भी रमजदाँ ।
 राम के दर्शन से जैसे लोग थे सब मुस्तकीद, सब से मिल कर हस्बे सतबा राम भी थे शादमाँ ।
 राम का यह तो तरीका उनके बचपन ही से है, उनको जो है चाहता रहते हैं उस पर मेहरबाँ ।
 राम की तारीफ़ करते इस तरह थे लोग सब, खुशनसीबी पे वो अपनी हो रहे थे शादमाँ ।
 यह खबर पा कर कि आते हैं यहाँ राजा जनक, राम भी फ़ौरन उठे और लोग सब जो थे वहाँ ।
 भाई सब थे साथ और अहले अवध थे और गुरु, पेशवाई के लिए ये सब हुए फ़ौरन रवाँ ।
 आया कामदनाथ जब राजा जनक के सामने, करके वह प्रणाम उतरे रथ से अपने बेगुमाँ ।
 राम से मिलने की खातिर चल रहे थे बेथकान, दिल लगा था सब का उस जा राम सीता थे जहाँ ।
 जब जनक हमराही ले कर आ गये बिलकुल करीब, मस्त हो कर मिलते थे बाहम यके बादीगराँ ।
 जो मनी मौजूद थे चूमें जनक ने उनके पाँव, राम ने प्रणाम की उनको, जो अब आये वहाँ ।
 भाइयों को साथ ले कर राम राजा से मिले, फिर उन्हें वो साथ अपने ले गये अपने यहाँ ।
 आश्रम उनका था या वह शान्ति का बहर था, और नदी प्रेम की, मिथिलापुरी के साकिनाँ ।
 जा रही है नदी ये मिलने को अब उस बहर में, राम ले जाते हैं हमराह उसको बन कर बादबाँ ।
 नदी इतनी है बड़ी यह ज्ञान और वैराग की, वह डूबा कर सब किनारे हो रही हैं यों रवाँ ।
 और वह नाले थे छोटे जाके जो हों इसमें जम, दुख भरे सबके सोखन और आहें और जारी फ़ुगाँ ।
 और हवा के बे वह झोंके साँस लम्बी आह की, जिससे उठती वह तरंगे, सन्न हो जिनसे रवाँ ।

और वनवासी जो थे वो यात्री कोलो किरात, देख कर जो इसको होते थे खामोशो बेजुबानी। जाके यह नदी मिली जब आश्रम के बहर में, हो गया तूफान बरपा बहर में एक नागहूँ। लोग दोनों सिम्त के बेचैन थे और बेकरार, सब बाकी था न दिल में लब पे थी आहो फुर्गी। राजा दशरथ के लिए रोता था हर एक आदमी, खूबियाँ मरहूम की हर एक करता था बर्बा। शम के दरिया में वो होते जा रहे थे गोता जन, राजा दशरथ के लिए सब लोग थे मातमकुनी। देख कर हालत जनक की यह कभी मुमकिन नहीं, सन्न कायम रह सके दिल में किसी के बेगुमा। आखिरस ज्ञानी मुनी जो थे दिये उपदेश कुछ, और समझाया जनक को फिर वशिष्ठे नुकतादी। वह महाराजा थे काबिल ज्ञान के भंडार थे, गुप्तगू से जिनकी होते थे मुनी भी शादमा। जो परे थे हर तरह दुनिया के इस जंजाल से, उनके दिल में इजतिराब ऐसा हो मुमकिन है कहाँ। राम की उत्कृत के बाअस इस तरह सब कुछ हुआ, जिनकी क्रुदरत है फुर्जतर वरतरज वहमोगुमा। विषयी, साधक हुए हैं और हुए हैं ज्ञानवान, तीन ही अक्साम वेदों में ये जीवों के बर्बा। इनमें जिसका दिल लगा रहता है इसके राम में, है बड़ा रतवा उसीका साधुओं के दमिया। ज्ञान को रौनक नहीं राम की उत्कृत वगैर, जिस तरह लाजिम हो किशती के लिए मोजे रवा। जब हुए खामोश आखिर में यहाँ राजा जनक, घाट पर मिल कर गये स्नान करने सब वहाँ। शमजदा थे लोग सब खाना न पानी कुछ लिया, जानवर प्यासे रहे तो लोग खाते थे कहाँ। दूसरा दिन जब हुआ तब राम और राजा जनक, करके ध्यान स्नान बैठे झाड़ के एक दमिया। थे अयोध्या और जनकपुर के निवासी एक जाँ, गुरु वशिष्ठ और गुरु सदानन्द भी हुए जलवा कुनी। दोनों गुरुओं ने कहा नीती भी और वैराग भी, धर्म के औसाफ़ बतलाये कि वह थे रमजदा। और विश्वामित्र भी पिछले कहे किस्से बहुत, कह के समझाया बहुत लोगों को यह जादू बर्बा। राम ने हो कर मुखातिब यों कहा महाराज जी, लोग सब है कल से भूखे जितने आये हैं यहाँ। आज कुछ आहार इनका चाहिए होना जरूर, दोपहर से भी ज्यादा वक्त गुजरा बेगुमा। पाके मंशा फिर ऋषी का यों जनक कहने लगे, कि हमें वाजिब नहीं है यह गिजा खायें यहाँ। सुनके यह तजवीज राजा की हुए सब लोग खश, और सब होने लगे उस जाय से उठ कर रवा। फूल फल पत्ते जो उस जंगल की पैदावार थी, टोकरों में भरके ले आये जो रहते थे वहाँ। राम की किरपा से वन था हर तरफ़ फूला फला, और खाने के लिए अक्साम की चीजें वहाँ। धन की शाबादी का हम कुछ जिक्र कर सकते नहीं, और हवा ठंडी थी लोगों के लिए राहतरसा। यह मेहरबानी जनक की हो रही थी खुदबखुद, सब क्रयाम अपना किए झाड़ों के नीचे बेगुमा। जो तहयफ़ आये थे सब के लिए भेजे गये, थे लजीज और खुशमजा खाने से हो शारीदहाँ। शौख से सब लोग खायें जो कि था भेजा गया, इस तरह रहते हुए दो चार दिन गुजरे वहाँ। सब अयोध्या के निवासी और मिथिला नगर के, देख कर रघुनाथ को रहते थे हर दम शादमा। सब यही थे चाहते हम राम को ले कर चलें, वह न आये साथ तो हम जाएँ वापस क्यों मका। राम के हमराह जंगल उनको था आरामदे, ऐहले जन्नत को भी यह हासिल न हो आरामेजा। कौन है वह जिसको सीता राम लक्ष्मण के बगैर, घर में दिल लगता हो जिसका और रहे वह शादमा। खुशनसीबी थी यह सबकी जो ये हासिल हो गया, जाके रहना उस जगह रघुनाथ रहते थे जहाँ। थी नदी मन्दाकिनी स्नान करते तीन बार, राम के दर्शन से हरदम लोग रहते शादमा। राम के नजदीक थे मुनियों का होता था मिलाप, यों गुजर जाना बरस चौदह न था बारे गिरा।

इस तरह जब लोग आपस में थे करते बात-चीत, राम के नजदीक रहने से वो सब थे शादमाँ। मिलने कौशल्या वगैरह से उसी वक्त आ गयीं, भेजी महारानी सुनैना जी ने थी जो दासियाँ। जब हुआ मालूम कौशल्या का है फु सत का वक्त, आये महलाते जनक मिलने को उनसे बेगुमाँ। पेशवाई रानी कौशल्या ने आगे बढ़के की, जो जगह जिसकी थी मौजू उसको बिठलाया वहाँ। थी मुहब्बत सबके दिल में और थे सब रामजदा, नीची नजरें सबकी थी और आँख से आँसू रवाँ। यों सुनैना जी ने फिर आहिस्ता-आहिस्ता कहा, यह जमाने की भी नवरंगी है कैसी बेगुमाँ। जो नहीं लायक सजा के पा रहे हैं वो सजा, बेगुनाहों पर मुसीबत ढा रहा है आसमाँ। नाम तो सुनते हैं हम होता भी है अमृत मगर, जहर मिल जाता है हरजा कुछ नहीं शक ओ गुमाँ। कौवे और बगुले व उल्लू रहते हैं हर जा मगर, हंस रहता है उसी जा मानसरोवर है जहाँ। यों सुमित्रा ने कहा खालिक के हैं सब काम अजब, करके पैदा मारता भी सब को है वह बेगुमाँ। कारोबार उसके हैं ये मानिन्द एक बच्चों के खेल, जो समझ से है परें बेहून अजब वहमोगुमाँ। रानी कौशल्या ने फरमाया शिकायत है फिजूल, अपनी क्रिस्मत से हुआ करते हैं सब सूदोजियाँ। जो लिखा तक्रदीर का है जानना दुस्वार है जानता परमात्मा है उसको बेशकओगुमाँ। वह भलाई और बुराई का समर देता है खुद, उसकी मंशा के मुताबिक चलता है सारा जहाँ। पैदा करना पालना और मारना है उसके हाथ, फिक्र सब बेकार है और सोच है सब रायगाँ। हम यहाँ राजा के मरने का दुख हैं कर रहे, अपना ही पेशे नजर रखे हुए सूदोजियाँ। यों सुनैना ने कहा—है ठीक जो कहती हो तुम, क्यों न तुम ऐसा कहोगी तुम हो जब फल्ले जमाँ। राम लक्ष्मण और सीता वन को जाए ठीक है, भरत की है फिक्र मूझको हो गया है खस्ताजाँ। राम की खा कर कसम कहती हूँ मैं रानी मुझे, चारों लड़के और बहू प्यारी है मूझको बेगुमाँ। भरत की तीसीफ से तो सरस्वती माजूर है, सीप से दरिया कभी भर जाए यह मुमकिन कहाँ। मैं समझती हूँ यही महाराज भी कहते थे यह, भरत है लायक निहायत और चिराग़े खानदाँ। जब कसौटी पर कसे होती है सोने की परख, कद्र जोहर की है तब ही जोहरी हो कद्रदाँ। आजमाइश होती है जब काम पड़ जाये कोई, आदमी के वास्ते भी है यह वक्ते इस्तेहाँ। जो कहा है मैंने मुमकिन है कि हो यह नादुस्त, फिक्र और दुख में समझ होती है अक्सर रायगाँ। भरत की झूठी बड़ाई कर रही हूँ यह न हो, सुनके यह अलफ़ाज उनके मुजतरिब थी रानियाँ। और कहा कौशल्या जी ने आप तो हैं अक़ल मन्द, क्या ज़्यादा मैं कहूँ, हैं आप खुद ही नुक़तादाँ। आप यहाँ राजा जनक को इस तरह समझाइए, लक्ष्मण घर को चलेँ और भरत वन को हों रवाँ। गर महाराज जनक को यह पसन्द आ जाय बात, गौर करके खुद करें वह इतज़ाम ऐसा यहाँ। भरत की है फिक्र मूझ को वह अगर घर में रहें, मूझको अन्देशा है उनकी बच नहीं सकती है जाँ। देख कर कौशल्या जी का यह तरीका और तौर, हो गयी बेचैन मुजतर जिस क़दर थी रानियाँ। फूलों की वर्षा हुई हर सिम्त से ऊपर तमाम, जो मूनी जानी ऋषी थे वे हुए सब मदहसूवाँ। यों ही बातें होते-होते रात गुज़री दोपहर, और यों बँठी हुई थी महल की सब रानियाँ। तब सुमित्रा ने कहा ताखीर रानी हो गई, सुनके यह फ़ौरन उठीं कौशल्या रानी बेगुमाँ। यों कहा रानी सुनैना जी से अब सब आप लोग, अपने डेरों में करें आराम जा कर बेगुमाँ। अब हमारा तो महाफ़िज है फ़क़त परमात्मा, और महाराजा जनक भी हैं हमारे निगहबाँ। रानी कौशल्या के पा कर इस तरह अच्छे खयाल, गिर गई चरणों में महारानी जनक की नागहाँ।

और कहा क्यों कर न होंगे आपके ऐसे खयाल, राजा दशरथ की हैं रानी राम की हैं आप माँ। नीच से भी नीच का रखते प्रभु हैं खुद खयाल, पास सर पर कोह के और आग के ऊपर धुआँ। हैं महाराजा हमारे आपके अवना गुलाम, पार्वती और शिवजी हैं सबके हमेशा निगहवाँ। आप की इमवाद के लायक जहाँ में कौन है, आग कर सकती है रौशन सम्म को जा कर कहाँ। राम बन को जा रहे हैं देवता का करने काम, बापस आएँगे अवध को और बनेंगे हुकमराँ। और सब अपनी जगह आराम से होंगे मुक्रीम, याज्ञवल्कजी ने यह पहले ही कहा था बेगुमाँ। उनकी ये पेशीनगोई हो नहीं सकती है झूठ, ऐ महारानी न कीजे आप कुछ शक ओ गुमाँ। पैर उनके पड़के फिर सीता को ले जाने कही, लेके हमरह उनको डेरे को हुई अपने रवाँ। जानकी जी जाके लोगों से मिली हस्वे तरीक़, देख कर कपड़े फ़कीरी उनके सब थे खस्ताजाँ। आ गये राजा जनक भी वहाँ पर बाहर से जब, प्यारी सीता को वो छाती से लगाये बेगुमाँ। प्रेम से दिल उनका भर आया, हुए बेचैन वह, देख कर बेटी को अपने खो दिये ताबोतवाँ। गो महाराजा थे ज्ञानी और थे साधु मनिस, ज्ञान का उनको नहीं बाक़ी रहा शानोंगुमाँ। बाप माँ को देख कर सीता भी बेकल हो गयीं, वक्त की सोची नज़ाक़त बन्द कर ली फिर ज़बाँ। जिस्म पर सीता के देखा जब फ़कीराना लिबास, यों कहा रौशन किये बेटी ने दोनों खानवाँ। वह किया है काम तूने हर कोई महाह है, नेकियाँ तेरी ज़माने में न क्योंकर हो बयाँ। नदी गंगा तो बहा करती फ़क़त है इक तरफ़, तेरी नेकी की यह नदी होगी हर जानिब रवाँ। अपनी यह तारीफ़ सीता को नहीं आयी पसंद, बाप माँ ने उनको छाती से लगाया बेगुमाँ। अपनी सासों की उन्हें सेवा का था दिल में खयाल, उनको ज़हमत होगी मैं रह जाऊँ शब में गर यहाँ। सोच कर सीता यह दिल में अपने कुछ ख़ामोश थी, मुँह से कह सकती न थी और बन्द थी उनकी ज़बाँ। देख कर सीता का मंशा खुद सुनैना जी ने ही, कर दिया सब माजरा राजा जनक जी पर बयाँ। सुनके यह राजा जनक जी भी बहुत खुश हो गये, और छाती से लगाया होके बेहद शादमाँ। राजा रानी ने गले मिल कर रवाना कर दिया, और सीता जी वहाँ से हो गयी बापस रवाँ। देख कर है वक्त अच्छा यों सुनैना ने कहा, भरत के अहवाल जो कुछ थे किये उनसे बयाँ। भरत की वह कैफ़ियत सुन कर हुए गो दिल में खुश, लेकिन उत्फ़त के सबब आँखों से आँसू थे रवाँ। यों महाराजा जनक कहने लगे रानी सुनो, भरत की दुनियाँ में चमकेगी न क्यों कर खूबियाँ। राजनीति भ्रम और मैं जानता हूँ ब्रह्म ज्ञान, फिर भी उनकी खूबियाँ मुझसे नहीं होती बयाँ। शेष ब्रह्मा सरस्वती महादेव हों या गनपती, हों वो ज्ञानी और सायर या कोई हो राजदाँ। भरत का सीरी तरीक़ा सब को दिल से है पसन्द, हर तरह जो पाक है, हैं जिसमें मुजमिर खूबियाँ। भरत की हुस्ती ज़माने में है बेशक बेमिसाल, उनसा ज्ञानी कोई दुनिया में नहीं है बेगुमाँ। भरत की तारीफ़ करना है नहीं मुमकिन कभी, जैसे मछली हो नहीं सकती है खुशकी पर रवाँ। भरत के अवतार को तो जानते हैं राम ही, लेकिन उनको कर नहीं सकते हैं वो खुद भी बयाँ। ये तो सबके वास्ते बेहतर है लक्ष्मण घर चले, राम के हमरह भरत हो जाएँ जंगल को रवाँ। रामचन्द्र भरत में कुछ इस क्रवर है इतिफ़ाक़, उनसे हैं ये प्यार करते इन पे हैं वो मेहरबाँ। भरत ने छोड़ा है सब कुछ राम ही के वास्ते, रामके चरणों में उनका दिल लगा है बेगुमाँ। यह नहीं मुमकिन है टालें राम के वह हुकम को, इसलिए करना नहीं हम को है कुछ शक ओ गुमाँ। भरत की तारीफ़ करते रात गुजरी इस तरह, सुबह को जागे, किये स्नान पूजा सब वहाँ।

राम भी अपने गुरु के पास हाज़िर हो गये, दस्तबस्ता यों गुरु जी से किया अर्जें बर्खा। भरत और माएँ हमारी गमज्जदा हैं ऐ गुरु, और है तकलीफ़ में मुल्के अवध के साकिनी। राजाए आली जनक भी हैं बहुत तकलीफ़ में, हो गया अर्सा उन्हें आ कर मये हमराहियाँ। इसलिए जो हो मुनासिब काम ऐसा कीजिए, आप ही के हाथ में है काम सबका बेगुमा। इस क्रदर कहते हुए बस राम जी चुप हो गये, बात यह सुन कर वशिष्ठ उनके गुरु थे शादमा। यों कहा ऐ राम, ये आये हैं जो दोनों समाज, इनको बिन देखे तुम्हारे मिलती राहत है कहा। ऐश और आराम इनको है नरक से भी बुरे, सबके तुम राहत रसा हो सबके तुम आरामें जा। राम से जिसको नहीं है प्रेम वह किस काम का, स्वाह वह योगी ही ही या वह हो कोई नुक्तादा। लोग कितने गम रसीदा है तुम्हारे वास्ते, हाल से सबके हो वाकिफ़ तुम पे है सब कुछ अया। राम को भिजवा दिया फिर जिस जगह रहते थे वो, खुद गये उस जा महाराजा जनक जी थे जहाँ। रामचन्दर ने कहा जो कुछ था वह सब कह दिया, और कहा कीजे मुनासिब जो हो ऐ शाहेशंहा। धर्म के पाबन्द हो और ज्ञान के भंडार हो, आपही से गुत्थी ये अब सुलझ सकती है यहाँ। बात सुन कर यह गुरु से हो गये बेचैने वह, फ़िक्र करने लग गये बेकार हम आये यहाँ। राजा दशरथ भेज कर जंगल जिन्हें खुद मर गये, उनको वन को भेज कर हम लीट जायें शादमा। जो तपस्वी या मुनी थे सुनके वो बेचैन थे, फिर गये राजा वहाँ थे भरत जी रहते जहाँ। पेशवाई के लिए दौड़े भरत जी आ गये, और दी मसनद उन्हें जो उनके थे शायनेशा। भरत से राजा जनक जी इस तरह कहने लगे, भरत तुम तो जानते हो राम की सब ख़ुबियाँ। बात के पक्के हैं वो और धर्म के पाबन्द हैं, इसलिए वो सह रहे हैं इस क्रदर ये सख्तियाँ। जो तुम्हारे दिल में हो वह मुझ से कह दो साफ़-साफ़, ताकि उसको अब कलूँ मैं रामचन्दर से बर्खा। कांपने थरथर लगे फिर भरत इसतादा हुए, थे मुहब्बत के भी आँसू उनकी आँखों से रवा। आप हम सबके बड़े और मिस्ल है माँ बाप के, और वशिष्ठ अपने गुरु उनसे भी बढ़ कर मेहरबा। आये विश्वामित्र जी भी और आये सब वज़ीर, मेरी है तकदीर अच्छी आप जो आये यहाँ। आपका बच्चा हूँ मैं मुझको हिदायत कीजिए, आप जैसे लोग ज्ञानी जब इकठ्ठा हैं यहाँ। आप मुझसे पूछते हैं है बड़ी हैरत की बात, चुप रहूँ तो बेअदब बोलूँ तो हो तूलेजबा। अर्ज करता इसलिए हूँ हो के मैं मजबूर अब, माफ़ कीजेगा मेरी ये आप सब गुस्ताखियाँ। वेद भी और शास्त्र भी कहते हैं सेवा है कठिन, और स्वामी-धर्म से यह मुखतलिफ़ है बेगुमा। दुश्मनी होती है अन्धी और मुहब्बत बेवकूफ़, इसलिए कुछ अर्ज करना मेरा होगा रायेगी। आप मुझसे कुछ न पूछें राम का मंशा है ये, जो मुनासिब आप सब संमर्ज करें वह बेगुमा। भरत की यह बात सुन कर देख कर उनका खयाल, राजाए मिथिलेश और साथी हुए सब मदहल्ला। बात थोड़ी थी मगर अल्फ़ाज मानेदार थे, जान ले हर शख्स उनकी यह तो मुमकिन था कहा। जैसे आइने को लेकर देख तो लें अपना मुँह, मुँह की लेकिन बात पकड़े कोई यह मुमकिन कहा। कोई दे सकता न था जब भरत जी को कुछ जवाब, तब महाराजा जनक जी और सब हमराहियाँ। उठ गये वह उस जगह से और सब उस जा गये, देवता रूखी श्री रघुनाथ रहते थे जहाँ। इन्द्र और सब देवता कुछ फ़िक्र करने लग गये, काम हमने जो बनाया हो न जाए रायेगी। सरस्वती से देवता करने लगे फिर इल्लेजा, अक़ल पर अब भरत की परेदा पड़े कुछ नागहाँ। उनकी ऐसी बात सुन कर सरस्वती कहने लगी, तुम हो अन्धे आँख के क्या, अक़ल खो डाली कहा।

ब्रह्मा विष्णु और शिव की भी बड़ी ताकत मगर, वह भी फेरें भरत के मंशा को मुमकिन है कहाँ।
 तुम यह कहते हो कि इनकी अकल को मैं फेर दूँ, चाँद पड़ जाता है फीका मेहर होता है जहाँ।
 भरत के दिल में मुहब्बत राम की है जा गुज्जीं, किस तरह होता अँधेरा मेहर है रोशन जहाँ।
 देवता यह बात सुन कर हो गप्पे मायूस से, सरस्वती जी हो गयी विवि लोक को वापस रवाँ।
 उनके दिल में थी बुराई सोचने वह लग गये, सोचते थे चाल चरनी चाहिए कोई यहाँ।
 काम का ब्रनत्ता बिगड़ना भरत ही के हाथ है, इन्द्र ने सोचा यही था अपने दिल के दमियाँ।
 राजाएँ मिथिलेश लेके साथ अपने सब समाज, थे जहाँ रघुवीर खुश तशरीफ़ ले आये वहाँ।
 कुलपुरोहित जी वशिष्ठ कह कर सुनाये हल सब, गुप्तगू जो कुछ हुई भरत और जनक के दमियाँ।
 और कहा मेरा तो मंशा है यही तुम जो कहो, सब अमल पैदा उसी पर होंगे बेशक ओ गुमाँ।
 राम हो कर दस्त बस्ता अर्जुनों करने लगे, आप और राजा जनक तशरीफ़ फ़रमा हो जहाँ।
 मेरी क्या मकदूर है मैं कुछ ज़बाँ से कह सकूँ, आप जो फ़रमाएँगे तामील होगी बेगुमाँ।
 राम का कहना यह सुन कर लोग सब खामोश थे, भरत का मुँह देखने वो लग गये जो थे वहाँ।
 भरत ने देखा सभा में लोग सब खामोश हैं, जब्त अपने पर किया पहले और फिर खोली ज़बाँ।
 दस्त बस्ता हो के वह सबसे मुखातिब हो गये, और कहा कीजें ऊफ़ू गर मेरी कुछ हों गलतियाँ।
 सरस्वती का पहले अपने दिल में करके ध्यान वह, इस तरह फिर भरत जी होने लगे गौहरफ़साँ।
 आप ही माँ-बाप हैं और आप ही मालिक-गुरु, आप ही आका हैं मेरे और मेरे राजदाँ।
 गलतियों को माफ़ करना आप ही का काम है, अपने सेवक पर हमेशा से रहे हो मेहरबाँ।
 आप-सा मालिक कोई दुनिया में मिलता ही नहीं, और सेवक भी कोई मुझ-सा नहीं नाक़दरदाँ।
 आपके अहक़ाम को और बाप के अहक़ाम को, तोड़ कर मैं आ गया हूँ ऐ मेरे मालिक यहाँ।
 आपके मंशा से हट कर कोई मिलता ही नहीं, मैंने की ऐसी ढिठाई है खता मेरी अयाँ।
 आपने सेवा इसे समझा ये है खुशकिस्मती, है दया की यह नज़र मुझ पर विला शक़ ओ गुमाँ।
 आपने मेरा भला ही कर दिया इस तीर से, मैं हुआ दुनिया में जिससे कामगारों कामराँ।
 वेद में और शास्त्र में भी हुआ यह मजकूर है, आपका तीरो तरीक़ा है ज़माने पर अयाँ।
 नीच हो पापी हो या हो बेवकूफ़ और बदमिज़ाज, नास्तिक हो निडर हो या हो कोई बेख़ानमाँ।
 आपकी आया शरण जब आपने अपना लिया, माफ़ की उसकी खताएँ और अता की खूबियाँ।
 ऐसा आका ही कहाँ जो खुद करे मालिक का काम, और अपने खुद किये का कुछ न ले नामोनिशाँ।
 बलिक़ खादिम के ही उल्टा रंज का रक्खे खयाल, मैं कसम खा कर हूँ कहता आप-सा काँई कहाँ।
 जानवर हैं जानते और बोलते तोते हैं खूब, सब सिखाने और पढ़ाने की है उनको खूबियाँ।
 आपने बिगड़ी बना दी खादिमों की इस तरह, साधुओं में फ़ोकियत दी उनको बेशक ओ गुमाँ।
 आपके ज़ुज़ कौन है जो इस तरह कुछ कर सके, आप ही वादे को अपने हैं निभाते बेगुमाँ।
 रंज समझो या मुहब्बत या कि बचपन ही मेरा, बेइज़ाजत आपकी जो मैं चला आया यहाँ।
 आप के पद-पंकजों के मैंने दर्शन पा लिए, हो गया मालूम मुझको आप हैं बस मेहरबाँ।
 अपने लोगों की हज़ूरी में मुझे जाहिर हुआ, आपकी मुझ पर इनायत की नज़र है बेगुमाँ।
 मैं था जिस लायक़ किशा उससे भी बढ़ कर सरफ़राज़, आपने अपनी नवाज़िस से किया है कामराँ।
 आपने अपने क्रम से की इनायत तो बहुत, मैं ढिठाई कर रहा हूँ वह जो करता हूँ बयाँ।
 अर्जुन करना अपने मालिक से ज्यादा है फ़िज़ूल, दीजिए मुझको इज़ाजत ता करूँ अर्ज बयाँ।

रात-दिन दिल में मेरे जो बात है कहता हूँ मैं, आपकी सेवा ही की बस आरजू है बेगुमी। हो गये बेचैन और चरणों में भाई के गिरे, कुछ लिखा जाता नहीं उस वक्त का हमसे समा। राम ने उनका पकड़ कर हाथ बिठलाया उन्हें, अहले मजलिस के भी तब जाते रहे ताबोतवा। राम और सारे मुी भी और महाराजा जनक, दिल ही दिल में खुश हुए, थे भरत सबके मदहूबा। देवता भी खुश हुए गो दिल में उनके थी खटक, और वो भी अपने हाथों से हुए सब गुलफशा। भरत की यह बात सुन कर लोग ऐसे खुश हुए, जिस तरह होता कमल है रात में खन्दावहा। इन्द्र तो यह चाहते थे काम अपना ही बने, रंज में डूबे कोई, हो जाए कितना ही जिया। इन्द्र की यह चाल है, मानिन्द कौवे की हविस, वह भरोसा ही नहीं करते किसी पर बेगुमी। देवताओं को फराहम धोखा दे कर कर लिया, अक्ल भी चकराई उनकी हो गये सब हमजबा। देवामाया का असर लोगों के दिल पर हो गया, और सब होने लगे अपने दिलों में खस्ताजा। वो कभी तो चाहते थे हम रहें जंगल ही में, और कभी वह चाहते थे हम चले जाएँ मर्जा। इस तरह उनका इरादा हो रहा था डीवाडोल, और कर सकते न थे एक-दूसरे से कुछ बर्बा। राम ने लोगों के इस मंशा का अन्दाजा किया, हँस पड़े और यह खयाल आया उन्हें बस नागहा। इन्द्र और अहयास कुत्ते में नहीं है कोई फर्क, हैं बराबर, है नहीं कुछ फर्क इनके दर्मिया। देवमाया से बचे जो लोग थे धर्मिन्ना, भरत और राजा जनक या और जो थे नुक्तादा। राम ने देखा दुखी हैं लोग मेरे वास्ते, इन्द्र ही की चाल से है सब परेशा बेगुमी। जो ब्राह्मण या गुरु थे और जनक थे या वजीर, भरत की भक्ति ने सबकी फहम कर दी रायगा। हो गये तस्वीर से, सब राम को थे देखते, मुँह से कुछ कहते न थे और बन्द थी उनकी जबा। जिनकी भक्ति देख कर मुनिराज और सब दंग थे, किस तरह शायर बर्बा कर सकता है उसको यहाँ। अक्ल रानी की है छोटी भरत की महिमा बड़ी, इसलिए आसा नहीं है उसका कुछ करना बर्बा। भरत का यश चन्द्रमा है फहमें शायर है चकोर, देखता रहता है जो उसको हमेशा बेगुमी। कौन है जो भरत की तारीफ़ करने के सबब, राम की उस पर न हो नजरें इनायत बेकरा। याद में जो भरत की हो, और न पाये रामको, ऐसा बदकिस्मत जगत में कोई मिलता है कहा। राम जो थे नेक नीयत, नेक आदत, नेक खूँ, देख कर यह रंगे महफ़िल यों हुए गीहरफ़शा। भरत प्यारे भाई तुम तो धर्म के औतार हो, हो मुहब्बत ही के पुतले और तुम हो बेददी। कर्म से मन से वचन से तुम तुम्हारे मिसिल हो, मुझसे छोटे हो कल्ले खूबी मैं मुँह से क्या बर्बा। जानते हो दोस्त और दुश्मन सभी के दिल की बात, वाकिफ़े अहले पिवर हो और रस्तेखानदा। सब के कामों से हो वाकिफ़ अपने और मेरे भी तुम, हर तरह मुझको भरोसा तुम पे है ऐ मेरी जा। बस गुरु जी ने सँभाला है समामी राज काज, वर्ना सब बरबाद हो जाती अयोध्या बेगुमी। शाम से पहले अगर हो जाएगा सूरज का अस्त, होगा क्योंकर यह न सबके वास्ते ईजारसा। यों ही अपने बाप का मरना भी बिलकुल हो गया, अब गुरु जी और जनक जी हैं महाफ़िज निगहबा। मुत्को दौलत और इज्जत राज का सब कामकाज, हैं गुरु जी ही महाफ़िज हैं वही बस पासबा। घर में जो कुछ हो रहा है सब उन्हीं का फँज है, और बन में भी उन्हीं का फँज जारी है यहाँ। अपने आका का ही कहना हो वह या हुक्मे गुरु, वाजिबुल तामील है, जो कुछ हैं कहते बाप-माँ। इसलिए तुम वह करो जो हो मुनासिब हाल के, और मुझसे भी कराओ वह, जो हो शायानेसा। यह समझ कर तुम ज़रा तक्लीफ़ अपने पर सहो, और सबके वास्ते बन जाओ तुम राहतरसा।

भाई मेरी मुशकिलों में सब हुए हैं हिस्सेदार, खास कर तुमको उठानी पड़ रही हैं सख्तियाँ। रहमदिल तुमको समझ कर कह रहा हूँ सख्त बात, वक़्ते मुशकिल रख नहीं सकता हूँ मैं उसको निहाँ। वक़्तेमुशकिल भाई की इमदाद होती है जरूर, इसलिए मैं कह रहा हूँ तुमसे मेरे भाई जाँ। बात ये रघुवर की सुन कर लोग सब खामोश थे, सरस्वती भी दंग थी और बन्द थी उनकी जवाँ। भरत के दिल की जलन और सब तपिश जाती रही, छा गयी दिल पर खुशी और हो गये वो शादमाँ। दस्तबस्ता भाई से अपने वो यों कहने लगे, ऐ मेरे आका हुआ मैं हर तरह अब कामराँ। आप जैसा हुक्म देंगे मैं करूँगा अब वही, इत्तेजा है एक सुन लो तुमपे है कुर्बान जाँ। कुछ निशानी दीजिए चौदह बरस के वास्ते, आपका नायब ही बन करता रहूँ मैं हुक्मराँ। तीर्थों का जल जो आया आपके अभिषेक को, हुक्म क्या होता है उसके वास्ते कीजै बयाँ। और कहा एक बात मेरे दिल में आयी है हुई, खोफ़ के बावस उसे मैं कर नहीं सकता बयाँ। राम ने उनसे कहा बेखोफ़ तुम मुझको कहो, बात जो दिल में तुम्हारे है न रखो वह निहाँ। जोड़ कर दो हाथ उनसे भरत यह कहने लगे, है मेरे दिल में ये अरमाँ फिर के देखूँ बन यहाँ। सब परिन्दे और चरिन्दे और नदी तालाब भी, आपके चरणों के जिस-जिस जा नजर आएँ निशाँ। है मुक़द्दस हर तरह तीरथ की जा है चित्रकूट, आपकी गर हो इजाजत फिर के आता हूँ यहाँ। राम ने ऐसा कहा अत्री ऋषी से पूछ लो, हुक्म उनका सर पे आँखों पे रखो तुम बेगुमाँ। वन में जो फैली है बरकत ये उन्हीं का फ़ौज है, जो नजर आती है सरसब्जी वो शादाबी यहाँ। जिस जगह अत्री-ऋषी बोलें वहाँ तुम गाड़ दो, तीर्थों का जल जो तुम हमराह लाये हो यहाँ। भाई से सुन कर जवाब ऐसे हुए मसरूर भरत, और चरणों पर ऋषी के सर झुकाया बेगुमाँ। भरत की और राम की जिस वक़्त सुन ली गुप्तगू, देवता सब खुश हुए उन पर हुए सब गुलफ़साँ। जनक जी और गुरु वशिष्ठ भी इससे बेहद खुश हुए, क्योंकि जितने लोग थे, थे सब भरत के मदहसूवाँ। मालिक और सेवक ये दोनों का तरीका ठीक है, चस्मे अल्लाफ़ो इनामत में भरी है खूबियाँ। अहले मजलिस भी तमामी खुश हुए आनन्द से, राम की फुरकत का गो सदमा था दिल में बेगुमाँ। राम की माँ ने तो दुख और सुख को जाना एक-सा, दूसरों को दी तसल्ली ता मिले आरामें जाँ। कोई तो थी भरत की मद्दाह, कोई राम की, इस तरह आपस में कहने लग गयीं सब रानियाँ। भरत से अत्री जी बोले पानी को रख दो यहाँ, कोह के नीचे यहाँ है एक जो सुन्दर कुआँ। सुन के अत्री की हिदायत जल तलब सब कर लिया, जो घड़ों में भर कर अपने साथ लाये थे वहाँ। शत्रुहन और अत्री जी को ले कर अपने साथ-साथ, और सब हमराहियों के साथ खूद आये वहाँ। अपने ही हाथों से जल को उस जगह पर रख दिया, तब बयाँ अत्री ने की उनसे जगह की खूबियाँ। भरत के जितने थे सेवक फिर के देखे सब मुक़ाम, खोद कर कुआँ भी एक बनवा दिया फ़ौरन वहाँ। नाम रक्खा उस कुवें का सबने मिल कर भरत कूप, उसमें जो स्नान कर ले होगा वह इज्जत निशाँ। जिक्र और तारीफ़ उस जा की बयाँ करते हुए, हो गये सब लोग वापस राम रहते थे जहाँ। राम के पास आ गये अत्री ऋषी और लोग सब, अत्री जी ने उस जगह की की बढ़ाई सब बयाँ। इस तरह वह रात गुजरी और सवेरा हो गया, सब हुए फारिश नहा कर और मुँह धो कर वहाँ। गुरु वशिष्ठ और राम से अत्री ऋषी से पूछ कर, देखने को वन हुए तब भरत और भाई रवाँ। दोनों भाई चल रहे पैदल थे हमराही के साथ, सादगी से जा रहे थे कुछ न था इच्छारे शाँ। रास्ते में काँटे और कंकर भी सब गायब हुए, ठंडी-ठंडी धीमी-धीमी चलती थी बादेसबाँ।

अब छाया राह में और फूलफल आबाद थे, मीठी बोली बोलते थे सब परिन्दे बेगुमाँ। जब जम्हाई ले के कोई राम का लेता है नाम, पाप मिट जाते हैं सब, हो जाता है वह कामराँ। भरत तो हैं राम के दिलवन्द और प्यारे अजीज, वास्ते उनके न क्यों पैदा होये आसानियाँ। इस तरह थे वन में फिरते हर तरफ जब भरत जी, देख कर हैरान थे उनको मुनी और सरधुवाँ। पूछते थे जो-जो मिलती चीज इनको राह में, और अन्नी जी किये जाते थे इन सबको बयाँ। भरत करते थे कहीं स्नान और दर्शन कहीं, बैठते थे ध्यान करते राम सीता का वहाँ। देख कर अखलाक उनके देव वन के खुश हुए, और दुआ देते थे उनको होके खुश और शादमाँ। दोपहर होती है तो वापस वे आ जाते थे फिर, आ के छूते थे क्रदम वह राम के नुसरत निशाँ। पाँच दिन में खतम कर डाली वो तीरथ यात्रा, और छठे दिन जमा वो सब हो गये एक जा वहाँ। राम को कहने में होता था तआम्मुल कुछ जरूर, यह कि दिन अच्छा है हो जाएँ ये सब घर को रवाँ। भरत मंशा कुछ समझ कर सामने हो कर खड़े, दस्तबस्ता भाई से अपने किया अर्जो बयाँ। मेरे मालिक आपने खातिर मेरी हर तरह की, वास्ते मेरे उठाते लोग हैं सब सल्लियाँ। आपको भी बेसबब तकलीफ मुझ से हो गयी, अब इजाजत दीजिए ता मैं अवध को हूँ रवाँ। साल चौदह मैं गुजारूँगा अवध जा कर जरूर, जो मुनासिब हो मुझे कीजे हिदायत बेगुमाँ। आपके परताप से खुश हैं अवध के लोग सब, सब रिआया और बराया और अहले खानदाँ। सब के दिल की जानने वाले हो ऐ मालिक मेरे, काम सबके तुम सँभालोगे यकीनन बेगुमाँ। मुझको ऐसा है भरोसा फिक्र अब बाकी नहीं, आपकी चरमे इनायत से हैं ये ताबोतवाँ। भरत के ऐसे वचन सुन कर कहा यह राम ने, ऐ मेरे प्यारे बिरादर ऐ मेरे आरामे जाँ। फिक्र मेरी और तुम्हारी और घर की दार की, है गुरु जी को ही, और राजा जनक हैं निगहबाँ। और विश्वामित्र का भी हम पे साया है जरूर, इसलिए बाकी नहीं अब रंज का नामोनिशाँ। बाप के अहकाम की तामील हम दोनों करें, फर्ज मेरा और तुम्हारा है यही ऐ भाई जाँ। बाप के माँ के गुरु के और बूजुगों के हुकुम, जिसने माने अपने दिल से, हो गया वह कामराँ। इसलिए अब फिक्र छोड़ो और तुम जा कर अवध, सलतनत अपनी करो चौदह बरस बादज्जोशाँ। हैं गुरु जी मुल्क और दीलत खजाने के अमीन, और सर पर है तुम्हारे मादराने मेहरबाँ। कारोबारे सलतनत इस तरह से करते रहो, जिस तरह दें मशविरा तुमको वजीरे नुकतादाँ। काम मुखिया का है यह वह काम मुख जैसा करे, मुल्क की राहत की खातिर खुद रहे जहमत कसाँ। जैसे मुख को कुछ नहीं है अपनी जहमत का खयाल, खुद चबा कर दूसरे आजा को हैं राहत रसाँ। राज करने के लिए भी भेद है यह लाजमी, जिस तरह मंशा किसी के दिल में होता हैं निहाँ। राम जी इस तरह भाई भरत को कहते रहे, और तसल्ली दी उन्हें समझा-बुझा कर बेगुमाँ। भरत के दिल को तसल्ली इससे कुछ होती न थी, चाहते थे भाई दें कोई उन्हें अपना निशाँ। राम ने सोचा कि मैं दे दूँ खड़ाक पैंर के, लेकिन इसके वास्ते करने लगे शक ओ गुमाँ। एक तरफ था भाई के इसरार का उनको खयाल, दूसरे जानिब गुरु जी थे वहाँ जलवाकुनाँ। आखिरस अपने खड़ाक भरत जी को दे दिये, ले के जिसको सिर पे रखा हो कर भरत ने शादमाँ। राम के दोनों खड़ाक क्या थे पहरेदार थे, यह रिआया की हिफाजत के लिए थे निगहबाँ। भरत की उत्फ्रत के जोहर के लिए सन्दूक थे, राम जी के नाम के अक्षर थे यह दो बेगुमाँ। काम करने के लिए मानिन्द हैं दो हाथ के, दो हैं दरवाजे हिफाजत के बराये खान्दाँ।

सारे सेवा धर्म करने के लिए दो आँखें हैं, भरत ऐसी चीज पा कर हो गये बस शादमी। भरत ने आदाब करके वापसी के वास्ते, राम से माँगी इजाजत ताकि वापस हों रवाँ। राम उठ कर भाई से अपने गले मिलने लगे, वह समाँ लिखा ही जा सकता न हो सकता बयाँ। दोनों जानिव से मुहब्बत का हुआ इजहार खूब, राम की आँखों से अब आँसू न हो क्यों कर रवाँ। दिल में लोगों के भी चलने की हुई ख्वाहिश जरूर, सब के दिल में यह खयाल आया चलें वापस मकाँ। बाद चौदह साल के जब राम वापस आएँगे, उनके दर्शन कर सकेंगे हम बिला शक ओ गुमाँ। भाइयों की यह मुहब्बत देख कर सब दंग थे, गुरु वशिष्ठ राजा जनक जी और दीगर साधुआँ। देख कर इस हाल को हैरान थी हर एक अकल, हाल वह क्यों कर लिखेगा शायरे मौजिब बयाँ। भरत से मिल कर गले फिर शत्रुहन से भी मिले, लोग सब चलने की करने लग गये तयारियाँ। देवताओं और ऋषि मुनियों को वन के पूज कर, शत्रुहन और भरत दोनों हो गये वन से रवाँ। लक्ष्मण से भी मिले सीता के क्रदमों पर गिरे, सब हुआ देते थे उनके वास्ते थे हमजबाँ। राजाए मिथिलेश से भी राम और लक्ष्मण मिले, बाअदब हो कर मिले और सिर झुकाया बेगुमाँ। और कहा तकलीफ की महाराज ने बेइन्तेहा, साथियों को ले के जंगल में चले आये यहाँ। अब हुआ दीजे हमें और आप वापस जाइए, सुन के यह राजा जनक ने खो दिये ताबोतवाँ। और जो साधु मुनी थे या ब्राह्मण आये थे, सब से मिल कर राम ने सबको किया वापस रवाँ। राम और लक्ष्मण गये तब सास से मिलने को भी, छू के उनके भी चरण वापस चले आये यहाँ। कौशिक, वामदेव और जावाली से आ कर मिले, और भी मौजूद जो उस जा थे अहले खानदाँ। जिस तरह जिससे था मिलना राम और लक्ष्मण मिले, दी तसल्ली हर किसी को और किया वापस रवाँ। कैकई के पंर पड़ कर उनको समझाया बहुत, दूर कर डाले खिजालत से जो थे शक ओ गुमाँ। जाके सीता भी मिलीं माँ बाप से औरों से भी, अपनी सासों से मिलीं और जो थे अहले खानदाँ। सबका आशीर्वाद ले कर लौट कर यह आ गये, दिल उदास उनका हुआ और छा गयी खामोशियाँ। राम ने मँगवायी माँओं के लिए तब पालकी, हो गयी जिन पर सवार आराम से सब रानियाँ। दोनों भाई अपनी माँओं से मिले आदाब से, बाद इजहारे मुहब्बत कर दिया उनको रवाँ। हाथी और घोड़े सजे हर एक सवारी सज गयी, भरत और राजा जनक के दल हुए दोनों रवाँ। याद सीता राम की लक्ष्मण की भी करते हुए, लोग वन से हो गये वापस रवाना बेगुमाँ। वह रवाना हो गये और मिल लिए जब सब से वे, राम लक्ष्मण आ गये वापस ये रहते थे जहाँ। गोह के राजा को रुखसत रामचन्द्र ने किया, हो गया वापस मगर वह था बहुत आजुर्दाजाँ। और वन के लोग जो आये थे सब लौटा दिये, राम को दण्डवत् करके सब गये वापस मकाँ। राम लक्ष्मण और सीता बैठ कर बड़ के तले, भरत का था तजक़िरा औरों का करते थे बयाँ। भरत की तारीफ़ करते जा रहे थे रामचन्द्र, हर तरह उनके सनाखाँ और थे वो मदहलवाँ। राम थे बेचैन अपने भाई के मजकूर से, सुन के यह बेचैन थे सब जानवर और मछलियाँ। राम लक्ष्मण और सीता थे कुटी में इस तरह, ज्ञान और वैराग भक्ति हैं वहाँ जलवा कुनाँ। इस तरफ़ भरत और जनक मय अपने हमराही गुरु, रास्ते में जा रहे थे राम का करते बयाँ। रोज़े अव्वल हो गया जमना किनारे पर मुक़ाम, दूसरे दिन आये वे गंगा का साहिल था जहाँ। सरबराही में बहुत मसरूफ़ थे राजा निषाद, तीसरे दिन सब नहाये गोमती में बेगुमाँ। और चौथे रोज़ पहुँचे सब अयोध्या शहर में, राजाए आली जनक भी जाके खुद ठहरे वहाँ।

चार दिन ठहरे वहाँ करने को सारा इन्तजाम, सब को समझा कर बुझा कर खुद हुए घर को रवाँ।
 गुरु वशिष्ठ ने जो कहा अहले अयोध्या ने सुना, और रहने लग गये आराम से पीरो जब।
 राम के दर्शन के प्यासे व्रत करने लग गये, ज़िन्दगी अपनी गुजारी सादगी में बेगुमाँ।
 भरत ने सारे वजीरों को बुलाया अपने पास, और जो थे एतमादी अहलेकारो खादिमाँ।
 सब को समझाया किया हर एक के तफ़वीज कार, लग गये हर एक अपने काम में बेईनाँ।
 शत्रुहन को भी बुला कर की हिदायत उनको खूब, और कहा उनकी खबर रखना जो हैं सब अपनी भाँ।
 और मूसर को बुला कर की ये उनसे इल्तेजा, काम जो लायक हो खिदमत के वह कीजेगा बयाँ।
 सब रियाया को बुला कर उनको समझाया बहुत, और दिया उनको दिलासा जो थे अहले खानदाँ।
 शत्रुहन को साथ ले कर वह गुरु के घर गये, भरत ने अपने गुरु से यों किया अर्ज बयाँ।
 हो इजाजत आपकी तो तारेकुदुनियार् रहूँ, नेम की और धर्म की करता रहूँ पाबन्दियाँ।
 यों मिला उनको जवाब अपने गुरु से भरत तुम, जो कहोगे और करोगे हाँगी उसमें खूबियाँ।
 उयोतिषी से नेक दिन और नेक सायत पूछ कर, तलत पर रखे खड़ाऊँ राम के बाइज्जोशाँ।
 पैर कौशल्या के पकड़े और सबसे पूछ कर, खुद कुटी में जाके रहने को हुए घर से रवाँ।
 जाके नंदीग्राम में अपनी बनाई एक कुटी, और फक्कीराना बसर की ज़िन्दगी अपनी वहाँ।
 खोद कर एक जा जमीं उसमें बिछाई घासफूस, भरत रहते थे उसी खन्दक में जैसे साधुवाँ।
 ज़र जवाहिर छोड़ कर रहने लगे मिसले फ़कीर, चैन और आराम का बाक़ी न रक्खा कुछ निशाँ।
 उस अयोध्या की हुकूमत की भी कुछ परवाह न की, इन्द्र को था रक्षक जिस पर जिसका था वह मदहसवाँ।
 हुक्मरानी छोड़ कर ऐसी गुज़र करते रहे, जिस तरह भौंरा रहे चम्पा के वन में बेगुमाँ।
 राम की फुरकत में कुछ मुश्किल न था यह भरत को, नेम भी और बरत भी और धर्म की पाबन्दियाँ।
 उनके चेहरे पर रहा बाक़ी वही ताबोजलाल, गो वह लँगर हो रहे थे और नहीफ़ो नातवाँ।
 भरत का रहना व सहना और भक्ति और नेम, शेष गनपत सरस्वती भी कर नहीं सकते बयाँ।
 वह खड़ाऊँ की भी पूजा रोज़ करते थे अदा, माँग कर उनसे इजाजत होते थे खुद हुक्मराँ।
 दिल में सीता राम हैं और लब पे भी है इस्मे राम, और आँखों से मुहब्बत के थे आँसू भी रवाँ।
 राम लक्ष्मण और सीता थे वहाँ शहरा नवदं, भरत तो घर ही में रह कर श्लेते थे सख्तियाँ।
 देख कर यह रंग उनका लोग सब मद्दाह थे, एक वशिष्ठ जी ही नहीं सब संत और सब साधुवाँ।
 भरत के हालात जो सुन लें तो हों सब भरम दूर, मोह छूटे और मुश्किल में हों सब आसानियाँ।
 सब जलन मिटती है दिल की और दुःख होते हैं दूर, पाप का हाथी दबाने है यह एक शोरे जियाँ।
 भरत होते गर न पैदा तो यह मुनियों के लिए, शम व दम और आचरण और नेम मिलते थे कहाँ।
 और तकलीफ़ जहाँ को कौन कर सकता था दूर, याने दुःख की दर्द की गुरबत की सारी सख्तियाँ।
 जो इसे दिल से पढ़ेगा राम के बरताव से, शाद दुनिया में रहेगा और होगा कामराँ।
 राम ने जो कुछ किया आगे वह हम लिखते हैं अब, भरत के हालात को हम खत्म करते हैं यहाँ।
 राम लक्ष्मण और सीता वन में रहने लग गये, जिस तरह वन में गुज़ारे, हम हैं करते अब बयाँ।
 एक दिन फूलों को चुन कर राम जंगल से ले आये, उनके जेवर अपने हाथों से बनाये बेगुमाँ।
 और पहनाये वे गहने राम ने खुद हाथ से, एक पत्थर पर जो बैठी जानकी जी थी वहाँ।
 इन्द्र का था एक बेटा नाम था उसका जयन्त, राम की कूबत का करना चाहता था इन्तेहाँ।
 जैसे चींटी चाहती हो थाह दरिया का मिले, यों ही उस नादान के भी आया दिल के दमियाँ।

भेस कौवे का बना कर आया वह सीता के पास, पैर में सीता के आ कर चोंच मारी बेगुमाँ। खून बहने लग गया जब राम ने देखा उसे, हाथ में अपने लिया तब राम ने तीरो कमाँ। बेवकफ़ी से यह की है चालबाजी उनके साथ, रहम के दरिया हैं जो मशहूर सब पर मेहरबाँ। तीर दौड़ा उसके पीछे और वह खायज़ हुआ, बाप के पास अपने आया वह बसद आहो फुगाँ। राम का उसको मुखालिफ़ जान कर रखा न इन्द्र, उनको इसकी यह नहीं अच्छी लगी गुस्ताखियाँ। हर जगह भागा किया कोई न साथी मिल सका, खौफ़ से बेचैन हो कर हो गया वह नातवाँ। बैठने की भी इजाजत उसको मिल सकती न थी, कौन रखने को चला घर में उसे अपने यहाँ। जयन्त को नारद ने जब देखा निहायत बेकरार, रहम उनके दिल में आया हो गये वो मेहरबाँ। जाके समझाया उसे तफ़हीम उसकी की बहुत, राम ही के पास उसको कर दिया फ़ौरन रवाँ। जयन्त ने जा कर पुकारा मुझ पे कीजेगा दया, दरगुज़र कीजे जो मुझसे हो गयीं गुस्ताखियाँ। राम के चरणों पे जा कर गिर गया वह खौफ़ से, आपकी ताक़त को मैं नादान समझा था कहाँ। जो ख़ता की थी सज़ा अब मुझ को पूरी मिल गयी, आपके चरणों में आया हूँ मैं हो कर नीमजाँ। राम ने एक आँख का काना उसे बस कर दिया, बरूश दी उसकी ख़ता और कर दिया उसको रवाँ। जान लेना चाहिये था राम ने छोड़ा उसे, राम की क्यों कर बयाँ हम कर सकेंगे खूबियाँ। और कुछ दिन यों गुज़ारे रोज़ एक लीला किये, आख़िरस समझे कि अब रहना नहीं अच्छा यहाँ। ली इजाजत सब मुनी से राम लक्ष्मण जानकी, आश्रम को छोड़ कर अपने हुए वो सब रवाँ। चलके वो आये जहाँ रहते थे अत्रीजी ऋषी, देख कर इनको वह उठ कर आ गये जल्दी दवाँ। राम चरणों पर गिरे वह इनकी सीने से लगाये, आँख से आँसू हुए उनके मुहब्बत के रवाँ। ले गये अन्दर उन्हें अच्छी जगह बिठला दिया, और फल खाने को लाये जो हुए मर्गबेजाँ। हाथ जोड़े इत्तिजा की आपका मैं दास हूँ, आप ही सब के दिलों में रहते हैं जलवाकुनाँ। तीरो तरकस आप रखते हैं हमेशा हाथ में, सूर्यवंशी ख़ानदाँ के हैं जो नूरे ख़ानदाँ। आपसे मुनियों को सन्तों को मिला आराम है, चाप शिव की आप ने तोड़ीं बिला शक़ वो गुमाँ। देवता के दुश्मनों को नष्ट कर देते हैं आप, पाप का बाक़ी नहीं रखते कभी नमोनिशाँ, आपकी भक्ति मेरे दिलमें रहे क़ायम मुदाम, आपकी मुझ पर इनायत की नज़र हो बेगुमाँ। जो कोई इस स्तुति को दिलसे पढ़ ले शाद हो, उसका मंशा होगा पूरा और होगा कामराँ। जानकी ने पैर अनुसूया के छूए बाअदब, अत्री की बीवी जो थीं और पास बैठी थी वहाँ। हाथ से पहनाये अपने खूबसूरत ज़ेवरात, औरतों के कुछ फ़रायज़ जानकी से की बयाँ। एक फ़क़त शौहर हैं—रहता है हमेशा जिसका साथ, आर्जी साथी हैं होते भाई भी और बाप-माँ। दोस्त का बीबी का इस्तक़लाल का और धर्म का, वक़्ते आफ़त ही हुआ करता है हरदम इस्तेहाँ। ऐसी औरत पर है लानत ज़िन्दगी बेकार है, खिदमते शौहर नहीं करती है जो बाक़ल्बोज़ाँ। वह हो बूढ़ा या हो रोगी या हो जाहिल या शरीब, ख़्वाह अन्धा हो कि बहरा गुस्सावर या नातवाँ। ऐसे शौहर की भी खिदमत से करे गर आर वह, झेलनी उसको पड़ेगी आक्रिबत में सलितयाँ। मर्द की अपने करे खिदमत यही है राह नेक, नेम धर्म और व्रत उसका है यही एक बेगुमाँ। औरतों की चार क्रिस्मों में हुई तकसीम है, इनकी अस्मत का मैं तुम से आज करती हूँ बयाँ। सबसे आला वह है बाअसमत जो ये समझा करे, मेरे शौहर के सिवा है मर्द बाहिम्मत कहाँ। गैर को जो समझे बेटा अपना भाई या कि बाप, दूसरे दर्जे की बाअस्मत है होती बेगुमाँ।

तीसरे दर्जे की बाअस्मत उसे कीजै शुमार, ऐब से डरती रहे रक्खे लिहाजे खानदाँ । जिसकी अस्मत बचती है मौक़ा न मिलने के सबब, आखरी दर्जे की गिनते हैं उसे सब नुक़तादाँ । ग़ैर से जो दिल लगाये देके शौहर को फरेब, सख़्त से भी सख़्त दोज़ब की सहेगी सख़्तियाँ । कौन होगी ऐसी औरत के ममासिल बदनसीब, एक पल के ऐश के कारण सहे ये सख़्तियाँ । नेकनीयत रह के जो होती है शौहर पर निसार, वह हमेशा शाद रहती है हमेशा कामराँ । जो मुखालिफ़ अपने शौहर के रहा करती है जन, हर जनम में होगी बेवा और रह-रह कर जवाँ । यों तो पैदाइश ही औरत की हुई नापाक है, ख़िदमते शौहर से हो जाती है वह इज्जत निशाँ । है पतीव्रता धर्म ही की वजह तुलसी जी भी, वेद जिनके मदहूख़ाँ हैं और दुनिया क़दरदाँ । प्यारी सीता तुम तो अपने राम की हो जाँनिसार, धर्म की अपने हिफ़ाजत तुम से होती है अयाँ । नाम ही ले कर तुम्हारा औरतें दुनिया की सब, अपने-अपने धर्म की रक्षा करेंगी बेगुमाँ । जानकी ने सिर झुकाया सुन के इस उपदेश को, उनके इम अलताफ़ से वह हो गयीं बस शादमाँ । राम जी ने दस्तबस्ता यों मुनी से तब कहा, अब यहाँ से और कोई वन को होता हूँ रवाँ । आपका खादिम हूँ मैं मुझ पर रहे चरमे करम, भूलिए मुझको न हरगिज़ मुझ पर रहिए मेहरबाँ । राम के ऐसे सख़ुन सुन कर मुनी ने यों कहा, ब्रह्मा, विष्णु और शंकर जी है जिनके मदहूख़ाँ । आप वह अवतार हैं ऐ राम जी मैं क्या कहूँ, इस तरह जो आप मुझसे करते हैं अर्जें बयाँ । लक्ष्मी की मैंने चतुराई को अब जाना है खूब, दूसरों पर आपको तर्जीह दी जो बेगुमाँ । किस ज़बाँ से मैं कहूँगा आपको अब जाइए, इस तरह कहते हुए आँखों से आँसू थे रवाँ । शोक से वह देखते जाते थे चेहरा राम का, इनके दर्शन से वो थे मसरूर बेहद शादमाँ । सोचते थे आज तक मैंने किया क्या नेक काम, जिसके कारण आज यह खुद हैं यहाँ जलवा कुनाँ । राम के दर्शन से होते पाप हैं कलयुग के दूर, जिसने जाने हाल इनके रहता है वह शादमाँ । इस ज़माने में न योग है और न जप है न तप, राम ही के नाम से होता है इन्साँ कामराँ । इस तरह मिल कर मुनी से दण्डवत करके उन्हें, उस जगह से और आगे हो गये तीनों रवाँ । आगे-आगे राम जी हैं और पीछे लक्ष्मण, और सीता जी चली जाती है दो के दमियाँ । इस तरह मालूम होता था ब्रह्म अरु जीव के बीच, जिस तरह माया का होता है तालुक बेगुमाँ । वन नदी तालाब पर से ये गुज़रते थे मगर, राह चलने में न थी इनके लिए दुश्वारियाँ । धूप की तकलीफ़ से बचने को थे वादल घिरे, देवताओं ने करी हर तरह की आसानियाँ । राक्षस इनसे मिला एक नाम था उसका विराध, ख़तम कर डाला उसे बस राम जी ने नागहूँ । हाथ से इनके मरा वह पाप उसके रद हुए, आकेबद उसकी बनी और हो गया वह कामराँ । राम-लक्ष्मण और सीता चलते-चलते आखिरस, उस जगह पहुँचे मुनी सरभंग रहते थे जहाँ । देख कर नूरानी चेहरा राम का वो दंग थे, कहा ये मैं ब्रह्मलोक अब होने ही को था रवाँ । यह ख़बर मुझ को मिली है राम वन को आ रहे, इसलिए मैं कर रहा हूँ इन्तेज़ार उनका यहाँ । नीच हूँ मैं कुछ नहीं हूँ जानता साधन कोई, आपके दर्शन से अब मैं हो गया हूँ कामराँ । ठहरिए उस वक्त तक है आरजू मेरी यही, ज़िस्म से मेरे निकल जाए न जब तक मेरी जाँ । आज तक जप तप मुनी ने जिस क़दर भी था किया, भक्ति का वरदान पा कर हो गये वो शादमाँ । और धिता अपनी बना कर उस पे जा बैठे मुनी, साँवली सूरत को उनकी कर लिया दिल में निहाँ । यों जला कर ख़तम कर डाला उन्होंने अपने को, जान देदी और हासिल की हयाते जावेदाँ ।

दूसरे जो थे मुनी हमराह इनके हो गये, इस जगह से राम लक्ष्मण जब हुए आगे रवाँ । राम ने मुनियों से पूछा यह कहो क्या बात है, इस जगह क्यों इतनी कसरत से पड़ी हैं हड्डियाँ । पूछने से उनको मुनियों ने दिया ऐसा जवाब, आप तो सब जानते हैं आप तो हैं रमजदाँ । मार कर मुनियों को जितने खा गये हैं राक्षस, यह उन्हीं का डेर है ये हैं उन्हीं की हड्डियाँ । सुनके यह कुछ राम की आँखों में आँसू आ गये, और कहा उनका मिटाऊँगा मैं अब नामानिशाँ । ले गये तशरीफ यह हर एक मुनी के आश्रम, अपने दर्शन से किया उन सबको शादो शादमाँ । था सुतीक्षण नाम जिनका थे गुरु उनके अगस्त, जिनमें थे आसार भक्ती के नुमायाँ बेकराँ । जब सुना आते हैं उनके आश्रम में राम जी, हो के वह बेचैन दीड़े पूछते थे हैं कहाँ । दिल में ये थे सोचते मैंने किया क्या नेक काम, आप जो भगवान खुद तशरीफ ले आये यहाँ । फिर रहे थे आगे पीछे वह मुनी दीवाने से, सूझता उनको न था पाते न थे वो हैं कहाँ । झाड़ की एक आड़ में आ कर खड़े थे रामचन्द्र, और भक्ति का मुनी की ले रहे थे इम्तेहाँ । भक्ति से भगवान की जब वह मुनी बेखुद हुए, हो गये मसरूर और बैठे वो रह के दमियाँ । राम आ कर सामने उनके खड़े तब हो गये, राम ने उनको जगाया भी, मगर उठते कहाँ । आखिर जब बेखुदी से होश में वो आ गये, देखते क्या हैं कि सीता राम लक्ष्मण हैं यहाँ । इनके दर्शन के लिए जो आज तक बेचैन थे, दीड़ कर कदमाँ पे इनके गिर गये वो नागहाँ । राम ने उनको उठाया और बगलगीरी हुई, थे मुनी जो देखते चेहरे को इनके बेगुमाँ । राम के चरणों में आ कर गिर गये फ़ौरन मुनी, और उनको ले गये उस जा वे रहते थे जहाँ । दस्तबस्ता यों मुनी ने इल्तेजा की राम से, कतरये नाचीज़ हूँ मैं आप बहरे बेकराँ । आपकी हरदम रहे मुझपे इनायत की नज़र, आपकी कुदरत की खूबी मैं करूँ कैसे बयाँ । ज़िन्दगी और मौत के चक्कर से देते हो नजात, देवता मुनियों के दिल को करते हो तुम शादमाँ । राम जी करते हो हल्का आप ही दुनिया का बोझ, गुस्सओ ग़म और लालच का तो क्या नामानिशाँ । आपकी ताक़त बड़ी है आप बल के धाम हो, आपका गर नाम ले ले पाप रहते हैं कहाँ । आप सबके दिल के अन्दर चूँकि रहते हो मुदाम, मेरे मन में भी इसी सूरत से हो जाएँ निहाँ । आपको जो कुछ कोई समझे वह समझा ही करे, मेरे दिल में आप कोशलराज हो जलवाकुनाँ । दिल से मेरे यह न हरगिज़ हो फ़रामीशी कभी, राम आक्रा हैं मेरे और मैं हूँ सेवक बैगुमाँ । यों सुतीक्षण जी मुनी जब राम से कहने लगे, राम ने उनसे कहा यों हो के बेहद शादमाँ । ऐ मुनी जो कुछ हो ख़वाहिश आज मुझ से माँग लो, तब मुनी ने दस्तबस्ता अपनी यों खोली ज़वाँ । जानता ही मैं नहीं हूँ माँगना क्या चीज़ है, कौन-सी है नफ़ाबख़श और कौन-सी नुक़साँ रसाँ । आपके दिल को जो भावे वह मुझे दे दीजिए, झूठ और सच का नहीं हूँ मैं ज़रा भी फ़र्क़दाँ । राम ने यह वर दिया वैराग्य और भक्ति के तुम, ज्ञान में पूरे रहो हो जाओ कामिल राज़दाँ । तब मुनी ने यह कहा, जो आपने चाहा दिया, अब मुझे दो—वह जो माँगूँ—तुम पे है कुर्बान जाँ । आप सीता और लक्ष्मण यों धनुष धारी बने, मेरे दिल में बैठ जाएँ और हों जलवाकुनाँ । राम ये वर दे कर उनको और आगे बढ़ गये, और चले उस जा ऋषी कुम्भन जी रहते थे जहाँ । तब सुतीक्षण ने कहा मुझको गुरु को देख कर, एक असाँ हो गया है मैं भी चलता हूँ वहाँ । राम ने हमराही में उनको भी अपने ले लिया, और वो सब हो गये उस जा से भी आगे रवाँ । पास जब पहुँचे सुतीक्षण जाके यों कहने लगे, ऐ गुरु जिनके हो तालिब—आ गये हैं वो यहाँ ।

दौड़ कर आये वो आगे देखते ही राम को, हो गये मसरूर बेहद और हुए आँसू रवाँ। खैरियत पूछी बिठाया उनको एक अच्छी जगह, और की खिदमत भी उनकी हर तरह शायानेशाँ। और भी जो थे मुनी उन सबने दर्शन पा लिये, सबसे मिल कर राम ने फ़र्माया सबको शादमाँ। राम यों कहने लगे हो कर मुखातिब ऐ अगस्त, आपसे मुखफ़ी नहीं है, मैं हूँ क्यों आया यहाँ। अब मुझे बतलाइए ये राक्षस कैसे हों खत्म, तब मुनी कहने लगे उनसे बसद खनदा दहाँ। आप ऐसा किसलिए हैं पूछते नाचीज से, आपकी लीला को पहचाने कोई मुमकिन कहाँ। आपकी आदत है यह करते दया सेवक पे हैं, इसलिए पूछा है शायद आपने यों बेगुमाँ। आपसे है अर्ज मेरी पंचवटी को जाइए, और गौतम की दुआए बद को कीजै रायगाँ। जो मुनी रहते वहाँ हैं उनपे कीजै अब दया, बात यह सुन कर हुए रघुनाथ जी फ़ौरन रवाँ। गिद्ध के राजा जटायू से मिले वो राह में, पंचवटी पहुँचे बनायी एक कुटी अपनी वहाँ। जब से जा कर राम ने अपना किया उस जा मुक़ाम, बन गया सरसब्ज और थे सब मुनी भी शादमाँ। जानवर सारे परिन्दे हर तरह थे शादकाम, क्या करें तीसीफ़ उसकी राम रहते थे जहाँ। एक दिन लक्ष्मण ने पूछा राम जी से इस तरह, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को ज़रा कीजै बयाँ। ईश्वर क्या चीज़ है और जीव भी क्या चीज़ है, भेद क्या है यह बताओ आप—इनके दमियाँ। राम ने उनसे कहा कहता हूँ मैं सब तुम सुनो, मुख़तसर ही तुमसे, कर देता हूँ मैं सब कुछ बयाँ। मैं और मेरा, तू और तेरा, है यही माया फ़क़त, बस इसी चक्कर में है सब मुबतिला अहले जहाँ। ख्वाहिशते नपस जितने हैं वो सब माया ही हैं, फ़र्क़ होता जाहिल और आक़िल के भी है दमियाँ। जहालत होती है इनसाँ को बड़ी तकलीफ़दे, इल्मियत होती है इनसाँ के लिए राहतरसाँ। ज्ञान वह शै है कि जो सबको बराबर जान ले, है वही वैराग्य जो खुद हो जगत का हीचदाँ। जो न जाने ईश्वर को और माया को कभी, जीव कहते हैं उसी को, तुम समझ लो मेरी जाँ। धर्म से वैराग्य हासिल, योग से मिलता है ज्ञान, योग से है मोक्ष मिलता वेद में है वह बयाँ। और भक्ति से हुआ करते हैं खुश परमात्मा, जिसके बाअस भक्त हो जाते है शादोशादमाँ। जाहिलो आक़िल सभी भक्ति को पा सकते हैं जल्द, और वजूद इनका भी इस भक्ति के अन्दर है निहाँ। भक्ति पाने के लिए लाज़िम है संतों से मिलें, हर ब्राह्मण से भी मिलना चाहिए खिदमत कुनाँ। वेद के कहने के मुआफ़िक़ कर्म के पाबन्द हो, तब उसे वैराग्य की मिलती है जा कर सीढ़ियाँ। ईश्वर को ही गुरु, माता, पिता जो जान ले, रात—दिन करता रहे उसका भजन जो बेगुमाँ। छोड़ कर छल जानों दिल से जो करे ऐसा भजन, ऐसे ही दिल में रहा करता हूँ मैं जलवाकुनाँ। राम ने इस तरह भक्ति योग की तक्षरीह की, सुनके यह बातें हुए लक्ष्मण निहायत शादमाँ। एक थी हमसारे रावण नाम जिसका सुपनखा, शक्ल नीयत की बुरी थी और थी वह बदज़बाँ। एक दिन वह इत्तिफ़ाक़न पंचवटी में आ गई, देख कर राम और लक्ष्मण को फ़िदा की उनपे जाँ। खूबसूरत मर्द बद औरत जो कोई देख ले, भाई, बेटे, बाप का रहता खयाल उसको कहाँ। करके वह सिंगार अपना राम के आगे गयी, और कहा—तुम-सा ज़वाँ और मुझ-सी औरत है कहाँ। आपका मेरा वह जोड़ा बन गया है खूब-खूब, कुदरतन अस्बाब इसके हो गये जाहिर यहाँ। मैंने दुनिया ढूँढ़ मारी कोई भी क़ाबिल न था, आज तुम को देख कर दिल मेरा ललचाया यहाँ। देख कर सीता की जानिब राम ने उससे कहा, मेरा भाई है कुंवारा जो कि बैठा है वहाँ। उससे लक्ष्मण ने कहा मैं तो हूँ उनका एक गुलाम, वह जो करना चाहें उनको है सभी शायानेशाँ।

जैसे सेवक चैन से महारूम इज्जत से गरीब, और जुबारी या शराबी की रहे दीलत कहाँ। और जो मगरूर हो चाहे अगर वह चार फल, ये तो नामुनकिन से नामुनकिन है होना बेगुमाँ। सुपनखा यह बात सुन कर राम के पास आयी फिर, राम ने लौटा दिया फिर उसको लक्ष्मण के यहाँ। उससे लक्ष्मण ने कहा बेशर्म होगा जो कोई, उससे शादी तेरी हो सकती है बेशक ओ गुमाँ। भर के गुस्से में बना कर अपना चेहरा खौफनाक, वह गयीं बैठे थे सीता-रामचन्द्र जी जहाँ। देख कर चेहरा भयानक उसका सीता डर गयीं, राम ने संकेत लक्ष्मण को किया बस नागहाँ। नाक उसकी काट डाली लक्ष्मण ने दौड़ कर, इत्तेदा रावण से झगड़े की यही है बेगुमाँ। नाक-कान उसके कटे और खून जहने लग गया, जैसे काले कोह से गेरू की नहरें हों रवाँ। खर-दूषण उसके भाई थे गयी वह उनके पास, बेकरारी से थी रोती और थी नालाकुनाँ। यों कहा जा कर, तुम्हारे पर हैं लानत सौ-हज़ार, शर्म कुछ आती नहीं है तुम को मेरे भाई जाँ। जब सबब पूछा उन्होंने हाल बतलाया वह सब, सुनके लड़ने के लिए होने लगी तैयारियाँ। सैकड़ों-लाखों-हज़ारों राक्षस चलने लगे, मुखतलिफ़ हथियार ले कर हो गये जल्दी रवाँ। सुपनखा को रहनुमाई के लिए आगे किया, उसके पोछे चल रहे थे सैकड़ों ही पहलवाँ। राह में उनको नज़र आने लगे सब बदसगुन, लेकिन उनका कुछ न इनको हो सका शक ओ गुमाँ। जोश में और बलबले में दौड़ते जाते थे सब, चीखते थे इस तरह जैसे कोई शेर निहँ। कोई कहता था कि औरत इनकी जल्दी छीन लो, दोनों भाई का पकड़ कर डाल दो बस बेड़ियाँ। राम-लक्ष्मण से मुखातिब होके यों कहने लगे, आ गयी है राक्षस की फ़ौज लड़ने को यहाँ। ले के तुम सीता को जाओ कोह के दरौं में अब, और रहो उनके मुहाफ़िज़ तुम बदिल जमई वहाँ। भाई की सुन कर हिदायत ले के सीता जी को साथ, चल दिये उस जा से ले कर हाथ में तीरोकमाँ। देख कर दुश्मन चले आते हैं लड़ने के लिए, राम ने भी हाथ में अपने लिये तीरोकमाँ। देखते थे इस तरह वह जानिवे फ़ौज उदू, शेर जैसे ताक़ता हो हाथियों की टोलियाँ। दौड़ कर वह आये सब और पेरा डाला राम पर, देख कर तेज और जलाल इनका हुए सब नातवाँ। खर व दूषण ने बुला कर मंत्री से यों कहा, खूबसुरत हैं यह दो राहज़ादे बेशक ओ गुमाँ। हम ने दुनियाँ में नहीं देखा है इन-सा आदमी, लाख दुनियाँ छान मारी, और जीता सब जहाँ। गो बहन की अपनी सूरत हो गयी इनसे खराब, फिर भी ये लायक नहीं है क़तल के शाहज़ादगाँ। अपनी औरत को छुपाया है कहीं, वह लाके दें, और ये ज़िन्दा चले जाएँ तबीयत हो जहाँ। पास उनके जाओ तुम ले कर हमारा यह पयाम, उनका जो कुछ हो जवाब अब लेके आओ तुम यहाँ। राम से जा कर कहा कासिद ने जो कुछ था सुना, राम जी कुछ मुसकुराये और हुए गौहरफ़शाँ। सैद के हम वास्ते फिरते हैं—क्षत्री नस्ल हैं, ढूँढ़ते हैं तुम-सा कोई हमको मिल जाये यहाँ। देख कर दुश्मन को ताक़तवर नहीं डरते हैं हम, मौत से भी हम भिड़ा करते हैं बेशक ओ गुमाँ। गो हैं हम इनसान लेकिन दैत्य को मारेंगे सब, और मुनियों के बनेंगे हम मुहाफ़िज़ निगहबाँ। दुष्ट जो है मैं सज़ा दूंगा उन्हें, गरचे हूँ तिफ़ल, मैं न मारूंगा चले जाओ, अगर हो नातवाँ। आके मँदाँ में बनाना बात का बेसूद है, रहस्य दुश्मन पर बताना है न शाने पहलवाँ। जो सुना था आके सब पैग़ामवर ने कह दिया, सुनके खरदूषण का दिल जल उठा बेहद नागहाँ। और कहा उसने पकड़ लो जाके जल्दी राम को, सुन के वह दौड़े हज़ारों—थे मुसल्लह पहलवाँ। राम ने अपना धनुष ले कर ज्योंही खींचा उसे, एक गरज ऐसी हुई जैसे कोई बर्क़तयाँ।

सुन के यह आवाज बहरे हो गये सब राक्षस, और कुछ बेहोश-से भी हो गये सब पहलवाँ । फिर ज़रा सँभले वो सब और तीर बरसाने लगे, मखतलिफ़ हथियार ले कर भिड़ गये शेर ज़ियाँ । राम ने हथियार उनके तोड़ डाले मिसल तिल, हाथ में जल्दी उन्होंने ले लिए तीरोकमाँ । मार के मानिन्द जब चलने लगे यह तीर सब, राक्षस मैदान से हटने लगे बस नागहाँ । खर व दूषन तिसरा तीनों हुए उन पर खफ़ा, और कहा भागेगा जो हम उसको मारेंगे यहाँ । सुन के वो वापस हुए भागे हुए सब राक्षस, राम से लड़ने लगे हथियार ले कर ब्रेगुमाँ । राम के भी तीर जब इस सिम्त से चलने लगे, सैकड़ो गिरने लगे नामी गिरामी पहलवाँ । उनके आज्ञा कट रहे थे, गिर रहे थे मिसले कोह, चील और गोदड़ भी खाते जा रहे थे हड्डियाँ । जिस्म और आज्ञा के टुकड़े होते जाते थे बहुत, और आखिर में निकल जाती थी उनके तन से जाँ । देख कर यह बेकरारी फ़ीज की आगे बढ़े, खर वो दूषन तिसरा तीनों बिरादर नागहाँ । सैकड़ों को साथ ले कर राम से लड़ने लगे, राम जी ने उनकी कर दी सब शुजाबत रायगाँ । तीर इनके जाके उनके जिस्म में लगने लगे, और धड़ाधड़ वो गिरे जाते थे हो कर नीमजाँ । देवता खायफ़ थे दुश्मन हैं इधर चौदह हजार, और तनहा राम हैं इतने उदू के दमियाँ । वाक्फ़ियत भेद से जब राम को खुद हो गयी, एक तमाशा ही करामत से किया अपनी यहाँ । सैकड़ों ही राम जैसे हो गये मैदान में, राक्षस आपस ही में लड़ने लगे बस नागहाँ । इस तरह पल भर ही में सब कटमरे आपस में वो, मोज़िजा एक हो गया और मर मिटे सब नागहाँ । देवता सब खुश हुए नक्कारे बजने लग गये, और विमानों पर सवार हो कर हुए घर को रवाँ । इस तरह जब सब मुनी और देवता बेडर हुए, ले के सीता जी को लक्ष्मण फिर चले आये यहाँ । सुपनखा यह देख कर हालत गयी रावण के पास, रोके यों कहने लगी कैसा है गाफ़िल हुक्मराँ । नशे में रहते हो हरदम कुछ नहीं तुमको खबर, आ गया दुश्मन है सर पर ऐश में हो तुम यहाँ । फ़ाहिशा के साथ सन्यासी अगर मिल कर रहे, या मसीरे बंद अगर रखता हो कोई हुक्मराँ । और दौलतमन्द हो कर जो कोई कंजूस हो, वास्ते भगवान के करता न हो जो खूबियाँ । जल्द हो जाता है ऐसों का जहाँ में खातमा, है यही दस्तुरे दुनिया, है ये मशहूरे जहाँ । पान से ही जान जाता और मदख़्तारी से शर्म, और नख़वत से हुआ करती हैं नेकी रायगाँ । रोग, दुश्मन, आग, मालिक, साँप हो या हो अज़ाब, जान तू इसको न कमतर है अगर कुछ नुक्तादाँ । इस तरह कहते हुए रोने लगी वह ज़ार-ज़ार, लोटने नीचे लगी गिर कर सभा के दमियाँ । तेरे जीते जी अरे रावण मेरी यह गर्ति बनी, खेब देता है तुझे क्या है तेरे शायाने शाँ । लोग सब उसको उठाये और रावण ने कहा, किसने तुझको है सताया क्यों नहीं करती बर्याँ । राजाएँ दशरथ अयोध्या नाथ के लड़के हैं वह, देखने में हैं बहादुर और सजी ओ पहलवाँ । उनकी करतूतों से यह मालूम होता है मुझे, राक्षस का अब न बाक़ी रहेगा नामोनिशाँ । जिनकी ताक़त के सहारे सब मुनी बेख़ौफ़ हैं; उम्र के कमसिन हैं लेकिन अरुम के हैं पहलवाँ । देवताओं की मदद के वास्ते ये आये हैं, दोनों भाई है बहादुर और वजीह ओ पहलवाँ । राम उनका नाम है और साथ एक औरत भी है, जो निहायत खूबसूरत है और एकताये जहाँ । उसके छोटे भाई ने काटे है मेरे नाक कान, मैं तेरी हमसीर हो कर क्या सहूँ हसवाइयाँ । मेरा रोना सुन के खरदूषणा मदद को आये थे, थोड़े ही अर्से में वो मारे गये सब पहलवाँ । क्रल खरदूषणा का भी और तिसरा का जब सूना, जल गया दशशीश का दिल और भड़का नागहाँ ।

सूर्पनखा की उसने की तफ़हीम अच्छी तरह से, अपनी ताक़त और शक्ति का किया उसने बर्‍या। देके यों उसको तसल्ली कर दिया रुख़सत मगर, दिल में रावण के बहुत खौफ़ और डर था बेगुमाँ। मेरे सेवक के मक्काबिल हो किसी की क्या मजाल, खर व वृषण तो मेरे भाई थे दोनों पहलवाँ। ताक़ते शैबी से मारा हो तो मारा हो कोई, दूसरे को इनसे लड़ने की भला ताक़त कहाँ। मैं भी हठ कर के लड़ूँगा ऐसी ताक़त से ज़रूर, ताकि मर कर भी मैं पा जाऊँ हयाते जावेदाँ। ज़िन्दगी में तो मुझे ईश्वर की याद आती नहीं, क्यों न उनके हाथ से हो जाऊँ मर कर कामराँ। और अगर कोई हैं इनसाँ मैं पकड़ लूँगा ज़रूर, उनकी औरत को मैं लाऊँगा ज़रूर अपने यहाँ। इस तरह कहते हुए रावण ने रथ मँगवा लिया, उसपे चढ़ के वह गया, मारीच रहता था जहाँ। इस तरफ़ क्रिस्ता सुनो, लक्ष्मण गये लाने को फल, एक करिश्मा हो गया जो है बहुत राज़ेनिहाँ। राम ने हँस कर कहा, ऐ जानकी अब तुम सुनो, मैं ज़रा करता हूँ लोला तुम को करता हूँ निहाँ। आग में तुम अब समा जाओ बराये चन्द रोज़, राक्षस कुल का मिटा देता हूँ मैं नामोनिशाँ। सुनके यह सीता उसी दम आग के अन्दर गयीं, उनकी जैसी मूरती एक हो गयी जलवाकुनाँ। भेद यह ऐसा था लक्ष्मण भी न वाकिफ़ हो सके, और गया रावण वहाँ मारीच रहता था जहाँ। सर झुकाया अपना रावण ने जब उसके सामने, यों कहा मारीच ने क्या बात है कीजै बर्‍या। किसलिए जंगल में आये हैं अकेले आप आज, तब तो रावण ने किया सब हालेदिल उससे बर्‍या। और कहा तुम दाँव करके अब बनो नक़ली हिरन, और उस औरत को मैं ले कर चला आऊँ यहाँ। बोला वह उनसे अदावत करके नामुमकिन है जीत, लाख समझाया उसे मारीच ने सूदोज़ियाँ। हैं वही शहज़ादे विश्वमित्र जिनको लाये थे, यज्ञ की उनके हिक़ाज़त के लिए थे पासबाँ। राम ने मारा था ऐसा बाण जिसका फल न था, एक सौ योजन गिरा मैं दूर जा कर नागहाँ। अब मेरी हालत निहायत हो गयी अबतर खराब, रात-दिन उनका ही डर है मेरे दिल के दमियाँ। तुम अगर उनको समझते हो कि वह इनसान हैं, तब भी वह तुमसे ज़ियादह हैं वहादुर पहलवाँ। इसलिए उनसे अदावत मोल लेना है फ़िज़ूल, जो कि मारे ताड़िका को और सुबाहू नागहाँ। खर व वृषण का किया हो जिसने पल में खातमा, क्या ये इनसानी है ताक़त ऐसा मुमकिन है कहाँ। खैरियत अपनी और अपने घर की गर मंज़ूर है, चुप पलट जाओ यहाँ से तुम अभी अपने मकाँ। जल उठा रावण बह सुन कर और कहा ऐ बेवकूफ़, मिस्ल एक उस्ताद के है यह तेरी तर्जें बर्‍या। कौन दुनिया में है जो मेरा मुकाबिल हो सके, आज आलम में पहलवाँ हूँ मैं एकताये जहाँ। दिल में यह मारीच समझा उससे झगड़ा है फ़िज़ूल, जो मुसल्लह शरस हो या बेवकूफ़ और राज़दाँ। हो वह बावर्ची व दौलतमंद या वह हो हकीम, मुक्तदिर हाकिम हो या हो भाट या शायर बेगुमाँ। उसने सोचा दोनों हालत में मुझे मरना ही है, राम के हाथों से मरने में ही होगी खूबियाँ। मैं जवाब इसको अगर दूँ मार डालेगा मुझे, राम ही के हाथ से मैं क्यों न मर जाऊँ यहाँ। सोच कर वह दिल में ऐसा साथ रावण के गया, राम के चरणों में उसका दिल लगा था बेगुमाँ। उसका दिल था खुश कि दर्शन राम के हो जाएँगे, लेकिन उसने राज़ यह रावण से रक्खा ही निहाँ। आज दोनों भाई के दर्शन करूँगा मैं ज़रूर, और मरूँगा तो मिलेगी मुझे हयाते जावेदाँ। बन गया मारीच सोने की तरह नक़ली हिरन, जबकि उस जंगल में पहुँचे राम रहते थे जहाँ। वह नज़र आता था बेहद खूबसूरत दूर से, और निहायत ही अजब था रंग रूप उसका अर्थाँ। देख कर सीता ने उसको यों कहा तब राम से, खाल होगी इस हिरन की खूबसूरत बेगुमाँ।

मार कर आप इस हिरन को पोस्त ले कर आइए, राम उट्टे जानते थे गो वो सब राजेनिहीं। देवताओं का बनाना काम था पेशेनज़र, इसलिए जल्दी चले वह ले के बस तीरोक़माँ। राम बोले लक्ष्मण से इस जगह हैं राक्षस, होशियारी से रहो सीता के तुम हो निगहवाँ। राम को देखा हिरन ने दौड़ने बस लग गया, राम भी ले कर घनुष पीछे हुए उसके रवाँ। पास आता था कभी और दूर जाता था कभी, वह कभी आता नज़र था और कभी होता निहाँ। इस तरह करता हुआ वह दूर उनको ले गया, राम ने एक तीर मारा लग गया पूरा निशाँ। वह पुकारा लक्ष्मण का नाम ले कर ज़ोर से, ध्यान दिल में राम का था और देदी अपनी जाँ। वह गती उसको मिली मुनियों को जो मिलती नहीं, देवता इस खुशनसीबी पर हुए सब गुलफ़शाँ। मार कर मारीच को रघुवीर वापस हो गये, जिनके था तरकस कमर में हाथ में जिनके कमाँ। हाय लक्ष्मण ! जब कहा मारीच ने सीता सुनी, डर गयी वो उनके दिल में हो गये वहमोगुमाँ। जल्द जाओ तुम तुम्हारे भाई कुछ आफ़त में हैं, बोले हँस कर लक्ष्मण ऐसा है मुमकिन ही कहाँ। तब तो सीता ने उन्हें कुछ ससत फ़िकरे कह दिये, कुदरतन लक्ष्मण के दिल में भी हुआ शक्कोगुमाँ। छोड़ कर सीता को वो वन-देवताओं के सुपुदं, लक्ष्मण राही हुए थे रामचन्दर जो जहाँ। देख कर कोई नहीं है भेस साधु का पहन, आ गया रावण वहाँ सीता जी बैठी थी जहाँ। खौफ़ से जिसके थे डरते देवता और दैत्य भी, आज वह रावण है चोरी के लिए आया यहाँ। देखता फिरता था रावण ऐसे कुत्ते की तरह, जो कि हो चोरी पर मामल देख कर खाली मकाँ। हर तरह से उसने सीता को बहुत लालच दिया, और कथाएँ भी कहीं और राजनीति की बयाँ। उससे सीता ने कहा तुम आप भी तो हो गुसाई, हो मगर दिल के बुरे अल्फ़ाज़ेबद हैं बरज़बाँ। तब तो रावण अपना असली रूप दिखलाया उन्हें, और अपना नाम और सरवत किया उनसे बयाँ। डर गयीं सीता मगर हिम्मत से कहने लग गयीं, ठहर तू कमबस्त, प्रभु जल्द आते हैं यहाँ। शेरनी को जैसे कोई चाहता खरगोश हो, तू भी यों ही कह रहा है मीत का बन कर निशाँ। आ गया रावण को गुस्सा खींच कर सीता को वह, रथ में अपने ले बिठाया हो गया फ़ौरन रवाँ। इस तरह रावण चलाता जा रहा था अपना रथ, लब पे सीता के थे नाले और थीं जारी कुनाँ। चीखती वह जा रही थीं राम जी को बार-बार, हाय लक्ष्मण, बेसबब तुमसे हुई मैं बदगुमाँ। कुछ खता इसमें तुम्हारी हाय लक्ष्मण थी नहीं, मैं खफ़ा नाहक हुई पायी सज़ा भी बेगुमाँ। कौन प्रभु को मुनाएगा मेरी तकलीफ़ यह, यज्ञ का परसाद खाने को हुआ है खर रवाँ। इस तरह आवाज़ रोने की सुना जब गिद्धराज, दीड़ कर ऊपर से आया और यों खोली ज़बाँ। प्यारी सीता तू न डर मैं जल्द माहँगा इसे, और रावण से कहा, कमबस्त जाता है कहाँ। पहले रावण कुछ डरा फिर देख कर कहने लगा, है यह क्या मेनाक पर्वत या गरुड़ है बेगुमाँ। फिर कहा हँस कर जटायु है यह बूढ़ा नातवान, मेरे ही हाथों से आज इसकी निकल जाएगी जाँ। गिद्ध यों कहने लगा रावण ज़रा सुन मेरी बात, छोड़ कर सीता को हो जा अपने घर को तू रवाँ। राम के गुस्से की अगनी जब सुलग जाएगी तब, तू भी जल जाएगा, जल जाएगा तेरा खानदाँ। उसका यह कहना भी सुन कर हो गया खामोश जब, तब तो गुस्सा आ गया गिद्धराज जी को बेगुमाँ। गिद्ध ने बाल उसके पकड़े रथ के नीचे कर दिया, सिर पे इतनी चोंच मारी हो गया सर खूँफ़शाँ। आ गया रावण को चक्कर फिर सँभल कर वह ज़रा, काट डाला पर जटायू के, लिये खंजर दवाँ। गिर गया पच्छी ज़मीं पर याद करते राम की, और रावण ले के सीता को हुआ जल्दी रवाँ।

खौफ़ के मारे बढ़ाता जा रहा था रथ को जल्द, और सीता कर रही थी नालायो आहो फुर्गा। एक टीले पर वहाँ बैठे थे बन्दर देख कर, डाल दी सीता निशानी पार्च की कुछ वहाँ। इस तरह सीता को रावण ले गया अशोक बन, और डरा-धमका के निगरानी में रखवाया वहाँ। राम ने लक्ष्मण को देखा आ रहे हैं अपने सिम्त, यों कहा सीता को तनहा तुमने क्यों छोड़ा वहाँ। राक्षस वन में हैं फिरते मैंने तुमसे कह दिया, कुछ खयाल इस का न रक्खा और चले आये यहाँ। मुझको अन्देश है अब सीता नहीं अपनी जगह, लक्ष्मण छू कर कदम कहने लगे ऐ भाई जा। कुछ खता मेरी नहीं है मैं बहुत मजबूर था, राम और लक्ष्मण गये, था आश्रम उनका जहाँ। देख कर सीता से खाली राम बेकल हो गये, याद करके अपनी सीता को किये आहोफुर्गा। लक्ष्मण ने उनकी की तफ़हीम तब आगे बढ़े, पूछते हर झाड़ से थे वह समझ कर राजदाँ। वह परिन्दों और पतंगों से भी जाते पूछते, तुम बता सकते हो मेरी प्यारी सीता है कहाँ। जो तुम्हारे रूप से शरमिन्दा थे सब फूल फल, आ गयी रीनक है उनमें तुम न होने से यहाँ। तुम कहाँ हो क्यों नहीं आती हो प्यारी जानकी, इस तरह कहते हुए रघुवीर होते थे रवाँ। और आगे जब बढ़ा देखा जटायु है पड़ा, राम ही का ध्यान था और राम ही बिरदेजबाँ। राम ने जब हाथ फेरा दर्द उसका कम हुआ, और उसने राम से की इस तरह अर्जेंबयाँ। नाथ यह सब हाल मेरा करके रावण चल दिया, और सीता जी को भी वह ले गया अपने यहाँ। ले गया है हाथ वह सीता को दखन की तरफ़, जो कि करती जा रही थीं राह में आहोफुर्गा। आप से कहने के खातिर जी रहा था नाथ मैं, अब निकल जाने को ही है जिस्म से यह मेरी जाँ। राम ने उससे कहा तदबीर वह करता हूँ मैं, आप हो जाएँगे अच्छे और बच जाएगी जाँ। गिद्ध ने हँस कर कहा जीने की अब स्वाहिश नहीं, आपके चरणों को देखा हो गया मैं कामराँ। राम कहने लग गये जो दूसरों के वास्ते, जान अपनी दे वही होता है हरदम शादमाँ। आप पूरण काम हैं बैकुण्ठ को बस जाइए, आपको दुख दर्द का बाकी न हो नामोनिशाँ। मेरे वालिद से न कहिए आप कुछ सीता का हाल, थोड़े ही दिन बाद रावण जाके कर देगा बयाँ। आप निर्गुण हैं सगुण हैं आपकी जै हो सदा, रावण दशशीश के हैं वास्ते शौला फ़शाँ। है कमल-सा आपका मुँह और बाजू हैं विशाल, खौफ़ का बाकी नहीं रखते कभी नामोनिशाँ। आप बलवान आप अजनमा और अनादी आप हैं, एक हैं और हैं अगोचर आप ही हैं वेददाँ। आपका ना जन्म ही है ना मरण है आपका, जीने मरने का छुड़ा देते हो दिल से सब गुमाँ। आप को भजते हैं जो देते हैं उनको सुख मुदाम, स्वाहिशाते नफ़स के हैं दुश्मने जाँ बेगमाँ। आप माया से भरे हैं और हमेशा शान्त हैं, अपने भक्तों पर रहा करते हैं स्वामी मेहरबाँ। आप ही का ध्यान मेरे दिल में हो हरदम लगा, आप ही हरदम मेरे दिल में रहें जलवाकुनाँ। अस्तुती करने लगा गिद्धराज उनकी बार-बार, आखिरस वह हो गया बैकुण्ठ को सीधा रवाँ। राम ने की उसकी क्रिया जिस तरह से चाहिए, जब हुई उससे फ़रासत हो गये दोनों रवाँ। रास्ते में एक मिला था राक्षस नामी कमन्द, मार डाला राम जी ने उसको भी फ़ौरन वहाँ। यों कहाँ दुर्वासा जी ने बद्दुआ दी थी मुझे, आपके दर्शन से अब मैं हो गया हूँ शादमाँ। राम बोले ब्राह्मण से इखतिलाफ़ अच्छा नहीं, हैं ब्रह्मा और शिव भी इसमें मेरे हमजबाँ। उस ब्राह्मण की भी पूजा चाहिए करनी जरूर, संगदिल हो या किसी को दे रहा हो गालियाँ। शूद्र गर लिखा-पढ़ा हो और हो लायक़ मगर, पूजा के लायक़ नहीं वह और न उसकी इज्जोशाँ।

आखिरस गन्धर्व जब यह सब सुना वह चल बसा, मिल गयी उसको नजात और हो गया वह कामरौ । राम जब आगे बढ़े पहुँचे वह शबरी जी के पास, राम को वह देख कर आते, हुई बस शादमाँ । पैर दोनों भाई के चूमें वह नीचे गिर गयी, पैर धो कर उनके, आसन पर थी बिठलाया वहाँ । कन्दमूल और फल रसीले लाके वह आगे रखे, राम ने भी शोक से खाया उन्हें बेईनोंआँ । हाथ जोड़े और कहने लग गयी मालिक मेरे, मकरदरत मेरी है क्या, खिदमत के लायक हूँ कहाँ । नीच हूँ मैं जाति की भी और हूँ मैं बेवकूफ, और मैं रखती नहीं जर्री बराबर खूबियाँ । राम बोले जाति से मुझको नहीं कुछ वास्ता, याद जो मुझको करे होता हूँ उस पर मेहरबाँ । जाति-पाति और घन बढ़ाई या कुटुम्ब हो और बल, गर न भक्ति हो तो रीनक इनमें रहती है कहाँ । तीसरी भक्ति वही है जो गुरु-सेवा करे, और भजन दिल से करे चौथी है भक्ति बेगुमाँ । मंत्र का मेरे जो जप करता है वह पाँचवीं, और छठी भक्ति है वह ऋषियों का पकड़े आस्ताँ । सातवीं भक्ति है ऋषियों का बड़ापन मान ले, आठवाँ स्तुति है भक्ति का किनाअत में निहाँ । बुगुज और किनाँ न रख कर सबसे हिल-मिल कर रहे, है नवीं भक्ति—न शादी गम का हो सूदोजियाँ । एक भी इनमें से हासिल कोई कर लेता है गर, है वही माजुरे परमेस्वर—नहीं शकओगुमाँ । भरतबा तेरा न क्यों कर होगा आला पीरजन, जब भरी तुझमें है नव अक्सास की ये खूबियाँ । मुझको बतला जानकी की कुछ खबर तुझको हो गर, बोली वह तुम जाओ पम्पा नाम सरवर है जहाँ । आप से सुप्रीव मिल कर सब बयाँ कर देंगे हाल, गिर गयी पैरों में उनके और छोड़ी अपनी जाँ । नीच थी वह लेकिन उसको मिल गया ऊँचा मुकाम, और मर कर हो गयी वह सीधी जन्नत को रवाँ । राम और लक्ष्मण वहाँ से भी रवाना हो गये, राह में किस्से जुदाई के वो करते थे बयाँ । लक्ष्मण देखो कि यह वन किस क्रदर शादाब है, सब परिन्दे जानवर जोड़े से फिरते हैं यहाँ । वो बुरा कहते हैं मुझको देख कर तनहाँ मुझे, किस तरह अफ़सोस की जा है यह बेशकओगुमाँ । हमको आते देख कर जो भाग जाते हैं हिरन, इस तरह उनको दिलासा दे रही है हिरनियाँ । खौफ़ क्या है तुम तो असली हो, न इनसे कुछ डरो, ये तो सोने के हिरन के वास्ते आये यहाँ । अपनी माताओं को रख कर साथ अपने किस तरह, फिर रहे बेखौफ़ जंगल में है देखो हाथियाँ । गोया मुझको हो हिदायत मर्द को लाजिम है यह, वह कभी छोड़े न औरत को बगैर निगहबाँ । शास्त्र से खूब वाकिफ़कार को भी चाहिए, देखता उसको रहे इसमें—है मुजमिर खूबियाँ । लाख सेवा तुमने राजा की अदा की हो मगर, उसको अपने बस में समझो है यह मुमकिन ही कहाँ । लाख औरत को कोई कब्जे में रखता हो मगर, बदचलन औरत कभी कब्जे में रहती है कहाँ । शास्त्रों पर और राजा पर भी कब्ज़ा है मुहाल, है यही दस्तूरे दुनिया है यही तरजे जहाँ । भाई देखो ऋतु वसन्ती है यह कैसी दिलफ़िजा, साथ सीता के न होने से वह रीनक ही कहाँ । दिल मेरा बेचैन है तनहा में फिरने के सबब, फिर भी कुछ हिम्मत है तुम हमरह जो हो मेरे यहाँ । झाड़ देखो किस तरह शादाब हैं फल-फूल से, देख कर जिनको हो दिल ठंडा खुशी हो बेगुमाँ । कूकती कोयल हैं वन में गूँजते मोर और चकोर, बोलते तोते कबूतर, अपनी-अपनी बोलियाँ । है वह सब सामान स्वाहिश के बढ़ाने के लिए, कैसे भौरे हैं बजाते जा रहे शहनाइयाँ । और यह ठंडी हवा भी किस क्रदर है दिल फ़रेब, क्यों न वह दीवाना हो हर शख्स जो देखे सर्माँ । जो कि क़ाबिल है वही बचता है ऐसे वक़्त में, पैर में लगजिस नहीं आती है उसके बेगुमाँ । शाहवत और गुस्सा और लालच हैं मुसीबत तीन ये, संत भी जिसकी वजह से सहते हैं सखाइयाँ ।

सहवते इन्सान का दारोमदार औरत पर है, हिंस है मन्शाए महवस और गुस्सा बरजबाँ। फिर वहाँ से राम और लक्ष्मण रवाना हो चले, ताल था पम्पा जो नामी दोनों ये पहुँचे वहाँ। जैसे संतों का हो दिल वैसे ही पानी साफ़ था, चार जिसके घाट थे जिनकी कहूँ क्या खूबियाँ। दानी पीने के लिए आते जहाँ मोरो मलाव, जिस तरह दानी के घर पर हाँ इकट्ठे मुफ़लिसाँ। आड़ से पत्तों की पानी भी नज़र आता न था, जैसे माया के सबब भगवान होता है निहाँ। धार्मिक जो लोग रहते हैं हमेशा शाद काम, ऐसे ही मसरूर रहती शाद थी सब मछलियाँ। वे कमल अक्सांम के, भौरे भी करते थे गुंजार, हंस भी और जल के भुंगे बोलते थे बोलियाँ। चक्रवाक हैं और बगुले भी हैं और दीगर तऊर, चहचहाते फिर रहे हैं मैं कहे क्या-क्या बयाँ। झील के नज़दीक मुनियों का बना था आश्रम, आम, चम्पा, ढाक कटहल के दरख्त ऊगे जहाँ। फूल पत्तों से भरे थे और हरे थे झाड़ सब, और ठण्डी-ठण्डी चलती थी हवा धीमी वहाँ। ध्यान मुनियों का भी बाक़ी रह नहीं सकता था जब, कोयलें करती थीं कू-कू और होती नग्माख्बाँ। झाड़ मेवादार ऐसे झुक गये थे बोझ से, जिस तरह फँयाज घन पा कर है झुकता बेगुमाँ। राम ने तालाब देखा और बेहद खुश हुए, और किये स्नान दोनों और फिर बैठे वहाँ। कुछ कथाएँ राम कहते जा रहे लक्ष्मण से थे, सब मुनि दर्शन को आये और नारद भी वहाँ। बैठ कर नारद जी यों कहने लगे—ऐ राम जो, एक वर मैं माँगता हूँ दीजें मुझको बेगुमाँ। नाम तो भगवान के लेने को है यों सैकड़ों, राम जो है नाम यह सब पर रहे फ़ौकुन बयाँ। जिसके जपने से अजाब इन्सान के सब छूट जाएँ, और मुसीबत का न कुछ बाक़ी रहे नामोनिशाँ। आपकी भक्ति हमेशा पूर्णिमा की रात हो, जगमगा उठें इसी एक नाम से दोनों जहाँ। राम जो है नाम वह मानिन्दे यह रौशन रहे, दूसरे जो नाम हैं मानिन्दे हों सैयार गाँ। जिस तरह चाहा मुनि ने वर उन्हें वैसा मिला, पा गये वह दिल की इच्छा हो गये वो शादमाँ। फिर मुनि ने उनसे पूछा यह मुझे बतलाइए, आपका मुझ पर करम है आप मुझ पर मेहरबाँ। एक दफ़ा मैं शादी करने के लिए तैयार था, क्यों रुकावट आपने डाली थी उसके दमियाँ। यों जवाब उनको मिला मुझ पर भरोसा जो करे, मैं मुहाफ़िज उसका रहता हूँ हमेशा निगहबाँ। जिस तरह बच्चा पकड़ ले आग को या साँप को, दौड़ कर उसको बचा लेती हैं जल्दी उसकी माँ। जब बड़ा होता है बच्चा माँ को उससे प्यार है, लेकिन उसकी फ़िरक़ अब उतनी नहीं रखती है माँ। वह जो ग्यानी है उसे अपने ही बल का जोर है, और सेवक को फ़क़त मेरा ही है एक आस्ताँ। जोश और गुस्सा तो दोनों ही में रहता है मगर, इनसे बचने की ममासिल दोनों सूरत हैं कहाँ। जो है ज्ञानी अपने बल पर उनसे बच जाता है खुद, भक्त को इनसे बचाना मुझको है ऐ नुक्तादाँ। सहवतो गुस्सा और लालच इश्क हो या हो घमंड, यह है सब तक़लीफ़दे और यह है सब ईज़ारसाँ। इश्क गोया एक जंगल है तो औरत है बहार, और जप-तप के सुखाने के लिए फ़सले खिजाँ। हिंसोँ सहवत और गुस्सा हैं बुरी ये आदतें, औरतों ही से बढ़ा करती हैं, होता है जियाँ। धर्म के जो काम हैं वह इससे जल जाते हैं सब, पैर में हिंस और लालच की हैं पड़ती बेड़ियाँ। पाप के उल्लू के खातिर यह अँधेरी रात है, अक्ल ताक़त और सचाई हैं ये गोया मछलियाँ। और बदज़ीरत तो होती है बड़ी तक़लीफ़दे, इसलिए शादी तुम्हें होती न थी राहतरसाँ। सुनके ये अल्फ़ाज नारद जी का दिल खुश हो गया, दिल में यह कहने लगे मालिक है कितना मेहरबाँ। ऐसे मालिक को नहीं जो याद करता है कभी, कैसे बस्तावर वह होगा कैसे होगा कामराँ।

फिर कहा नारद ने हो कर बाअदब ऐ राम जी, अजरहे लुत्फो करम संतों के गुण कीजै बयाँ । राम कहने लग गये कहता हूँ मैं संतों के गुण, जिसके कारण उनके बस में मैं हूँ रहता बेगुमाँ । बड़ विकारों से वो रहते हैं हमेशा दूर-दूर, गरज और लालच दगा का हो नहीं नामोनिशाँ । खुश मित्राज ओ साफ़ दिल हो और सच्ची राह पर, पंडितो जोगी भी हो वह और शायर बेगुमाँ । वह न हो मगरूर साबिर भी हो बाअखलाक़ हो, धर्म का पाबन्द भी हो और उसका क़द्रदाँ । वह अलग रहते हों दुनिया के बखेड़ों से मुदाम, उनकी कटती हमेशा मेरी धुन के दर्मियाँ । ग़ैर की खूबी हैं सुनते अपनी सुनते ही नहीं, वह कभी इन्साफ़ से हटते नहीं हैं बेगुमाँ । नर्म दिल होते हैं सबसे प्यार रहता है उन्हें, जप व तप और बरत की करते हैं वो पाबन्दियाँ । वो गुरु की और ब्राह्मण की भी सेवा में रहें, दान की रक्षा समाँ की उनमें हो सब खूबियाँ । ज्ञान से वाकिफ़ हों और वैराग्य के पाबन्द हों, भूल कर भी वह बुराई पर कभी चलते कहाँ । दूसरों की वो भलाई में लगे रहते हैं खुद, याद में भगवान् की रहते हैं हरदम शादमाँ । सरस्वती भी संत की तारीफ़ कर सकती नहीं, संत की तारीफ़ की जाये ये मुमकिन है कहाँ । सुन के यह नारद हुए खुश, पैर पड़ कर राम के, हो गये उस जाय से ब्रह्मलोक को वापस रवाँ । राम लक्ष्मण भी वहाँ से और आगे बढ़ गये, था ऋषि पुक़ कोह जिस जा दोनों वे पहुँचे वहाँ । कोह पर सुग्रीव रहते थे और उनके सब वज़ीर, देखा उन लोगों ने आते हैं इधर दो पहलवाँ । यों कहा हनुमान से सुग्रीव ने तुम जल्द जाओ, और पता इसका लगाओ, ये हैं अब जाते कहाँ । ये अगर बाली की जानिब से यहाँ हैं आ रहे, तुम इशारे से नज़र के मुझ से कर देना बयाँ । छोड़ कर इस कोह को जल्दी चला जाऊँगा मैं, मुझमें हिम्मत है न लड़ने की न है ताबो तवाँ । ब्राह्मण का भेष बदले और गये हनुमान जी, देख कर वह राम को गरदन झुकाये बेगुमाँ । और पूछा हाथ जोड़े कौन हैं आप ऐ हुज़ूर, किसलिए जंगल में दोनों आप फिरते हैं यहाँ । आपका नाजुक बदन है खूबसूरत आप हैं, सह रहे है आप क्यों जंगल में ये दुश्वारियाँ । ब्रह्मा विष्णु शिव से हैं या नरो नारायण हैं आप, या कि हैं भगवान् इन्साँ बन के यह जलवाकुनाँ । राम बोले राजा कोशल राज के लडके हैं हम, बाप के अहक़ाम से हम वन को आये हैं यहाँ । नाम हैं राम और लक्ष्मण और दोनों भाई हैं, साथ थीं बीबी भी मेरी जानकी आरामेजाँ । राक्षस उनको चुरा कर ले गया जंगल से है, हम उन्हीं को ढूँढ़ते-फिरते यहाँ हैं, मेहरबाँ । हमने अपना हाल सारा कह दिया है आप से, आप भी ऐ ब्राह्मण कुछ हाल कीजेगा बयाँ । गिर गये पैरों में हनुमत और कुछ कहते न थे, और उन्हें पहचान कर बेहद हुए वह शादमाँ । यह समझ कर अपने मालिक की चरण सेवा हुई, राम से हनुमान यों करने लगे अर्जेंबयाँ । मैंने जो कुछ हाल पूछे वह तो मेरा फ़र्ज था, मुझसे क्यों हो पूछते जब आप पर है सब अयाँ । आपकी करनी से मैं तो इस क़दर मबहूत हूँ, अपने मालिक को नहीं पहचान सकता बेगुमाँ । मैं हूँ नादाँ बेसमझ भी और दिल का हूँ बुरा, आप भी मुझको हूँ भूले किसलिए ऐ मेहरबाँ । सच हूँ कहता मैं भजन से हूँ नहीं वाकिफ़ मगर, आपका जब है भरोसा फिर मुझे डर है कहाँ । अपने असली रंग में फिर आ गये हनुमान जी, गिर गये पैरों पे उनके खो दिये ताबोतवाँ । राम ने उनको उठाया और गले उनसे मिले, और कहा हनुमान तुम मुझसे न हो कुछ बदगुमाँ । है मुहब्बत मुझको तुम से बढ़ कर लक्ष्मण से कहीं, अपने सेवक पर हमेशा मैं हूँ रहता मेहरबाँ । राम के सुन कर वचन हनुमान बेहद खुश हुए, बसवसा जाता रहा और हो गये वो शादमाँ ।

फिर कहा ऐ नाथ यह जो सामने है एक पहाड़, राजाए सुग्रीव वानरराज रहते हैं यहाँ। आप उनसे गर मिलें अरु करें कुछ उनकी मदद, वो तलाशे जानकी में भेज देंगे टोलियाँ। इस तरह समझा के उनको राम और लक्ष्मण को भी, अपने काँधे पर बिठा कर हो गये फ़ौरन रवाँ। देख कर राम और लक्ष्मण को हुए सुग्रीव खुश, और बग़लग़ोरी हुई दोनों से बेशक़ोगुमाँ। कह दिया हनुमान ने दोनों तरफ़ का हाल कुछ, अहदो पैमाँ भी कराया, आग रख कर दमियाँ। दोस्ती के अहदों पैमाँ के मरातिब तँ हुए, लक्ष्मण ने पूरा किस्सा कर दिया उनसे बयाँ। जानकी के ज़िफ़ से सुग्रीव रंजीदा हुए, और कहा ऐ नाथ सीता जी मिलेंगी बेगुमाँ। मैंने देखा एक औरत को लिये जाता था मर्द, एक दिन बैठा था मैं जब मय वज़ीरों के यहाँ। देख कर हमको पुकारा राम का लेती थीं नाम, और कुछ कपड़े भी फेंके, थी बसद आहोफ़ुगाँ। राम ने जब उनको माँगा ला दिया सुग्रीव ने, ले के उनको राम की आँखों से आँसू थे रवाँ। फिर कहा सुग्रीव ने हाज़िर हूँ मैं इमदाद को, वानरों को मैं अभी करता हूँ हर जानिब रवाँ। राम ने पूछा कि तुम किस वास्ते जंगल में हो, क्या सबब है इसका तुम जल्दी करो मुझसे बयाँ। यों कहा उसने कि बाली और मैं दो भाई हैं, थी मुहब्बत हृद से भी बढ़ कर हमारे दमियाँ। एक दफ़ा मायावी आया था हमारे शहर में, और गर्जा इस तरह जैसे कोई शेरजियाँ। देख कर उसकी यह हिम्मत क्रोध आया भाई को, और दौड़ा उसके पीछे मेरा भाई पहलवाँ। डरके मायावी जो भागा मैं भी पीछे चल दिया, और मायावी छुपा दर्रे के जाके दमियाँ। भाई भी अन्दर गया और मुझसे यह कह कर गया, एक पल्लवाड़ा रहो तुम मुन्तज़िर मेरे यहाँ। मैं अगर वापस न आऊँ यह समझना मर गया, इन्तिज़ार मैंने किया भाई का महीने भर वहाँ। देखता क्या हूँ कि नाला बह रहा है खून का, मर गया बाली मैं समझा कुछ न था शक़ओगुमाँ। अब वह आ कर मुझको भी मारेगा, ऐसा सोच कर, रख दिया एक शिल गुफ़ा पर और हुआ फ़ौरन रवाँ। घर को जब वापस मैं आया जमा थे सारे वज़ीर, बोले यों लाज़िम हुकूमत के लिए हैं हुक्मराँ। मुझको गद्दी पर बिठाया हो बइसरारे तमाम, और मैं तख्ते हुकूमत पर हुआ जलवाकुनाँ। मार कर बाली उसे जब अपने घर वापस हुआ, मुझको सिंहासन पर देखा, हो गया गुस्साकुनाँ। वह यह समझा मैंने शिल को इसलिए था रख दिया, वह अगर मर जाए तो मैं बन सकूँगा हुक्मराँ। इस तरह जब दिल में उसके बैर पैदा हो गया, मुझको मारा इस क्रुदर बाकी न थे ताबोतवाँ। मेरी औरत को भी छोना घर से बाहर कर दिया, फिर रहा जंगल में हूँ मैं होके अब बेखान्दाँ। सुन के यह रघुवीर के भी दिल में कुछ जोश आ गया, और कहा बाली को मैं मारूँगा बेशक़ोगुमाँ। दोस्ती तो है वही अपनी मुसीबत भूल कर, दोस्त की तकलीफ़ में हलकी करें दुश्वारियाँ। दोस्ती करते वो क्यों हैं जब न हो अक्लोफ़हम, मित्रकी करते रहो हरदम अयाँ तुम खूबियाँ। देने-लेने में न करना तुम कभी शक़ओशुबह, और मुसीबत में करो सौ बार तुम कुर्बान जाँ। जिसका जाहिर दूसरा हो और बातिन दूसरा, मित्रसे ऐसे रहो तुम दूर मेरे भाई जाँ। बेसमझ नीकर हो या राजा कोई कंजूस हो, और धोखेबाज़ औरत या हो बोगजी मेहरबाँ। हैं ये चारों बिल यकीं इनसान को तकलीफ़दे, मैं मदद पर हूँ तुम्हारे तुम न हो अब नीमजाँ। राम ने जब यह कहा सुग्रीव ने उनसे कहा, अर्ज करता हूँ कि बाली भी बड़ा है पहलवाँ। ताड़ का यक़ झाड़ भी बतलाया उसने राम को, दुन्दभी जो राक्षस था उसकी सारी हड्डियाँ। राम ने फ़ौरन गिराया उनको अपने हाथ से, हो गया हैरान वह देखा जो यह ताबोतवाँ।

गिर गया पैरों पर फ़ौरन और कहा मालिक मेरे, मैं हूँ सेवक आपका हों आप मुझ पर मेहरबाँ। लोग कहते हैं कि सेवा आपकी करते हैं जो, सुखरू रहते है हरदम और हरदम कामराँ। बाली के बाअस तुम्हारे मुझको दर्शन मिल गये, अब अदावत का नहीं बाक़ी रहा शानोगुमाँ। अर्ज मेरी है यही मैं छोड़ कर संसार सब, आपकी भवती हो मालिक मेरे दिल के दमियाँ। राम ने जब यह सुना उनसे तो यों कहने लगे, कह दिया जो मैंने वह होता नहीं है रायगाँ। राम जाने लग गये सुग्रीव को हमराह ले, दे के हिम्मत उनको भिजवाया है बाली के यहाँ। राम की हिम्मत से ललकारा वहाँ सुग्रीव ने, और बाली भरके गुस्से में हुआ फ़ौरन रवाँ। उसकी औरत ने बड़ी मिन्नत की, समझाया उसे, और कहा राम और लक्ष्मण है ये दोनों पहलवाँ। यों कहा बाली ने प्यारी, राम है मुंसिफ़ मिजाज, और गर मारें भी मुझको तो मैं हूँगा कामराँ। कहके यह आगे बढ़ा सुग्रीव से लड़ने लगा, मार कर घूँसा उसे एक, कर दिया बस नातवाँ हो गया बेचैन और सुग्रीव मैदाँ से हटा, और बोला राम से, बाली बड़ा है पहलवाँ। राम ने उससे कहा भाई हो तुम हम शकल दो, फ़क़ कुछ भी है नहीं उसके तुम्हारे दमियाँ। इसलिए मारा न उसको अब तुम्हें हरगिज कभी, कुछ नहीं तकलीफ़ ही होगी नसीब दुश्मनाँ। हाथ फेरे जिस्म पर जब, हो गया वह ताजातर, एक गले में फूल की माला भी डाली बेगुमाँ। उसकी हिम्मत को बढ़ा कर फिर उसे वापस किया, भाई दोनों भिड़ गये फिर जैसे दो शेरजियाँ। झाड़ की एक आड़ से सब देखते थे रामचन्द्र, जब यह देखा हो गया सुग्रीव है कुछ नातवाँ। राम ने एक बाण मारा जो कि बाली को लगा, वह ज़मीं पर गिर पड़ा बेताब हो कर नागहाँ। देख कर वह राम को फिर ध्यान करने लग गया, दिल में उलफ़त थी, मगर शिकवा शिकायत बरज़बाँ। आप तो परमात्मा हो और मर्यादा पुरुष, इस तरह छुप कर मेरी क्यों जान ले ली नागहाँ। किसलिए सुग्रीव प्यारा और मैं बैरी बना, क्या सबब इसका हुआ कुछ बात तो कीजे बयाँ। राम ने उससे कहा असबाब सुन ऐ नाममझ, जो नज़रबद रख के होता चार से है बदगुमाँ। छोटे भाई की हो बीबी या बहू, बेटी, बहन, मारना उसको है वाजिब कुछ नहीं इसमें ज़ियाँ। तू बड़ा मगरूर है सुग्रीव को समझा नहीं, तेरी औरत ने भी समझाया, मगर समझा कहाँ। यों कहा बाली ने कह सकता हूँ मैं क्या आप से, आपके हाथों से मैं मर कर रहा पापी कहाँ। फेर कर तब हाथ सर पर उसके बोले रामचन्द्र, तुम अगर चाहो तो मैं देदूँ हयाते जावेदाँ। जो मुनि जप तप हैं करते और भजन करते मुदाम, वक्ते आखिर राम आता ही नहीं है बरज़बाँ। आज वह खुद सामने मेरे यहाँ मौजूद हैं, फिर-कभी वक्ते इससे बेहतर मुझको मिलता ही कहाँ। आपने शायद यह समझा जिन्दगी चाहूँगा मैं आपके दर्शन से मैं अब हो गया हूँ कामराँ। कीजिए मुझ पर इनायत और यह बर दीजिए, हर जनम में राम मेरे दिल में हों जलवाकुनाँ। मेरा लड़का है यह अंगद इस पे हो चरमे करम, हाथ में ले लीजे इसको, इसके रहिए पासबाँ। हाथ जोड़े, यह कहा बाली ने और आराम से, हो गयी परवाज़ रूह और उड़ गया बस मुर्ग़ेजाँ। लोग सब रोने लगे बाली का मरना देख कर, और तारा उसकी बीबी हाँ गयी मातमकुनाँ। रामने उससे कहा यह पाँच तत्वों का है जिस्म, पृथ्वी, जल, अग्नि, और आकाश, वायु बेगुमाँ। जिसके बायस रो रहे हो सामने मौजूद है, जीव तो है नित्य फिर क्यों रो रहे हो तुम यहाँ। इस तरह कहने से उसको ज्ञान पैदा हो गया, गिर गयी चरणों में, उसके मिट गये वहमोंगुमाँ। राम से ले कर इजाजत बाली के मृत्यु करम, सब किये सुग्रीव ने हस्वे रिवाजे खानदाँ।

जब हुई उससे फ़रागत यों कहा लक्ष्मण से राम, जाके तुम सुग्रीव को कर दो यहाँ का हुक्मराँ। जाके लक्ष्मण शहर में लोगों को सब बुलवा लिए, ताजपोशी हो गयी सुग्रीव की बाइज्जोश। और वली अहदी में अंगद का तकहर हो गया, इस तरह सब हो गये मसरूर खुरंम शादमाँ। राम ने सुग्रीव को बुलवा के अपने पाम फिर, सब फ़रायज हुक्मरानी के किये उनसे बयौ। और कहा चौदह बरस तक शहर में जाना नहीं, अब है बरखा ऋतु इसी टोले पे रहता हूँ यहाँ। ले के अंगद को करो तुम हुक्मरानी मूलक की, काम को मेरे नहीं तुम भूल जाना बेगुमाँ। आ गये सुग्रीव वापस राम पर्वत पर रहे, एक गुफ़ा अच्छी थी पहले ही से उसके दमियाँ। राम जबसे उस जगह रहने लगे जंगल तमाम, ही गया सरसब्ज और छाया बहारे जावेदाँ। मोर भरे और पपीहे और दीगर जानवर, बोलते फिरते थे हरसू अपनी-अपनी बोलियाँ। एक पत्थर था सुफ़ीद उस पर किसी दिन बैठ कर, राम लक्ष्मण से कथाएँ कर रहे थे कुछ बयौ। और कहा बादल से कैसे नाचते हैं मोर यह, भगत से जिस तरह बैरागी है होता शादमाँ। यह जो बिजली है चमकती—है नहीं इस में कयास, जैसे बद के दिल में रह सकती नहीं है नेकियाँ। बादल आ जाते हैं जब नीचे बरसते हैं जरूर, जैसे विद्या पा के हो जाते निमर हैं इल्मदाँ। चोट बूँदों की हैं सहते इस तरह यह कोह सब, जिम तरह है संत भी सहते बुरों की गालियाँ। जिस तरह छोटी नदी जाती किनारे तोड़ कर, करते हैं कमज़र्ज़ भी जर पाके यों गुस्ताखियाँ। गिर के जो पानी जमीं पर हो गया है गंदला, जैसे माया में लिपट जाते कभी हैं साधुवाँ। क्रतरा-क्रतरा हो रहा है जमा यह तालाब में, जैसे अच्छे गुण चले आते हैं सज्जन के यहाँ। नदियाँ बह कर जो जम होती हैं अन्दर बहर के, ईश्वर मिलने से होती है मुनवर अपनी जाँ। सब्ज घास ऊपर है, नीचे की जमीं दिखती नहीं, जिस तरह साधू पे गालिब आ गये पाखंडियाँ। चौतरफ़ मँडक है टर-टर कर रहे इस तरह अब, जैसे मकतब में हैं बच्चे वेद पढ़ते वेदखुवाँ। और झाड़ों पर नये पत्ते हैं कैसे खुशनुमाँ, ज्ञान पा कर जिम तरह साधू है होता शादमाँ। हो गये वे बयौ है देखो जवासा और मदार, जैसे अच्छे राज में चलती बुरों की है कहाँ। दूँडने पर भी नहीं मिलता पता है खाक का, जैसे गुस्से से रखा करती हैं दूरी नेकियाँ। सब्ज धानों से है खेती लहलहाती जिस तरह, जैसे उपकारी पुरुष की संपत्ति हो बेगुमाँ। जोर की बारिश से बयारी खेत की टूटी हुई, जैसे आज्ञादी से बढ़ जाती हैं जन की शोखियाँ। घास कूड़ा फेंकते बाहर किसान हैं खेत के, फिर लालच और घमंड जैसे निकालें इल्मदाँ। है नज़र आता नहीं देखो कहीं भी चक्रवाक, जैसे कलजुग से निकल जाती है सारी खूबियाँ। जो जमीं बंजर है बरखा उम में होती है जरूर, घास तक का भी नहीं होता वहाँ नामोनिशाँ। जैसे भक्तों के दिलों में हो-नहीं सहवत का जोर, इसको भी ऐसा ही समझो तुम मेरे ऐ भाई जाँ। फिर रहे धरती पर हैं खूश मोर और सारे परिन्द, जिस तरह स्वराज्य मिलने पर रियाया शादमाँ। जोर से चलती हवा हो और बादल हों नहीं, नेकियाँ शायब हों, पैदा जब हो नंगे खानदाँ। बादलों से ही कभी परदे में आती रोशनी, और कभी बादल है छुपते और सूरज हो अयाँ। इस तरह सोहवत से बद की ज्ञान भी बरबाद हो, जब मिलें अच्छे तो होता ज्ञान दिल के दमियाँ। आ गयी सदी की ऋतु बरसात अब जाने को है, घास छाया है जमीं पर और बारिश है रवाँ। राह का जल सूख जाता है उदय हो जब अगस्त, सब से लालुच की जैसे मूख जाती डालियाँ। संत का दिल जिस तरह हो साफ़ हिसाँ आस से, साफ़ और शफ़ाफ़ नदियों में भी पानी है रवाँ।

सूखता जाता है पानी इस तरह तालाब में, जैसे जानी से छुटी जाती हो दुनियाँ बेगुमाँ। जब ऋतु आयी शरद की आ गये खंजन मयूर, वक्त पर जैसे फ़राहम हों चली हों नेकियाँ। है न मिट्टी और कीचड़ और जमीं है पाक साफ़, क्यों न हों सब काम अच्छे नेक हों जब हुक्मराँ। जैसे दीलत की कमी से लालची हो मुजतरिब, आब कम होने से बेकल हो रही हैं मछलियाँ। आसमाँ है साफ़ बंबादल के ऐसा खुशनुमाँ, छोड़ कर दुनिया को जैसे भक्त रहता शादमाँ। थोड़ी-थोड़ी हो रही बरखा कहीं है गाह-गाह, बाज ही जैसे कि होते हैं जहाँ में रम्जदाँ। गहरे पानी में जो रहती मछलियाँ हैं ऐसी शाद, याद से भगवान की जैसे हो जोगी शादमाँ। खिल गये तालाब में कैसे कमल है खुशनुमाँ, जैसे निर्गुण जाति ब्रह्मा है सगुण हो कर अयाँ। गूँजते ऐसे हैं भँवरे और करते हैं गुँजार, और परिन्दे मुखतलिफ़ कहते हैं अपनी बोलियाँ। नीमजाँ होता है चकवा रात की जुलमत से यों, ग़ैर को दीलत पे जैसे लालची हो खस्ताजाँ। है पपीहा प्यास से इस तरह बेकल हो रहा, जैसे बदगो शिव का कोई चैन पाता है कहाँ। शरद ऋतु की हो जो गर्मी सूख लेता चाँद है, जब हो दर्शन संत का फिर पाप रहता है कहाँ। किस तरह हैं घूरते वह चाँद को देखो चकोर, भक्त जैसे देख कर भगवान को हो शादमाँ। मच्छर और कीड़े हुए जाड़े से ऐसे बेपता, दुश्मनी से ब्राह्मण के होवे शारत खानदाँ। कीड़े जो बरसात से निकले जमी पर थे कहीं, हो गये सरदी के बायस वह भी ग़ायब नागहाँ। जैसे मिल जाये कोई सत गुरु किसी जाहिल को भी, हिसं गुस्सा और घमंड उसके न क्यों हो रायगाँ। मौसमे बारिश गया सरदी का मौसम आ गया, यह नहीं मालूम मेरी प्यारी सीता है कहाँ। इस क़दर मालूम हो ले है कहाँ वह आज कल, एक पल भर में उसे मैं ले के आऊँगा यहाँ। हो अगर जिन्दा कहीं भी ले के आऊँगा उसे, कुछ नहीं इसमें तआम्मुल कुछ नहीं इसमें गुमाँ। हो गया सुग्रीव भी बेफ़िक्र अब इस काम से, मिल गयी दीलत भी जन भी बन गया है हुक्मराँ। मैंने मारा जिस तरह बाली को था इस बाण से, कल उसे मारूँगा इसमें कुछ नहीं शक्कोगुमाँ। देखा जब लक्ष्मण ने अपने भाई का गुस्सा जो यह, हो गये तैयार ले कर हाथ में तीरोकमाँ। राम ने देखा कि लक्ष्मण हो गये हैं मुस्तइद, इस तरह समझाया उनको और कहा ऐ भाईजाँ। मारना हरगिज़ न तुम सुग्रीव को ऐ लक्ष्मण, खौफ़ दिखला कर उसे बस जल्द ले आओ यहाँ। इस तरफ़, हनुमान ने सोचा कि असाँ हो गया, जाके यों सुग्रीव से की अर्ज ऐ शाहेशाहाँ। आप जो गाफ़िल हैं बैठे यह मुनासिब है नहीं, यह न हो जाए कि बदले रंग कोई आसमाँ। होके खायक़ यों कहा सुग्रीव बेशक भूल है, जितने भी वानर हैं उन सबको तलब कर लो यहाँ। और मुनादी यह करो पन्द्रह दिनों में जो न आये, क़त्ल कर दूँगा उसे मैं अपने हाथों बेगुमाँ। जमा सब वानर हुए हनुमान ने सबसे कहा, उनको समझा कर बुझा कर कर दिया सबको रबाँ। शहर में जिस वक्त्त यह सब हो रहा था इन्तेज़ाम, लाल-पीले हाँ के लक्ष्मण आ गये फ़ौरन वहाँ। और कहा मैं खाक कर दूँगा तुम्हारे शहर को, सुनके यह खायक़ हुए सब खो गये ताबोतवाँ। देख कर यह हाल अंगद उनके पैरों पर गिरे, और अब तक जो हुआ था सब किया उनसे बर्बा। डर गये सुग्रीव बेहद उनका गुस्सा देख कर, और कहा हनुमान से तारा व तुम जाओ वहाँ। जाके तारा और हनुमान इत्तेजा करने लगे, कर दिया सब हाल जाहिर कुछ नहीं रक्खा निहाँ। उनको समझा कर मना कर महल में ले आये साथ, और की खातिर भी जैसी चाहिए शायानेशाँ। आके फिर सुग्रीव भी पैरों पर सर को रख दिये, और लक्ष्मण भी मिले हो कर निहायत शादमाँ।

अर्ज की सुग्रीव ने यों ऐ मेरे मालिक मुनी, भूलते हैं चैन में सारे मुनी भी बेगुमाँ । मैं तो हूँ नाचोड़ इन्साँ फँस गया इस जाल में, इससे मैं बच कर रहूँ मुमकिन यह मुझ से है कहाँ । लोग जो भेजे गये थे चौतरफ़ दरियापुत को, तब किया हनुमान ने वह हाल सब उनसे बयाँ । लक्ष्मणो सुग्रीव और अंगद चले सब मिल के तब, उस जगह पर रामचन्द्र की सुकूनत थी जहाँ । हाथ जोड़े अर्ज की सुग्रीव ने फिर राम से, कुछ नहीं तक्रसीर मेरी बात है बिलकुल अयाँ । इश्क वह मूँजी बला है लोग फँस जाते हैं जब, उससे छुटकारा मिले जल्दी यह मुमकिन है कहाँ । हिरस और लालच भी होती है बलायें बंद ज़रूर, इनसे जो बच जाए वह होता है बेशक शादमाँ । मैं तो एक बन्दर हूँ अदना फँस गया इस जाल में, आपकी चश्मेकरम से यह मिट्टे बेगुमाँ । राम ने सुग्रीव को आगे बिठा के यों कहा, भरत से बढ़ कर तुम्हें मैं चाहता हूँ भाईजाँ । अब वही तदवीर कीजे जिससे सीता मिल सके, इस तरह दोनों में बातें हो रही थी कुछ बयाँ । मुखतलिफ़ अस्मात से वानर जमा होने लगे, इस तरह आने लगे जैसे कोई मौजे रवाँ । रामचन्द्र की कदमबोसी बजा लाते थे वह, राम भी मिलते थे सबसे होके बेहद शादमाँ । जब खड़े सब हो गये तब यों कहा सुग्रीव ने, बात मेरी अब सुनें मेरे बहादुर पहलवाँ । करम है यह राम का चारों तरफ़ तुम जाओ अब, और पता लाओ कि रहती जानकी जी हैं कहाँ । एक महीना बाद जो आये विला कोई खबर, क़त्ल कर दूँगा उसे मैं खुद विला शक्कोगुमाँ । जब किया सुग्रीव ने ऐलान सबके सामने, सुनके यह अहकाम वानर हो गये हरमू रवाँ । हुक्म पर सुग्रीव के हमराह अंगद आ गये, जामवन्तो नीलो नल हनुमानो दीगर पहलवाँ । और कहा जा कर दकन में तुम करो सब जुस्तजू, और पता सीता का लाओ पूछ कर सबसे वहाँ । जी लगा कर काम करना राम का यह काम है, जोकि लाज़िम हर तरह है फ़र्ज़े ऐने खादिमाँ । सब के पीछे जबकि हनुमान आ के आगे थे खड़े, राम ने सोचा कि इनसे काम होगा बेगुमाँ । हाथ से अपने अँगूठी एक निकाली इनको दी, और कहा, हर तरह तुम सीता को समझाना वहाँ । उनको इत्मीनान हो जाए कि मैं आता हूँ जल्द, मेरी ताक़त और सरवत उनसे तुम करना बयाँ । राम ने जब खास कर उनसे कहा अपना पयाम, खुद को खुश किस्मत समझ कर हो गये जल्दी रवाँ । ढूँढते जाते थे वह मिलते थे जो कुछ राह में, नदी और तालाब, जंगल दरें ओ कोहेगिराँ । राह में मिलता कोई गर राक्षस देते चपत, और मुनी मिलता तो उससे हाल करते सब बयाँ । प्यास होने लग गयी और हो गये सब बेकरार, और पानी का कहीं मिलता न था नामोनिशाँ । एक टीले पर चढ़े हनुमान, देखा चौतरफ़, एक विवर उनको नज़र आयी जमीं के दरमियाँ । नीचे टीले से उतर कर ले के सब को आने साथ, हो गये हनुमान दाखिल इस गुफा के दरमियाँ । देखते क्या हैं कि अन्दर एक है वाग्नीचा खूब, और एक तालाब है सङ्गे चमन के दरमियाँ । और उस तालाब के नज़दीक एक मंदिर भी था, बँठ कर करती थी पूजा-पाठ एक औरत वहाँ । दण्डवत सवने किया और उसने पूछा इनसे हाल, जो सबब आने का था वह कर दिया उससे बयाँ । उसने इनको दी इजाज़त फल भी खाने को कहा, पेट भर पानी पिया थे जितने यह तिसना वहाँ । उसने इन सबसे कहा तुम आँख बन्द अपनी करो, और बाहर इस गुफा से जल्द हो जाओ रवाँ । आँख जब खोली सबों ने हो गये हैरान सब, देखते क्या हैं, लबे दरिया है उनका कारवाँ । और वह औरत गई खुद रामचन्द्र जी के पास, उनकी सेवा और पूजा से हुई वह शादमाँ । वानरों को फ़िक्र थी वह, हो गयी मुद्दत तमाम, और पता सीता का मिलने का नहीं नामोनिशाँ ।

आबदीदा होके अंगद ने कहा अफसोस है, लौट कर जाए जो यों ही मौत है अपनी वहाँ। बाप के मरते ही मुझको मारते थे वह जड़र, राम ने मुझको बचाया कुछ नहीं शक्कोगुमा। सुनके यह अल्फाज अंगद के हुए वानर उदास, और आँखों से भी आँसु हो गये सबके रवाँ। वानरों ने यों कहा हिम्मत न हारें आप कुछ, हम पता ले कर ही वापस होंगे इस जा से रवाँ। जामवन्त ने होके अंगद से मुखातिब यों कहा, राम को इन्सान मामूली न समझो बेगुमाँ। है बड़ी क्रिस्मत हमारी उनकी सेवा मिल गयी, ऐसे अच्छे भाग्य के दुनिया में होते हैं कहाँ। कुछ तो क्रिस्से और कथाएँ कहके समझाया उन्हें, सुनता था संपाती यह सब, था जो दरें में निहाँ। बोला वह घर बैठे ही अच्छी मिली मुझको गिज्ञा, आके बाहर जब वह देखा सैकड़ों ही वानराँ। एक अरसे से मैं भूखा था, न खाने को मिला, एक दिन भी पेट भर के खाना मैं खाया कहाँ। आज खा जाऊँगा इनको पेट भर कर खूब मैं, खूबिये क्रिस्मत से मेरा रिजक आया है यहाँ। सबके सब वानर ये बातें गोध की सुन डर गये, और समझे मौत का हम बन गये हैं अब निशाँ। फिक्र में डूबे थे वानर सब, खसूसन जामवन्त, मसलिहत से यों कहा अंगद ने, वह क्रिस्मत कहाँ। ऐसा खुशक्रिस्मत जटायु था उसे हम क्या कहें, राम ही के काम में उसने गवाँ दी अपनी जाँ। गिद्ध ने जब यह सुना वह हो गया रंजीदा दिल, और आहिस्ता चला आया वह वानर थे जहाँ। गिद्ध आता देख कर डरने लगे वानर तमाम, उसने इनको दी तसल्ली ता मिटे वहमोगुमाँ। पूछा संपाती ने अपने भाई के मरने का हाल, जिस कदर थी क़ैफियत कर दी गयी उससे बयाँ। बोला वह मुझको किनारे ले चलो दरिया के तुम, ताकि अपने भाई को पानी मैं दे दूँ बेगुमाँ। इसके बदले में मैं कर दूँगा तुम्हारा एक काम, मैं बता दूँगा कि अब सीता जी रहती हैं कहाँ। जाके उसने दरिया पर भाई को दी तिलांजली, और फिर उसने किया अहवाल सब अपना बयाँ। एक दिन हम दोनों भाई उड़ गये सूर्ये फ़लक, सूर्य के नज़दीक पहुँचे जबकि दोनों थे जवाँ। शम्स की तेज़ी न सह कर हो गया वापस जटायु, और मैं मगरूर हो कर हो गया आगे रवाँ। मेहर की तेज़ी से मेरे जल गये सब बालोपर, गिर गया आखिर ज़मी पर चीख कर मैं नागहाँ। मुझको समझाया बहुत और दस्तगीरी मेरी की, चन्द्रमा नामी मुनी ने, जो कि रहते थे वहाँ। राम के भेजे हुए दूत आएंगे त्रेता में जब, उनसे मिलने पर तेरी दूर होंगी सब दुस्वाइयाँ। आएंगे वह देखने सीता को, तू देगा पता, तेरे पर आएंगे तब तू उड़ सकेगा बेगुमाँ। बात वह पूरी हुई है आज ही कहता हूँ अब, दिल लगा कर तुम सुनो सब मैं जो करता हूँ बयाँ। एक है त्रिकूट पर्वत उस पे है लंका बंसी, बेखतर बेखौफ़ रावण है वहाँ का हुक्मराँ। एक बागीचा है जिसका नाम रखवा है अशोक, सोचते कुछ जानकी बैठी हुई है अब वहाँ। जो नजर आता है मुझको देख सकते तुम नहीं, हर तरफ़ हो सकती है मेरी निगाहें जूफ़शाँ। अब जईफ़ी के सबब मैं हो गया माज़ूर हूँ, वर्ना करता मैं भी खिदमत आपकी बाक़बोज़ाँ। जोकि कर सकता हो सौ योजन की दरिया का उबूल, राम का यह काम कर सकता है ऐसा पहलवाँ। राम के तुम दूत हो हिम्मत न तुम हारो कभी, दिल लगा कर काम करना होगे बेशक कामराँ। इस क़दर कह कर वहाँ से गिद्ध वापस हो गया, वानरों ने अपनी क़ुवत और ताक़त की बयाँ। पार दरिया कर सकेगा यह कोई कहता न था, जामवन्त कहने लगे, मैं हो गया अब नातवाँ। पार दरिया को तो कर दूँगा कहा अंगद ने यों, वापसी मुमकिन नहीं, इस में है कुछ शक्कोगुमाँ। कहा जामवन्त ने तुम पार कर सकते हो, पर, किस तरह, हम तुमको भेजें तुम हो सबके क़त्बोज़ाँ।

फिर मुखातिब होके यों हनुमान से कहने लगे, किसलिए खामोश तुम बैठे हुए हो मेहरबाँ। तुम हो दानिशमन्द यकता और उड़ सकते हो खूब, जोरो ताकत में नहीं है कोई तुमसा पहलवाँ। कौन-सा वह काम है जिसको न कर सकते हो तुम, राम ही के काम को पैदा हुए हो बेगुमाँ। सुनते ही हनुमान उठे लाल चेहरा हो गया, और गरजे इस तरह जैसे कोई बकैतयाँ। और कहा मैं खेल ही में पार कर लूँगा समुद्र, मार कर रावण को मैं अफ़वाज ला लूँगा यहाँ। सिर्फ़ यह बतलाइएगा क्या मुझे करना है अब, जामवन्त ने तब मुखातिब हो के यों खोली जब्बाँ। सिर्फ़ इतना तुम करो सीता कहाँ है देख लो, और उनकी जो खबर हो लाके पहुँचा दो यहाँ। राम ही के हाथ से सब क़त्ल होंगे राक्षस, और सीता को वह वापस लाएँगे बाइज्जोशाँ। उनकी सब रूदाद दुनिया में जो लिक्खी जाएगी, लोग उसको पढ़ के होंगे शादमानो कामराँ। यों कहा हनुमान ने तुम मुन्तज़िर मेरे रहो, मैं खबर लाता हूँ इसकी और हुआ फ़ौरन रवाँ। एक टीले पर वह दरिया के उछल कर चढ़ गया, और फिर उस पर से कूदा जिस तरह बकैतयाँ। राह में मैनाक पर्वत पर जरा कुछ ठहर कर, राम का वह काम करने को हुआ फ़ौरन रवाँ। देवताओं ने यह सोचा इनकी कूवत देखना, किस क्रदर ताबो तवाँ हैं लेंगे इनका इस्तेहाँ। देख कर इनको कहा जिसने कि मैं खालूँ तुझे, इसलिए भेजे वह सुरसा को जो थी साँपों की माँ। यह कहा—मैं राम का जब काम करके आऊँगा, शीक से खाना मुझे तू सच मैं करता हूँ बयाँ। वह न सुन कर इनका कहना और बहुत इसरार की, जब हुए मजबूर बोलें, अभी खाले बेगुमाँ। जितना मुँह सुरसा ने खोला उससे यह दुगने हुए, थाख़िरस उसने किया मुँह अपना सो योजन अयाँ। जब बढ़ा मुँह उसका इतना जल्द अन्दर वह गये, और फिर मुँह से निकल आये वह बाहर नागहाँ। होके खुश उसने कहा, अब आजमायश हो चुकी, जिसके बाअस देवताओं ने मुझे भेजा यहाँ। अक्ल और ताकत का तुम में है खजाना बिलयकीं, इस तरह कह कर दुआ दी हो गयी वापस रवाँ। एक ओरत राक्षस दरिया के अन्दर थी मुकीम, जो परिन्दों को हवा में रोकती थी बेगुमाँ। रोक कर यों राह उनकी उनको खा लेती थी वह, रोक दी हनुमान को भी जब यह पहुँचा पहलवाँ। उसकी चालाकी यह जब हनुमान पर जाहिर हुई, मार डाला उसको फ़ौरन हो गये आगे रवाँ। पार दरिया करके, की तफ़रीह बन की जिस जगह, मुखतलिफ़ अस्ज़ार थे फल-फूल थे जिन पर अयाँ। एक छोटा-सा था टीला चढ़ गये उस पर ये जल्द, जिस जगह से कुछ नज़र आते थे लंका के निशाँ। क़िला था मजबूत उसमें इक था सोने का महल, और गली कूँचे बहुत ही खूबसूरत थे वहाँ। शहर बेहद खुशनुमाँ और लोग सब मशगूलेकार, फौज के थे दल के दल और थे बहादुर पहलवाँ। बाग़ था और थे कुएँ, तालाब, नहरें बेशुमार, औरतें नाज़ुकअदा जिन पर फ़िदा हो मर्दमाँ। लोह पैकर पहलवाँ सब थे गरजते मिसलेराद, और अखाड़ों में वह मिल कर लड़ रहे थे कुशितयाँ। खाते थे बक़रों को भैंसों को गधों को राक्षस, और बहादुर से बहादुर शहर के थे पासबाँ। खुद को छोटा-सा बना कर तब चले हनुमान जी, शंखनी एक नाम की दरबान रहती थी वहाँ। वह बोली बिन मुक्षसे पूछे तू कहाँ जाता है चोर, मैं तुझे खा कर मिटा दूँगी तेरा नामोनिशाँ। एक घूँसा उसको मारा वह ज़मीं पर गिर गयी, कुछ सँभल कर जब उठी करने लगी वह यों बयाँ। ब्रह्मा जी ने पहले ही पेशीनगौई की थी यह, मार से बन्दर की जब तू होगी बेताबोतवाँ। मुबतिका हो जाएगी आफ़त में कौमे राक्षस, खात्मा हो जाएगा मिट जाएगा उनका निशाँ। शीक से अब जाओ अन्दर और करो सब काम खूब, देख कर तुमको हुई है मैं निहायत शादमाँ।

शहर के अन्दर हुए हनुमान दाखिल इस तरह, देखते जाते थे वह बाजार में सारे मकान। महल में रावण के जब दाखिल हुए हनुमान जी, महवे हैरत हो गये देखी जो उसकी इज्जत। और रावण भी नजर आया उन्हें सीता हुआ, जानकी उनकी नजर आयी नहीं लेकिन वहाँ। दूसरा मंदिर उन्हें आया नजर एक खुशनुमा, हो नहीं सकती बयाँ हैं मुझसे उसकी खूबियाँ। धर्म के आसार उस घर में नजर आने लगे, जाबजा ये झाड़ तुलसी के मकान के दमियाँ। सोचने वह लग गये रहते यहाँ हैं राक्षस, धर्म के आसार कैसे देखता हूँ मैं यहाँ। जाग उठे फौरन विभीषण सो रहे थे महल में, राम का था नाम लब पर राम ही बिरदे जवाँ। उनके यह अल्फाज सुन कर हो गये हनुमान खुश, और समझा एक साधू मिल गया मुझको यहाँ। उनसे मैं मालूम कर सकता हूँ अब अहवाल सब, क्योंकि साधू से जहर पहुँचे, यह मुमकिन है कहाँ। ब्राह्मण का भेस बदला और दी आवाज उन्हें, सुन के यह आवाज अन्दर से वो आये नागहाँ। और कहा फर्माइए, कौन आप हैं, क्यों आये हैं, आपको मैं देख कर बेहद हुआ हूँ शादमाँ। तब कहा अहवाल साग राम का हनुमान ने, नाम भी अपना बताया उनको बेशकोगुमाँ। फिर विभीषण ने कहा मैं क्या सुनाऊँ अपना हाल, किस मूसीबत से गुजरती है मेरी हरदम यहाँ। इस तरह दुश्मन धरम के है मुझे धरे हुए, जिस तरह है दमियाँ वस्तीय दाँतों के जवाँ। राक्षस कुल में हुआ हूँ, मुझमें भवित है नहीं, राम पर रख कर भरोसा जी रहा हूँ वम यहाँ। आप के आने से मुझको हो गया है अब यकीन, राम की मुझ पर इनायत की नजर है वेगुमाँ। फिर वहा हनुमान ने सुनिए यह सच कहता हूँ मैं, राम अपने भक्त पर रहते हैं हरदम मेहरबाँ। मैं भी एक अदना हूँ बन्दर मुझ पे है चश्मे करम, यह कहा आँखों से उनके हो गये आँसू रवाँ। यह भी किस्मत है हमारी हम हैं ऐसे बदनसीब, मुबह को जो नाग ले रह जाए वह फाकाकुनाँ। फिर विभीषण ने यहाँ सब जानकी का कर दिया, और कहा किस तरह होती है गुब्बर उनकी यहाँ। चाहता हूँ देखना उनको कहा हनुमान ने, तब विभीषण जी ने की तरकीब सब उनसे बयाँ। पूछ कर सब तौर जाने को रवाना हो गये, और पहुँचे उस जगह सीता जो रहती थी जहाँ। झाड़ के नीचे वो बँधी थीं अशोक वन में उदास, हो गयी दुबली थी, हरदम राम था बिरदे जवाँ। देखती नीचे जमीं को और जटा सिर पर बँधी, देख कर हनुमान के जाते रहे ताबोतवाँ। सोचते थे किस तरह तकलीफ़ इनकी दूर हो, आ गया रावण भी उस जा—साथ ले कर रानियाँ। रावण ने बहुत मिन्नत समाजत पहले की, फिर किया कुछ अपनी सरवत का भी सीता से बयाँ। और कहा तू मेरे जानिव देख ले गर एक बार, तेरी खिदमत सब बजा लाएँगी मेरी रानियाँ। आड़ ले कर एक तिनके की कहा सीता ने यों, रोशनी जुगुनू की करती है कमल को क्या अयाँ। क्या खबर तुझको नहीं कमबख्त अपनी मौत की, राम जी के तीर से तेरी निकल जाएगी जाँ। तू बड़ा पापी है तुझको कुछ दया आती नहीं, चोर के मानिन्द तू मुझको है ले आया यहाँ। अपनी जिल्लत ऐसी सुन कर हो गया रावण खफ़ा, खींच कर तलवार अपनी इस तरह खोली जवाँ। मान ले कहना मेरा वर्ना तुझे मारूँगा मैं, मेरी इस तलवार ही से जाएगी अब तेरी जाँ। बोलीं वह—गरदन में या तो हाथ होंगे राम के, या तेरी तलवार ही इस पर पड़ेगी बेगुमाँ। मेरा सच्चा है अक्रोदा मुन ले तू ऐ बेवकूफ़, राम की फुरकत में जलती हूँ, मेरा दिल है तवाँ। बस इसी तलवार से मिट जाएगी मेरी जलन, खून की धारों से ठंडी होंगी ये चिनगारियाँ। इस क्रूर कहते ही रावण क्रल करने को उठा, रानी मन्दोदरी तब दोनों के आयी दमियाँ।

शास्त्र उसको सब सुनाये और समझाया बहुत, तब कहा रावण ने उन सब से जो हाजिर थे वहाँ। एक महीने की है मुद्दत तुम इसे समझाओ सब, वरना इस तलवार ही से कल कर दूँगा यहाँ। राक्षस हर तरह सीता को डराने लग गये, त्रिजटा नामी भी एक थी राक्षस उनमें वहाँ। नेकखू थी नेक सीरत धर्म की पाबन्द थी, उसने जो कुछ ख्वाब देखा था किया सबसे बयौ। एक बन्दर ने जला डाली है लंका आग से, राक्षस मारे गये सारे बहादुर पहलवा। हाथ रावण के कटे हैं और गधे पर है सवार, और सिर उसका मुँड़ा है, सिम्ते दक्खन है रवा। फतह करके राम ने लंका दुहाई फेंक दी, अपने जानिब से विभीषण को किया है हुक्मरा। और सीता जी गयी वापस वसद जाहो जलाल, ख्वाब यह सच्चा है, हो कर ही रहेगा बेगुमा। सुनके यह सब डर गये सीता के पैरों पर गिरे, और वहाँ से हो गये सब अपने-अपने घर रवा। दिल में सीता ने यह सोचा मुझको इसका है यक़ीन, रावण कमबख्त ले कर ही रहेगा मेरी जा। त्रिजटा से बाअदब हो कर यह सीता ने कहा, अब नहीं बाक़ी तआमुल अब नहीं मुझमें तवा। मेहरबानी करके ऐसी कुछ करो तजवीज तुम, जिसके बाअस जल्द मैं मर जाऊँ देवू अपनी जा। लकड़ियों को ला के उनकी एक चिता जल्दी बना, आग से रोशन उसे कर जल्द, तू ऐ मेहरबा। इत्तेजा है तुझसे मेरी, तू मेरी इमदाद कर, रावण बद की यह बदगोई सुनू कब तक यहाँ। त्रिजटा ने उसको समझाया कहा माता मेरी, सत्र से लो काम, जल्दी राम आते हैं यहाँ। सारी कुल्फत दूर होगी कुछ नहीं है खीफ़ डर, रात का है वक़्त मिलती आग भी है अब कहा। हो गयी खामोश सीता सोच में वह लग गयी, त्रिजटा भी अपने घर को हो गयी उठ कर रवा। आग के मानिन्द सैयारे चमकते है मगर, क्यों नहीं गिरते ज़मीं पर टूट कर ऐ आसमा। आग के जो झाड़ हैं लेकिन नहीं देने हैं आग, वयते मुश्किल कोई भी करता नहीं आसानिया। इस तरह सीता की बेताबी न देखी जा सकी, झाड़ पर हनुमान के जाते रहे ताबोतवा। झाड़ पर से एक अँगूठी फेंक दी सीता के पास, जिसको चिनगारी समझ कर वह उठा ली नागहाँ। अपने शौहर की अँगूठी को वह जब पहचान लीं, हो गयी हैरान और पैदा हुए दिल में गुमा। फिर वह सोचो किसकी कुदरत है जो इनसे छीन ले, और नक़ली भी अँगूठी उनकी बन सकती कहा। सीता जी बैठी हुई थी नीचे अपनी फ़िक्र में, और किया हनुमान जी ने झाड़ पर से यों बयौ। इत्तेदा से इन्तेहा तक जो हुए थे वाक़ियात, शाद हो कर जिसको सीता ने सुना बाक़तबो जा। तब तो सीता ने कहा, जो कर रहा है ज़िक्रे खैर, किसलिए आता नहीं वह सामने मेरे यहाँ। जब यह सीता ने कहा हनुमान नीचे आ गये, देख कर उनको किया सीता ने अपना मुँह निहा। तब कहा हनुमान ने पैग़ामवर हूँ राम का, मैं कसम खा कर हूँ कहता आप सुनिए मेरी मा। राम जी की है अँगूठी मैं ही लाया हूँ इसे, दी गयी है मुझको ता पहुँचाऊँ मैं तुमको निशा। किस तरह मिलता हुआ था राम का हनुमान से, पूछने पर सब किया हनुमान ने उनसे बयौ। हो गया सीता को उनके कौल पर पूरा यक़ीं, वसवसा दिल का मिटा और मिट गया शक्कोगुमा। ग्राम के दरिया में मैं डूबी जा रही थी हाय जो, तुमने ही आ कर बचाया है मुझे ऐ पहलवा। ऐ मेरे हनुमान मैं तुम पर निखावर जाऊँगी, खैरियत तुम राम लक्ष्मण की करो मुझ से बयौ। यह कहो, क्या याद मेरी भी कभी करते हैं वो, क्या क़दमबोसी से उनकी मैं भी हूँगी शादमा। हाय मालिक आपने दिल से भुलाया क्यों मुझे, इस क़दर कहते ही आँसू हो गये उनके रवा। देख कर सीता को बेकल यों कहा हनुमान ने, राम-लक्ष्मण खैरियत से हैं सुनो तुम मेरी मा।

हिजिर में वह आपके बेशक बहुत हैं रामजदा, आपकी फुरकत में हैं बेचैनो बेकल हर जमा। राम ने मुझसे कहा है मैं यह लाया हूँ पयाम, दूरी में सीता के, है दुनिया ये भाती है कहां। जिक्र कर देने से दिल की कुछ जलन होती है कम, मैं कहूँ किससे जो है दिल में मेरे सोजे निहान। तुझसे मुझको किस कदर उलफत है प्यारी जानकी, जानता है दिल ही जो है वाकिके राजे निहान। और वह दिल तो मेरा रखा हुआ है तेरे पास, और इससे क्या ज्यादा मैं कहूँ हालत बयाँ। अपने शौहर का सुना पैगाम यह सीता ने जब, हो गयीं बेचैन वह और खो गये ताबोतवाँ। तब कहा हनुमान ने माता करो कुछ सब्र तुम, राम की कूवत का अन्दाजा करो तुम बेगुमाँ। राम के तीरों से मर जाएँगे यह सब राक्षस, काम धीरज से जो लोगी तो है फिर आसानियाँ। आपकी उनको खबर मिलती तो होती कुछ न देर, राम के जब तीर चलते राक्षस रहते कहां। आपको ले कर अभी जाता यहाँ से मैं, मगर, राम ने इसकी इजाजत दी नहीं है मेरी माँ। वानरों की फौज ले कर चन्द ही ऐयाम में, रामचन्दर जी चले आएँगे खुद जल्दी यहाँ। मार कर सब राक्षस को आपको ले जाएँगे, हर कसोनाकस बयाँ उनकी करेगा खूबियाँ। तब कहा सीता ने वानर होंगे तुम जैसे जईफ़, और यह सब राक्षस तो हैं निहायत पहलवाँ। मुझको अन्देशा है वानर कैसे मारेंगे इन्हें, इस कदर सुनते ही वह वानर भी गर्जा नागहाँ। अपनी ताकत का किया इजहार जब हनुमान ने, देख कर सीता के दिल में मिट गये शक्को गुमाँ। तब तो सीता ने दुआ दी—ऐ मेरे हनुमान तुम, अक्ल और ताकत में हो जाओगे एकनामे जहाँ। तुम अजर होंगे अमर होंगे दुआ है मेरी यह, और श्री रघुनाथ भी तुम पर रहेंगे मेहरबाँ। जब दुआ सीता के मुँह से यह सुनी हनुमान ने, हो गये मसरूर बेहद हो गये वह शादमाँ। फिर कहा ऐ माँ मुझे अब भूख लगी है बहुत, सब फलों से लद गये हैं झाड़ जितने हैं यहाँ। आपकी गर हो इजाजत इनको मैं खाजाऊँगा, यों कहा सीता ने इनके राक्षस है निगहबाँ। मैं नहीं उनसे हूँ डरता फिर कहा हनुमान ने, आपकी मुझको इजाजत चाहिए बस मेरी माँ। ले के सीता से इजाजत बाग में वह घुस गये, खूब फल खाये व तोड़े झाड़ भी अक्सर वहाँ। जिसने रोका इनको, उसकी मौत गोया आ गयी, कुछ मरे कुछ भाग कर निकले वहाँ के बागबाँ। जा के यों रावण से कहने लग गये, मालिक मेरे, एक बन्दर बाग में आया है अपने पहलवाँ। बाग को बरबाद कर डाला और फल खाये तमाम, मर गये हैं उसकी मारों से कई एक पहलवाँ। सुनके यह रावन ने भिजवाये सिपाही देखने, जिनके आते ही गरज कर उस पे दौड़ा पहलवाँ। मार डाला चन्द को और भाग कर कुछ चल दिये, सामने रावण के जा कर सबने की आहोफुगाँ। एक बेटा उसका था अक्षयकुमार जिसका था नाम, उसको भिजवाया बहुत से साथ दे कर पहलवाँ। ज्यों ही देखे राक्षस आते हुए हनुमान ने, वह गरज कर उनपे टूटे जिस तरह बर्कतयाँ। झाड़ को एक तोड़ कर उसको लगे यह मारने, मर गया अक्षयकुमार और उसके सब हमराहियाँ। चन्द उनमें बच गये थे भाग कर वापस गये, और की फरियाद रावण से कि ऐ शाहेशहाँ। वह तो बन्दर ही नहीं है, है बहादुर और वीर, हम मुकाबिल उसके हो जाएँ यह ताकत है कहीं। मौत बेटे की सुनी रावण को गुस्ता आ गया, मेघनाथ उनका था लड़का, जोकि था सब में कलाँ। यों कहा तुम जाओ बेटे और पकड़ लाओ उसे, मैं भी देखूँ कौन बन्दर है जो आया है यहाँ। इन्द्रजीत उसका लक़ब था मेघनाथ उसका था नाम, भर के गुस्से में उठा वह और चला शेरजियाँ। जैसे ही आते हुए देखा उसे हनुमान ने, दौड़ कर आगे बढ़ा रथ की उड़ा दी धज्जियाँ।

वह गिरा रथ पर से नीचे और जमीं पर आ गया, उनको भी मारा पटक कर साथ थे जो पहलवाँ । भिड़ गये आपस में दोनों मेघनाथ हनुमान भी, यों नज़र आते थे दोनों जैसे हों दो हथियार । एक घूँसा जब पड़ा हनुमान का तब मेघनाद, खा गया चक्कर जमीं पर गिर गया वह नागहाँ । यों गिरा कर उसको नीचे चढ़ गये एक झाड़ पर, मेघनाद उट्टा लिया फिर हाथ में तीरो कर्मा । ब्रह्म अस्तर वह चलाया जो लगा हनुमान को जिसके लगते ही जमीं पर आ रहे वह नागहाँ । उनपे बेहोशी थी तारी उसने बाँधा जाल में, ले चला उनको जकड़ कर खूब रावण के यहाँ । जब हुआ मालूम सबको हो गया बन्दर असीर, देखने को मग्न तमाशा दीड़ कर आये वहाँ । जब यह पहुँचे उस जगह दरबारे रावण था भरा, हाथ जोड़े थे खड़े सब देवता और राजगँ । ऐसी परतापी के उस दरबार में हनुमान भी, जाके बेवृत्तों खतर बैठे वह सब के दमियाँ । पहले इनको देख कर हँसने लगा रावण, मगर, याद जब बटे की आयी हो गया कुछ खस्ताजाँ । और कहा बन्दर अरे तू कौन है, किस वास्ते, वाग को मेरे उजाड़ा और किया इतना जियाँ । कौन मैं हूँ क्या तुझे मेरा नहीं मालूम नाम, किसलिए तू कर रहा है इम क्रूर गुस्ताखियाँ । अपने मरने का नहीं है खौफ़ क्या दिल में तेरे, तूने क्यों कर वाग के सब काट डाले पासबाँ । किस के बल पर इस क्रूर मगरूर है ऐ बेसमझ, क्या तुझे प्यारी नहीं मालूम होती अपनी जाँ । तब कहा हनुमान ने रावण उसी का बल है यह, जिसके बलवृत्ते पे जीता है हमेशा यह जहाँ । देवताओं की हिफाजत जोकि करते हैं मूदाम, और तुम जैसाँ को देते हैं सजा जो बेगुमाँ । हाथ से जिसके घनुष शिवजी का टूटा था कभी, खर व तूफ़न तिसरा जैसे मरे हैं पहलवाँ । मुझको ताकत है उन्हीं की मैं उन्हीं का हूँ गुलाम, जिसकी औरत को चुरा कर तू ले आया है यहाँ । किस क्रूर ताकत है तुझमें जानता हूँ खूब मैं, तू सहस्रबाहू वा बाली से लड़ा था बेगुमाँ । भूख कुछ मुझको लगी थी मैंने कुछ फल खा लिये, मारने मुझको लगे जब वाग के सब निगहवाँ । मैं भी फिर उनको जवाबन मारने जब लग गया, तो मुझे क्रमज्जद तेरा है पकड़ लाया यहाँ । इस गिरपतारी का अपनी रंज मुझको कुछ नहीं, अपने मालिक का मैं करने काम आया हूँ यहाँ । इस्तेजा मेरी है रावण ध्यान दे कर यह सुनो, किस घराने के हो तुम और कौन-सा है खानदाँ । जिनसे डरता है जमाना खौफ़ उनका तुम करो, जानकी जी को यहाँ से जल्द तुम कर दो रवाँ । उनके चरणों में अगर जाओगे कर देवोंगे माफ़, खर के दुश्मन रामचन्द्र हैं निहायत मेहरबाँ । राम के पैरों पर अपना सर अगर रख दोगे तुम, उग्र भर लंका के यों ही तुम रहोगे हुक्मराँ । तुम उन्हीं की नसल से हो जो रहे हैं नेकनाम, जिनको कहते हैं पुलस्त, और तुम हो नंगे खानदाँ । बेजरिया जो नदी हो वह तो है बेकार ही, सिर्फ़ वाग्नि ही में पानी उसमें रहता है रवाँ । दिल में गर भक्ति नहीं भगवान की बेसूद है, लाख सरवत उसमें हो वह लाख हो साहेबहाँ । छोड़ दो अपना घमंड और छोड़ दो अपना गरूर, राम के चरणों में जा कर खुद को कर लो शादमाँ । हंसके रावण ने कहा बन्दर मिला उस्ताद है, फिर कहा,—खामोश रहता या नहीं ऐ बदजबाँ । जानता हूँ मैं कि तेरी मौत आयी है करीब, मेरे आगे तू जो यह है कर रहा गुस्ताखियाँ । तब कहा हनुमान ने मौत आ गयी तेरी करीब, जो समझ उल्टी हुई है बात है बिलकुल अयाँ । हो गया आपे से बाहर और रावण ने कहा, क्यों न इस कमबलत की फौरन ही ले ली जाय जाँ । राक्षस दीड़े हज़ारों मारने के वास्ते, आ गये फौरन उसी साअत विभीषण भी वहाँ । नर्म लहजे में कहा रावण से ऐ भाई मेरे, मारना पैगामवर का कहिए है जायज कहाँ ।

और कोई दूसरी इनको सजा तजवीज हो, अहले मजलिस भी यह सुन कर हो गये सब हमजबाँ।
 हँस के रावण ने कहा एक अजब इसका काट दो, और लंका से करो वापस इस बन्दर को रवाँ।
 दुम हुआ करती है बन्दर को निहायत ही अजीब, तेल में कपड़ा भिगो कर रख दो दुम के दमियाँ।
 आग से रोशन करो, बेदुम के जब हो जाएगा, अपने मालिक को वह कैसे लाएगा देखूँ यहाँ।
 हुक्म की तामील में दौड़े कई एक राक्षस, और फराहम करके कपड़ा लाये और रोगन वहाँ।
 बाँध कर दुम में लगा दी आग सबके सामने, देखने को यह तमाशा लोग सब आये वहाँ।
 धोल कोई है जमाता कोई ठोकर मारता, कोई तो हँसते हुए देता है इनको गालियाँ।
 हर तरफ़ इनका तयस्वुर हो रहा है शहर में, अहले लंका शाद हो कर पीटते हैं तालियाँ।
 तोड़ कर बन्धन को अपने चढ़ गये वह कूद कर, कसरे लंका पर चढ़े फ़ौरन बहादुर पहलवाँ।
 इस तरफ़ से उस तरफ़ जब दौड़ने यह लग गये, आग फैली चोतरफ़ और महल था आतिशफ़शाँ।
 इस तरह जब आग फैली मच गया कोहराम फिर, लोग चिल्लाने लगे, करने लगे आहोफ़ुगाँ।
 चन्द ही लमझों में पूरा शहर जल कर रह गया, बच गया जलने से था बस इक विभीषण का मक़ाँ।
 आग लंका को लगा कर कूद कर दरिया में खुद, की थकावट दूर अपनी मिसल एक शेरजियाँ।
 ज़ेस अपना फिर बदल कर वह रवाना हो गये, और पहुँचे उस जगह थी जानकी रहती जहाँ।
 और कहा माता मुझे अपनी निशानी दीजिए, ताकि ले जाऊँ इसे मैं रामचन्दर के यहाँ।
 एक उनमें से निकाली और दी हनुमान को, अपने हाथों में वह जो पढ़ने हुई थी चूड़ियाँ।
 और कहा मेरा संदेसा इस तरह मालिक को दो, सह रही हूँ हर तरह की मैं यहाँ दुश्वारियाँ।
 पूछने वाला यहाँ कोई नहीं मालिक मुझे, आपके लुफ़्फ़ो करम की राह तकती हूँ यहाँ।
 जयन्त का किस्सा दिलाना याद तुम उनको जरूर, तीर जो उनका चला था वह भी कर देना बर्याँ।
 यह भी कहना मौत मेरी वह यकीनन जान लें, देर महीने भर से ज़यादा हो जो आने में यहाँ।
 देख कर हनुमान तुम को कुछ तसल्ली पायी थी, फिर वही मझको मुसीबत है वही दुश्वारियाँ।
 देके सीता को तसल्ली और चरण छू कर मुदाम हो गये उस बाग़ से हनुमान जी वापस रवाँ।
 जब चले वापस तों गर्जें जोर से और शोर से, खौफ़ से डरने लगी सब राक्षस की बीबियाँ।
 ये उछल कर पार दरिया कर गये एक आन में, किलकिलाहट सुन के वानर हो गये सब शादमाँ।
 इनका चेहरा देख कर सबको तशपफ़्री हो गयी, सब यह समझे काम करके आये हैं ये वेगुमाँ।
 कफ़ीयत सब पूछते जाते थे इनसे राह में, सब वहाँ से हो गये रघुनाथ से मिलने रवाँ।
 आखिरस पहुँचे वे मधुवन और खायें खूब फल, देख कर उनकी शरारत रोकते थे निगहबाँ।
 मार जब दरबाँ ने खायी दौड़ कर साकी हुआ, और कहा सुग्रीव ने—काम अब हुआ है वेगुमाँ।
 फिर कहा राजा ने सीता की खबर शायद मिली, वर्ना क्या मुमकिन था ये वापस पलट आते यहाँ।
 सोचते थे ही यह सुग्रीव, आ गये वानर तमाम, और सबने बाअदब राजा का चूमा आस्ताँ।
 खैरियत उनकी जो पूछी राजाए सुग्रीव ने, काम जो कुछ करके आये थे किया उनसे बर्याँ।
 और कहा हनुमान ही ने काम सब कुछ है किया, बच गयी जानें हमारी आज हम हैं शादमाँ।
 राम से मिलने को ले कर वानरों को अपने साथ, तब हुए हनुमान और सुग्रीव राजा भी रवाँ।
 राम ने देखा कि वानर आ रहे हैं अपने पास, दोनों भाई एक शिल पर हो गये जलवा कुनाँ।
 राम ने हर एक से मिल कर किया उनको निहाल, और क़दमबोसी से वे भी हो गये सब शादमाँ।
 जामवन्त ने कहा जिस पर करम होवे आपका, है वही शाद और खुरम है वही इज्जत रसाँ।

है बड़ी क्रिस्मत कि करके काम हम आये हैं आज, जो किया हनुमान ने है, किस तरह हो वह बर्बा। जामवन्त ने कही हनुमान की सब कैफियत, राम ने दिल से सुनी उनके हुए वे मदहूषवा। और कहा मुझसे कहो जीती है सीता किस तरह, और बचा रखी उन्होंने किस तरह से अपनी जा। आपका हरदम खयाल उनके लिए है बावे फँज, आप ही का नाम उनका रातदिन है निगहबा। अपनी आँखों को लगायी आपके चरणों में हैं, कुफल है गोया वह, फिर किस तरह जाए उनकी जा। अपनी चूड़ी मुझको दे दी है निशानी के लिए, इस क्रदर कहते हुए आँखों से आँसू थे रवा। राम ने सीने लगाया ले के चूड़ी हाथ में, फिर किया हनुमान ने सीता का यह अर्ज बर्बा। राम को मेरी तफ़्फ़ से तुम क्रदमबोसी कहाँ, खैरियत लक्ष्मण से भी पूछो जरूर, ऐ मेहरबा। अर्ज करना क्यों नहीं दासी पे है लूनफ़ोकरम, मेरे मालिक मुझको क्यों भूले हुए है बेगुमा। मेरी ही गलती है बेशक हो गया मुझ से क्रमूर, आपकी फ़ुरकत में क्यों मेरी निकल जाए न जा। है जुदाई आग, रुई तन, हवा है मेरी साँस, जिस्म मेरा खाक हो जाएगा जल कर नागहा। आपके दर्शन की प्यासी आँख बरसाती है अश्क, जिमके वाअग आग ठण्डी हो के जलती है कहाँ। चिन्दगी मुशकिल में है उनकी, कहा हनुमान ने, जल्द चलिए और छुड़ा कर लाइए उनको यहाँ। सुन के यह अहवाल उनका, राम रंजीदा हुए, और हुए हनुमान के मशकूर भी और मदहूषवा। सुनके यह हनुमान बेहद खुश हुए शादां हुए, राम के चरणों में गिर कर हो गये वो शादमा। राम जी ने अपने चरणों से उठा कर यों कहा, किस तरह लंका जला डाली करो मुझसे बर्बा। यह जवाब उनको मिला बन्दर की है यह खासियत, शाख पर से शाख पर वह कूदता है हर जमा। यह जो दरिया पार कर ली और मारे राक्षस, कसर को और शहर को उनके किया आतिश फ़शा। आप के परताप के कारण हुआ है यह तमाम, दर्ना मेरी मकबूरत क्या मुझमें हिम्मत हो कहाँ। आपकी सेवा का मुझको हो सरफ़ हासिल मुदाम, है यही एक आरजू बस मेरे दिल के दमिया। “यों ही होगा” अब कहा श्री राम ने, वो खुश हुए, वानरों ने जै का नारा तब लगाया बेगुमा। राम ने फ़र्माया सुग्रीव से मुखातिब हो के यों, जंग को चलने की अब जल्दी करो तैयारिया। देर करने की जरूरत अब कोई बाकी नहीं, वानरों को हुक्म दे दो ताकि आ जाये यहाँ। सुनके यह सुग्रीव ने अहकाम नाफ़िज कर दिये, हो गये हाजिर हज़ारों अफ़सराने पहलवा। बन्दरों राक्षसों की फ़ौजें सब इकट्ठा हो गयीं, जिनका हर एक फ़र्द आता था नज़र शोरे जिया। राम के आगे अदब से सर झुकाये आके सब, राम ने उन पर दया की, दृष्टि फ़ेरी बेगुमा। कूच का डंका बजा जब राम के फ़रमान से, वानरों की फ़ौज के दल हो गये फ़ौरन रवा। सब सुगूने नेक होने लग गये इस सिम्त में, और सीता को सुगून अच्छे नज़र आये वहाँ। रावणे बदबरवा को आये नज़र सब बद सुगून, फ़ौज यह चलने लगी जैसे कोई मोजे रवा। फ़ौज चलने लग गयी यह कूदते और फाँदते, झाड़ पत्थर को उखाड़े जिस तरह शोरेजिया। राम की जय का वो नारा चीखते थे बार-बार, आखिरस पहुँचा समुन्दर के किनारे कारबा। जब से लंका को जला डाला वहाँ हनुमान ने, खौफ़ से सब डर गये थे राक्षस पीरोजबा। अब भलाई की तवक्को कुछ नज़र आती नहीं, राक्षस का अब मिटे जाने को है नामोनिशा। जिनके एक अदना मुलाजिम ने किया इतना तबाह, जब वह खुद आ जाएँगे क्यों कर न हों बरबादिया। जब जबाने आम से मन्दोदरी ने यह सुना, हो गयी बेचैन और जाता रहा आरामे जा। उसने तनहाई में शौहर से कहा यों बाअदब, यह अदावत राम से अच्छी नहीं—शाहेजहाँ।

हामिला का भी हमल गिरता है जिसकी याद से, दूत ने उनके तबाही की है जो आ कर यहाँ। भेज दो सीता को वापस साथ दो अपना वजीर, मान लो कहना मेरा ऐ मेरे प्यारे मेरी जाँ। आयी है सीता यहाँ बरबाद करने के लिए, आपका बरबाद हो जाएगा यह सब खानदाँ। वर्ना बचने की कोई सूरत नजर आती नहीं, कामयाबी हो नहीं सकती, नसीबे दुश्मनाँ। मिसल साँपों के चलेंगे तीर जब रघुनाथ के, राक्षस को डस ही लेंगे कुछ नहीं शक्कोगुमाँ। इसलिए नाजिल बला होने से पहले सोच लो, सुनके यह रावण हँसा, कहने लगा खदादहाँ। औरतों की जाति होती है निहायत नरमदिल, तुम खुशी के काम में क्यां खोलती हो बदजबाँ। आये वानर गर यहाँ खाएँगे उनको राक्षस, कैसी तुम डरपोक हो, मुझसे तो डरता है जहाँ। अपने सीने से लगाया और फिर हँसता हुआ, महल से रावण हुआ दरबार में बाहर रवाँ। उसकी बीबी ने यह समझा है मुकद्दर का क्रमूर, मार परमेश्वर की है शीहर पे अपने बेगुमाँ। जब गया दरबार में उसको मिली ऐसी खबर, पार दरिया करके अब आ गया है कारवाँ। सब मसीरों से कहा—क्या मश्विरा होता है अब, मुझको करना चाहिए क्या, कीजिए मुझसे बयाँ। बोले वह यह मश्विरे की बात ही है कौन-सी, चुप रहो देखो तमाशा आप ए शाहेशहाँ। देवता और राक्षस सब आपसे नीचे हुए, इनकी है ही क्या हकीकत इनमें क्या ताबोतवाँ। मश्विरा हो जब गलत बरबाद होगी सलतनत, वंश से गर हो खता तो बढ़ती हैं बीमारियाँ। और गुरु का मश्विरा जब हो गलत मिट जाए धर्म, स तरह इन तीन की गलती से हो बरबादियाँ। शाहे रावण की सभा की भी यही सूरत हुई, सब खुशामद करके उसकी थे मिलाते हाँ में हाँ। भाई रावण के, विभीषण नाम था, वो आ गये, इत्तेफ़ाक़न मश्विरा जब हो रहा था यह वहाँ। करके वो प्रणाम और अपनी जगह पर बैठ कर, भाई से अपने वह यों करने लगे अर्जें बयाँ। आपने मुझसे है पूछा इसलिए कहता हूँ मैं, जिसमें मूँझमिर है भलाई और जिसमें खूबियाँ। शूर औरत पर नजर करना निहायत है खराब, खैर, मरकत और भलाई होती है सब रायगाँ। और थोड़ी सी भी लालच उमके हक़ में है खराब, ख़वाह वह रूपे जमी ही का न क्यों हो हुक्मराँ। ये नहीं होते हैं अच्छे, शहवतों गुस्सा जरूर, रास्ना दोख़ का मिलता है इन्हीं से बेगुमाँ। इसलिए इन सबको छोड़ो राम से डरते रहो, ताक़ते गँबी है उनमें, जानते हैं रमज़दाँ। अहले दुनिया को नजात हासिल हो उनकी जात से, शक्के इनसानी में दुनिया में हुए जलवा कुनाँ। सेवकों पर है इनायत और बुरों पर है ग़ज़ब, वह किया करते हैं नेकी वेद के हैं निगहवाँ। सर झुका दो उनके आगे जानकी को भेज दो, छोड़ दो उनसे अदावत उनका चूमो आस्ताँ। आप से है इत्तेजा मेरी करो मंज़ूर अब, और मुनी पुलसा ने भी है यह कहलाया यहाँ। जो मुनी के शिष्य ने आ कर कहा, मैंने कहा, जिक्र होता था इसी का जब मैं आया हूँ यहाँ। मालवान उसका वजीर एक नुन के यह ख़ूश हो गया, और कहा बेशक विभीषण हैं मुदव्विर नुक़तादाँ। आ गया रावण को गुस्सा और बोला चीख़ कर, दोनों नादानों को इस दरबार से कर दो रवाँ। अपने घर को चल दिया ख़ामोश हो कर वह वजीर, और विभीषण ने अदब से यों किया अर्जें बयाँ। वेद और पुराण में है इस तरह लिखा हुआ, दी गयी सबको समझ है, यह तो है बिलकुल अयाँ। जो बुराई से इसे बतेंगा वह हो नामुग़द, और जो अच्छी तरह से काम ले है कामराँ। आप की भी कुछ समझ ऐसी हुई है आज कल, फ़ाक़ बाकी कुछ न रखा, नेकीबद के दमियाँ। इसलिए है तुमने की सीता की जानिब बदनज़र, जो जला कर खाक़ कर देगी तुम्हारा खानदाँ।

फिर मुवद्दिब हो के मैं यह आप से बिनती करूँ, बात मेरी मान लो रखो मेरा पासे जबाँ। जब विभीषण ने नसीहत की तो रावण जल उठा, और कहा क्या मौत तेरी आ गयी है बदजबाँ। जो रहा है तू मेरा हर दम नमक खाते हुए, और दुस्मन की तरफ़दारी है करता तू यहाँ। यह पता है कौन दुनिया में बहादुर मुझ-सा आज, कौन है जिसने नहीं चूमा है मेरा आस्ता। शहर में रहता है मेरे और तरफ़दारे उदू, जा, उन्हीं के साथ रह और बन उन्हीं का क़दरदाँ। यह कहा और खींच कर एक लात भी मारी उमे, फिर भी छोटे भाई ने चूमा क़दम को बेगुमाँ। तुम करो नेकी उसी से जो करे तुमसे बदी, है तरीका संत का यह, है यही उनका निशाँ। यों विभीषण ने कहा है आप मानिन्दे पिदर, आप के इस मारने से मैं नहीं हूँ बदगुमाँ। राम ही के लुत्फ़ से होगी भलाई आप की, उनके चरणों में ही जाना होगा बस राहतरसाँ। जो मुसाहिब अपने थे हमराह उनको ले लिया, और वह दरबारे रावण से हुआ फ़ौरन रवाँ। लाख समझाया तुम्हें मैं, अब नहीं मेरा क़सूर, राम के क़दमों में अब जाऊँगा बेशक्को गुमाँ। ज्यों ही ये चलने लगे सब लोग बेहिम्मत हुए, क्योंकि अच्छाँ ही के कदमों से हैं रहती नेकियाँ। सोचते जाते थे दिल में राह चलते वक़्त यह, अब सरफ़ हासिल क़दमबोसी का होगा बेगुमाँ। जिनके चरणों के खड़ाऊँ भरत जी ने ले लिये, आज उन क़दमों को मैं चूमूँगा हो कर शादमाँ। इस तरह वह सोचते पहुँचे समुंदर के करीब, यह कोई जासूस है समझे इशारे वानराँ। उसके आने की खबर जब सुग्रीव को की गयी, राम से जा कर किया सुग्रीव ने ऐसा बयाँ। भाई रावण का है मिलने आप से आया जनाब, आप का इरशाद जैसा हो अमल है बेगुमाँ। राम ने पूछा तुम्हारा इसमें है क्या मख़िरा, दस्तबस्ता यों कहा सुग्रीव ने ऐ मेहरबाँ। राक्षस काबिल भरोसे के कभी होते नहीं, वह नहीं मालूम किस नीयत से आया है यहाँ। ग़ालिबन कुछ राज वह मालूम करने के लिए, इस तरह आया है शायद वह हमारे दमियाँ। मैं मुनासिब यह समझता हूँ कि कर लें क़द इसे, वर्ना मुशकिल है समझना ये कि क्यों आया यहाँ। राम ने उनसे कहा तुमने कहा जो ठीक है, आसरे में आये जो मेरे उसे भेजूँ कहाँ। सुनके यह हनुमान बेहद दिल में अपने खुश हुए, और कहा कितना है देखो राम का दिल मेहरबाँ। ब्रह्म हत्या का भी पापी कोई आ जाए अगर, राम हूँ मैं काम है मेरा मदद ऐ मेहरबाँ। जिसकी नीयत बद हो आ सकता नहीं मेरे करीब, यह बदी रखता जो दिल में, आ ही सकता था कहाँ। और जो रावण ही का भेजा हुआ जासूस हो, तो भी हम को कुछ नहीं है ख़ौफ़ इसमें या जियाँ। जिस क़दर हैं राक्षस दुनिया में उन सबके लिए, सिर्फ़ लक्ष्मण एक काफ़ी है उड़ा दे धज्जियाँ। वर्ना इसकी तो हिफ़ाज़त फ़ज्र मेरा हो गया, वह अगर ख़ौफ़ और डर से भाग कर आया यहाँ। हर दो हालत में उसे ले आओ बोले रामचन्द्र, अंगदो हनुमान लाने को हुए फ़ौरन रवाँ। जब विभीषण आये, देखा राम को नज़दीक से, जिस्म में लज्जा हुआ और आँख से आँसू रवाँ। हाथ जोड़े राम से वह अर्ज यों करने लगे, भाई रावण का हूँ और है राक्षस का ख़ानदाँ। नीच हूँ, हरदम रहा है काम मेरा पाप ही, अपने कानों से सुनी है आपकी सब ख़ुबियाँ। आपके साथे में जो आता है होता है निहाल इसलिए मैं आपके चरणों में आया हूँ यहाँ। इस तरह कहते हुए जब वह जमीं पर गिर गये, राम ने उनको उठाया हो के बेहद शादमाँ। और कहा लंकेश अपनी ख़ैरियत कहिए मुझे, किस तरह होती गुज़र थी आपकी कीजे बयाँ। रास दिन तो साबिका रहता बुरों के साथ था, किस तरह निभते तुम्हारे धर्म थे और नेकियाँ।

साथदारी बद की होने से नरक ही है भला, एक जो हो वह रहे कैसे बुरो के दमियाँ।
 यों कहा उसने कि तुमको देख कर मैं शाद हूँ, मुशकिलों में मेरी अब सब हो गयी आसानियाँ।
 मेहरबानी से किया है आपने मुझको करीब, मुशकिलें अब मेरी बाकी रह ही सकती हैं कहाँ।
 मैं हूँ अदना और हरदम पाप में गुजरी मेरी, आपने मुझको कलेजे से लगाया मेहरबाँ।
 है बड़ी तक्रदीर मैंने आपके चूमें चरण, वना मैं क्या था मेरी किस्मत ही थी ऐसी कहाँ।
 राम जी ने अपना शेवा यों बयाँ उनसे किया, जेरे साया मेरे जो आ जाय हो कर नातवाँ।
 ओछाबाजो हो न उसमें और न हो उसमें गरूर, उसको मैं इन्साँ बना देता हूँ बेशक्को गुमाँ।
 जो मिले मुझसे अजीजो अकरूवा को छोड़ कर, जान से मैं प्यार करता हूँ उसे ऐ मेहरबाँ।
 दूसरे के फ़ायदे के जो किया करता है काम, वह मुझे भाता वहुन है, मैं हूँ उसका क़दरदाँ।
 मैं न क्या कर तुम को अपनी जान से बढ़ कर रखूँ, तुम में तो लंकापति हैं सब तरह की खूबियाँ।
 वानरों नेतब लगाया जय का नारा सुनके यह, और विभीषण भी हुए उससे निहायत शादमाँ।
 और कहा भक्ति का अपनी मुझको अब वर दीजिए, मिट गये जो कुछ भी थे दिल में मेरे शक्को गुमाँ।
 राम ने दरिया का पानी जल्द लाने को कहा, और तिलक करके कहा, लंका के तुम हो दुक्मराँ।
 गो तुम्हारी कुछ नहीं ख्वाहिश मगर, मेरे सखा, दोस्ती मुझसे जो कर ले जाए कैसे रायगाँ।
 राज जो रावण को हासिल था हुआ मुशकिल के साथ, मिल गया अब वह विभीषण को बजासानी यहाँ।
 राम ने पूछा विभीषण से भी और सुग्रीव से, पार दरिया किस तरह हम कर सकेंगे हो बयाँ।
 बहर है गहरा और उममें है हज़ारो जानवर, किम तरह पार उसको कर लेगा हमारा कारवाँ।
 यों कहा उनसे विभीषण आपके एक तीर से, सूख जाएगा समुन्दर कुछ नहीं शक्को गुमाँ।
 फिर भी कहता हूँ कि जा कर इस्तेजा उससे करें, कुछ न कुछ तज्जवीज वह बतला ही देगा बेगुमाँ।
 राम ने इस मस्तिवरे को कर लिया दिल से पसन्द, और कहा ऐसा ही करना चाहिए हमको यहाँ।
 लक्ष्मण इससे मुखालिफ़ हो के यों कहने लगे, तीर से अपने सुखा दो आने दरिया को यहाँ।
 क्या भरोसा है कि अपनी कुछ मदद यह कर सके, आजिजी मिस्रत फ़कत करना है कारे काहिलाँ।
 राम ने हँस कर कहा ऐसा ही करना चाहिए, तुम ज़रा रखो भरोसा अपने दिल में भाईजाँ।
 यों कहा, जा कर किनारे पर वो बैठे घास पर, अब सुनो जो कुछ हुए हालात रावण के यहाँ।
 जब विभीषण छोड़ कर रावण को इस जानिब चले, उसने खुफ़िया इनके पीछे कर दिया फ़ौरन रवाँ।
 भेस वानर का बदल कर वह रहे सब देखते, देख कर तीर और तरीका राम का थे मददहूवाँ।
 आखिरस जब वानरों पर भेद यह जाहिर हुआ, बाँध कर लाये उन्हें, जो थे वहाँ के पासबाँ।
 राजाए सुग्रीव के आगे उन्हें जब कर दिये, यों कहा राजा ने इनकी सब करो रसवाइयाँ।
 अजो कोई इनके काटो और घुमाओ चोतरफ़, सुनके यह अहकाम झपटे उनके ऊपर वानराँ।
 रोये और आजिजी करके वह यों कहने लगे, राम की सीगन्ध है जो नाक काटोगे यहाँ।
 रहम आया लक्ष्मण को सुनके उनकी यह पुकार, क़द से सबको छुड़ाया हो के उन पर मेहरबाँ।
 एक चिट्ठी भी उन्हें दी कह दिया रावण को दो, और जबानी मेरी जानिब से करो उससे बयाँ।
 भेज कर सीता को जल्दी राम से आ कर मिलो, वना यह समझो कि है यह मोत का अपना निशाँ।
 सर झुका कर वह चले तारीफ़ भी करते हुए, और वामन आये वह जासूम रावण के यहाँ।
 रूबरू रावण के आ कर जब खड़े यह हो गये, यों कहा रावण ने कर तू खैरियत अपनी बयाँ।
 और मुझको कुछ विभीषण का भी कह तो हालेज़ार, मोत जिसकी अब करीब आयी हुई है बेगुमाँ।

राज करता था वह लंका का यहाँ से चल दिया, दुश्मनों के साथ अब मिट जाएगा नामोनिर्गा। लश्करे आदा का भी कुछ हाल तो बतला मुझे, धार पर जो मौत के चढ़ते को आया है यहाँ। उसकी किस्मत नेक है जो बीच में हाथल है बहर, वना उसको राक्षस रखते थे अब तक ही कहाँ। और उन दोनों तपस्वी का भी बतला हाल कुछ, जिनके दिल में खौफ मेरा बस गया है बेगुमा। क्यों नहीं कहता है मेरे खौफ से डरता है क्यों, क्यों खता औसान हैं, खुलती नहीं है क्यों जब। दूत ने तब यों कहा, जब आपने पूछा है हाल, दिल लगा कर आप सुन लें मैं जो करता हूँ बया। राम ने फौरन तिलक लंका का उनको कर दिया, आपके भाई यहाँ से जाके जब पहुँचे वहाँ। मुखतलिफ अकसाम की तक्रलीफ हमको दी गयी, जब कि जासूसी का उन पर खुल गया राजेनिहाँ। नाक भी और कान भी वह काटने तैयार थे, राम की दे कर कसम हमने बचा ली अपनी जाँ। राम के लश्कर की गिनती हम बता सकते नहीं, है बड़ा जरार लश्कर कर नहीं सकते बया। जान ली लड़के की जिसने और अलाया शहर को, वह तो है एक फ़र्र लश्कर का निहायत नातवा। ऐसे लाखों हैं बहादुर जो कि हाथी जैसे हैं एक से है एक बढ़ कर जंगजू और पहलवा। नील नल अंगद दुधीमुख जामवाँ और केशरी, और पयोन्दो शठ निशठ दुषिबुद्ध बहादुर पहलवा। ये है सब सुग्रीव के जैसे बहादुर और शेर, जिनकी आँखों में समाता ही नहीं है ये जहाँ। मैंने ऐसा है सुना लाखों हैं अफसर फ़ौज में, एक भी जो आपसे हो जेर यह मुमकिन कहाँ। हर कोई कहता यही है हो इजाजत राम की, रावणे बदबहन की फ़ौरन उड़ा दूँ घजिजयाँ। इस तरह कहते हुए वह शोर करते हैं तमाम, जैसे लंका को निगल जाने की है तैयारियाँ। उनको साया राम का है और वो सब हैं निडर, कौन उनको जीत सकता है यह मुमकिन है कहाँ। सूख जाएगा समुन्दर उनके एक ही तीर से, पेश उनके है फ़कत मर्यादा बेशकगुमा। आपके भाई से करके वह सलाह और मशिवरा, माँगते हैं राह दरिया से बिला वहमोगुमा। जब सुना रावण ने, वह हँसने लगा बेइन्तहा, और कहा अक्लौ समझ उनकी हुई मुझ पर अया। एक बुद्धदिल है विभीषण और उससे मशिवरा, अब हुआ मालूम मुझको जीत उसकी है कहाँ। दूत ने खत भी निकाला और उसको दे दिया, और कहा, लक्ष्मण ने लिखा है यह ऐ शाहेशहाँ। हँस के रावण ने लिया इस खत को बाँये हाथ से, और सुनवाया पढ़ा कर उसको सबके दमियाँ। जिसमें लिखा था कि ऐ नादान ऐ गफलतशार, यों न कर बरवाद खुद को और अपना खानदा। राम के चरणों में गिर और छोड़ दे अपना घमंड, वना गारद होगा उनके तीर से सब खानदा। दिल में गो खायफ हुआ जाहिर में यों कहने लगा, देखो यह छोटे तपस्वी की है कैसी शेखियाँ। दूत का था नाम शुक जो हाथ जोड़े फिर कहा, शीर से कुछ काम लीजँ सींचिए सुदोजियाँ। राम से करनी अदावत आप को अच्छी नहीं, वह निहायत नर्म दिल है और निहायत मेहरबा। आपकी जो कुछ खता है माफ़ कर देंगे छल्लर, भेज दो सीता को उनके पास बासद इज्जोशा। सुनके यह रावण ने उसको लात मारी जोर से, छोड़ कर दरबार रावण हो गया वह भी रवा। अब इधर का हाल सुनिए तीन दिन गुजरे मगर, राह चलने की नहीं दरिया में होती थी अया। राम को गुस्सा जो आया यों कहा लक्ष्मण से तब, अग्नी बाण अब लाओ इसको मैं सुखा दँ बेगुमा। इत्तेजा नादान से, उत्फ़त किसी बदजात से, खैर हो कंजूस से, यह बात मुमकिन है कहाँ। इस तरह कहते हुए खींचा धनुष को राम ने, लक्ष्मण इसके मुअइद थे, हो गये वो शादमा। राम ने जब तीर खींचा आग दरिया में लगी, जानदार अन्दर जो थे होने लगे सब नीमजाँ।

केले को गर लाख सींचो वह कभी फलता नहीं, वह तो फलता है तभी जब काट डालें डालियाँ । और जो कमजूर है सुनता नहीं कहना कभी, वह बजुज तबम्बीह के सुन ले यह मुमकिन है कहाँ । मुखतलिफ़ अकसाम के निकले जवाहिर सतह पर, एक ब्राह्मण इस जगह आ कर किया अज्ञेयों । दस्त बस्ता यों कहा पैरों पे गिर कर राम के, आग पानी और हवा मिट्टी कहाँ है नुकसादी । है यही मर्यादा सब कायम रहें अपनी जगह, सूख जाए जब यह दरिया बात फिर रहती कहाँ । राम ने पूछा कि क्यों कर वानरों की फौज यह, पार दरिया कर सकेगी मुझको बतलाओ यहाँ । यों कहा उसने कि नल और नील ये दो भाई हैं, यह लड़कपन ही में वर पाये थे दोनों बेगुमाँ । आपके परताप से दरिया में वह बहते रहें, यह जो दोनों उसको छूँ ख्वाह हो कोहे गर । मैं भी इसमें कुछ मदद अपनी करूँगा मुमकिना, इस तरह बनने में पुल के कुछ नहीं दुश्चारियाँ । आपने जो बाण खींचा है इसी एक बाण से, उन बुरों का खातमा कर दो जो रहते हैं यहाँ । राम ने ऐसा ही करके कर दिया किस्सा तमाम, और उनका हाल सब उसने किया इनसे बर्षा । यह जो किस्सा लिखते हैं सुनते है दिल और जान से, राम की किरपा से होते हैं निहायत शादमाँ । राम ने अर्काने दौलत को बूला कर यों कहा, देर क्यों होती है, पुल तैयार हो जल्दी यहाँ । जामवन्त ने तब कहा मालिक तुम्हारे नाम से, पार हो जाती हैं दुनिया की सभी दुश्चारियाँ । यह तो छोटा-सा समुंदर क्यों न कर लें पार हम, हम बआसानी चले जाएँगे उस पर बेगुमाँ । जब कहा जामवन्त ने यों तब कहा हनुमान ने, अर्ज मेरी भी यह सुन लीजेंगा ऐ शाहेगहाँ । खुशक कर डाला समुंदर को तेरे परताप ने, पड़ गयी गर्मी जो उसकी हो गयी आतिशफ़र्शा । जो उदू मारे गये थे उनके गम और रंज में, उनकी बेवाएँ जो रोयीं बह चले यह आसुवाँ । भर गया फिर यह समुंदर हो गया प्यारा है वह, सुन के उनकी बात यह वानर हुए सब मदहूँवाँ । जामवन्त ने बुला कर नील और नल से कहा, मुस्तइद हो जाओ पुल बनने की हो तैयारियाँ । और सब वानर को भी बुलवा के भी कहने लगे, झाड़ टीले लाओ और तुम लाओ सब कोहे गर । जय का नारा सब लगा कर भागते खुद आ गये, जिस क़दर वानर वहाँ थे और जो थे भालूवाँ । खेलते ही खेलते वह खोद डाले कोह को, और ला-ला के वे देते नील नल को थे यहाँ । गेंद के मानिन्द ले लेते थे अपने हाथ में, और रखते जाते थे वह बरसरे आवेरवाँ । पुल हुआ तैयार जब कहने लगे यह रामचन्द्र, यह जगह है पाक शिव स्थापना होगी यहाँ । सब ऋषी-मुनियों को बुलवाया वहाँ सुग्रीव ने, लिंग की विधि पूर्वक स्थापना करने वहाँ । जिसको शंकर की नहीं भक्ति हो बोले रामचन्द्र, वह मूढ़े किस तरह प्यारा होगा यह मुमकिन कहाँ । मेरा खादिम उनका दुश्मन, उनका सेवक मुझसे रंज, वह नरक की आग में दोनों जलेंगे बेगुमाँ । मैंने जो स्थापना की है उसे पूजेंगा जो, वह रहेगा शाद खुरम और रहेगा शादमाँ । और रामेश्वर में जो गंगा का जल ला कर चढ़ाये, आकैवत में भी रहेगा कामगारो कामराँ । और रामेश्वर की जो सेवा करेगा रात दिन, होगा वह भक्ति में पूरा और होगा राजदाँ । और इस पुल के जो दर्शन कर सकेंगे खुशनसीब, उनका बेड़ा पार हो नहरे जहाँ के दमियाँ । जब कहा यह राम ने वह सब मुनी वापस हुए, नीलो नल तकमीले पुल के वास्ते ठहरे वहाँ । राम के परताप से पत्थर वो तैरे आब पर, जो डूबा देते हैं ओरों को भी बेशक्कोगुमाँ । नीलो नल ने जो बनाया पुल बड़ा मज़बूत था, रामचन्द्र जी ने जब देखा हुए वो शादमाँ । शीरोमूल करते हुए वानर रवाना हो गये, फौज के दस्ते चले जिस तरह एक मीजेरवाँ ।

पुल पे चढ़ कर राम ने भी सँरे दरिया खूब की, जानवर अन्दर जो थे बाहर वो निकले नागहीं ।
 जिनमें थे मछली मगर घड़िहाल भी और साँप भी, एक से थे एक बढ़ कर खोफ़नाको खोफ़ेजाँ ।
 राम के दर्शन के खातिर सतह दरिया पर हुआ, इस कदर मजमा, नजर आता न था पानी वहाँ ।
 राम के अहकाम से तब फ़ौज चलने लग गयी, किस कदर थी फ़ौज यह बतला ही सकता हूँ कहाँ ।
 जानवर दरियाई जो आये थे उन पर भी चढ़े, बाज यों भी पार दरिया कर गये वह वानराँ ।
 राम लक्ष्मण देख कर ऐसा तमाशा हँस पड़े, अल गरज सब पार दरिया कर लिए नुसरत निशाँ ।
 जब उधर पहुँचे तो डेरा राम ने डलवा दिया, फूल फल खाने की दी सबको इजाजत बेगुमाँ ।
 खा रहे थे फूल फल और शाद थे वानर तमाम, झाड़ पत्थर फेंकते लंका के जानिब शादमाँ ।
 घूमते-फिरते थे वह चारों तरफ़ हो कर निडर, इत्तेफ़ाक़न राक्षस कोई अगर मिलता वहाँ ।
 गत बनाते उसकी अच्छी काटते थे नाक, कान, राम की जय जो न बोले छूट सकता था कहाँ ।
 जो हुए मजरूह थे रावण से जा कर कह दिये, दिल धड़कने लग गया पुल किस तरह बाँधा वहाँ ।
 पार दरिया कर लिया दरिया पे पुल भी बन गया, क्या यही सच है लबे रावण से निकला नागहीं ।
 फिर समझ कर अपनी कमजोरी हुआ खामोश वह, महल में दरबार से उठ कर हुआ फ़ौरन रवाँ ।
 जब सुना मन्दोदरी ने आ गये नजदीक राम, हाथ शीहर का पकड़ कर यों हुई गौहरफ़शाँ ।
 अपने आँचल को पसारा और कहा यह अर्ज है, छोड़ कर हठ को, मेरी तुम अर्ज सुन लो मेरी जाँ ।
 सामना उसका करो जो हो बराबर आप के, राम सूरज आप जुगनू फ़क़्रं कितना है यहाँ ।
 मधु केटब हाथ से जिनके मरे थे एक बार, दित्ति के फ़रजन्द सब मारे गये थे पहलवाँ ।
 जो बली को बाँध डाले अपने वामन रूप में, और सहस्रबाहु को भी मारे यही थे पहलवाँ ।
 यह वही भगवान् आये राम के हैं रूप में, उनसे क्षगड़ा मोल लेना हो न क्यों नुक़सार्साँ ।
 उनके पैरों में गिरी और जानकी को सौंप दो, तुम बनो गोसानसीं लड़के को कर दो हुक्मराँ ।
 शेर भी मजमूर को हरगिज नहीं है मारता, राम तो हैं रहम दिल और हैं निहायत मेहरबाँ ।
 आज तक जो चाहिए था आपने सब कर लिया, सारी दुनिया पर हुआ है आपका सिक्का रवाँ ।
 है यही दस्तूर कहते लोग भी हैं इस तरह, छोड़ दे तख़्ते हुक्मत शह जईफ़ो नातवाँ ।
 आप भी जंगल में जा कर अब भजन करते रहें, छोड़ दीजे ऐशोइशरत, स्वाहिशे हुस्नेबुताँ ।
 आप अब परमात्मा को याद में मशगूल हों, जिस तरह जपते हैं सब ऋषि-मुनी सन्यासियाँ ।
 आप मेरी बात सुन लें आपका होगा भला, राम के चश्मे करम से आप होंगे कामराँ ।
 इसका चर्चा फ़ैल जाएगा तमामी दहर में, आपका भी नाम होगा लोग होंगे शादमाँ ।
 जिस्म में लरजा पड़ा चरणों पे गिर कर फिर कहा, चाहती हूँ मैं सुहाग अपना रहे यह जावेदाँ ।
 वह उठाया अपनी बीबी को कहा ऐ जानेमन क्यों हो डरती, कीन दुनिया में है मुश्क-सा पहलवाँ ।
 दोनों आलम को किया है ज़ेर अपने हाथ से, किस लिए हैरान हो, खायफ़ हो क्यों तुम मेरी जाँ ।
 फिर भी रानी ने कहा उसको बहुत मिन्नत के साथ, लेकिन उसकी अकल चकराई थी वह सुनता कहाँ ।
 आखिरस वह महल से बाहर निकल कर चल दिया, और वह दरबार में जा कर हुआ जलवाकुनाँ ।
 सोचा मन्दोदरी ने अब खातमा रावण का है, और अब बरबाद हो जाएगा पूरा खानदाँ ।
 आके वह दरबार में पूछा कि कैसे जंग हो, यों कहा अकानिँ दौलत ने हमारे हुक्मराँ ।
 पूछते क्या आप हैं क्यों पूछते हैं बार-बार, कौन-सी मुशकिल है यह दुश्मन है कितना नातवाँ ।
 आदमी भालू व बन्दर इनको खा जाते हैं हम, खोफ़ की है कौन-सी जा, क्यों है यह वहमोगुमाँ ।

एक था फरखन्द रावण का जिसे कहते प्रहस्त, बोला वह यह झूठ है सब, और नहीं शायानेश। आपके अरकान सब नाफहम हैं बेअकल हैं, बात मुंह देखी यह कहते हैं मिला कर हाँ में हाँ। ऐसी बातों से फतह भी हासिल नहीं होगी कभी, एक ही बन्दर जो आया, याद है अब तक यहाँ। आप में से कोई उस वक्त क्यों खाया नहीं, जब जलाया शहर को वह आप सोते थे कहीं। मस्त्रिवा यह दे रहे हैं आपको बिलकुल गलत, गो बजाहर ठीक हैं लेकिन यह है नुकसारसा। खेलते ही खेलते जो पार दरिया को करे, और लेके अपनी सेना आये लड़ने को यहाँ ऐसी क्रवत से झगड़ना आपका अच्छा नहीं, कह रहे हैं झूठ यह सब कर रहे हैं शेखियाँ। बात को मेरी सुनो तुम दिल लगा कर ऐ पिता, यह न समझो मैं हूँ बुजदिल और हूँ मैं नातवा। ऐ पिता दुनिया में ऐसे लोग होते हैं बहुत, दिल में उनके है बुराई और हैं खीरीदहू। और ऐसे लोग दुनिया में बहुत कम पाएँगे, बात तो कड़वी हो और उसमें छुपी हों खूबियाँ। आप ऐसा कीजिए पहले तो भेजें दूत को, और फिर सीता को भी उनके यहाँ कीजे रवा। आप गर ऐसा करें तो शायद हो जाए मिलाप, खत्म क्रिस्ता होगा और कुछ भी नहीं रुसवाई। लेके औरत को अगर वापस न जाएँ रामचन्द्र, फिर भी लड़ने के लिए उनकी जो हों तैयारियाँ। मुस्तइद हो जाओ तुम भी फिर, लड़ो दिल खोल कर, फिर लड़ो मैदान में जैसे कोई वीरे जियाँ। आप सुन लेंगे अगर मालिक मेरा यह मस्त्रिवा, आका दुनिया में होगा नाम बेशकोगमा। सुनके गुस्सा आ गया रावण को, यों कहने लगा, अकल ऐसी तूने ऐ नाफहम पायी है कहीं। बुजदिली क्यों कर रहा है इस क्रदर क्यों खोफ है, तू है बदनामी का पुतला और नंगे खानवा। बाप के अलफ़ाज सुन कर यों कहा प्रहस्त ने, मोत आये तो असर करती दवा कोई कहीं। यह कहा, उठ कर वहाँ से अपने घर को चल दिया, और संध्या के लिए रावण हुआ फ़ौरन रवा। एक महल लंका की चोटी पर था बेहद खुशनुमा, राग और गाने की महफ़िल रोज़ जमती थी वहाँ। जाके रावण भी बरामद हो गया उस कसर में, और गर्वये राग गा कर हो रहे थे नरमाखवा। तालियाँ बजने लगी वीणा पखावज भी बजे, नाच और गाने में कामिल जो थी नाची रंडिया। इन्द्र से भी कुछ ज्यादा ऐश और आराम से, मुनाक़िद करता था जलसे रोज़ यह शाफ़िल वहाँ। आ गया दुश्मन है सिर पर कुछ नहीं उसको ख़वर, और कवी कितना है दुश्मन फ़िक्र यह उसको कहीं। जब यहाँ रघुवीर उतरे फ़ीज ले कर कोह पर, एक जगह जा कर वह बैठे जाय थी अच्छी जहाँ। गोद में सुग्रीव के रक्खा उन्होंने अपना सर, दाँयें और बाँयें में अपने रख लिए तीरों कर्मा। राम तरकस फेरते जाते थे अपने हाथ से, और विभीषण कान में कहते थे कुछ राजेनिहाँ। दाबते थे पैर हनुमान और अंगद खुशनुमा, और अक्रब में लक्ष्मण बैठे हुए थे शादमा। उस तरह तशरीफ़ फ़रमा राम जी थे उस जगह, जिसके मन में इसकी हो तस्वीर वह हो कामरा। देख कर पूरब की जानिब राम यों कहने लगे, चन्द्रमा की रोशनी देखो यह कैसी है अर्या। किस तरह यह घूमता है हो के बेखोफ़ो ख़तर, रौशनी के जोर से बाक़ी अँबेरा है कहीं। और सितारे आसमाँ पर हैं जो वह मानिन्दे दुर्ग, ले लिये सब का यह सब जेवर हैं गोया बेगुमा। फिर कहा ऐ भाइयो तुम मुझको दो उसका जवाब, चाँद में क्यों है यह षब्बा तुम करो, मुझसे बया। यों कहा सुग्रीव ने यह तो जमी की छाँव हैं, दूमरे ने यह कहा सुनिए हमारा भी बया। चाँद को राहू ने मारा था यह उसका दाग़ है, और कोई दूसरे ने यों किया उसका बया। रूप से मह के जो कुछ हिस्सा रती को मिल गया, दाग़ उसका रह गया है इसके दिल के धमियाँ।

यों कहा हनुमान ने है चाँद खादिम आपका, आप ही की साँवली सूरत है यह इसमें अयाँ ।
 सुनके यह हनुमान से हँसने लगे फिर रामचन्द्र, देख कर दक्खन की जानिब यों हुए गोहरफशाँ ।
 किस तरह बादल है छाया और है बिजली की चमक, देखो दक्खन की तरफ कौसा विभीषण है समी ।
 हो रही है धीमी-धीमी बादलों की भी गरज, अब बरस जायें न आले मुझको ऐसा है गुमी ।
 यों कहा उनसे विभीषण ने कि ये बादल नहीं, खूबसूरत एक लंका की है चोटी पर मकी ।
 बैठ कर उस महल में रावण है सुनता रागोरंग, नाच का भी है अखाड़ा हर दफा जमता वहाँ ।
 है लगा रावण के सिर पर नीलगू छत्रे सही, जो नजर आता है हमको मिले बादल बेगुमी ।
 कान के जो फूल हैं मन्दोदरी के कान में, वह नजर आते हैं ऐ आकाशे मन बरके तयाँ ।
 बज रहे हैं ताल और मृदंग भी हैं बज रहे, उन सदाओं में गरज मालूम होती है यहाँ ।
 बखवते रावण समझ कर मुस्कराया राम ने, और फिर हाथों में अपने ले लिये तीरोंकमाँ ।
 एक ही जब तीर मारा छत्र भी और ताज भी, गिर गये सब कान के फूलों के हमरह नागहाँ ।
 देखते ही देखते जब सब जमीं पर गिर गये, हो गये सब दंग कुछ समझे न ये राजेनिहाँ ।
 ऐसा कण्ठ के तीर वापस आ गया तरकस में फिर, नहुश इसको जान कर सब हो गये खायफ वहाँ ।
 जलजला था ये न कोई जोर की आँधी चली, और न ही हथियार भी कोई नजर आया यहाँ ।
 किस तरह यह गिर गया है छत्र भी और ताज भी, फूल भी रानी के कानों से गिरे क्यों नागहाँ ।
 सब यही कहते थे दिल में ये बहुत मनहूस है, देखा रावण ने कि सब पर खौफ छाया है यहाँ ।
 यों कहा सर का भी कटना शुभ होता है जिसे, ताज सर से गर गिरे, मनहूस होता है कहाँ ।
 अपने-अपने घर में जा कर सो रहो आराम से, सुन के यह, सब लोग आहिस्ता हुए घर को रवाँ ।
 कान के जो फूल रानी के गिरे थे कान से, फिक्र में रानी बहुत डूबी हुई थी बेगुमी ।
 जोड़ कर फिर हाथ रानी ने कहा रावण से यह, आँख में आँसू थे और कहने लगी आरामेजाँ ।
 मान लीजे मेरा कहना ज़िद न कीजे आप अब, राम की ताकत है ऊँची बरतरज वहुमोंगुमाँ ।
 वह नहीं इनसान हैं भगवान ही का रूप हैं, बात ये बिलकुल है जाहिर जानता है सब जहाँ ।
 ये जो है पाताल इनके पर हैं, ब्रह्मलोक सर, है ये सूरज आँख और बादल है बालों का निशाँ ।
 नाक है अस्वनकुवाँर और रात दिन जिनके पलक, और दिशायेँ कान हैं, है वेद में ऐसा बयाँ ।
 लोम जिनका ओठ है यमराज जिनके दाँत है, ये हवा है साँस जिनकी वेद जिनका है बयाँ ।
 है ये माया ही हँसी, दिगपाल जिनके दण्ड है, आग जिनका मुँह है यह और है वरुण जिनकी जबाँ ।
 जन्म देना पालना और मारना है जिनका काम, ये नदी जिनकी नसें हैं है सिकम बहरे गिराँ ।
 मुञ्चतलिक्र अवसाम के फल फूल हैं यह रोम-रोम, और नरक तो इन्द्रो है, कोह हैं सब हड्डियाँ ।
 शिव खुदी है, ब्रह्म फहम और चन्द्रमा ही कल्ब है, ये वही भगवान के ही रूप में आये यहाँ ।
 दुश्मनी इनसे न रखिये ग़ौर कीजे आप खूब, ताकि क़ायम रह सकूँ मैं भी मुहागन जावेदाँ ।
 सुनके रानी की ये बातें हँस पड़ा रावण बहुत, और कहा नाफहम की कैसे बयाँ हो खूबियाँ ।
 सच ये कहते हैं कि औरत में हैं होते आठ ऐब, झूठ हिम्मत चुलबुलापन और दगाबाजी अयाँ ।
 खौफ भी होता है और नाफहम भी होते हैं वो, और नापाकी व बेरहमी भी होती है निह्माँ ।
 मुझको दुश्मन का जो बतलाती है तू खौफ़े अजीम, वह तो सब पहले ही से कब्जे में मेरे है यहाँ ।
 तेरी चालाकी को समझा अब कि तू इस तज़ से, मेरी क्रूबत और सतवत का यह करती है बयाँ ।
 भृगनयनी तू है तेरी बात भी है रसभरी, जिसके सुनने और समझने में छुपी है खूबियाँ ।

उसकी बीबी ने ये समझा मोत इसकी आ गयी, अकल इसकी फिर गयी है अब ये समझेगा कहीं।
 इस तरह कहते हुए वह रात सारी हो गयी, सुबह होते ही सभा की हो गया रावण रवा।
 लाख बारिस हो दरखते बेंत फल सकता नहीं, यों ही मूरख को अगर ज्ञानी कहे, सुनता कहीं।
 अब इधर का हाल सुनिये राम जब जागे सुबह, वो बुला कर सबसे पूछे राय हो सबकी बया।
 हमको करना चाहिए क्या तब कहा यों जामवन्त, फ्रहम की अपने मूआफिक मेरी है अर्जें बया।
 बाली के फ़रजन्द अंगद को हमारे पास से, भेजिए कासिद बना कर आप रावण के यहाँ।
 मश्विरा सुन कर कहा अंगद से आखिर राम ने, ऐ बहादुर, तुम मेरे जानिब से हो जाओ रवा।
 मैं तुम्हें समझाऊँ क्या तुम खुद हो सब कुछ जानते, काम आसानी से निकले बात हो ऐसी वहाँ।
 हुक्म पा कर राम का अंगद क्रदम को चूम कर, यों कहा जिस पर तुम्हारी हो नज़र है कामग।
 आपके सब काम हो जाते हैं खुद ही आपसे, आपने इस तरह मुझको कर दिया इच्छतर्मा।
 मिल कर अपने साथियों से बाँध कर रखते सफ़र, राम के इस काम को फ़ौरन हुए अंगद रवा।
 ज्योंही वे लंका में पहुँचे एक रावण का पिसर, खेलता था राह में जो मिल गया इनसे वहाँ।
 बातों ही बातों में इन दोनों में झगड़ा हो गया, दोनों थे एक-साँ बहादुर और दोनों नौजवा।
 लात जब उसने उठायी मारने के वास्ते, पैर अंगद ने पकड़ कर उसको दे पटका वहाँ।
 राक्षस थरा गये उनकी ये क्रूवत देख कर, चुपके चुपके चल दिये सब द्रुम दबा कर बेगुमा।
 मर गया रावण का लड़का कोई कह सकता नहीं, सब छुपाये जाते थे वा एक दिगर राजेनिहाँ।
 देख कर भगदड़ ये सब पर हाल पूरा खुल गया, ये खबर फैली कि फिर बन्दर वही आया यहाँ।
 पहले लंका को जलाया अब करेगा फिर ये क्या, इस तरह औसान सबके थे खता, सब नीमजा।
 जिसके जानिब देखते वह काँप जाता खीफ़ से, राह बतलाता था वह ये चाहते जाना जहाँ।
 राम के चरणों का अपने दिल में रक्खा था खयाल, कसर के दरवाजे पर जा पहुँचा आखिर पहलवा।
 जाके दरवाजे पे वह ठहरा निहायत शान से, बेखतर बेखीफ़ देखा चौतरफ़ शरेज़िया।
 भेज कर एक राक्षस को की गयी आ कर खबर, हँस के रावण ने कहा ले आओ बन्दर को यहाँ।
 राक्षस सब दौड़ कर अंगद को अन्दर ले गये, उस जगह था तलत पर बैठा हुआ रावण जहाँ।
 देखते अंगद हैं क्या है एक काजल का पहाड़, जिसके बाजू झाड़ जैसे सर था एक कोहे गिरा।
 नाक, मुँह और कान उसके जैसे दरें कोह के, रोम-रोम उसके नज़र आते थे जैसे डालिया।
 ज्योंही ये पहुँचे सभा में हो के बेखीफ़ोखतर, देख कर इनको उठे सब लोग जितने थे वहाँ।
 देख कर ताज़ीम ये रावण को गुस्सा आ गया, हो के अंगद से मुखातिब उसने यों खोली जबा।
 कौन है तू जल्द बतला मुझको बन्दर अपना नाम, राम का मैं दूत हूँ उसने कहा यों बेगुमा।
 बाब से मेरे तुम्हारी दोस्ती थी इसलिए, मैं तुम्हारी बेहतरी करने को आया हूँ यहाँ।
 तुमने पूजा की है शिव की और ब्रह्मा जी की भी, तुम ऋषि पुलस्त के पोते हो, आला खानदा।
 काम सब पूरे हुए हैं चाहते थे जिस क्रदर, लोक वालों को भी जीता तुमने जीते राजगा।
 हो गया है तुमको लालच या है क्रूवत का गरूर, तुमने सीता को चुराया और लाये हो यहाँ।
 मश्विरा देता हूँ तुमको मानो गर मेरी सलाह, माफ़ कर देंगे तुम्हारी राम सारी गलतिया।
 दाँत में अपने दबाओ एक तिनका घाँस का, और कुल्हाड़ी डाल लो अपने गले के दमिया।
 जानकी के पीछे रक्खो अपने घर की औरतें, साथ ले कर तुम चलो बेखीफ़ हो कर बेगुमा।
 और कहो रघुनाथ मुझ पर एक दया की हो निगाह, रहम कीजें रहम कीजें यह रहे बिरदे जबा।

हो गया आपे से बाहर सुनके रावन ये वचन, और कहा बन्दर के बच्चे बन्द कर अपनी जबाँ।
 देवताओं का हूँ दुश्मन तूने पहचाना नहीं, नाम अपना और अपने बाप का तो कर बर्खा।
 कौन-से रिश्ते से तूने दोस्ती जतलायी है, खैरखाही मेरी करने को जो आया है यहाँ।
 बाली का मैं पुत्र हूँ और नाम है अंगद मेरा, बाप का मेरे तुम्हें कुछ याद है नामोनिशाँ।
 कुछ हुआ शर्मिन्दा रावण और यों कहने लगा, बाली था जो एक बन्दर जानता हूँ उसको हाँ।
 राज आती क्यों नहीं अंगद तुझें इस बात पर, बन गया सेवक तपस्वी का तू नंगे खानदाँ।
 किस लिए पैदा हुआ तू किस लिए ज़िन्दा रहा, क्यों नहीं तू मर गया जब हामिला थी तेरी माँ।
 खैरियत बाली की सुनना चाहता हूँ तुझ से मैं, यह तो बतला किस तरह है और अब वह है कहाँ।
 यों कहा अंगद ने थोड़े दिन गुज़र जाएँगे जब, मित्र से अपने मिलोगे पूछ लेना सब वहाँ।
 राम से हो कर मुखालिफ़ किस तरह मिलता है चैन, अपने मुँह से आप वह तुमसे करेंगे खुद बर्खा।
 सच यह कहते हो कि नंगे खानदाँ अपना हूँ मैं, और तुम अपने हो कुनबे के मुहाफ़िज़ निगहबाँ।
 जो है अंधे और बहरे वह भी यह कहते नहीं, बीस हैं कान और आँखें तुमको कहता है जमाँ।
 ब्रह्मा विष्णु देवता जिनके पकड़ते हैं चरण, उनका खादिम हो के कैसे मैं हूँ नंगे खानदाँ।
 है समझ ऐसी तुम्हारी क्यों न सीना फट गया, सुनते ही आँखें हुई गुस्से से उसकी खूँफ़शाँ।
 और कहा—यह गुप्तगू इस वास्ते हूँ सुन रहा, धर्म का पाबन्द हूँ और जानता हूँ नेकियाँ।
 यों कहा अंगद ने—नेकी मैं सुना हूँ आपकी, ग़ैर की औरत को चोरी करके ले आये यहाँ।
 और कासिद की हिफ़ाज़त अपने मुँह खुद कह दिया, डूब कर क्यों मर नहीं जाते हो बेशक्को गुमाँ।
 नाक अपनी बहन की काटी गयी वह देख कर, धर्म की तो तुम हिफ़ाज़त कर रहे थे बेगुमाँ।
 मैं भी खुश किस्मत हूँ जो यह आपके दर्शन हुए, आपके जैसे जहाँ मैं लोग होते हैं कहाँ।
 यों कहा रावण ने बक-बक कर न तू ऐ बेवकूफ़, लोकपालों को हिलाये हैं ये बाजू पहलवाँ।
 और मैं कैलाश को भी था उठाया एक बार, एक नहीं तूने सुना यह, है जमाने पर अर्थाँ।
 यह बता है कौन तेरी फ़ौज़ में ऐसा सजीव, जो मुकाबिल में मेरे आ जाय लड़ने को यहाँ।
 तेरा मालिक शम में औरत के है घुलता जा रहा, भाई भी उसका है ऐसा ही नहींफ़ो नातवाँ।
 तेरी और सुग्रीव की तो कुछ हकीक़त ही नहीं, और उस बुद्धिदिल विभीषण में तो हिम्मत है कहाँ।
 नाम जिसका जामवाँ है वह तो बूढ़ा हो गया, सामने आ जाए वह लड़ने को यह मुमकिन कहाँ।
 नील नल तो जंग के करतब नहीं हैं जानते, एक बानर है ज़रूर इनमें बहादुर पहलवाँ।
 जिसने लंका को जलाया है यहाँ पहले पहल, सुनते ही अलफ़ाज़ यह—अंगद ने यों खोली जबाँ।
 किस तरह लंका जला डाली मुझे बतलाइए, कर गया हिम्मत ये क्यों कर एक बानर नातवाँ।
 आपकी जो राजधानी जल गयी यह सुनके बात, कब यक़ीन आये किसी को कोई समझे है कहाँ।
 वह तो एक अदना है सेवक राजाए सुग्रीव का, जिसकी तुम तारीफ़ करके कह रहे हो पहलवाँ।
 वह वो है एक दूत उनका—वह कोई फ़ौजी नहीं, सिर्फ़ लाने के लिए हमने खबर भेजा यहाँ।
 बेइज़ाज़त राम के कैसे जला डाला शहर, शायद इस डर के सबब वापस नहीं आया वहाँ।
 तुम जो सच कहते हो रावण कुछ नहीं है इसमें सूठ, कुछ नहीं गुस्सा मुझे आता है सुन कर बेगुमाँ।
 तुमसे वह आये मुकाबिल जो तुम्हारी जोड़ हो, तुम हो एक मर्दे जयीफ़ और हम हैं सारे पहलवाँ।
 दुश्मनी और दोस्ती कीजें तो हमपल्ला के साथ, शेर मेंढ़क को अगर मारे, बहादुर है कहाँ।
 तुमको मारें राम, तो उनकी बड़ाई कुछ नहीं, फिर भी गुस्सा क्षत्रियों का है बहुत आतिशफ़शाँ।

मार कर तीरे सुखन अंगद ने जलमी कर दिया, छिद गया कलबे उडू बाकी न थे साबोतवाँ ।
 हँस के रावण ने कहा बन्दर में खूबी है यही, अपने मालिक का हुआ करता है हरदम मदहूँवाँ ।
 अपने आक्रा के लिए वह नाचता है हर जगह, फ़ायदा करने में उसके, शर्म करता है कहीं ।
 जब तुम्हारी नसल में अंगद हकीकत है यही, फिर न क्यों मालिक की अपने तुम करोगे शोखियाँ ।
 तेरे यह अलफ़ाज भी सुन कर जो मैं खामोश हूँ, मैं गुणों को हूँ परखता हूँ गुणों का क़दरदाँ ।
 फिर कहा अंगद ने, मुझसे था कहा हनुमान ने, क़दरदाँ कितने हो तुम, है कितनी तुममें खूबियाँ ।
 आपका लड़का मरा एक, शहर सारा जल गया, क़द अफ़जाई इसी की आपने की बेगुमाँ ।
 मैंने आ कर आज सब देखा है अपनी आँख से, तुममें कुछ शर्मो हया है और न गुस्सा बेगुमाँ ।
 है समझ तेरी जो ये, तू बाप को भी खा गया, यों कहा अंगद से रावण हो के खुद खन्दादहाँ ।
 बाप को तो खा गया मैं, तुझ को भी खाता हूँ अब, यह कहा अंगद ने, लेकिन देर है कुछ बेगुमाँ ।
 छोड़ता तुझको हूँ मैं बाली का बेटा जानकर, खतम कर देता था अब तक छोड़ता ही था कहीं ।
 ऐ घमण्डी मुझको बतला कौन—सा रावण है तू, मैंने जो रावण सुना है उसका करता हूँ बयाँ ।
 एक गया पाताल को था जो बली को जीतने, अस्तबल में बाँध कर बच्चों ने रक्खा था वहाँ ।
 और बच्चे मारते थे खेल में हरदम उसे, उसको छुड़वाया बली ने, हो कर उस पर मेहरबाँ ।
 दूसरा रावण जो था देखा सहस्रबाहू ने जब, एक शय नायाब समझा और पकड़ लाया मक़ाँ ।
 और समाशे के लिए अपने मक़ाँ में रख दिया, तब मूनी पुलस्त छुड़वाये, ये सब पर है अयाँ ।
 एक रावण की तो कहने में मुझे भी शर्म है, जिसको बाली ने दबाया था बगल के दमियाँ ।
 एक असेँ तक यों ही फ़िर्ता रहा लटके हुए, कौन से रावण हो तुम इनमें, करो मुझसे बयाँ ।
 तब कहा रावण ने सुन अब कौन सा रावण हूँ मैं, जिसकी ताकत जानता कैलाश है काहेगिराँ ।
 और उमापति जानते हैं मेरी कूवत को बखूब, काट कर अपने सिरों को की थी पूजा बेगुमाँ ।
 बाजुओं की मेरी कूवत जानते दिग्पाल हैं, खीफ़ जिसका आज भी है उनके दिल के दमियाँ ।
 हाथियों के दाँत टूटे जब हुआ सीना सिपर, मेरे सीने की तो मजबूती है दिग्गज पर अयाँ ।
 मेरे चलने से जमीं है काँपती इस तीर से, नाव पर चढ़ता है हाथी जिस तरह हो कर गराँ ।
 झूठी बक-बक तू न कर, क्या जानता मुझको नहीं, मैं नसीबे का धनी हूँ, जानता है सब जहाँ ।
 नामवर ऐसा हूँ मैं, और तू मुझे कहता है हीच, और सना इनसान की करता है तू ताक़त बयाँ ।
 आ गया अंगद को गुस्सा और दिया उसको जवाब, ऐ घमण्डी सोच कर कह रोक तू अपनी जबाँ ।
 जिस सहस्रबाहू की कूवत को जलाये परशुराम, जिनके तेगे से हज़ारों मिट गये हैं राजगाँ ।
 वह भी जिनके सामने आ कर खमीर्दाँ हो गये, ऐसी ताक़त का बता इनसान होता है कहीं ।
 तू है नादाँ यह बता, क्या राम भी इन्सान हैं, कामधेनु, गाई होती है कहीं ओ बदज़बाँ ।
 नदियों में क्या शुमार होता है गंगा जी का भी, कल्पवृक्ष को पेड़ कहता है कोई क्या बेगुमाँ ।
 अन्न भी क्या धान्य है और रस है क्या अमृत कोई, और गरुड़ को भी परिन्दा कोई कहता है कहीं ।
 शेष भी क्या साँप है चिन्तामणी पत्थर है क्या, लोग कहते हैं जिसे क्या हैं वही बातें जिन्हीं ।
 गरुड़े दुनिया में हज़ारों खूबियों के काम हैं, राम की भक्ति के जैसा फ़ायदा किसमें कहीं ।
 जी जलाया शहर को तेरे उजाड़ा बाग़ को, और जिसने तेरे एक फ़रजन्द की ले ली थी जाँ ।
 प्रीज का तेरी और तेरा सब मिटाया जो घमंड, यह बता हनुमान वह, बन्दर है हो सकता कहीं ।
 क्यों नहीं करता है उनकी याद ऐ मगरूर तू, उनका दुश्मन बन के कैसे तू बचेगा बेगुमाँ ।

ब्रह्मा और शिव भी तुझे हरगिज बचा सकते नहीं, डींग मार अपनी न ऐसी छोड़ दे ये शोखियाँ ।
 बाण उनका चलते ही सर तेरे कट कट कर सभी, वानरों के पैर पर आ कर गिरने नागहाँ ।
 गेंद के मानिन्द सर कट कर के गिरते जाएंगे, खेलने लग जाएंगे चौगान उनके वानरा ।
 राम जब मैदान में आ जाएंगे तू सोच ले, उनको गुस्सा आयगा ले लेंगे फिर तीरों कमा ।
 यह तेरी झूठी शिकायत फिर न बाक़ी रह सके, बेवकूफ इसको समझ ले है समझ तुझको कहा ।
 ये बड़े अलफ़ाज़ सुन कर और रावण जल गया, जिस तरह घी से हुआ करती है आग आतिश फ़शा ।
 कुंभकरण है भाई मेरा और वेटा इन्द्रजीत, मैंने दुनिया पर फतह पायो है, जीता है जहाँ ।
 और कहा इमदाद ले कर वानरों से राम ने, बाँधा है दरिया पे पुल, इसमें कोई खूबी है कहा ।
 पार दरिया को तो कर लेता है मामूली दरिन्द, क्या बहादुर होते हैं वो और होते पहलवा ।
 वह कवि हैं कल हैं बाजू मेरे, सुन बन्दर ज़रा, हो गये हैं ज़ेर जिससे देवता और पहलवा ।
 मेरे आगे एक राजा की सना करता है तू, दिशापालों ने भी जब चूमा है मेरा आस्ता ।
 सुलह करने में उदू से क्या नहीं आती शरम, देख पहले मेरे बाजू फिर बन उसका मदहसवा ।
 कौन रावण-सा दिलावर है जो सर को काट कर, दे दिया अपना हवन में बंखतर बेईनो आ ।
 मैं जो कहता हूँ गवाही इसकी शिव दंगे ज़रूर, सर मेरे जलते थे सब और कुंड था आतिशफ़शा ।
 मेरी पेशानी पे ये लिखा हुआ देखा जो मैं, दस्ते इन्सा से मरूंगा हंस दिया मैं नागहाँ ।
 मुझको इसका भी नहीं कुछ खोफ़ है इस वास्ते, क्योंकि ब्रह्मा भी हुआ है अब जईफ़ो नातवा ।
 लिख दिया होगा सलत कुछ सही उससे हो गया, तू अरे नादान बक-बक कर न अब मुझसे यहाँ ।
 ये कहा अंगद ने तुझ-सा बेहया कोई नहीं, अपनी ही तारीफ़ तू करता है अपने मुँह बया ।
 सर कटाया और उठाया तू ने जो कैलाश को, तेरे सर से वह निकलता ही नहीं अब तक समा ।
 जो सहस्रबाहू को जीता और बली बाली को भी, ज़ोरो बाजू को छिया रखा है दिल के दमिया ।
 बेसमझ अब छोड़ दे सर काटने का तज़करा, सोवेदाबाजी से क्या बतना है इन्सा पहलवा ।
 काट कर टुकड़े किया करते हैं अपने जिस्म के, सोवेदाबाजी इसे कहते है सब जादू बया ।
 गो पतंगे आग में जलते है लालच के सबब, भार उठाते हैं गधे, कह, ये बहादुर है कहा ।
 बात को अब मत बढ़ा कहना मेरा तू मान ले, राम का भेजा हुआ आया हूँ मैं तेरे यहाँ ।
 राम का कहना है मारे शेर गर गोदड़ कोई, कुछ नहीं उसकी बड़ाई कुछ नहीं है उसकी शा ।
 मैं तो उनकी बात ही को याद रख कर इसलिए, सुन रहा हूँ तेरी बातें सह रहा हूँ शोखियाँ ।
 वर्ना सीता को मैं ले जाता तेरा मुँह तोड़ कर, तेरी ताक़त और क़ूवत हो गयी मुझ पर अर्था ।
 ग़ैर औरत को चुराया तूने तनहाँ देख कर, गो है तू मगरूर और कुल राक्षस पर हुक्मरा ।
 राम के सेवक का भी सेवक हूँ एक अदना ज़रूर, वह करिश्मा कर दिखाऊँ जिससे हैरा हों जहाँ ।
 फेंक कर तुझको ज़मीं पर मार कर सब फ़ौज को, शहर तेरा सब जला कर खाक़ कर दूँ नागहाँ ।
 औरतें जितनी जवाँ हैं सबको सीता जी के साथ, ले के हो जाऊँ यहाँ से एक-दो पल में रवा ।
 ये भी करना ज़ेब कुछ देता नहीं बिलकुल मुझे, जो हो मरता मारना उसको है अच्छा ही कहा ।
 वाम योगी होवे या ऐयाश हो कंजूस हो, बेखिरद हो या कि हो बदनाम, मुफ़लिस, नातवा ।
 जो हमेशा का हो रोगी या दवा में गुस्सावर, विष्णु की पूजा से गफ़लत में करे स्वाबे गिरा ।
 जो करे इनकार हरदम वेद के अहक़ाम से, और करे बरताव संतों से मिसाले दुश्मना ।
 अपना ही जो हो मुहाफ़िज़ ग़ैर की रीबत करे, और जो पापी हो—ये हैं चौदह मुर्दे बेगुमा ।

इसलिए मैं मारता तुझको नहीं हूँ बदनसीब अब न गुस्से में मुझे ला, कर दिया तुझसे बर्बा।
 सुनके यह अल्लाह रावण हाथ मलने लग गया, अपने दाँतों से वो काटा ओठ और अपनी जब्बा।
 नीचे बन्दर मौत तेरी आ गयी बिलकुल करीब, मुँह है छोटा और तू करता है यों तूने जब्बा।
 जिसके बल पर कूदता है उसमें बल कुछ भी नहीं, इसलिए तो बाप ने वन को किया उसको रवा।
 फ़िर है उसको हँसी की और जोरू का है गम, और फिर डर है मेरा उसके लिए 'तुफ़ा' बरा।
 जिसकी हिम्मत है तुझे, ऐसों को मेरे राक्षस, रात दिन खाते हैं उनको है खबर तुझको कहा।
 राम की तजलील से अंगद को गुस्सा आ गया, कान से उनकी बुराई सुन वो सकते थे कहा।
 कट कटाया जोर से और अपने दोनों हाथ को, जोर से मारा जमीं पर हिल गयी वह नागहवा।
 लोग जो दरबार में थे खीफ से अकसर गिरे, और कई दरबार से उठ कर हुए फ़ौरन रवा।
 शाहे रावण गिरते-गिरते फिर सँभल कर उठ गया, ताज उसके सर के सब गिरने लगे नीचे वहाँ।
 चन्द तो खुद उसने ले कर अपने सर पर रख लिये, और कुछ अंगद ने फेंके उनमें से जेरे सम्रा।
 उनको फेंका उस तरफ़ जिस सिम्त में थे रामचन्द्र, वानरों ने देख कर उनको किया दिल में गुमा।
 माजरा क्या है कि दिन में टूटते तारे हैं यह, या कि रावण ने कोई है वज्र फेंका यह यहाँ।
 राम कहने लग गये कुछ बात यह डर की नहीं, वज्र रावण का नहीं है और न ये सैयारगा।
 यह मुकट रावण के हैं फेंके हैं बाली-पुत्र ने, जो चले आये हैं सीधे किस तरह देखो यहाँ।
 फिर उछल कर हाथ में हनुमान ने उनको लिया, राम के आगे रखा सब वानरों के दमिया।
 रीछ और वानर तमाशा देखने उनका लगे, रीशनी जिसमें ज़्यादा मेहर से भी थी अर्था।
 हो के बरहम यों कहा रावण ने इसको मार दो, और भागो चोतरफ़ मेरे बहादुर पहलवा।
 रीछ वानर जिस जगह मिल जाएँ खा डालो उन्हें, वानरों का कुछ न बाकी रह सके नामोनिशा।
 क्रुद कर लो दोनों भाई राम और लक्ष्मण को भी, इस तरह अपनी सभा में वह हुआ आतिशफ़शा।
 फिर कहा अंगद ने आती शर्म तुमको कुछ नहीं, देख कर ताक़न मेरी खुलती है फिर तेरी जब्बा।
 चोर, पापी, बदचलन और बेवकूफ़ो नासमझ, हो गया सरसाप तुझको अक्ल है तेरी कहा।
 शान में जो राम की बेहूदा है तू बक रहा, क्यों नहीं तेरे इस मुँह से टूट कर गिरती जब्बा।
 तेरे सर मैदान में कट कर जो गिरते जाएँगे, साथ ही उनके गिरेगी मुँह से भी तेरी जब्बा।
 जिसके एक ही बाण से बाली का मरना हो गया, यह बता इन्सान हो सकता है वह कैसे कहा।
 बीस आँखें हैं तेरी और फिर भी अन्धा ही है तू, तुझ पे लानत है हज़ारों, जिन्दगी है रायगा।
 मैं तेरे दाँतों को अब भी तोड़ सकता हूँ मगर, क्या कल्ले मजबूर हूँ, है राम का मंशा कहा।
 दिल यह कहता है कि सारे तोड़ डालूँ सिर तेरे, और लंका को भी कर दूँ गरक़े दरिया बेगुमा।
 है ये लंका एक गुल्लर, और तुम कीड़े हो सब, मैं हूँ बन्दर तो इसे खालूंगा बेशक़ोगुमा।
 ऐसी बातें सुनके अंगद को कहा रावण ने यह, इस क्रूर बातें बड़ी सोखा है ऐ नादा कहा।
 बाप तेरा तो कभी इतना कहा करता न था, मिलके इन दोनों से अब तू हो गया है बदजबा।
 यों कहा अंगद ने तेरे बीस दंड हैं बेवकूफ़, तेरे मुँह से खींच डालूंगा मैं तेरी हर जब्बा।
 होके बरहम पैर अपना जोर से रख कर कहा, पैर मेरा तो हटा दे राम वापस हो रवा।
 हार जाऊँगा मैं सीता को भी यह भी है परण, कहके ये जम कर खड़ा वह हो गया शेरजिया।
 तब कहा रावण ने बन्दर को पकड़ कर फेंक दो, इन्द्रजीत उट्ठे, कई दीड़े बहादुर पहलवा।
 कोशिशें करते थे लेकिन पैर कुछ हटता न था, हो गये नाकाम सब बैठे वे होके नातवा।

आके सब कोशिश किये जितने वहाँ थे राक्षस, लाख वह कोशिश किये लेकिन वो हटता था कहाँ। हार मानी सबने अंगद की ये ताकत देख कर, और यह गर्ज सभा में जैसे एक शेरजियाँ। तबतो रावण खूद उठा उसको उठाने के लिए, और मुखातिब होके अंगद यों हुए गोहरफर्शा। पैर छूने से मेरा तेरा भला होगा नहीं, राम का तू पैर छू ले होगा तब ही शादमाँ। सुनके बिसिया गया रावण लौट कर वापस हुआ, जाके सिंहासन पे अपने हो गया जलवा कुनाँ। लेकिन उसकी हिम्मत कुछ पस्त होने लग गयी, माह की जू जिम तरह होनी है दिन में रायगाँ। करके नीचा सर वह जाके बैठा सिंहासन पे यों, जैसे खो दी हो किसी ने मालोपूजी बेगुमाँ। राम दुनिया के हैं मालिक और सबकी जान हैं, उनसे जो होगा मुखालिफ़ चैन पाएगा कहाँ। नीचा-ऊँचा कर जो सकते हैं तमामो दहर को, है परन काशिका उनके टूट सकता है कहाँ। फिर भी की तकलीफ़ अंगद ने, मगर माना न वो, मौत उसकी आ गयी थी, अब वह सुनता ही कहाँ। राम की तारीफ़ वह करते हुए दरबार से, हो गये अंगद पिमर बाली के उठ कर खुद रवाँ। खेलते ही खेलते माहंगा तुझको जंग में, पहले ही तारीफ़ अपनी तुझसे क्या कर लूँ बयाँ। पुत्र जो मारा गया था सुनके उसका माजरा, दुःख हुआ रावण को बेहद और किया आहोफ़ुँगा। राक्षस सब डर गये अंगद की कूवत देख कर, खौफ़ सब पर छा गया और हो गये सब नीमजाँ। तोड़ कर जोरे उदू—बतला के अपने जोर को, राम के चरणों में आया शाद हो कर पहलवाँ। हो गयी थी शाम रावण भी गया रनिवास में, फिर किया मन्दोदरी ने उससे अपना यों बयाँ। छोड़ दीजे ये हिमाकृत, गौर करके आप खुद, राम से मद्दे मुक्ताबिल आप हो सकते कहाँ। खींच दी थी उनके भाई ने जो एक छोटी लक्रीर, पार उसको भी नहीं जब कर सके थे बेगुमाँ। मेरे प्यारे आप क्या हैं जीत सकते उनको भी, जिनका कासिद फाँद कर दरिया चला आया यहाँ। जिनके जोरे तेग से मारा गया अश्रय कुँवार, शहर बाग़ीचे जले, मारे गये सब पहलवाँ। आपकी सब वीरता उस वक़्त थी किम जा छुपी झूठ और बेकार क्यों अब हाँकते हो शोखियाँ। राम को इन्सान मामूली न कोई जानिए, उनकी कूवत है ज़्यादा बरतरज्ज वहमो गुमाँ। राम के तीरों की कूवत जानता मारीच था, आपने उसका भी कहना कुछ न माना, मेरी जाँ। जब जनक के घर धनुष यज्ञ की हुई तकरीब थी, सब महाराजा जमा थे आप भी थे पहलवाँ। तोड़ कर शिव का धनुष जीती थी जिसने जानकी, क्यों नहीं हो कर मुक्ताबिल उनको जीता था वहाँ। इन्द्र का लड़का जयन्त उनकी है कूवत जानता, एक ही बस आँख ले कर बरुण दी थी जिसकी जाँ। अपनी आँखों देखा तुमने सुपनखा का हाल सब, अब भी कुछ शर्मोहया का है नहीं नामोनिशाँ। जिसने खरदूषण को मारा और मारा है विराध, एक ही नावक से जिसने ली है बाली की भी जाँ। पुल जो दरिया पर बनाया आ गये दरिया के पार, आप ही की खैर को है दूत भी भेजा यहाँ। आपके दरबार का जिसने मिटाया सब घमंड, जैसे हलचल हाथियों में डाल दे शेरजियाँ। राम ही के हैं वे सेवक अंगदो हनुमान भी, जोकि है दोनों बहादुर और दोनों पहलवाँ। आप बेजा ले रहे हैं हिंस और नखवत् का वार, आ गयी है मौत आगे कजरवी पर हो रवाँ। मौत डंडा ले के कुछ आती नहीं है हाँकते, फ़हम और कूवत सचाई को है करती रायगाँ। मेरे मालिक मौत जिसकी आती जाती है करीब, आप ही-मा उसमें हो जाता है सब वहमोगुमाँ। लखतेदिल दो मर गये और शहर सारा जल गया, अब तो इस किस्से को कीजे खत्म ऐ मालिक यहाँ। तीर जैसे ये सुखन बीबी के सुन कर चुप रहा, और सबेरा जब हुआ, उठ कर हुआ बाहर रवाँ।

रामने अंगद को अपने सामने बुलवा लिया, हँस के क्रमाया कि मुझको है ये ताज्जुब बेगुमाँ । रावण ऐसा है बहादुर और शाहे राक्षस, तुम मुकट चार उसके सर के किस तरह फेंके यहाँ । अजुँ ये अंगद ने की वह ताज थे हरगिज न चार, पर सिफ़त हैं चार—जो राजा में होती हैं निहाँ । साम, दाम और दण्ड, भेद हैं चार ये राजा के गुण, धर्मके हैं ये तरीके वेद में भी हैं बयौ । चूँकि रावण में नहीं कुछ धर्म अब बाक़ी रहा, इसलिए वह गुण चले आये हैं चरणों में यहाँ । अक़ल रावण की गयी, मोत आयी है उसकी करीब, आपके इस मरतबे का वह नहीं है क़द्रदाँ । देख कर अंगद की दानाई हुए खुश रामचन्द्र, और अंगद ने किया सब हाल लंका का बयौ । जबकि कासिद से जवाब अपने अद्द का मिल गया, राम ने सबको बुलाया, यों हुए गीहर फ़शौ । ऐ मशीरो, क़िला लंका का बहुत मज़बूत है, किस तरह उस पर पे धावा होगा कीजेगा बयौ । राजाए सुयीव वानर राज ओ राजा जामवन्त, और विभीषण भी हुए इस मश्वरे में हमजबौ । चार हिस्सों में किया तक्रसीम सारी फ़ौज को, और किये मामूर अफ़सर भी जो थे शायानेशौ । और समझाया उन्हें परताप कह कर राम का, सुनके जिसको सब गरज उठे बहादुर पहलवाँ । पैर छू कर राम के हैं दीड़ते और दीखते, राम की जय का वो नारा है लगाते हर जबाँ । जानते हैं क़िला है मज़बूत लंका का बहुत, फिर भी वह बेख़ौफ़ हैं हिम्मत है दिल के दमियाँ । इस तरह हो कर निडर चारों तरफ़ से घेरते, वानरों भालू की फ़ौजें सूये लंका थी रवाँ । राम की जय का था नारा और लक्ष्मण की भी जय, राजाए सुयीव की जय का था नारा बरजबाँ । सुन के ये आवाज़ लंका में मचा कुहराम एक, हँस के रावण ने कहा देखो ये उनकी शोखियाँ । फ़ौज को अपनी बुलाया और वह सब आ गये, और मुखातिब उनसे हो कर यों हुआ खन्दादहाँ । राक्षस मेरे कई दिन से जो भूखे हैं वे सब, कुदरतन वानर व भालू आ गये हैं सब यहाँ । जाओ इनको तुम पकड़ लो और खा डालो उन्हें, लेके सब हथियार अपने वह हुए फ़ौरन रवाँ । सुन के यह दीड़े गये वे बेसमझ सब राक्षस, वह नहीं ये जानते थे इसमें खुद का था जियाँ । क़िले पर चढ़ने लगे लाखों हज़ारों राक्षस, एक से था एक ताकतवर बहादुर पहलवाँ । बूज पर ऐसे नज़र आते थे ये सब राक्षस, कौह की चोटी पे बादल धिर के हो जैसे समौ । जंग का बाजा बजा और ढोल बजने लग गया, हिम्मतें बढ़ने लगीं, जो थे सिपाही पहलवाँ । भेरी और बजती नफ़ोरी भी जहाँ थीं बेशुमार, जो थे बूजदिल हो रहे थे सुन के इनको नीमजौ । राक्षस ने देख ली मैदान में फ़ौजे उद्द, वानरों भालू हैं लाखों और बहादुर पहलवाँ । दीड़ते हैं, काटते हैं, दाँत को हैं पीमते, झाड़ को वो तोड़ते हैं फोड़ते कोहे गिराँ । इस तरफ़ रावण की जय है उस तरफ़ है राम की, यों दुहाई हर तरफ़ है अपनी-अपनी बरजबाँ । जब दुहाई यह हुई आगाज़ लड़ना हो गया, वानरों पर फेंकते थे राक्षस कोहे गिराँ । ले के वानर हाथ में वापस उन्हें थे फेंकते, और पकड़ कर पैर उनके थे घुमाते दमियाँ । कूद कर वानर व भालू भी क़िले पर चढ़ गये, फेंक देते थे जमीं पर राक्षस मिलते जहाँ । सैकड़ों वानर मसल डाले हज़ारों राक्षस, और क़िले पर फिर वो चढ़ जाते थे जैसे बिजलियाँ । झुण्ड के झुण्ड राक्षस के भागने तब लग गये, जिस तरह बादल हवा के जोर से होते रवाँ । शहरे लंका में मचा कोहराम हाहाकार का, तिपलो जन बीमार सब करने लगे आहोफ़ुगाँ । सब यह कहते थे कि इस कमबख़्त को क्या हो गया, बरसरे तल्ले हुकूमत पे जो था जलवाकुनाँ । मोत को अपने बुलाया है ये अपने हाथ से, इस तरह रावण को ये सब दे रहे थे गालियाँ ।

देखा रावण ने कि फौज अपनी परागन्दा है अब, मन को वह वापस बुलाया और यों खोली जवाँ । जो कोई मैदान से वापस चला जाएगा आज, अपनी ही तलवार से ले लूँगा मैं खुद उसकी जाँ । आज तक खाया हमारा ऐंठ और आराम से, आज लड़ने के लिए प्यारी हुई है अपनी जाँ । सुनके उसकी बात यह सब राक्षस डरने लगे, होके धमिन्दा वो लड़ने को हुए वापस रवाँ । जंग ही में जान दे देना यह है मर्दों का काम, जब ये सूझा, जान की परवाह फिर रहती कहाँ । ले के वो हथियार अपने वानरों में भिड़ गये, इस क्रूर पीटा कि सब के खो गये ताबोतवाँ । हो के वह बताव यों कहने लगे आवाज से, अंगदो हनुमान नल नीलो दुधीमुख हैं कहाँ । पच्छमी दर पर जहाँ हनुमान जो थे लड़ रहे, यह गुना, कुछ फौज अपनी हो गयी है नातवाँ । मेघनाद हनुमान में जंग हो रही थी जोरदार, इस क्रूर मन्त्रन था दर, टूटता था ही कहाँ । आ गया हनुमान को गुस्सा वो ले कर एक पहाड़, दीड़ कर आये किये रथ के भी उसकी धज्जियाँ । सारथी को मार कर लात एक दी मेघनाद को, लोग ले आये उसे घर जब हुआ वह नातवाँ । जब गुना अंगद, किले पर चढ़ गये हनुमान हैं, कूद कर वह भी किले पर चढ़ गये फौरन वहाँ । दोनों यह ऊधम मचाये और किले पर चढ़ गये, राम जी की है दुहाई उनके था विरदेजवाँ । कसरे शाही को गिराने लग गये ये लोग जब, खौफ रावण को हुआ राने लगी सब रानियाँ । पीट कर छाती थी कटनी, हाथ यह क्या हो गया, अब के भी वानर हैं आये, हैं मुसीबत का समाँ । ये गरजते धूरते उनको डराने जोर से, ले के खम्भे कसर के कूदे वह दल के धमियाँ । लात, मुक्की और पत्थर से उन्हें थे मारते, यों खर ले ले के उनकी, कर दिये बस नीमजाँ । सैकड़ों को वो मसल कर, सैकड़ों सर फोड़ कर, फेंक देते थे वहाँ दशशिश रावण था जहाँ । जा के सिर रावण के आगे इस तरह थे फूटते, जिम तरह हैं फूटनी जाती दही की हंडियाँ । और जो अफसर कोई फौजों यह का मिल गया, फेंक देते थे उसे थे रामचन्द्र जी जहाँ । और विभीषण नाम हर एक का सुनाते राम को, राम की चम्मे करम से बरसा दी जाती थी जाँ । ऐसे बदकिरदार थे, बदवक्त थे ये राक्षस, खुश नसीबी देखिए ऐसे नमीब होते कहाँ । गो अदावत ही से उनकी देवते हों राक्षस, राम का तो नाम लेते हैं, यह किस्मत है कहाँ । राम की ख्ये खता बरसा वह सफ़ा दर गुजर, किस क्रूर वो रहम दिल हैं, किस क्रूर हैं मेहरबाँ । कर दिया दोनों ने बरा लंका को यों ज़ेरोजवर, जैसे मदरा चल पड़े थे दो समुंदर बेगुमाँ । इस तरह ऊधम मचा कर शाम जब होने लगी, दोनों वापस आ गये थे रामचन्द्र जी जहाँ । देख कर दोनों सिपाही हो गये खुश रामचन्द्र, और किया उनके गुणों का अपने मुँह से भी बयाँ । अंगदो हनुमान जब वापस हुए यह देख कर, और भी जितने थे वापस आ गये सब वानरों । यों पलटना देख कर और वक्ते पगारिब जान कर, राक्षस उन पर किये हमला अक्रब से नागहाँ । वानरों ने यह देखा आ रहे हैं राक्षस, फिर पलट कर भिड़ गये लड़ने को ये सब पहलवाँ । राक्षस थे सब सियारू और ये थे सुखारू, दोनों जानिब थे बहादुर दोनों जानिब पहलवाँ । जंग होने लग गयी और राक्षस जब कुछ दबे, थे अकंपन और अतीकाई ये फौजी अफसरों । एक पल भर में किया इस तरह इन दोनों ने खेल, छा गया पूरा अँधेरा और जुलमत का समाँ । खूब पत्थर राक्ष की बरसात होने लग गयी, हो गये हैरान वानर खो दिये ताबोतवाँ । राम ने जाना ये सब कुछ और कहा हनुमान से, अंगदो हनुमान दोनों हो गये फौरन रवाँ । राम जी हैंगते हुए अपनी जगह से उठ गये, और फौरन तीर खींचा जो कि था आतिशफाँ ।

जिसके बाअस जो अँधेरा था वह सब जाता रहा, ज्ञान से जैसे बुराई दिल की होती है रवा। अंगदो हनुमान गर्जे डट गये सब राक्षस, रोशनी पा कर हुए वानर व भालू शदमा। भागते थे राक्षस वानर पकड़ते थे उन्हें, और पटकते थे जमीं पर उनको करके नातवा। और पकड़ कर पैर उनके फेंकते दरिया में थे, साँप बिच्छू और मगर खा लेते थे जिनको वहाँ। कुछ मरे, घायल हुए कुछ, और कुछ गढ़ पर चढ़े, और गरजते जा रहे थे शोर करते वानरा। हो गयी थी रात चारों सिम्त के दल आ गये, लौट कर सब आ गये, थे रामचन्दर जी जहाँ। इस तरफ़ रावण ने बलवा कर तमाम अरकान को, जो बहादुर मर गये करने लगा उनका बया। फौज बाधी मर गयी है राय का इजहार हो, किस तरह आगे अमल हो, कीजिए मुझसे बया। मालवान उसका था नाना और जईफुल उमर था, मरतबा उसका था ऊँचा और था इज्जत निशा। यों कहा उसने की बाबा, बात मेरी भी सुनो, जब से सीता आयी है कितनी मुनीबत है यहाँ। जिसने हिरनकुश को मारा और मधुकेटव को भी, ऐसी कूवत के मुक्ताबिल होके जीतोगे कहा। जो बुरों को मारते हैं और गुणों के धाम हैं, शिव ब्रह्मा जिनकी सेवा में लगे हैं हर जमा। जानकी को भेज दो और उनकी सेवा में रहो, है इसी में चैन तुमको, हैं इसी में खूबिया। ऐसी कड़वी बात को रावण न कानों सुन सका, और कहा, बूढ़े निकल हरगिज न रहना तू यहाँ। हो गया अब तू है बूढ़ा वर्ना तुझे मैं मारता, अब ये मरने ही को हैं सोचा ये दिल में मालवा। वह बुरा कहता हुआ रावण को अपने घर गया, हो के वरहम मेघनाद उट्ठा बहादुर पहलवा। और कहा कल सुबह मेरी आप जूरत देख लें, जो दिलेरी मैं करूँगा कर नहीं सकता बया। सुनके लड़के का वचन रावण को हिम्मत हो गयी, प्यार से नजदीक उसको वह बिठाया बेगुमा। जब सबेरा हो गया वानर ने फिर घेरा किया, शहर में होने लगे हर सिम्त से आहोफुगा। राक्षस भी सब मुसल्लह हो कर ऊपर चढ़ गये, और किले पर से गिराने लग गये कोहेगिरा। और गोले फेंकते थे इस तरह वह जोर से, जैसे बिजली की चमक से है नजर आता समा। वह गरजते जोर से थे जैसे बादल की गरज, हो रहे जरमी थे वानर उनसे लड़ कर बेगुमा। हो गये जरमी मगर वानर न मैदाँ से हटे, फेंकते पत्थर किले पर थे वह वापस पहलवा। जब हुआ मालूम वानर आ के फिर हैं घिर गये, मेघनाद उतरा किले पर से बहादुर पहलवा। और डंके को बजा कर यों कहा आवाज से, राम और लक्ष्मण वो दो भाई हुए हैं क्यों निहा। अंगदो हनुमान कहाँ हैं और वह सुग्रीव भी, नल व नील अब हैं कहाँ दुधमुख बताओ हैं कहाँ। भाई का दुश्मन कहाँ है वह विभीषण धोखाबाज, खास कर उसको वनाऊँगा मैं तीरों का निशा। इस तरह कहते हुए गुस्सा गजब का आ गया, और वह नायक को खींचा हाथ में ले कर कमा। बाण ऐसे चल रहे थे जैसे साँपों की कतार, हो के घायल गिरते जाते थे हज़ारों वानरा। कोई भी उसके मुक्ताबिल ठहर सकता था नहीं, हिम्मतें टूटी, हुए वानर तमामी नातवा। बाद इसके तीर मारा सबके दस-दस मेघनाद, और गर्जा इस तरह जैसे कोई शोरेजिया। देखा जब हनुमान ने यह वानरों का हाले जार, भर गये गुस्से में, दौड़े ले के एक कोहेगिरा। फेंका उसको जोर से जिस जा खड़ा था मेघनाद, देख कर कोहेगिरा को, वह हुआ फ़ोरन दवा। रथ के टुकड़े हो गये और सारथी भी मर गया, और कहा हनुमान ने—आजा मुक्ताबिल में यहाँ। खीफ से आता नहीं वह जानता था इनका जोर, इसलिए वह अब गया थे रामचन्दर जी जहाँ। और कई हथियार फेंका जिसको काटा राम ने, और मुँह से देते जाता था हज़ारों गालियाँ।

राम की क़वत जो देखी, छा गयी शमिन्दगी, चालबाज़ी के वह करने लग गया करतब वहाँ। देखो नाहिनजार चलता है उन्हीं से चाल यह, जिनसे ब्रह्मा और शिव भी जीत सकते हैं कहाँ। उड़के ऊपर वह बहुत ही आग बरसाने लगा, और पानी की भी धारें थीं ज़मीं पर से रवाई। मुख्तलिफ़ अकसाम के फ़ैला दिये भूतो पिशाच, मारों और काटो के थे अल्फ़ाज़ बस बिरदे ज़बाँ। वह कभी तो फेंकता था गन्दगी और कभी खून, और कभी वह फेंकता था बाल भी और हड्डियाँ। फिर किया बौछार उसने पत्थरों की बेशुमार, धूल उड़ा कर कर दिया फिर उसने ज़ुल्मत का निशाँ। जब अंधेरे में किसी को कुछ नहीं था सूझता, सब परेशान हो गये घबरा उठे सब बानराँ। देख कर हैरानी इनकी राम जी हँसने लगे, और समझे हो गये ख़ायक़ है मेरे बानराँ। एक ही वह तीर मारे सब तमाशा मिट गया, जिस तरह सूरज की किरणों से अंधेरा हो रवाई। राम की चश्मे करम से सब हुए फिर ताज़ादम, रोकने से भी नहीं रुकते थे लड़ने बानराँ। साथ अंगद को लिये, ले कर इज़ाज़त राम से, लक्ष्मण तीरो कमाँ ले कर हुए फ़ौरन रवाई। लाल आँखें, चौड़ी छाती और बाजू खूबतर, रंग गोरा, जिनकी है तारीफ़ में क़ासिर ज़बाँ। उनकी हमराही में थे बानर वहादुर और दिलेर, इस तरफ़ रावण ने भी भेजे कई एक पहलवाँ। इस तरफ़ था जय का नारा, उस तरफ़ जय की पुकार, दोनों जानिब थे बराबर, लड़ रही थी जोड़ियाँ। लात मुक्की मारते थे काटते थे दाँत से, बानराँ ने इस तरह ऊबम मचाई बेगुमाँ। शोरोगुल इतना किया चारों तरफ़ फैली सदा, सैकड़ों की कट के गिरने लग गयी थी मुंडियाँ। देवता यह देखते थे रंग अपनी जाय से, कुछ तो था अफ़सोस उनको और कुछ थे शादमाँ। खून बहते-बहते अपनी जाय पर सब जम गया, खाक़ ऊपर जम गयी, चलने लगी जब आँधियाँ। लक्ष्मण और मेघनाद आपस में लड़ने लग गये, एक से जब एक बढ़ कर हो फिर जीतेगा कहाँ। चालबाज़ी लक्ष्मण के साथ वह करने लगा, तब तो गुस्सा आ गया उनको निहायत बेगुमाँ। तोड़ डाला उसके रथ को, सारथी भी मर गया, इस क़दर पोटा उसे, वह हो गया बस नीमजाँ। दिल में वह समझा कि मेरी ज़िन्दगी है अब मुहाल, ये तो ले कर ही रहेंगे अवयकीनन मेरी जाँ। उसने शक्ति बाण को ले कर चलाया हाथ से, जो कि जा कर लग गया लक्ष्मण के सीने के नियाँ। इसके लगने से ज़रा लक्ष्मण को चक्कर आ गया, और ये बेखौफ़ हो कर आ गया उनके यहाँ। चूँकि ये बेहोश थे इनको उठाये राक्षस, सैकड़ों कोशिश किये लेकिन ये उठते थे कहाँ। जब न उठे हो गये वह सब खज़िल वापस गये, हो गये तर्कन वापस, शाम का जब था समाँ। राम ने पूछा कि लक्ष्मण क्यों नहीं आये अभी, इतने में हनुमान ले कर उनको पहुँचे ही वहाँ। देख कर भाई की हालत राम जी ग्रमगीं हुए, जामवन्त ने कहा एक वैद्य रहता है यहाँ। नाम उसका है सुपण उसको बुला लाये कोई, चल दिये हनुमान फ़ौरन और ले आये वहाँ। एक जड़ीबूटी बतायी इनके दर्मा के लिए, क्रोध का भी नाम बतलाया, ये होती थी जहाँ। मुस्तइद हनुमान हो कर उसके लाने को गये, और ख़बर इसकी उधर रावण ने पायी बेगुमाँ। कालनेमी से कहा रावण ने जा कर अज़िज़ से, कुछ रुकावट डाल दो इस काम के तुम दमियाँ। उसने समझाया बहुत, बोला खयाले ख़ाम है, उनसे लड़ने में तुम्हारा हर तरह होगा ज़ियाँ। यह नसीहत उसकी रावण के समझ में कुछ न आयी, और गुस्से में भर आया, खो दिया ताबोतवाँ। वह यह समझा रावण बेद मुझको मारेगा ज़रूर, इससे बेहतर राम के सेबक से जाए मेरी जाँ। रास्ते में बाग़ और तालाब एक अच्छा बना, और मुनी का वेष ले कर आप खुद बैठा वहाँ।

देखा जब हनुमान ने तालाब भी और बाग भी, मैं मुनी से पूछ कर, पानी न क्यों पी लूँ यहाँ । जो बना नकली मुनी था देखा जब हनुमान को, राम के औसाफ वह करने लगा इनसे बर्बा । रामो रावण में लड़ाई हो रही है आज कल, राम जीतेंगे यकीनन कुछ नहीं शक्कोगुमाँ । मैं यहाँ रहता हूँ लेकिन जानता हूँ हाल सब, मैं यहाँ से देख सकता हूँ, जो होता है वहाँ । पानी पीने के लिए हनुमान ने उससे कहा, दे दिया भर कर कमंडल उसने पानी बेगुमाँ । तिरनगी हनुमान की उससे नहीं जब जा सकी, वह मुनी बोला कि है तालाब—तुम जाओ वहाँ । जब गये तालाब में यह पानी पीने के लिए, पैर पकड़ा एक मगर ने जो था पानी में निहाँ । मार डाला उसको फ़ौरन तब श्री हनुमान ने, उसकी मुक्ती हो गई और वह गया इनके यहाँ । एक मुनी की बददुआ से मैं मगर था बन गया, आपके दर्शन से अब मैं हो गया हूँ कामराँ । यह मुनी बन कर जो बैठा है, नहीं है यह मुनी, बल्कि यह है राक्षस जो ढोंग करता है यहाँ । उस मुनी के पास तब हनुमान जी वापस गये, और कहा—सेवा तुम्हारी पहले करनी है यहाँ । दुम में अपनी उसको लिपटा और पछाड़ा जोर से, आखिरी दम राग हा का नाम था विरदे जबाँ । जब दवा लाने को पहुँचे कोह पर हनुमान जी, वह न पहचाने कि है यह कीन-सी बूटी यहाँ । इसलिए वह कोह को सर पर उठा कर चल दिये, और अयोध्या पर से गुजरे जिस तरह मौजे रवाँ । भरत ने समझा कि जाता है ये कोई राक्षस, तीर को अपने चढ़ाया हाथ में ले कर कमाँ । तीर लगते ही गिरे हनुमान, बेहोश हो गये, राम का था ध्यान दिल में राम ही विरदे जबाँ । जब सुना अल्फ़ाज यह तब भरत के होश उड़ गये, दौड़ कर पास आये और करने लगे आहोक्रुगाँ । भरत ने इनको जगाया, यह पड़े गफ़लत में थे, इनको छाती से लगाया और हुए खुद खस्ताजाँ । बाँख में आँसू भर आये और कहा यह भरत ने, राम की फ़रकत का दुःख था ही यह है तुराबराँ । राम का दिल और जाँ से हूँ अगर सच्चा गुलाम, अपनी बेहोशी से हो जाये यह चंगा बेगुमाँ । ज्योंही उनके मुँह से ये अल्फ़ाज जाहिर हो गये, उठ के ये बैठे, श्री रघुनाथ था विरदे जबाँ । भरत छाती से लगाये इनको बेहद शौक से, राम की उल्फ़ा में आँखों से हुए आँसू रवाँ । खरियत राम और लक्ष्मण की जो पूछी भरत ने, तब किया अहवाल नव हनुमान ने उनसे बर्बा । कंफ़ियत सुन कर हुए तब भरत जी बेहद उदास, और पछताये लगे वह अपने दिल में बेगुमाँ । मैं न आया काम कुछ रघुनाथ के अफ़सोस है, क्यों हुआ पैदा मैं दुनिया में, मैं क्यों आया यहाँ । और कहा जाने में तुमको देर हो जाए अगर, सुबह हो जाये तो शायद काम बिगड़ेगा वहाँ । बाण पर मेरे चढ़ो तुम सिर पर पर्वत को लिए, मैं तुम्हें पहुँचा अभी देता हूँ भाई हैं जहाँ । दिल में यह हनुमान समझे किस तरह मुमकिन है ये, राम की वो याद करके, याँ किये अर्जबर्बा । आपको तकलीफ़ की इसमें जरूरत कुछ नहीं, आपके परताप से जल्दी मैं पहुँचूँगा वहाँ । भरत से ले कर इजाजत वह रवाना हो गये, भरत के औसाफ के थे दिल में अपने मदहसबाँ । अब वहाँ का हाल सुनिए लक्ष्मण को देख कर, राम थे वेचैन बेहद और याँ खोली जबाँ । रात आधी हो गयी हनुमान वापस ही न आये, भाई तुमने वास्ते मेरे सही ये सख़्तियाँ । गर्मी और सर्दी की तुम सहते यहाँ तकलीफ़ हो, वास्ते मेरे ही छूटे तुम से अपने बाप-माँ । मैं हूँ बेचैन इस क़दर तुम क्यों नहीं उठते हो भाई, वह मुहब्बत क्या हुई, अब, और गयी उल्फ़त कहाँ । यह अगर मालूम होता भाई होगा यों जुदा, बाप के अहक़ाम को मैं टाल देता बेगुमाँ । माल, दौलत, जन, पिसर दुनिया में मिल जाते है सब, अपना साथी भाई, दुनिया में कभी मिलता कहाँ ।

जिस तरह बेपर परिन्दा, फील हो वे सूंझ का, तुम न हो तो ज़िन्दगी हो जाए मेरी रायगाँ । मैं अगर भाई को खो दूँ अपनी ओरत के लिए, किस तरह जाऊँ अवध को, मुँह मैं दिखलाऊँ वहाँ । सीता के खोने की बदनामी मुझे मंजूर थी, तुमको खो देना मुझे मंजूर भाई है कहाँ । अब तो बदनामी भी होगी, और तुम्हारा दुःख भी, अब मुझे सहनी पड़ेगी दो तरह की सस्तिर्याँ । ऐ मेरे प्यारे, तुम्हारी माँ के एकलौते हो तुम, उनके हो तुम दिल से प्यारे, उनके हो आरामे जाँ । तुमको लायक जान कर सीपा उन्होंने था मुझे, क्या जवाब अब उनको दूँ मैं, क्या कहूँ तुम हो कहाँ । इस तरह कहते हुए रोने लगे वह ज़ार-ज़ार, दोनों आँखें लाल थीं, आँसू की धारें थीं रवाँ । उनको दुःख और सुख से कोई वास्ता मुतलक नहीं, ये तो दुनिया के दिवावे को किया था सब यहाँ । सुनके उनका यह खदन सब लोग रोने लग गये, आ गये इतने में हनुमाँ लेके एक कोहे गिराँ । वैद्य जी ने कर दिया फ़ौरन ही बूटी से इलाज, तब तो लक्ष्मण जाग उठे, बैठे उठ कर नागहाँ । भाई को अपने गले से तब लगाया राम ने, जितने थे भालू व बानर, हो गये सब शादमाँ । फिर उन्हें ले जा के उनके घर को पहुँचाया गया, वैद्य जी को जिस तरह हनुमान लाये थे वहाँ । जब खबर सब हाल की रावण के कानों में पड़ी, सर को अपने पीट कर करने लगा आहोफ़ुगाँ । कुम्भकरण जो भाई था उसका, गया वह उसके पास, सो रहा था जाग उठे कम हुआ ख्वाबेगिराँ । वह कबी है कल उठा और उठके याँ कहने लगा, फ़िक्र के आसार चेहरे से तुम्हारे हैं अयाँ । जिस तरह सीता को लाया और जो अब तक हुआ, रावण मगरूर ने बब कुछ किया उससे बयाँ । और यह भी कह दिया मारे गये सब राक्षस, बानरों के हाथ से मारे गये सब पहलवाँ । वह मूढ़वर हैं नहीं अब, और अरुम्पन है नहीं, दुर्दुःख और वह सरदुष्ट अतिकाई नामों अफ़सरों । क़ैफ़ियत सुन कर हुआ उसको निहायत ही मलाल, और कहा, किस वारते सीता को तुम लाये यहाँ । और कहा, अच्छा नहीं तुमने किया है यह तो काम, राम से मिल जाओ तो हो जाओगे तुम शादमाँ । जिनका हो हनुमान सेवक क्या कोई इन्सान हैं, देर की मुझको जगाने में तो तूने भाई जाँ । शिव व ब्रह्मा जिनके सेवक हैं अदावत उनसे ली, जो कहा था मुझसे नारद, क्या कलूँ वह अब बयाँ । जाके मैं दर्शन हूँ करता मुझसे मिल लो भाई तुम, इस क़दर मुँह से कहा ओर हो गया वह शादमाँ । सैकड़ों कुम्भ वह मँगाने के लिए मैं के कहा, और खाने के लिए भैंसे भी मँगवाये वहाँ । पी के मय, मैंसाँ को खा कर, जब हुआ वह ताज़ादम, फिर तो गर्जा इस तरह जैसे कोई बरके तयाँ । मस्त हो कर वह चला मैदाँ में लड़ने के लिए, साथ भी अपने नहीं रक्खा कोई हमराहियाँ । जब विभीषण ने यह देखा भाई आता है मेरा, वह गये आगे, गिरे पैरों पे उसके बेगुमाँ । भाई को अपने उठाया और गले लिपटा लिया, तब विभीषण ने कहा, भाई सुनो अजबियाँ । मश्वरा मैंने दिया था नेक, मारी मुझको लात, भाई रावण ने, उसी वाअस चला आया यहाँ । मुझको आज्ञिज जान कर साये में अपने ले लिया, राम के अल्ताफ़ से मैं हो गया हूँ शादमाँ । बोला वह रावण की मौत अब आ गयी बिलकुल करीब, उसको अच्छी बात अब, लगती है अच्छी भी कहाँ । तू है खुश क्रिस्मत कि आया राम की देहलीज पर, कर दिया तूने मुनव्वर अपना सारा खानदाँ । मौत मेरी आ गयी, नज़दीक अब जाता हूँ मैं, नेक और बद सूझता ही है मुझे भाई कहाँ । बात इतनी जब हुई वापस विभीषण हो गये, और चले आये ये उस जा, रामचन्दर थे जहाँ । कुम्भकरण है आ रहे जा कर विभीषण ने कहा, दीड़ने सब लग गये उसके मुकाबिल बानराँ । झाड़ पत्थर तोड़ते जाते थे अपने हाथ से, फेंकते जाते थे उस पर सब बहादुर पहलवाँ ।

लाख मारें उसको और फेंके हजारों संग यह, कुछ असर होता न था जाते थे वह सब रायगर्।
 आखिरस हनुमान ने मारा उसे धूँसा जो एक, वह ज़मीं पर गिर गया और खो दिया ताबोतवाँ।
 फिर वह उटठा और उठ कर मारा खुद हनुमान को, खाके चक्कर गिर गये वह भी ज़मीं पर नागर्ह।
 नीलो नल को भी गिराया ज़ेर सब को कर दिया, खौफ़ से वानर डरे, होने लगे वापस रवाँ।
 अंगदो सुग्रीव को बेहोश उसने कर दिया, दाब कर उनको बगल में वह हुआ जल्दी रवाँ।
 रामलीला कर रहे थे यह दिखाने के लिए, ताकि वह जो कुछ किये थे आगे चल कर हो बयान।
 जब गशी जाती रही हनुमान जो फ़ौरन उठे, हूँकने वह लग गये सुग्रीव राजा है कहाँ।
 और इधर सुग्रीव खुद भी होश में जब आ गये, वह खिसक कर खुद बगल से गिर गये नीचे वहाँ।
 कुम्भकरण समझा कि ये है मर गया इस वास्ते, उनके जीने का नहीं था उसको कुछ शानोगुमाँ।
 उठ गये सुग्रीव फुरती से और फिर मारे उसे, नाक और कान उसके काटे, वह हुआ था नातवाँ।
 कुम्भकरण ने पैर पकड़ा और पछाड़ा ज़ोर से, फिर जवाबन उसको भी मारा ये उठ कर पहलवाँ।
 नाक-कान उसके कटे शरमिदा बेहद हो गया, भर गया गुस्से में और जाते रहे ताबोतवाँ।
 और भी सूरत भयानक हो गयी इस बात से, देख कर उसकी ये सूरत डर गये सब वानराँ।
 जय का नारा थे लगाते उस पे धावा बोल कर, झाड़ भी फेंके गम्भे डाले गये कोहे गिराँ।
 कुछ असर होता न था बेखौफ़ वह आगे बढ़ा, मौत का लुकमा बने जाते थे लाखों वानराँ।
 सैकड़ों को वह मसलता जा रहा था जिस्म से, सैकड़ों को गाड़ देता था ज़मीं के दमियाँ।
 जिनको डाला अपने मुँह में निकले कान और नाक से, और होते थे निकल कर इस तरह फौरन रवाँ।
 हिम्मतें टूटी जो सब की, वो पलटने लग गये, लाख हिम्मत दी गयी, लेकिन वो सुनते थे वहाँ।
 उस तरफ़ इमदाद को भाई जो भेजे राक्षस, राम ने देखा कि लोग अपने हुए हैं नातवाँ।
 यों कहा सुग्रीव से तुम और विभीषण और लखन, फौज को अपनी सँभालो मैं हूँ अब जाता वहाँ।
 कुम्भकरण को और उसकी फौज को समझूँगा मैं, हाथ में ले कर चले रघुनाथ जी तीरो कमाँ।
 जब कमाँ को अपने ठोका तेज़ आवाज़ एक हुई, हो गये बहरे उदू की फौज में सब नागर्ह।
 सैकड़ों तीरों को मारा राम जी ने इस तरह, जैसे पर के साँप उड़ कर हो रहे हों अब रवाँ।
 तीर चलने लग गये मरने लगे सब राक्षस, कट रहे थे पैर, छाती, हाथ, सर और मुंडियाँ।
 जो कि घायल हो रहे थे गिर रहे थे दमबदम, फिर सँभल कर कोई आ जाता था लड़ने पहलवाँ।
 कोई उनमें था गरजता कोई बेघड़ भागता, कोई तो था खौफ़ से तीरों के वाअस ही रवाँ।
 पकड़ो-पकड़ो और मारो शोर था यह हर तरफ़, इस तरह फौजे उदू की उड़ गयी थी घज्जियाँ।
 कुम्भकरण ने जब यह देखा फौज अपनी कट गयी, आके गुस्से में पुकारा मिसले एक शिरे ज़ियाँ।
 वह उठा लेता है अपने सर पे टीले और पहाड़, वानरों पर फेंकता जाता है वह कोहेगिराँ।
 जब पहाड़ आते हुए देखा श्री रघुनाथ ने, अपने तीरों से उड़ा दी उसकी फ़ौरन घज्जियाँ।
 कुम्भकरण पर सैकड़ों ही तीर मारे राम ने, जिस्म में धँसते थे उसके, जैसे कोई बिजलियाँ।
 उसके काले जिस्म से यों खून बहने लग गया, कोहे काजल से बहे गेरू की जैसे नदियाँ।
 हो गया बेताब वह, वानर गये नज़दीक जब, वह पकड़ने लग गया इनको, हुआ खन्दा दहाँ।
 देके रावण की दुहाई वह मसल डाला इन्हें, खलबली एक मच गयी वानर हुए सब तफ़्ताजाँ।
 राम जी इमदाद कीजे वक्त है इमदाद का, वर्ना ये तो ले ही लेने को है अब हम सबकी जाँ।
 देख कर बेचैन सबको राम आगे बढ़ गये, आके गुस्से में सँभाला हाथ में तीरोकमाँ।

एक सी वह तीर छोड़े जिस्म में उसके धँसे, जलजला होने लगा, वह जबकि दौड़ा नागहीं। वह जो तोड़ा एक टीला, राम काटे उसका हाथ, एक ही वह हाथ से ले कर हुआ उसको रवा। दूसरा भी हाथ उसका कट गया और गिर गया, आ गया गुस्सा उसे बेहद, गये ताबोतवा। इस भयानक शकल से वह दौड़ने जब लग गया, देवता तक डर गये, जाते रहे ताबोतवा। राम ने जब बाण मारे, मुँह में उसके घुस गये, फिर भी गिरता ही नहीं था वह जमीं पर पहलवा। लेके तक्षक बाण जब उसको चलाया राम ने, कुम्भकरण का सर हुआ घड़ से जुदा तब नागहीं। हो गया बेताब रावण, हो गया वह बेकरार, जय गिरा सर सामने, उसके वह बैठा था जहाँ। जिस्म उसका दौड़ता जाता था जो बेसर का था, और जमीं धँसती चली जाती थी अन्दर बेगुमा। राम ने उस जिस्म के भी कर दिये टुकड़े जो दो, वह गिरे ऐसे जमीं पर जिस तरह कोहेगिरा। उसके नीचे भी कई एक वानरो भालू दबे, खात्मा यों हो गया, और देवता थे शादमा। उसके मरने से हुई सब देवताओं को खुशी, राम की तारीफ़ में सब हो गये रतबुलरसा। तब ऋषि नारद भी आये, अस्तुती करने लगे, यों ही रावण का मिटा दो जल्द अब नामोनिशा। राम की तारीफ़ करके वह भी वापस हो गये, राम जो मैदाँ में जा कर फिर हुए जलवा कुना। मुँह पे था उनके पसीना और आँखें लाल थीं, दोनों हाथों से फिराते थे वो नावक और कमा। चारसू बैठे हुए थे उनके वानर और रीछ, ऐसे नज्जारे का मूमकिन ही नहीं करना बया। कुम्भकरण था राक्षस भी और था पापी बड़ा, मरके इनके हाथ से पायी हयाते जावेदा। याद जो इनको नहीं करता है वह है वेवक्रूफ, शिव ने फ़रमाया ये गोरी जी से अपनी बेगुमा। शाम होने लग गयी तरफ़र वापस फिर गये, आज दोनों सिम्त के बेदम हुए थे पहलवा। राम की चश्मे करम से ये हुए सब ताजा दम, घास जैसे आग से मिल कर बने शोलाफ़शा। और रावण का उधर था जोर ऐसे घट रहा, जैसे घट जाता है पुण्य हो अपने मुँह से गर बया। भाई का सर लेके रावण रो रहा था ज़ार-ज़ार, औरतें करती थीं छाती पीट कर आहोफुगा। मेघनाथ आया उसी दम जबकि ये रोते थे सब, वाप को समझा बूझा कर यों किया उनसे बया। बीरता कुछ आप मेरी देखिएगा कल सुबह, मैं अगर कुछ अब कहूँगा होंगी मेरी शेखिया। मुझमें जो कूवत व ताकत है वह बोला ही नहीं, वह दिलेरी मेरी कल हो जाएगी सब पर अया। इस तरह कहने में सुनने में सवेरा हो गया, घेर कर चारों तरफ़ लंका को आये वानरा। इस तरफ़ वानर व भालू उस तरफ़ को राक्षस, याने दोनों सिम्त में थे सूरमा और पहलवा। फ़तह पाने के लिए लड़ते हैं दोनों सूरमा, जंग इतनी सस्त थी, कुछ हो नहीं सकता बया। बैठ कर रथ पर जो गर्जा आ गया जब मेघनाद, इस तरह मालूम होता था कि है वादे रवा। इस गरज से वानरों में हलचली-सी मच गयी, मुखतलिफ़ हथियार ले कर वह हुआ हमला नुमा। शक्ति और तलवार पत्थर शूल से था मारता, इस क्रदर वह तीर मारा, भर गया सारा समा। जैसे बादल घिर गये हों, जब मघा का हो नक्षत्र, पकड़ो और मारों के थे अलफ़ाज बस विरेदजवा। सुन रहे आवाज से, लेकिन नज़र आता न था, कौन है वह मारने वाला, छुपा है अब कहा। लेके वानर कूदते हैं झाड़ और पत्थर मगर, जब नज़र आया न कोई, हो गये वापस रवा। इस क्रदर नावक चलाये राह घाटी और कोह, मिस्ले जिन्दा के नज़र आते थे सबको बेगुमा। राह जाने की न पा कर हो गये वानर उदास, नल व नील, हनुमानो अंगद हो गये सब नातवा। उसने लक्ष्मण को भी मारा और फिर सुग्रीव को, जिस्म को उसने विभीषण के किया फिर खूफ़शा।

मारता था तीर जब वह, साँप हो कर लग रहे, बन गया इस तरह हलका एक साँपों का वहाँ । देवताओं ने जो देखा खौफ़ करने लग गये, राम चन्दर जी भी जब घेरे गये इस दमियाँ । राम के थे काम लोगों को दिखावे के लिए, वना ऐसे जाल में वह फँस ही सकते थे कहाँ । उनकी लीला और बुद्धि सब समझ के पार है, इसलिए जानी जो हैं करते नहीं शक्कोगुमाँ । तंग सबको कर दिया जाहिर हुआ फिर मेघनाद, और बकने लग गया वह अपने मुँह से गालियाँ । जामवन्त ने कहा कमबख्त तू हो जा खड़ा, मुनके उसको गुस्सा आया और यों खोली जवाँ । हो गया बूढ़ा है तू इस वास्ते छोड़ा तुझे, तू मुझी को है डराता अक्ल है तेरी कहाँ । ये कहा त्रिसूल एक उस पर चलाया मेघनाद, जामवन्त जिमको पकड़ कर खुद हुआ उस पर दवाँ । और उस त्रिसूल को छाती पर मारा जामवन्त, खा गया चक्कर जमीं पर गिर गया वह नागहाँ । हो गये आपे से बाहर और वरहम जामवन्त, फिर पकड़ कर पैर उसका वह घुमाये बेगुमाँ । देके चक्कर जब उसे फेंका वह फँसे खाक़ पर, इस तरह दिखलायी उसको अपनी ताक़त और तवाँ । कुछ हुआ का था असर, इस वास्ते मरता न था, फेंका उसको फिर घुमा कर शहर लंका दमियाँ । देवताओं की मदद से आ गया इस जा गड़ड़, खा लिया सब साँपों को वह जिस क़दर भी थे वहाँ । खात्मा जब इस तरह साँपों का सारा हो गया, हो गये आज़ाद वानर और हुए वो शादमाँ । झाड़, पत्थर ले के ये फिर हमलावर हो गयी, और क़िले पर चढ़ गये थे राक्षस जितने बहाँ । जबकि बेहोशी मिटी देखा जो अपने बाप को, हो गया शमिदा वेहद हो गया वह खस्ताजाँ । आज ऐसा यज्ञ करूँगा मुझपे फातेह कोई न हो, सोच कर ये हो गया वह कोह के जानिब रवाँ । तब विभीषण ने किया यह अर्ज जा कर राम से, नीयते बद से है करता मेघनाद अब यज्ञ वहाँ । यज्ञ उसका हो जो पूरा फिर न यह जल्दी मरे, अंगद और सब वानरों को याद फरमाया वहाँ । भाइयो तुम जाओ सब लक्ष्मण को ले कर साथ अब, यज्ञ उस कमबख्त का जल्दी करो सब रायगाँ । भाई लक्ष्मण आज तुम मैदाँ में उसको मारना, देवता वेचैन हैं, कर दो उन्हें अब शादमाँ । होशियारी से उसे तुम मारना ऐ लक्ष्मण, हैं विभीषण जामवाँ सुग्रीव ये हमराहियाँ । सुनके वह अपनी कमर में बाँध कर तरकस व तीर, इस तरह लक्ष्मण ने की यों भाई से अर्ज बयाँ । आपके परताप से मैं आज मारूँगा ज़रूर, आपकी खा कर क़सम कहता हूँ मैं ऐ भाईजाँ । आएँ शंकर भी अगर इमदाद को उसकी तरफ़, मैं बजुज मारे इसे वापस न आऊँगा यहाँ । नील नल, अंगद व हनुमान और वानर साथ थे, पैर छू कर राम के लक्ष्मण हुए फ़ौरन रवाँ । देखते क्या हैं कि बैठा मेघनाद है जिस जगह, खून और भँसों को दे कर कर रहा था यज्ञ वहाँ । महव अपने काम में था मुतलक़न जागा नहीं, लाख कोशिश की गयी हो जाए यह यग रायगाँ । जब न उट्ठा वह तो सरके बाल पकड़े हाथ से, और घसीटे दूर तक देते हुए सब गालियाँ । लेके वह त्रिसूल उट्ठा उनके पीछे भागते, और यह सब दौड़ कर आए थे लक्ष्मण जी जहाँ । हो गया आपे से बाहर और गर्जा मेघनाद, उसके मारे से गिरे हनुमान अंगद बेगुमाँ । उसने एक त्रिसूल मारा लक्ष्मण जी की तरफ़, तीर से उसकी उड़ा दी लक्ष्मण ने धज्जियाँ । उठके अंगद और हनुमाँ मारने उसको लगे, कुछ असर होता न था, थी चोट भी लगती कहाँ । वह किसी तरह नहीं मरता था, जब देखा गया, लौट कर वापस चले आने लगे सब वानराँ । वह गरज कर जोर से जब इस तरह आने लगा, लक्ष्मण ने एक भयानक तीर छोड़ा नागहाँ । तीर आते देख कर अपने को ग्रायब कर लिया, वह कभी होता था जाहिर और कभी होता निहाँ ।

लक्ष्मण ने दिल में सोचा देर अब बेकार है, ऐसे पापी का न अब बाकी रहे नामोनिशाँ। राम का जब नाम ले कर वह चलाये अपने तीर, जा के सीने में लगा उसके बराबर यह निशाँ। वह गिरा और उसके मुँह से यह निकलने लग गया, राम का भाई कहाँ है राम खुद भी है कहाँ। उसकी क्रिस्मत को सराहा अंगदो हनुमान ने, वह मरा लक्ष्मण के हाथों, राम था विरदे जब। मर गया जब वह तो हनुमाँ ने उठायी उसकी लाश, और लंका के वो दर पर रख के आया बेगुमाँ। उसका मरना देख कर सब देवता आने लगे, और वह फूले समाये, हो गये सब शादमाँ। हमको इस कमबख्त के हाथों दिलायी है नजात, इस तरह कहते हुए लक्ष्मण के थे सब मदहूख्वाँ। देवता वापस गये लक्ष्मण गये भाई के पास, हो गया बेहोश रावण, जब सुना यह नागहाँ। रो रही मंदोदरी थी अपने बेटे के लिए, पीटती सर और छाती को बसद आहोफुगाँ। शहर के सब लोग रंजोगम में थे डूबे हुए, और रावण को बुरा कह कर वो देते गालियाँ। रावण अपनी औरतों को जाके समझाया बहुत, और कहा मरना है लाजिम चूँकि फानी है जहाँ। दी तसल्ली उसने सबको ज्ञान की बातें कहीं, नीच था वह खुद बलेकिन वह बड़ा था नुक्तादाँ। शीर को बतलाने वाले हैं बहुत से राह नेक, खुद अमल उस पर करें, लोग ऐसे मिलते हैं कहाँ। रात गुजरी इस तरह और जब सवेरा हो गया, चारों दरवाजों में फिरकर आ गये फिर वानराँ। फ़ौज के लोगों को बुलवा कर कहा रावण ने यों, जिसके दिल में खीफ़ हो रह जाए वह घर में यहाँ। जाके मंदों से पलटने में बड़ी रुसवाई है, इसलिए पहले ही कर देता हूँ मैं तुम पर अयाँ। ये लड़ाई मेरे ही बाअस हुई आगाज है, इसलिए तनहा मैं खुद जा कर लड़ांगा बेगुमाँ। इस क्रदर कह कर किया तैयार उसने अपना रथ, चाल में वह रथ न था बल्कि था इक वादे रवाँ। जंग का बाजा बजा और राक्षस चलने लगे, यों नज़र आता था काजल की हैं जैसे आँधियाँ। रास्ते में बदसगुन उसको नज़र आने लगे, नखवते सर की सबब रावण को सूसी ही कहाँ। गिर रहे हथियार थे हाथी व घोड़े बेहवास, और रथ पर से गिरे जाते थे अक्सर पहलवाँ। रो रहे कुत्ते थे, उल्लू कर रहे आवाज़ थे, गिद्ध और गीदड़ और कौवे बोलते थे बोलियाँ। जोकि हो मगरूर खुद, कुक्कत का जिसको हो घमंड, राम का हो कर मुखालिफ़, चैन पाता है कहाँ। राक्षस की फ़ौज भी अनगिनत चलने लग गयी, मुखतलिफ़ अकसाम की यह फ़ौज की थी टुकड़ियाँ। थे कई अकसाम के रथ और सवारी मुखतलिफ़, और रंगारंग के झंडे थे और थी झंडियाँ। जिस तरह बादल है चलते जब हवा का जोर हो, मस्त हो कर चल रहे थे सैकड़ों ही हाथियाँ। जो सिपहगिरी के फ़न में कामिलुफ़न लोग थे, थीं जवाँमदों की ऐसी टोलियों की टोलियाँ। फ़ौज जब चलने लगी हिलने लगे पर्वत जमीँ, और दरिया में भी जोश आने लगा था बेगुमाँ। खाक इतनी उड़ रही थी छुप गया खुरशीद था, और चलने से रुकी जाती थी खुद बादेरवाँ। ढोल, नक्कारों की ऐसी हो रही आवाज़ थी, जैसे बादल की गरज से हो क्रयामत का समाँ। भेरी शहनाई नफीरी बज रही थी साथ-साथ, और सब करते थे जाते अपनी कूवत का बयाँ। यों कहा रावण ने ऐ मेरे बहादुर फ़ौजियो, फ़ौजे दुश्मन का रहे बाकी न अब नामोनिशाँ। दोनों शहजादों को मैं खुद मार दूंगा जान से, इस तरह कह कर किया वह फ़ौज को आगे रवाँ। वानराँ को जब हुआ मालूम ये हैं आ रहे, राम की दे कर दुहाई, वो हुए फ़ौरन रवाँ। झाड़ पत्थर और लकड़ी उनके ये हथियार थे, पर्वत की मिसिल दीड़े लेके वे सब वानराँ। डर न था उनको किसी का और न वो कमज़ोर थे, फ़ौजे रावण मिसले हाथी और ये शेरेंदियाँ।

जोड़ अपनी देख कर तरफ़ीन जब लड़ने लगे, राम की जय थी यहाँ, रावण का नारा था वहाँ। राम पैदल चल रहे थे और दशमुख था सवार, ऐसा मंजर था विभीषण के लिए बस सोचेजाँ। ऐसी हालत में फ़तह किस तरह उनकी हो सके, दिल में उनके वहम था करने लगे शक्कोगुमाँ। कह दिया,—रथ है सवारी में, न जूता पैर में, कवच भी पहना नहीं, जो जिस्म का हो निगहबाँ। किस तरह रावण को जीतेंगे, नहीं मालूम ये, दस्त बस्ता इस तरह उसने किया अर्जेबयाँ। राम बोले—फ़तह का जो रथ है वह है दूसरा, उसकी यह तफ़सील मैं करता हूँ अब तुमसे बयाँ। अजमें कामिल एक पहिया और दिलेरी दूसरा, और सचाई नेकनामी उसकी हैं ये झंडियाँ। कूवतो तमईज जव्तोरीन हैं ये चार अस्प, मेहरबानी और पसावात और वफू रस्सियाँ। ऐसी रस्सी से ये घोड़े रथ में हैं जोते गये, और भजन भगवान का है सारथी, ऐ मेहरबाँ। ढाल है वैराग दस्तेगना भी एक तलवार है, दान फ़रसा, अक्ल ताक़त और विज्ञान है कर्मा। साफ़ दिल तरकस है, शमओ दम व नेम हैं सब ये तोर, कवच है पूजा गुरु और ब्राह्मण की बेगूमाँ। फ़तह पाने के लिए इसके सिवा कुछ भी नहीं, जो कोई रखता है यह, वह हार सकता है कहाँ। जिसके कवजे में रहे यह रथ सुनो ऐ मुस्फ़की, बया अदू की है हकीक़त, जीत ले वह सब जहाँ। राम के पैरों पे गिर कर यों विभीषण ने कहा, इम वहाने ज्ञान का मुझसे किया तुमने बयाँ। जब गरज कर उस तरफ़ से रावण आया रज्म में नाराजद थे अंगदो हनुमान भी दोनों वहाँ। ब्रह्मा और सब देवता बैठे विमानों पर हुए, देखने को आ गये उस वक़्त का सारा सम्राँ। राम की जंगी ये लीला देखने के वास्ते, शिव ने फ़रमाया कि मैं भी था उन्हीं के दर्मियाँ। दोनों जानिब के निपाही खूब लड़ने लग गये, पीटते, लड़ते, गिराते और गरजते पहलवाँ। राम के एकवाल से वानर थे होते कामयाब, अपने दुश्मन को किये जाते थे वो सब नातवाँ। वह पटकते थे ज़मीं पर फोड़ते थे सर कई, और धुमा कर फेंक देते थे ज़मीं पर नागहाँ। दफ़न कर डाले हज़ारों राक्षसों को कब्र में, जैसे प्रण्य काल का दिखने लगा था वह सम्राँ। रक्त उनके जिस्म से भी बह रहा था यों मगर, वह गरजते थे अदू पर जिस तरह बर्क़तियाँ। काटते थे दाँत से और मारते थे लात से, राक्षस का मिटा देने को ही ये नामोनिशाँ। फाड़ते थे गाल उनके और सीना चीरते, खींच लेते थे वो अन्दर ही से उनकी अतड़ियाँ। अतड़ियों को जब गले में डाल लेते थे ये खुद, यों नज़र आते थे नरमिह हैं यहाँ जलवा कुनाँ। पकड़ो और मारो और काटो की सदा - गुँजी हुई, राम के डर से कवी दुश्मन भी होता है नातवाँ। फ़ौज जब कमजोर हो कर वापस होने लग गयी, आ गया मैदान में रावण लिये तीरोंकर्माँ। और आवाजे बुलन्द उनको पुकारा लौटने, हो गया गुम्स से बाहर खो दिया ताबोतवाँ। वानरो भालू भी आ कर उससे भिड़ने लग गये, झाड़ पत्थर लेके उस पर होते थे हमला कुनाँ। जिस्म पर उसके नहीं होता था बिलकुल कुछ असर, वह खड़ा हो रह गया मैदाँ में सबके दर्मियाँ। वह मसल डाला हज़ारों वानरों को आन में, चीखते थे तालिबे इमदाद हो कर वानर्राँ। अंगदों हनुमान का वो नाम लेते चीखते, राम की देते दुहाई होके वो सब खस्ताजाँ। देखा रावण ने कि वानर भांगते हैं जा रहे, अपने हाथों में लिये दशशीश ने दस ही कर्माँ। उन कर्मानों से हज़ारों तीर छटने लग गये, भर गया तीरों ही से मैदान का सारा सम्राँ। वानरों भालू पुकारे—राम जी इमदाद हो, हम मरे जाते हैं अब भागें तो भागें भी कहाँ। तीरो तरकस ले कर लक्ष्मण जी रवाना हो गये, जबकि देखा फ़ौज अपनी हो रही है नातवाँ।

जा के लक्ष्मण ने कहा—व्या मारता है फ़ोज को, मैं निशाने मीत तेरा बन के आया हूँ यहाँ। बोला वह—क्रांतिल है तू ही तो मेरे फ़रजन्द का, ढूँढ़ता था तुझको मैं अब बचके जाएगा कहाँ। मार कर तुझको तसल्ली मैं करूँगा दिल की आज, कहके यह, वह तीर छोड़ा खींच कर अपनी कमाँ। जिस क्रंदर तीर आये लक्ष्मण ने किये टुकड़े उन्हें, दूसरे हथियार की भी तो उड़ा दी ध्वजियाँ। फिर उन्होंने बाण मारा रथ के टुकड़े कर दिये, सारथी भी उमका गिर कर भर गया फ़ौरन वहाँ। बाण जा कर सर पे उसके हो रहे पैवस्त थ, कोह के दरों में जैसे साँव होते हैं निहाँ। एक दम सी बाण मारे जो कि छाती में लगे, वह ज़मी पर आ रहा, चक्कर उसे आया वहाँ। होश उसको आ गया जब वह खड़ा फिर हो गया, शक्ति बाण उसने चलाया जो न जाता रायगाँ। यह वही था बाण ब्रह्मा ने दिया था जो उसे, आके वह सीने में लक्ष्मण के ही उतरा बेगुमाँ। लक्ष्मण नीचे गिरे जब वह उठाने लग गया, वह उठा ले इनको, उसमें इतनी कूबत थी कहाँ। कूबतो ताकत का इनकी उसको अन्दाज़ा न था, इसलिए चाहता कि अपनी वह करे ताकत अयाँ। देखते ही देखते हनुमान फ़ौरन आ गये, उसने धूँपे मार कर इनको किया हमला कुनाँ। टेक कर घुटने ज़मीं पर, रुक गये हनुमान जी, फिर उठे, उठ कर उसे घूँसा जो मारा पहलवाँ। गिर गया रावण ज़मीं पर इनकी ऐसी मार से, मार से फ़ौलाद के जैसे गिरे कोहे गिराँ। जब उठा रावण सँभल कर इस तरह कहने लगा, तुझमें ताकत है बड़ी और तुझमें है ताबोतवाँ। यों कहा हनुमान ने, धिक्कार मेरे ज़ार पर, जो कि तू ज़िन्दा रहा बाक़ी, न निकली तेरी जाँ। लक्ष्मण जी को उठा कर ले गये हनुमान जी, अक्ले रावण दंग थी, देखा वो जब ऐसा समायँ। राम जी ने हाथ फेरा, लक्ष्मण जी उठ गये, और शक्ति बाण हुआ राहे वसूदे आसमाँ। फिर हुए आमादा लक्ष्मण जाके लड़ने के लिए, लेके अपना तीरो तरकस आ गये फिर नागहाँ। आ के तेज़ी से वो रथ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, सारथी का भी किये वो खातमा फ़ौरन वहाँ। मार कर तीरों से रावण को किये वह बेकरार, गिर गया तब वह ज़मीं पर होके बेहद नातवाँ। दूसरे एक सारथी ने जो वहाँ मौतूद था, लेके उसको जल्द लंका को हुआ वापस रवाँ। जब गया मैदाँ से रावण लक्ष्मण वापस हुए, और चरन छूने के भाई के हुए हाज़िर यहाँ। रथ गया रावण का जब, वह यज्ञ करने लग गया, राम पर ताकतह पाये, और हो वह कामराँ। सुनके यह जा कर विभीषण राम को कहने लगे, यज्ञ पूरा हो अगर यह, हाँगी फिर दुश्वारियाँ। वानरों को भेजिएगा ता करें बरबाद यज्ञ, और रावण लौट कर आ जाए लड़ने फिर यहाँ। सुबह होते ही रवाना वानरों को कर दिया, अंगदो हनुमान दौड़े और दीगर पहलवाँ। खेल ही वो खेल में जा कर किले पर चढ़ गये, और दाखिल हो गये बेखौफ़ रावण था जहाँ। देखा रावण को कि है मसरूफ़ अपने काम में, आ गया गुस्सा जो उनको इस तरह खोली जबाँ। बेहया कुछ शर्म है मैदान से भागा हुआ, घर में बैठे ध्यान बगले-सा है करता तू यहाँ। इस क्रंदर कहते हुए अंगद ने मारी लात एक, लेकिन उरा पर भी न आया खूबसूरत वानराँ। दाँत से काटे उसे लातों से मारे बार-बार, औरतों के बाल पकड़े और यमोटे वानराँ। वे जो चिल्लाने लगीं रावण को गुस्सा आ गया, दौड़ कर आया वो उनकी मौत का बन कर निशाँ। वानरों को वह पकड़ कर पीटने जत्र लग गया, यज्ञ की बरबादी के जाहिर हुए पूरे निशाँ। उसने जब देखा यज्ञ अपना हो गया बरबाद यों, दिल में कुछ मायूस हो कर हो गया वह खस्ता जाँ। यज्ञ की बरबाद करके जब थो सब वापस हुए, भर के गुस्से में हुआ रावण लड़ाई को रवाँ।

यह रवाना जब हुआ होने लगे सब बंद सगुन, गिद्ध उड़ कर बैठते थे उसके सर पर बेगुमाँ। जंग का बाजा बजाने के लिए आवाज दी, फ़ौजे लातादादे रावण हो गयी फ़ौरन रवाँ। रथ भी थे, पैदल भी थे और सैकड़ों घोड़े सवार, और शामिल फ़ौज थे सैकड़ों ही हाथियाँ। राम के आगे वो ऐसे दौड़ते थे आ रहे, जिस तरह आये पतंगे रोशनी रहती जहाँ। देवता सब मुस्तजी थे, राम अब देरी न हो, हम भी सब तंग आ गये, सीता हैं सहती सहितयाँ। राम सुन कर मुसकुराये और जटा सर पर बँधे, और कमर कसकर लिया फिर हाथ में तीरो कमाँ। जब धनुष सारंग नामी हाथ में अपने लिया, जमीं भी थर्रा उठी और डगमगाया आसमाँ। देवता सब खुश हुए नज़ारा ऐसा देख कर, गुल फ़सानी वह किये, हो कर निहायत शादमाँ। उस तरफ़ से आ गयी अनगिनत जब फ़ौजें अदृ, इस तरफ़ से भी हुए वानर के दल के दल रवाँ। हैं चमकती सैकड़ों तलवार और कृपाण भी, आसमाँ पर जिस तरह गाहे चमकती बिजलियाँ। और बादल की गरज जिस तरह होती है कभी, शोर रथ घोड़ों का है चिंघाड़ते हैं हाथियाँ। वानरों की द्रुम नज़र आती है ऊँची इस तरह, जिस तरह कौसेक़जह निकली हो सूये आसमाँ। धूल ऐसे उड़ रही थी जैसे नहरें आब हैं, तीर का चलना नज़र आता था बारिश का समाँ। दोनों जानिब से थे फँके जा रहे पत्थर-पहाड़, गर्द था मैदाने जंग, और लड़ रहे थे पहलवाँ। तीर पर जब तीर मारे राम ने पैहम कई, राक्षस होने लगे घायल नहीफ़ोनातवाँ। और चक्कर खाके वह गिरते जमीं पर दमबदम, जिस्म से उनके बही जाती थी खून की नदियाँ। बुज्जदिलों के दिल हिला देती थी ऐसी थी नदी, दोनों दल अफ़वाज थे उसके किनारे बेगुमाँ। रथ जो थे वह रेत थी, पहिये जो उनके थे भँवर, जानवर आबी थे घोड़े और पैदल हाथियाँ। तीर, शक्ति और तूयार साँढ़ के मानिन्द थे, थे धनुष गोया तरंगे ढाल थे, कछुवे वहाँ। जैसे दरिया के किनारे झाड़ गिरते हों कभी, इस तरह गिरते चले जाते थे नामीं पहलवाँ। देख कर जिनको डरे जाते थे जो डरपाँक थे, और हिम्मत उनकी बढ़ जाती थी जो थे पहलवाँ। गुसल करते उस नदी में भूत बैतालो पिशाच, चील, कीवे लेके उड़ते गोश्त हैं और हड्डियाँ। एक से जब दूसरा था छीनता कहते थे यों, है बहुत इक रात खाने की, हो लड़ते क्यों यहाँ। जो बहादुर हो गये घायल वो तट पर थे पड़े, मौत के नज़दीक थे वो, ले रहे थे सिसकियाँ। गिद्ध आँते खींचते थे जैसे कोई मछलीमार, बैठ कर साहिल पे जैसे हो पकड़ता मछलियाँ। और मुर्दे भी नदी में बहते जाते थे बहुत, और परिन्दे बैठते थे ये समझ कर किश्तियाँ। भूत भी और योगनी थे खून खप्पर में भरे, नाचते थे इस तरफ़ से उस तरफ़ हो शादमाँ। गोदड़ आके खा रहे थे जो पड़े मुर्दे तमाम, सैकड़ों के धड़ पड़े थे, सैकड़ों ही मुंडियाँ। राम के मारे से लाखों मर के मैदान में पड़े, सोचा रावण ने कि तनहा रह गया मैं अब यहाँ। फ़ौज वुस्मन की बहुत है, इसलिए लाजिम है ये, मैं कल कुछ चालबाजी अपने जानिब से यहाँ। देवता देखे कि पैदल राम हैं मैदान में, इन्द्र ने रथ अपना भेजा, मन्त्री लाया वहाँ। राम को जब मिल गया रथ हो गये उस पर सवार, चार घोड़े तेज़ उस रथ में जुते थे बेगुमाँ। वानरों ने राम को देखा जो रथ पर हैं सवार, बढ़ गयी हिम्मत दोवाला हो गये वो शादमाँ। चालबाजी एक की तब रावण बदनस्त ने, जिस से धोखा खा गये लक्ष्मण भी और सब वानराँ। हमशबीहे रामोलक्ष्मण फ़ौजे रावण में शरीक, सैकड़ों आये नज़र जिसका न था शानोगुमाँ। राम ने देखा कि वानर महुवे हैरत हैं तमाम, खत्म कर डाला वह अपने तीर से सारा समाँ।

और कहा ऐ भाईयो, तुम थक गये हो आज सब, अब जरा देखो मैं जो लड़ता हूँ रावण से यहाँ। जोश से रावण भी आया और वह आगे बढ़ा, और वह मैदान में आ कर पुकारा नागहाँ। और कहा तूने फतह पायी है जिन पर, तपस्वी, मैं नहीं उनसा हूँ—मैं तो हूँ बहादुर पहलवाँ। लोकपालों को भी मैंने क्रौंद में अपने रखा, नाम रावण है मेरा यह जानता है सब जहाँ। तुमने मारा त्रिसरा को और खरदूषण को भी, छुपके बाली की भी तुमने मुफ्त में ले ली थी जाँ। कुम्भकरण को तुमने मारा और मारा मेघनाद, सैकड़ों मारे गये नामी गिरामी पहलवाँ। तुम अगर मैदान से भागो नहीं—तूगाएवज, आज बदला सब का ले लूंगा मैं बेशकगोगुमाँ। पड़ गया है काम तुमको आज मुझ जैसे के साथ, आज तुम मुझसे बचा सकते नहीं हो अपनी जाँ। राम ने उससे कहा बकबक ज्यादा तू न कर, जिस क्रूर तेरी दिलेरी है, हुई है सब अयाँ। अपनी तारीफ़ आप करके खूबियाँ को खोल ले, कायदा कहता हूँ तुझसे उफू हो गुस्ताखियाँ। तीन किस्में होती हैं इन्साँ की दुनिया में जरूर, जिस तरह झाड़ों की किस्में तीन करते हैं बयाँ। एक तो है फूल देता, दूसरा देता है फल, तीसरा देता है फल और फूल दोनों बेगुमाँ। यों ही इन्साँ एक वह है, मुँह से कहता है बहुत, दूसरा कहता भी करता भी है वह हिम्मतनिशाँ। तीसरा वह है जो करता काम तो खुद ही जरूर, काम का अपने किसी से वह नहीं करता बयाँ। सुन के रावण हँस दिया कहने लगा क्या खूब है, ज्ञान मुझको है सिखाता, डर है दिल के दमियाँ। जब अदावत मोल ली उस वक्त तो सोचा नहीं, सामने आ कर मेरे अब हो गयी है प्यारी जाँ। गालियाँ देते हुए रावण ने छोड़ा बाण जब, तीर पर तीर इतने मारे भर गया सारा समाँ। राम ने उसके मुकाबिल अपना छोड़ा अग्नि बाण, जल गये सब तीर उसके उड़ गये बन कर धुवाँ। हो गया शमिदा रावण और छोड़ा शवितवाण, राम ने भी तीर से उसको किया वापस रवाँ। सैकड़ों वह चक्र फेंका सैकड़ों त्रिशूल भी, राम ने इनकी बआसानी उड़ा दी धज्जियाँ। तीर रावण के हुए जाते थे सब बेकार वो, जैसे बद इन्सान का मंशा है होता रायगाँ। बाण सौ रावण ने मारे सारथी पर राम के, गिर गया जब वह जमीं पर राम था विरदेजबाँ। राम ने उसको उठाया और बरहम हो गये, हाथ में अपने लिया फिर राम ने तीरोकमाँ। राक्षस सब डर गये जब वह सुने इसकी टकार, डर गयी मन्दोदरी लरजे जमींनो आसमाँ। कान तक खींचा धनुष को और छोड़ा राम ने, इस तरह आया नजर, था साँप हो गोया रवाँ। तीर क्या थे वह तो थी परदार साँपों की कतार सारथी घोड़े मरे रथ की उड़ा दी धज्जियाँ। उसका परचम गिर गया रावण भी गरजा जोर से, गो बज्जाहुर यों किया, था खौफ़ दिल के दमियाँ। दूसरे रथ पर चढ़ा रावण चलाया अपने तीर, और सब करतब भी उसके हो रहे थे रायगाँ। तब तो रावण ने चलाये एक दम त्रिशूल दस, चार घोड़े गिर गये जिससे जमीं पर नागहाँ। राम ने उनको उठाया और चलाये अपने तीर, तीर जा कर लग गये रावण के सर में बेगुमाँ। छिद गये रावण के दस सिर तीर हो कर आरपार, खून की धारें भी होने लग गयी सर से रवाँ। फिर भी वह दीड़ा चला आता है हमले के लिए, राम ने भी तीस पैहम तीर मारे बेगुमाँ। सर भी उसके कट रहे थे हाथ भी कटते गये, उड़ते जाते वो हवा में और नये होते अयाँ। जिस क्रूर उसके कटे सर और बढ़ते ही गये, जैसे ऐयाशी बढ़े मिलती रहें जब रंडियाँ। रावण बेदकार ने भी तीर मारा इस क्रूर, राम का रथ छुप गया जैसे कोहर का हो समाँ। देख कर वानर हुए हैरान और खायफ़ जरा, जब हवा में उसकी उड़ती जा रहीं थी मुंडियाँ।

राम ने एक तीर मारा खातमा उनका किया, कट के वे सब गिर गये खूँ की हुई नहीं रवाई। तब तो शक्तिबाण रावण ने चलाया हाथ से, जो विभीषण को ही लगता आ के बेशकोगुमाँ। राम आगे आ गये शक्ति को खुर ने सह लिया, और विभीषण की बचा ली राम ने इस तरह जाँ। शक्ति लगने से ज़रा कुछ राम को ग़श आ गया, देवता खायफ़ हुए, जाता रहा आरामे जाँ। मेरे बाअस राम को तकलीफ़ यह सहनी पड़ी, बात ये आयी विभीषण जी के दिल के दर्मियाँ। हाथ में ले कर गदा दौड़े विभीषण ज़ोर से, सामने रावण के जा कर इस तरह खोली ज़बाँ। तूने सबसे दुश्मनी ली, देवता इन्सान से, और सबसे भी, अरे कमबख्त ओ नाक्रद्वर्दा। तूने वर पाया था शिव से इसलिए कटते हैं सर, जिसके बाअस तू बचाता जा रहा है अपनी जाँ। राम से हो कर मुखालिफ़ तू बचेगा किस तरह, मौत सर पर नाचती है तू बचेगा अब कहाँ। उसके सीने पर गदा को मार कर ऐसा कहा, गिर गया रावण ज़मीं पर खून था मुँह से रवाई। वह सँभल कर फिर उठा और इससे लड़ने लग गया, लड़ रहे कुश्ती थे आपस में ये दोनों भाइयाँ। राम के परताप से इसकी दिलेरी बढ़ गयी, रावण ऐसे शेर को भी उसने समझा नातवाँ। वह विभीषण आँख भी जिसकी न उठती थी कभी, आज उससे भिड़ गया है हो के कैसा पहलवाँ। दौड़ कर हनुमान पर्वते ले के सिर पर एक पहाड़, जबकि देखा कुछ विभीषण हो रहे हैं नातवाँ। ज़द से जिसकी रथ गिरा और सारधी घोड़े मरे, लात भी एक खा गया रावण-सा भारी पहलवाँ। रह गया रावण खड़ा लेकिन था गदगद काँपता, उसने भी हनुमान को धूँमे से मारा बेगुमाँ। जब उड़े हनुमान ऊपर उसने द्रुम पकड़ी उछल, जिस क्रूर ऊपर गये ये, साथ उनके था रवाई। आखिरस दोनों फिजाँ में उड़के लड़ने लग गये, एक से थे एक बढ़ कर वो बहादुर पहलवाँ। दोनों ने करतब दिखाये अपने-अपने खूब-खूब, आखिरस लड़ते हुए दोनों गिरे वो पहलवाँ। और जो वानर गये इमदाद को हनुमान की, अपनी कूवत से किया रावण ने सबको नातवाँ। राम ने ललकार कर जब ज़ोर से आवाज़ दी, हो के हिम्मतवर गये लड़ने को फिर सब बानराँ। उसने ये जादू चला, पहले तो खुद ही छुप गया, अपने जैसे फिर कई रावण किये पैदा वहाँ। सैकड़ों रावण नज़र आने लगे चारों तरफ़, बानराँ-भालू डरे सब खो दिये ताबोतवाँ। राम जी इमदाद कीजै, लक्ष्मण जी की हो मदद, इस तरह कहते हुए भागे वो भालू वानराँ। एक ही रावण से हम सब तंग अब तक हो गये, जब हुए इतने ज्यादा हम बचेंगे अब कहाँ। देवता आपस में बोले जान ले कर भागिये, जाके दरों और पहाड़ों में करें खुद को निहान। जिसको था मालूम यह तो जादू ही का खेल है, उनके दिल में डर नहीं था, वो रहे क़ायम वहाँ। जो बने फ़रजी थे रावण, मारने उनको लगे, अंगदो हनुमानों नल और नीलों दीगर वानराँ। राम ने देखा कि वानर देवता बेकल हैं सब, हँस पड़े पहले उठाय़ा फिर धनुष को बेगुमाँ। हाथ में ले कर चलाया राम ने सारंग धनुष, जिस क्रूर फैला था जादू मिट गया सब नागहाँ। जिस तरह सूरज निकलने से अँधेरा चल बसे, योंही वो सब मिट गये बाक़ी न था नामोनिशाँ। एक रावण रह गया मैदान में, यह देख कर, देवता सब खुश हुए वानर हुए सब शादमाँ। राम के वापस बुलाने से वो वापस आ गये, जो पलट कर जा रहे मैदान से थे वानराँ। राम की तारीफ़ जब करने लगे सब देवता, यों कहा रावण ने उनसे हो के उस जानिब रवाई। मुझसे तुम दब कर रहे हर दम, अरे ओ बुज़्जदिलो, गो मैं तनहा हूँ मगर काफ़ी अकेला हूँ यहाँ। देवता भागे वहाँ से उसको आता देख कर, बोला वह कमबख्त मुझसे भागते तुम हो कहाँ।

देखा अंगद ने कि डर से देवता हैं भागते, पैर रावण का पकड़ कर वह गिराया नागहीं। लात भी रावण को मारी और वापस आ गया, फिर सँभल कर वह उठा जैसे कोई शेरजियाँ। वह चलाने लग गया बाणों को अपने चोतरफ़, हो गये बेताब और बेचैन अक्सर पहलवाँ। राम ने भी तीर मारा उसका सर कट कर गिरा, साथ बाजू के गिरे हाथों से सब तीरोकमाँ। जैसे-जैसे सर कटे बढ़ते गये तादाद में, जैसे तीरथ की जगह हो पाप से दूता जियाँ। सर के और बाजू के बढ़ने से हुए बेजार सब, किस तरह मारेंगे इसको सोचते थे वानराँ। अंगदो हनुमान नल ओ नील और वानर सभी, झाड़ पत्थर ले के दौड़े और हुए हमलाकुनाँ। ले के उनके हाथ से वह झाड़ उन्हीं को मारता, हो रही थी इस तरह वह जंग इनके दमियाँ। कोई भींचे, कोई काटे, लात मारे कोई एक, सर पर चढ़ कर उसके नल और नील नोचे बेगुमाँ। वह जमीं पर इनको फेंका हाथ से अपने पकड़, ये मरोड़े हाथ उसका उठके दोनों पहलवाँ। आ गया गुस्सा उसे फिर ले लिया अपना धनुष, और चलाया उनको जब घायल हुए सब वानराँ। आ गया हनुमान को गश और भी वानर गिरे, जामवन्त ने ये जो देखा, वह हुआ फौरन रवाँ। हाथ में अपने लिये जाते थे वो पत्थर पहाड़, साथ उनके दौड़ते जाते थे उनके भालुवाँ। भालुओं को जेरीबाला जब कि रावण ने किया, लात एक सीने पे मारा खींच कर तब जामवाँ। चोट छाती पर लगी बेचैन रावण हो गया, वह जमीं पर गिर गया, जाते रहे ताबोतवाँ। तब उठायो सारथी ने और किया रथ पर सवार, हो गयी थी शाम वह वापस हुआ घर को रवाँ। जब कि बेहोशी गयी, वानर सब उठ कर आ गये, राक्षस डरने लगे रावण को सब घेरे वहाँ। पास सीता के गयी उस रात ही को त्रिजटा, और सब हालात मँदा के किये उनसे बयाँ। सर बढ़े जाते थे रावण के सुना सीता ने जब, खोफ़ होने लग गया सीता के दिल के दमियाँ। दिल उदास उनका हुआ और पूछने यों लग गयी क्या नतीजा होगा इसका कैसे निकले उसकी जाँ। सच अगर पूछो तो मेरी वदनसीबी के सबब, बच रहा है वह वहाँ, में झेलती हूँ सख्तियाँ। जिस मुकद्दर ने मुझे मालिक से रक्खा दूर है, जो हिरण मुझको दिखाया जर का नकली बेगुमाँ। जिसके बाअस मुझको सब तकलीफ़ थी सहनी पड़ी, और जिसने मुझसे लक्ष्मण को मुनायी गालियाँ। जो मुकद्दर आज मेरी कुलफ़तों का है सबब, है वही रावण की जाँ का भी मुहाफ़िज निगहबाँ। याद करके राम को सीता थीं रोती ज़ार-ज़ार, त्रिजटा बोली सुनो गहजादी तुम मेरा बयाँ। कलबे रावण में लगेगा तीर जब ऐ जानकी, वह कभी फिर बच नहीं सकता है बेशकोगुमाँ। रुक रहे हैं राम दिल में तीर उसको मारने, याद है दिल में तुम्हारी, तुम हो उसकी दुर्जे जाँ। जानकी के दिल में अपनी याद हैं समझे हुए, और अपने दिल में वो समझे हैं, है सारा जहाँ। इस तरह जब तीर रावण के लगेगा कलब में, वह न क्यों होगा जमाने के लिए तुम्हाराँ। सुनके सीता खुश हुई और फिर हुई कुछ दर्दमन्द, बोली वह कैसे मरेगा वह मैं करती हूँ बयाँ। हर दफ़ा सर उसके कटने से वह हो जाएगा दिक्क़ रह सकेगा ध्यान ही दिल में तुम्हारा भी कहाँ। राम जब मालूम कर लेंगे कि तुम दिल में नहीं, मार देंगे तीर फ़ौरन क्योंकि वे है रम्झदाँ। त्रिजटा कह कर ये सीता से रवाना हो गयी, और फ़िराक़े राम में सीता की थी बेचैन जाँ। रात उनको एक युग से भी ज्यादा हो गई, चाँद को वह देख कर करती रहीं जारोफ़ुगाँ। आँख बायी उनकी फड़की यह सुनने नेक था, वह यह समझीं अब विशाले राम से हूँ कामराँ। नीम शब गुज़री, उधर रावण का गश जाता रहा, सारथी से यों कहा, तू मुझको क्यों लाया यहाँ।

तू बड़ा नादान है जो जंग से पलटा लिया, सारथी ने पैर पड़ कर कर दिया सब कुछ बर्बाद। सुबह जब होने लगी, रावण हुआ रथ पर सवार, जंग के मैदान को वह हो गया क्रौरन रवा। राम की भी फ़ौज में फिर मच गयी हलचल बड़ी, जब हुआ मालूम रावण आ गया है फिर यहाँ। दौत अपने कटकटा कर दौड़ते जाते थे सब, झाड़ पत्थर हाथ में थे, या कोई कोहेगिरा। मार से उनके चले जाते थे वापस राक्षस, सूरमा वानर हुए, रावण पे भी हमला कुना। नीच कर और काट कर बेचैन उसको कर दिये, उसने चालाकी से अपने को किया क्रौरन-निहा। कुछ भयानक सूरतें आने लगीं सबको नजर, भूत की भी शक्ल थी और हाथ में तीरोकमा। खून पीते जा रहे थे नोचते थे बार-बार, हाथ में तलवार और इन्सान की थी मुंडिया। पकड़ो, मारो की सदा आने लगी हरसिम्त से, खा ही डालें सबको, मुंह वह खोल कर होते रवा। और रावण चौतरफ़ से रेत बरसाने लगा, जिस जगह वानर गये थी वह जगह आतिशफ़शा। हो गये बेचैन वानर, लक्ष्मणो-सुग्रीव भी, और फिर गर्जा वह रावण जैसे एक शेरजिया। हाथ मलते जा रहे थे, हो के वानर बेकरार, हाथ का था लव पे नारा, राम था विरदेजबा। दूसरी एक चालवाजी फिर से की रावण ने यह, शक्ल में हनुमान की बन कर कई आये वहाँ। हाथ में पत्थर लिये यह दौड़ते जाते थे सब, और पहुँचे उस जगह, थे रामचन्द्र जी जहाँ। जा के वो रघुनाथ को घेरे, उठा कर अपनी दुम, पकड़ो मारो कहते जाते और थे नाराकुना। राम ने जाना यह सब कुछ, और चलाया एक बाण, खेल जो खेला गया था, मिट गया सब नागहाँ। खुश हुए वानर तमामी और सब वापस हुए, राम ने रावण को तीरों का बनाया फिर निशा। हाथ और सर उसके कट-कट कर जो गिरने लग गये, इम लड़ाई का नहीं मुमकिन कभी करना बर्बा। सर कटे, बाजू कटे, लेकिन वह मरता ही नहीं, महेये हैरत देवता थे, देख कर ऐसा समा। उसके सिर कटने से बढ़ते जा रहे थे इस तरह, नफा जब होता चले, लालच है बढ़ता बेगुमा। देर होती जा रही थी और यह मरता न था, राम ने सोचा कि कोई बात है इममें निहा। जानते वह खुद थे लेकिन उनका सेवा है यही, अपने सेवक को बढ़ावें और करें इज्जतनिशा। जब विभीषण की तरफ़ देखा तो उसने यों कहा, नाभ में रावण के जो अमृत भरा है बेगुमा। वह इसी के जोर पर अब तक नहीं मारा गया, सुन के यह रघुनाथ ने फिर ले लिया तीरोकमा। बद सगुन आसार चारों सिम्त से होने लगे, खर व सग और लोमड़ी होने लगे नालाकुना। छा गयी जूलमत, अँधेरा छा गया चारों तरफ़, जैसे होता है ग्रहण के वक्त शेर आसमा। और परिन्दे खीफ़ से उड़ने लगे चारों तरफ़, कोह और जंगल हुए हर सिम्त से आतिशफ़शा। इन्हलाजे क्लव में मन्दोदरी थी काँपती, उसकी आँखों से हुआ सैलाब आँसु का रवा। आसमा से आग बरसी और जमीं हिलने लगी, खाक उड़ने लग गयी, चलने लगी जब आँधिया। सब बुरे असबाव होने लग गये हर तीर से, उनका गिनना भी है मुश्किल और मुश्किल है बर्बा। देवता आकाश से आवाज करने लग गये, इस तरह जब हो गया हरसू भयानक ही समा। राम ने अपने चलाये खींच कर इक्कीस तीर, नाभिए रावण में सूखा अमृत जो कुछ था निहा। सर कटे उसके और उसके दस्तोबाजू कट गये, षड़ रहा बाकी जमीं पर नाचता था बेगुमा। दौड़ने जब लग गया घँसने लगी अन्दर जमीं, राम ने फिर तीर मारा जिस्म के भी दमिया। उसके दो हिस्से हुए और गिर गया कहते हुए, राम को माँखंगा मैं, बतलाओ मुझको है कहा। जब गिरा वह जोर से हिलने लगी सारी जमीं, बहर में तूफ़ान आया, हिल गये कोहेगिरा।

संकड़ों वानर दबे जब जिस्म उसका गिर गया, और सर जा कर गिरे मन्दोदरी रहती जहाँ।
 शायदियाने देवताओं ने बजाये ऐश से, जय का नारा हर तरफ था, ब्रह्मा और शिव शादमा।
 देवता सब शादमा थे और ऋषी भी और मुनी, जो मसरत के सबब सब राम पर थे गुलफ़र्शा।
 राम की तारीफ़ करते जा रहे थे बार-बार, हर कोई तीसीफ़ करता, हर कोई था मदहूस्वा।
 सिर पे उनके थी ब्रह्म जटा, मालूम देती थी मुकट, जा बजा गूँथे गये थे, फूल जिसके दमिया।
 जिस्म पर बूँदें पसीने की कहीं थी खुशनुमा, बाजुओं से फेरते जाते थे वह अपनी कर्मा।
 राम की चश्मेकरम से देवता सब शाद थे, और वानर हो गये सब कामगारो कामरा।
 देख कर शीहर का सर मन्दोदरी रोने लगी, आ गया गश उसको जब करने लगी आहोफ़ुर्गा।
 औरतें जो पास थीं सब दौड़ कर रोने लगीं, ले गयी उसको वहाँ रावण का मुर्दा था जहाँ।
 देख कर रावण की हालत रो रही थी ज़ार-ज़ार, बाल सर के खुल गये, जाते रहे ताबोतवा।
 उसकी कूवत और सरबत का बर्या करते हुए, पीटते जाती थी सीने और थी मातमकुना।
 तुमसे खायफ़ थी ज़मीं और चाँद सूरज माँद थे, किस तरह तुम लौटते हो आज मरकर के यहाँ।
 वरुण और वायू न ठहरे, और नहीं इन्द्रोकुबेर, आपके ये हों मुक़ाबिल इतनी ताक़त थी कहाँ।
 मौत को जीता, फ़रिश्तों को भी जीता आपने, आज कैसे लौटते हो, होके तुम बे खानमा।
 आपकी कूवत व ताक़त थी जहाँ में आशकार, थे बहादुर आपके फ़रजन्द, अहले खानदा।
 राम से होकर मुखालिफ़ ये तबाही हो गयी, कोई बाक़ी है न घर में, मिट गया नामोनिशा।
 तुम ज़माने पर थे हावी, तुमसे खायफ़ लोकपाल, आज आज्ञा सब तुम्हारे खा रहे हैं गीदडा।
 राम को जाना न तुमने, और न मानी कोई बात, यह उसी का है नतीजा, मौत के थे सब निशा।
 राक्षस बन को जलाने के लिए वह आग है, जिनको तुम इन्सान समझे, राम इन्सा हैं कहाँ।
 तुम हमेशा दूसरों से छेड़ करते ही रहे, उम्र गुज़री पाप में, जानी न तुमने नेकिया।
 राम ने फिर भी तुम्हारा मरतबा ऊँचा किया, हाथ से उनके मरे पायी हयाते जावेदा।
 इस तरह कहते हुए मन्दोदरी थी रो रही, देवता उसके हुए तीसीफ़गर और मदहूस्वा।
 औरतें घर की जो थीं सब रो रही थीं ज़ार-ज़ार, दिल विभीषण का दुखा और खो दिये ताबोतवा।
 जाके यह नज़दीक उनके आप रोने लग गये, राम के कहने से लक्ष्मण जी गये, ये थे जहाँ।
 जाके लक्ष्मण ने तसल्ली दी विभीषण को बहुत, फिर ये वापस आये दोनों, रामचन्द्र थे जहाँ।
 रामने उनसे कहा अब फ़िक्रोगम को छोड़ दो, और क्रिया रावण की करने की करो तैयारिया।
 राम के कहने के बाअस तब विभीषण ने किया, भाई रावण का करम हस्बे रिवाजे खानदा।
 मँयते रावण के जब सब कार्य पूरे हो गये, देके तिलअंजलि हुई वापस महल को रानिया।
 और बकाया सब फ़रायज ख़तम सारे हो गये, राम की खिदमत में आये फिर विभीषण बेगुमा।
 राम हो कर तब भुखातिब भाई लक्ष्मण की तरफ़, अज़रहे लुतफ़ो इनायत यों हुए गोहर फ़र्शा।
 नील-नल सुग्रीव मासती व अंगद जामवंत, दूसरे भी फ़ोज के जो लोग हैं अपने यहाँ।
 ले के जाओ तुम विभीषण को ये सब हमराह हों, और तिलक करके विभीषण को बना दो हुक्मरा।
 बाप के अहक़ाम से मजबूर हूँ आने से मैं, रख नहीं सकता क़दम मैं बसतियों के दमिया।
 मेरे ही हम ख़तबा ये भाई हैं भेजा है जिन्हें, और इनके साथ ही मेरे बहादुर वानरा।
 सुनके यह इरशाद वानर सब रवाना हो गये, राजगद्दी की किये जा कर वो सब तैयारिया।
 राजसिंहासन पर बिठला कर किया उनको तिलक, ताजपोशी ये विभीषण की हुई बाइज्जोशा।

सर झुकाया उनके आगे सब खमीदा हो गये, तख्ते शाही पर विभीषण जब हुए जलवाकुनी । जब मरासिम हो गये वापस विभीषण आए फिर, और वानर भी सब आये रामचन्द्र थे जहाँ । राम ने लुतफ़े सुखन से यों किया महजुन्न उन्हें, आप सब की ही मदद से मैं हुआ हूँ कामरौ । आप ही की थी मदद रावन जो ये मारा गया, और विभीषण आज लंका के हुए हैं दुश्मरौ । आपका परताप दुनिया में बढ़ेगा और भी, आपके सब काम होंगे साजगारो कामरौ । राम के चूमे चरण, और सर झुकाये लोग सब, सुनके ये अलफ़ाज वानर हो गये सब शादमाँ । राम फिर हनुमान से इस तरह फ़रमाने लगे, जाओ तुम लंका को अब है जानकी रहती जहाँ । क़ैफ़ियत सारी यहाँ की जानकी से तुम कहो, और ख़बर तुम ख़ैरियत की उनकी ले आओ यहाँ । ये रवाना हो गये, दाख़िल हुए लंका में जब, पेशवाई के लिए सब राक्षस आये वहाँ । कुछ कसर बाक़ी न रखी खातिरे मेहमान में, ले गये इज्जत से इनको जानकी जी थी जहाँ । दूर से आदाब जब हनुमान ने इनको किया, वह यह समझे, है वही कासिद जो आया था यहाँ । पूछा सीता ने कहो तुम ख़ैरियत रघुनाथ की, ख़ैरियत से तो हैं लक्ष्मण, और और सब ही वानरौ । ख़ैरियत सबकी सुना कर यों कहा हनुमान ने, दस्त-बस्ता अर्ज है यह, तुम सुनो ऐ मेरी माँ । जंग में रावण को जीता राम ने, वह मर गया, और विभीषण हो गये लंकापुरी के दुश्मरौ । जब सुना हनुमान के मुँह से ये सीता ने सुखन, हो गई मसरूर बेहद हो गयी वो शादमाँ । पूछती हनुमान से थी क्या तुझे मैं दूँ सिला, शुक़िया तेरा अदा करने में कासिर है जबौ । यों कहा हनुमान ने मुझको सिला तो मिल गया, फ़तह पाई राम ने जो और हुए नसरत निशाँ । तब कहा सीता ने तुमको यह दुआ देती हूँ मैं, हर तरह अच्छे रहो, हों राम तुम पर मेहरबाँ । अब वही तजवीज़ करना राम को मैं देख लूँ, तब गये हनुमान वापस रामचन्द्र के यहाँ । जाके हनुमाँ ने तमामी क़ैफ़ियत उनसे कही, राम ने अंगद विभीषण को बुलाया बेगुमाँ । और कहा तुम जाओ माहनी को ले कर अपने साथ, और सीता को ले आओ तुम यहाँ बाइज्जोशाँ । जल्द रवाना हो गये सब और पहुँचे उस जगह, थीं महारानी श्री सीता जी रहती थी जहाँ । उस जगह जा कर विभीषण उनको सब समझा दिया, राक्षस की औरतें खिदमत में जो भी थी वहाँ । उनको नहलाया गया ज़ेवर भी पहनाये गये, खूबसूरत पालकी सजधज के आई एक वहाँ । पालकी में हो गयीं सीता महारानी सवार, राम का था ध्यान दिल में और दिल था शादमाँ । सब के दिल में थी उमंगें, रीछ, वानर शाद थे, हाथ में ले कर छड़ी, सब दौड़ते थे पासबाँ । देखने जाते थे वानर राक्षस थे रोते, तब कहा रघुवीर ने, रोको न इनको मेहरबाँ । है यही बेहतर कि सीता को यहाँ पैदल ले आओ, ताकि वानर देख लें उनको जैसे अपनी माँ । वानरों भालू हुए खुश राम की सुन कर ये बात, देवता भी आसमाँ से हो रहे थे गुलफ़शाँ । जानकी का रूप असली आग में जो था छूपा, अब ज़रूरत उसकी थी कि आज वह कर दे अयाँ । इसलिए कुछ राम ने भी तलख़ बातें उनसे कीं, जोकि सुनने वालों के दिल को हुई ईज़ा रसाँ । तब तो सीता जी ने की यों लक्ष्मण से इत्तेजा, मैं जल जाऊँगी, तुम आग सुलगा दो यहाँ । आबदीदा हो गये लक्ष्मण भी जब सीता कहीं, राम से वह कुछ कहें, उनमें ये हिम्मत थी कहीं । राम के मंशा को पा कर लक्ष्मण दौड़े गये, और फ़राहम करके लाये आग और लकड़ी वहाँ । अग जब रोशन हुई अच्छी तरह, तब जानकी, आके बेखौफ़ो ख़तर बोली यह सबके दर्मियाँ । राम ही का है सहारा, राम हैं मालिक मेरे, मैं बजुज इनके नहीं हूँ, और किसी की क़द्रदाँ !

मैं क्रसम खा कर हूँ कहनी; बात हो सच्ची अगर, मिसले संदल आग यह हो जाय ठंडी नागहूँ ।
 राम ही का नाम ले कर आग में वह गिर गई, शिद्धते गर्मी उन्हें मालूम होती थी कहाँ ।
 जो बजाहर ऐब था वह आग में सब जल गया, वसवसे दिल के मिटे, और मिट गये शक्कोगुमाँ ।
 आग से सीता निकल आई बिला कोई गजन्द, और सबके सामने वह हो गयीं इज्जत निशाँ ।
 और भी रौनक बढ़ी चेहरे पर उनके आखिरस, राम के बाँयें तरफ़ जा कर हुई जलवाकुनाँ ।
 आसमाँ पर शादियाने ऐश के बजने लगे, देवता सब शाद हो कर हो रहे थे गुलफ़िशाँ ।
 वानरों भालू भी सब खुश हो गये शादाँ हुए, राम की जय का वह नारा थे लगाते वेगुमाँ ।
 मालती रथवान जो था इन्द्र का भेजा हुआ, ली इजाजत वापसी की हो गया वापस रवाँ ।
 देवता भी आये सब और इल्लतेजा करने लगे, आपने आवण को मारा, हम हुए सब शादमाँ ।
 आप ही की जात लासानी है और है जातेपाक, आपकी तारीफ़ हमसे हो नहीं सकती बयाँ ।
 जब मुसोबत हम पे आयी आप ने ही की मदद, मुस्रतलिफ़ अवतार में होते हुए जलवाकुनाँ ।
 मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह और वामन परसुराम, आप ही का रूप थे यह कुछ नहीं शक्कोगुमाँ ।
 रावने बद खुदी यह हर तरह से बदजात था, आपके हाथों से मर कर हो गया यह कामगँ ।
 आपकी खिदमत से हम गाफ़िल हमेशा ही रहे, सब खनाएँ बरुश दीजे होके हम पर मेहरबाँ ।
 देवता और सब मुनी इस तरह कह कर चुप रहे, तब ब्रह्मा जी भी खुद तशरीफ़ ले आये वहाँ ।
 जय का नारा वह लगाये और कहा रघुनाथ जी, ज़िन्दगी और मौत हाथी, आप हो शेरैज़ियाँ ।
 आप-सा ज्ञानी नहीं है, आपका हमसर नहीं, आप में मुजमिर है प्रभू जी, हर तरह की खूबियाँ ।
 आपके रूपे मुनव्वर पर है वह जाहो जलाल, देख ही सकते नहीं जिसको मुनी और राजदाँ ।
 आपने रावण को मारा जो बड़ा बदकार था, आपके सब काम अच्छे बाअसे आरामे जाँ ।
 फ़िक्रोगम बाकी न हो और खोफ़ सब जाता रहे, अपने सेवक पर रहा करते हो हरदम मेहरबाँ ।
 सब मुसोबत दूर करने के लिए आये हो आप, आप ही बस आप हो, है आप-सा मिलता कहाँ ।
 यह सरे तसलीम ख़म है, आपके आगे जनाब, आपने अपना विभीषण की बनाया हुक्मराँ ।
 ज्ञान के और खूबियों के आप ही भंडार हैं, स्वाहिशीं से दूर रहने हो हमेशा बेगुमाँ ।
 जो कि हैं पापी उन्हें तुम मारने में वीर हो, हो शरीकों के मश्रावन बेकसों के पासबाँ ।
 आपको और जानकी को यह मेरा प्रणाम है, पाप के दरिया का बेड़ा पार करते बेगुमाँ ।
 तीरो तरकस खूबसूरत हाथ में रखते हैं आप, गुर्ख आँखें आपको हैं आप हैं शाहेशहाँ ।
 आप हैं बेऐब और कुछ आपमें लालच नहीं, शहवत और नखवत को कर देते हैं बेगक रायगाँ ।
 स्वाहिशाते नफ़स का कुछ शायबा तक भी नहीं, आप दुनिया में अयाँ हो कर भी सबसे हैं निहाँ ।
 जैसे सूरज और शँ है, रोशनी है और शँ, जो बजाहर है जुदा, लेकिन जुदा है कहाँ ।
 हमने सेवा की न कुछ, धिक्कार हैं हम पर हजार, और काबिल क्रद हैं, हैं ये जितन वानराँ ।
 अकल मेरी ठीक कीजे भूल में मैं हूँ पड़ा, इस्तिग़ाजे दर्दों राहत का सलीका हो कहाँ ।
 आप बदकारों को देते हैं सज़ा आक्राएमन, आपके क्रदमों में शिव-गौरी का दिल है बेगुमाँ ।
 अब हुआ मुझको ये दीजें आप ही की याद में, मैं गुज़ारूँ उम्र अपनी और रहूँ मैं शादमाँ ।
 स्वर्ग से दशरथ भी आये राम ने उनसे कहा, मैंने जो कुछ भी किया, सब आपकी है नेकियाँ ।
 राम लक्ष्मण और सीता ने क्रदम बोसी भी की, और दशरथ हो गये सुरलोक को वापस रवाँ ।
 इन्द्र ने भी राम से यह बाअदब की इल्लेजा, खर व दूषण और रावण थे बहादुर पहलवाँ ।

आपने इन सबको मारा खीक अब बाकी नहीं, हो गये मसरूर हम भी, और सब अहले जहाँ। आपने कमजोर कर डाली है नस्ले राक्षस, था बड़ा मगरूर जाबिर शाहे लंका बेगुमाँ। मैं समझता था कि मुझ-सा दूसरा कोई नहीं, आपके दर्शन से मैं अब हो गया हूँ कामरौ। कोई तो जपते हैं हरदम आपका निर्गुण स्वरूप, मुझको भाता है सगुण ही रूप जो है अब अयाँ। मेरे दिल में आपकी भक्ति का हो हरदम मुक़ाम, आपकी तसवीर हो दिल में मेरे जलवाकुनाँ। आपको प्रणाम करता हूँ मैं आका बार-बार, हो दया की एक दृष्टि मुझ पे ऐ शाहे शहाँ। काम लायक जो हो मेरे वह मुझे फ़रमाइए, ताबजा लाऊँ उसे मैं जो कि है शाबाने शाँ। राम हो कर श्वाद उनसे इस तरह कहने लगे, वानरो भालू पड़े मँदान के है दमियाँ। राक्षस लोगों के हैं ये हाथ से मारे गये, मेरी ही इमदाद में हरइक ने दे दी अपनी जाँ। आप इन सबको जिलायें, मेरी है यह आरजू, इन्द्र यह इरशाद सुन कर हो गये बस शादमाँ। इन्द्र ने तामील में बरसा दिया आबेहयात, हो गये जिन्दा मरे जितने थे भालू वानराँ। ऐसो बारिश से फ़क़त भालू व वानर जी उठे, राक्षस महलूम इससे रह गये सब बेगुमाँ। क्योंकि मरते वक्त उनके था जबाँ पर राम नाम, उनके हाथों से मरे, पाये ह्याते जावेदाँ। देवता जो आये थे अपने विमानों पर चढ़े, फूल बरसाने लगे और हो गये वापस रवाँ। जब ये देखा है ये अच्छा वक्त, शिव जी आ गये, राम से हो कर मुखातिब यों हुए गौहर फ़शाँ। कीजिए मुझ पर इनायत आप ऐ रघुनाथ जी, देवताओं के हैं हमी, और सब पर मेहरबाँ। आप अँधेरे को मिटाने के लिए हैं रोशनी, सब बुराई को मिटा देते हैं बेशकोगुमाँ। स्वाहिशाते नपस का जो है चमन मिसले कमाल, आप माला बन के कर देते हैं गुलशन रायगाँ। नाव के तुम हो खिवैया पार बेड़ा तुम करो, अहले दुनिया के लिए दुनिया है बहरे बेकराँ। आपका जो आसरा ले उसपे करते हैं करम, और गरीबों के मआवन भी हैं और राहत रसाँ। इस्तेजा मेरी है आप और भाई लक्ष्मण जानकी, मेरे ही दिल में बसों, रह जायें उसके दमियाँ। आपकी मैं राजगद्दी देखने को आऊँगा, आप जब मुन्के अवध के होंगे जा कर हुक्मराँ। आये तब राजा विभीषण रामचन्दर जी के पास, जब कि शिव जी स्तुती करके हुए वापस रवाँ। ऐ धनुष धारी सुनो अब आप मेरी इस्तेजा, मार कर रावण को, मारे उसके सब हमराहियाँ। आपने मुझ पर दया की और अपनाया मुझे, मैं तो था अदना व जाहिल और मैं था हीचदाँ। दास के घर में क़दम रंजाई हो सरकार की, मरतबा मेरा बढ़ा कर कीजिए इज्जत निशाँ। मुल्क और धन आपका है और खज़ाना-आपका, कीजिए तकसीम इसको वानरों के दमियाँ। हर तरह से आप अपना लीजिए मुझको हुज़ूर, और अयोध्या को मुझे ले चलिए ऐ शाहे शहाँ। राम की आँखों में आँसू आ गये उल्फ़त भरे, जब विभीषण ने किया यह राम से अर्जेबयाँ। और कहा ऐ भाई यह घर और खज़ाना है मेरा, बात है बिल्कुल ये सच्ची कुछ नहीं शकोगुमाँ। भरत की मैं याद करके हो रहा हूँ बेकरार, हर घड़ी हर लमहा मुझको है यहाँ बारैगाँ। वह तपस्वी बन के हैं मशगूल मेरी याद में, तुम करो तदबीर वह जल्दी मैं पहुँचूँ अब वहाँ। मुल्तमिस तुमसे हूँ मैं, पहुँचूँ अगर मुद्दत के बाद, भाई को जिन्दा नहीं पाऊँगा बेशकोगुमाँ। याद मेरी दिल में रक्खो और बसद जाहो जलाल, कल्प भर तक तुम रहो इस सलतनत के हुक्मराँ। आखिरश में तुम जगह वह पाओगे मेरे अजीज, जो जगह पाता है जोगी संत हो या रम्जदाँ। जब सुना इतना विभीषण, गिर गये पैरों पे वह, और वानर रीछ भालू हो गये सब शादमाँ।

फिर विभीषण कसर को अपने रवाना हो गये, जर जवाहिर ले के वह निकले बहाँ से बेकराँ ।
 इक जवाहुर से भरा राजा विभीषण ने विमान, और ले कर आया उसको रामचन्दर के यहाँ ।
 राम के आगे जो उतरा आ के वह पुष्पक विमान, इस तरह इरशाद फरमाने लगे खन्दादहाँ ।
 पारचा, जर और जवाहुर फँकते नीचे चलो, बैठ कर इसमें उड़ो अब तुम बसूये आसमाँ ।
 हुक्म की तामील में फ़ौरन उड़ा ऊपर विमान, और हुई बरसात जर और पारचे की बेगुमाँ ।
 जिसको जो आया उठाया और उसी को शोक से, चीज खाने की समझ कर खाये अक्सर वानराँ ।
 जो न थी खाने के क़ाबिल वह दिये उसको उगल, राम लक्ष्मण जानकी हँसने लगे सब नागहाँ ।
 भेद जिनका जान सकते हैं नहीं साधू व संत, वानराँ पर देखिए किस तरह हैं वो मेहरबाँ ।
 जेवरों मलबूज पहने राम के पास आ गये, ईसतादा हो गये सब आ के भालू वानराँ ।
 मुखतलिफ़ अक्साम के वानर जो आये रूबरू, देख कर उनको हुए तब रामजन्द्र शादमाँ ।
 और यह इरशाद कर पाया कि मेरे भाइयों, यह तुम्हारी ही मदद से मैं हुआ हूँ कामराँ ।
 मैंने रावण को है मारा बस इसी इमदाद पर, तख्ते लंका पर विभीषण भी हुए जलवाकुनाँ ।
 याद मेरी दिल में रखो और रहो बेखौफ़ तुम, अपने-अपने घर को जाओ और रहो सब शादमाँ ।
 वानराँ ने दस्तबस्ता यों कहा ऐ राम जी, आप जो फ़रमा रहे हैं वह सब शायाने शाँ ।
 हम तो सब अदना हैं वानर आपने अपना लिया, हमको इस लुफ़्त और दया से कर दिया इज्जत निशाँ ।
 शर्म आती है हमें यह बात सुन कर आपकी, कोह के आगे भला चींटों की ताक़त ही कहाँ ।
 शादमानी भी थी दिल में और जुदाई का भी रंज, राम से ले कर इजाजत हो गये आखिर रवाँ ।
 नील नल हनुमान अंगद और सुग्रीव रीछराज, और विभीषण चुप खड़े थे, देखते थे सब समाँ ।
 ये न थी हिम्मत किसी की अर्ज वह कुछ कर सके, राम का चेहरा थे तकते और थे आँसू रवाँ ।
 प्रेम उनका देख कर उनको बिठाया अपने साथ, और विमान उड़ कर हुआ इस जायसे फ़ौरन रवाँ ।
 जब चला उत्तर की जानिब शोर होने लग गया, राम की जय बोलने में लोग सब थे हमजबाँ ।
 राम जी सीता जी थे बैठे हुए थे बीच में, तलत एक वाक़ै हुआ था उस विमाँ के दमियाँ ।
 और चलने लग गया वह तेज रफ़्तारी के साथ, देवता सब खुश हुए, होने लगे सब गुल फ़शाँ ।
 थी हवाएँ भी मुआफ़िरा, आबे दरिया ठोक था, वक़्त भी अच्छा था और और था साफ़ पूरा आसमाँ ।
 राम ने बतलाया सीता को यह वह मैदान है, इन्द्र के फातेह को मारा था लक्ष्मण ने जहाँ ।
 अंगदो हनुमान ने मारे थे जो भी राक्षस, खाक़ में सब लौटते कैसे पड़े हैं पहलवाँ ।
 कुम्भकरण, रावण मरे थे इस जगह देखो जरा, देवताओं के मुखालिफ़ और थे ईजा रसाँ ।
 मैंने पुल बनवाया इस जा, यह है रामेश्वर मुकाम, शिव को स्थापित किया हूँ, हाथ से अपने यहाँ ।
 जिस जगह वन में थे ठहरे वो दिखाये सब मुकाम, और बतलाते थे इनको उनके सब नामोनिशाँ ।
 आ गया जब चलते-चलते इनके दण्डक वन क़रीब, जिस जगह रहते अगस्त थे और दीगर साधुवाँ ।
 राम उनके पास उतरे और मिले हर एक से, फिर बसूये चित्रकूट राही हुआ यह कारवाँ ।
 सैर जमुना और गंगा की कराई राम ने, सर झुकाया उनके आगे हो गये आगे रवाँ ।
 देख कर प्रयाग को बोले कि तीरथ राज है, पाप होते दूर हैं, त्रिवेणी बहती है यहाँ ।
 यह वही त्रिवेणी है जो कष्ट को करती है दूर, मंजिले मक्तसूद पर चढ़ने की हैं ये सीढ़ियाँ ।
 फिर अयोध्या को दिखा कर यों कहा यह वह शहर, जिसके दर्शन से हुआ करते हैं इन्साँ कामराँ ।
 शहर को अपने जो देखा, हो गये मसख़रो शाद, और त्रिवेणी पे उतरे और किये स्नान ध्याँ ।

और कहा हनुमान से जाओ अयोध्या जल्द तुम, भरत से जा कर हमारी खैरियत कर दो बयाँ। और उनकी खैरियत का ले कर आओ तुम पयाम, इस क्रूर सुनते ही हनुमाँ हो गये क्रौरन रवाँ। उस जगह ये सब गये रहते जहाँ थे भारद्वाज, देख कर इनको हुए बेहद मुनीजी शादमाँ। जब वहाँ से भी चले, पाई खबर राजा निषाद, दौड़ कर चिल्ला के बोला, लाओ किस्ती है कहाँ। पार गंगा करके आये इस तरफ़ साहिल पर जब, वह विमान उतरा जमीं पर हुक्म पा कर नागहाँ। तब तो सीता जी ने की गंगा की पूजा शीक से, और गंगा ने दुआ दी इनको हो कर शादमाँ। गोह का राजा वहाँ आया जो पाई ये खबर, गिर गया जमीं पर हो के बेहद शादमाँ। शादमानी के सबब आपे से बाहर हो गया, राम ने उसको उठा कर दिया इज्जत निशाँ। पास उसको अपने बिठलाया और पूछी खैरियत, बोला वह मैं आपके दर्शन से हूँ अब कामराँ। भरत के मानिन्द समझा, जो कि था अदना निषाद, पास अपने उसको बिठलाया किया इज्जत निशाँ। सक्के दिल से जो हैं पढ़ते और सुनते हैं इसे, शाद रहते हैं हमेशा और हरदम कामराँ। राम ही को याद कर तू राम ही का नाम ले, ऐ दिले नादान सुन तू, पाप का घर है जहाँ। राम जी की वापसी को एक दिन बाकी था बस, मूतजिर सब लोग थे मुल्के अवध के साकिनाँ। सब सुगूने नेक होने लग गये चारों तरफ़, और नज़ारे थे हर सू शादमानी के अयाँ। रानी कौशल्या का और सब रानियों का दिल था खुश, जैसे आने की खबर सुनने ही को हैं नागहाँ। सीधा बाजू, आँख सीधी थी फ़ड़कती बार-बार, भरत के दिल में उमंग होने लगी कुछ नागहाँ। सोचने दिल में लगे क्या बात है आये नहीं, मुझसे वे नाराज हो कर क्या नहीं आये यहाँ। लक्ष्मण तक्रदीर वाले हैं कि जो हमराह हैं, मैं तो हूँ बदबस्त मुझको साथ वो रखते कहाँ। बात भी ये ठीक है मैं हूँ सज़ावारो खता, लेकिन अपने सेवकों के वो है बेशक कद्रदाँ। इसलिए उम्मीद है उनसे मिलूँगा मैं जरूर, कुछ सगुन अच्छे नज़र आते हैं अब मुझको यहाँ। कल की यह मुद्दत निकल जाये न आये वह अगर, मैं बड़ा बदबस्त हूँगा गर न निकले मेरी जाँ। भरत जी जब सोच में इस तरह थे डूबे हुए, ब्राह्मण के भेष में हनुमान पहुँचे नागहाँ। डबने वाले को मिल जाये अगर किसी कभी, किस तरह आती पलट कर उनके है कालिब में जाँ। भरत को देखा कि बैठे सेज पर हैं घास की, है जटा सर पर, है दुबले, राम है विरदे जबाँ। देख कर यह उनकी हालत हो गये हनुमान खुश, और मुहब्बत के थे आँसू आँख से उनकी रवाँ। भरत से हो कर मुखातिब यों कहा हनुमान ने, आप जिसके हिज़ में अब तक रहे हैं नीमजाँ। देवताओं के हैं रक्षक और मुनियों के मुमिद, रामचन्द्र खैरियत से वापस आये हैं यहाँ। जंग में जीता अदू को और सीता को ले आये, लक्ष्मण को साथ ले कर आ रहे है अब यहाँ। यह खबर सुनते ही क्रुलफत दूर सारी हो गयी, जैसे शरबत से मिटा ले प्यास की तिशनादहाँ। भरत ने पूछा कि तुम हो कौन कैसे आ गये, किम तरह मुझको सुनाई यह खबर राहत रसाँ। वह कहे हनुमान हूँ मैं और पवन का पुत्र हूँ, राम का सेवक हूँ मैं, भेजा उन्होंने है यहाँ। वो खुशी से उठ खड़े हो कर गले इनसे मिले, शाद बेहद हो गये, थे आँख से आँसू रवाँ। और कहा तुमसे मिला तकलीफ़ सब जाती रही, राम ही जैसे के मुझसे मिल गये हैं अब यहाँ। खैरियत वह पूछते थे भाइयों की बार-बार, क्या मिला उसका तुम्हें हैं, तुम कहो ऐ—मेहरबाँ। कोई सँ देने के लायक मैं नहीं पाता तुम्हें, खूब मैंने सोच कर देखा है इसको मेरी जाँ। मुझसे वह अहसाँ किया है जो न भूलूँगा कभी, इसका बदला हो सके मुझसे, यह मूमकिन है कहाँ।

फिर सुनाया भरत को अहवाल सारा राम का, जिस क्रूर हालत गुजरे, कर दिया सब कुछ बर्बाद। भरत ने पूछा कि मेरी याद भी करते थे क्या, अपने सेवक को भी करते याद थे क्या बेगूमाँ। सुनके ये अलफ़ाज क्रदमों पर गिरे हनुमान जी, दिल में सोचा राम खुद इनके हैं रहते मदहूब। और कहा है राम को वो आप जाँ से भी अजीब, भरत ऐसी बात सुन कर हो गये बस शादमाँ। करके फिर आदाब वापस हो गये हनुमान जी, और फ़ौरन आ गये थे रामचन्द्र जी जहाँ। खैरियत आ कर सुनाई राम भी खुश हो गये, बैठ कर फिर सब विमाँ में हो गये फ़ौरन रवाँ। भरत भी आये अयोध्या में गुरु जी से कहा, और महल में भी खबर की राम—आते हैं यहाँ। भरत ने सबको सुनायी खैरियत की भी खबर, जब कि सुन कर यह खबर आई महल से रानियाँ। फूल-फल थालों में ले कर पेशवाई के लिए, औरतें जाती थीं, गाती थीं मुबारकबादियाँ। यह खबर सुनते ही दौड़े जा रहे थे लोग सब, जिस किसी भी हाल में, जो थे हुए फ़ौरन रवाँ। देर हो जाने के अन्देशे से भागे जा रहे, तपल और बूढ़े रहे जाते थे घर के दमियाँ। पूछते जाते थे हर एक दूसरे से इस तरह, राम को जाते हुए क्या आपने देखा यहाँ। राम के आने के कारण छा गया आनन्द सब, लोग थे शादाँ ओ फरहाँ और थे शादो कुनाँ। और हवाएँ भी मुआफ़िक़ इस तरफ़ चलने लगीं, आबे सरजू साफ़ और शफ़ाफ़ हो कर था रवाँ। गुरु वशिष्ठ और शत्रुहन को साथ ले कर भरत जी, खैरमकदम उनका करने को हुए फ़ौरन रवाँ। सीढ़ियों पर औरतें चढ़ कर थीं ऊपर देखतीं, जब विमान आया नज़र गाँधी मुबारकबादियाँ। है अवधपुर एक दरिया राम काबिल माह है, जोश में आ कर उबलता है जो ये बहरेगाँ। औरतें जो फिर रहीं थी इस तरफ़ और उस तरफ़, वह तरंगे बहर की थीं बहर के इस दमियाँ। सँर करवाते अवध की राम थे चलते हुए, और कहते थे सुनो तुम सब अवध की खूबियाँ। खास कर सुग्रीव अंगद और विभीषण से कहा, मुल्क है यह खूबसूरत, शहर है नुसरत निशाँ। लोग कहते हैं कि है वैकुण्ठ ही अच्छा मुक़ाम, लेकिन उससे भी ज्यादा है अवध जन्नत निशाँ। राज इसमें क्या है नावाफ़िक़ है इससे लोग सब, भेद इसका जानते हैं लोग जो हैं रम्जदाँ। जन्म-भूमि है मेरी, जिसमें है यह सरयू नदी, इसमें जो स्नान कर लेंगे वो होंगे शादमाँ। जो यहाँ रहते हैं वो हैं सब मुझे दिल से अजीब, यह मुबारक शहर है बरकत भी रहती है यहाँ। तब विमान उतरा ज़मीं पर राम के इरशाद से, जब ये देखा आ रहे हैं सब अवध के साकिनाँ। हो गये नीचे फ़रोक़स जब विमाँ से लोग सब, राम ने फरमाया वापस उसको कर दीजै रवाँ। राम के फरमान से वापस गया पुष्पक विमान, जिसका मालिक था कुबेर, और यह गया जिसके यहाँ। भरत के हमराह सब लोग आये मिलने के लिए, राम के थे हिज्र में सब लोग दुबले नातवाँ। गुरु वशिष्ठ आये हुए थे और आये बामदेव, राम ने देखा कि आते हैं गुरु जी भी यहाँ। दौड़ कर राम और लक्ष्मण उनके पैरों पर गिरे, और गुरु ने भी उठाया उनको हो कर शादमाँ। खैरियत पूछी गुरु ने राम ने उनसे कहा, आपकी किरपा से हम हरदम रहे हैं शादमाँ। दूसरे आये ब्राह्मण जो थे उनसे भी मिले, राम के चूमे चरण फिर भरत मिसले खादिमाँ। राम ने उनको उठाया जब ज़मीं पर यह गिरे, और गले अपने लगाया हो के बेहद मेहरबाँ। आँख से आँसू थे जारी रोयें-रोयें थे खड़े, आ गई चेहरे पे रौनक और दिल था शादमाँ। किस मुहब्बत से मिले दोनों यह कह सकता नहीं, इसकी कुछ तफ़सील दी जाए यह मुमकिन है कहाँ। खैरियत और आफ़ियत यह पूछते है भरत से, भरत के मुँह से न निकले बोल यों थे शादमाँ।

भरत को कितनी खुशी थी कोई कह सकता नहीं, जानता है यह वही जो देख पाया है समा। भरत ने आखिर संभल कर भाई से अपने कहा, आपके दर्शन से मेरी आ गई है जी में जी। शम की दरिया में मैं डूबा जा रहा था बेतरह, आपने मुझको बचाया ऐ उमिदे बेकसा। भरत से लक्ष्मण मिले और शत्रुघ्न से राम जी, शत्रुघ्न से फिर मिले लक्ष्मण जी बेहद शादमा। भरत ले कर शत्रुघ्न को तब गये सीता के पास, पौर उनके चूम कर खुद को किया इज्जत निशा। राम के आने से सबके दिल हुए थे बाग-बाग, हो गये शाद और खुरम सब अवध के साकिना। लोग जो आये थे सब बेकल थे मिलने के लिए, राम जो सबसे मिले जो लोग आये थे वहाँ। राम को यों देख कर सब लोग शादा हो गये, मर्दोजन मुलके अवध के पीर और तिपलो जवा। एक करिश्मा-सा किया वह इस कदर जल्दी मिले, और फिर आगे बढ़े जिस जा खड़ी थी उनकी मा। गाय जैसे दौड़ती नौजाद बछड़ा देख कर, ऐसे ही दौड़ी चली आती थी हर एक उनकी मा। छोड़ कर बछड़े को घर पर गाय चरने को जो जाय, वापसी में दौड़ कर कैसे वह आती है मका। राम हर मा से मिले और उनको खुरम कर दिया, दूर कुल्फत हो गई और हो गयीं सब शादमा। फिर सुमित्रा अपने लड़के लक्ष्मण से भी मिलीं, राम से रख कर अक्रोदत जो हुए थे कामरा। कैकई के दिल में कुछ होता था मिलने में लिहाज, लक्ष्मण मिल कर मिटाये उनके सब शक्कोगुमा। जानकी भी अपने सासों से मिलीं फिर दौड़ कर, और दुआ दी उनको सबने हो के वो सब हमजबा। थाल में सोने की रख कर आरती भी की गयी, फरते इशरत से थे मा की आँख से आँसू रवा। और निछावर कर रही थी उनपे हर मा वार, मूखतलिफ अक्साम की चीजें वो वारी बेगुमा। सोचीं कौशल्या के बच्चे दोनों हैं नाजूक बदन, राक्षस थे सब बहादुर और सब थे पहलवा। किस तरह बच्चों ने मारा वह बहादुर राक्षस, और रावण भी मरा लंका का जो था हुक्मरा। लक्ष्मण सीता के हमराह राम को जब देख ली, हो गई मसरर बेहद हो गई वो शादमा। तब बिभीषण और सुग्रीव नील नल और जामवन्त, अंगद और हनुमान जो थे सर गिरोहे वानरा। अपना सब मलबूस बदले भरत से जा कर मिले, और अयोध्या वासियों के भी थे ये सब मदहूका। राम ने उनको गुरु जी से मिलाया अपने फिर, और कहा इनकी बदौलत मैं हुआ नुसरतनिशा। और गुरु जी से मुखातिब हो के यों कहने लगे, ये हैं सब मेरे सखा और मुझ पे है सब मेहरबा। जंग के मैदान में ये सब मेरे साथी रहे, वास्ते मेरे उठायी इन्होंने दुश्वारिया। भरत से भी मैं ज्यादा इनको रखता हूँ अजीज, सुनके ऐसी बात हमराही हुए सब शादमा। फिर ये कौशल्या से भी जा कर अदब से सब मिले, और दुआ रानी ने दो हो कर निहायत शादमा। तब वहाँ से राम अपने कसर को राही हुए, चारोंतरफ से लोग उन पर हो रहे थे गुलफशा। सीढ़ियों पर, छत पे चढ़ कर देखती थीं औरतें, उनके घर पहले जो सीता राम होते थे रवा। तोरण बाँधी गयीं, घर पर कलश रखे गये, खैर मक़दम की हर एक घर पर हुई तैयारिया। रास्ते सब साफ़ थे गलियाँ सजायी थी गयीं, और डंके भी बजे, बजने लगीं शहनाइया। औरतें गाती हुई थालों में ले कर आरती, गा रही थीं फरते मोहब्बत से मुबारकवादिया। जिस तरफ गुजरे थे, होती जा रही थी आरती, वक्त का मंजर मैं खीचूँ इसमें कासिर है जबा। राम की फुर्कत में जो दिल हो गये थे सब उदास, फिर शिगुप्ता हो गये दिल, वो जो फिर आये यहाँ। शहर के सब लोग दर्शन से हुए यों मुस्तफ़ीद, और महल में राम पहुँचे अपने बासद इज्जोशा। राम ने सोचा कैकई मा है शर्मिदा बहुत, सबसे पहले वो गये खुद कैकई जी के यहाँ।

उनको समझा कर बुझा कर सब खिजालत दूर की, बाद इसके फिर हुए वो क्रसर को अपने रवाँ।
वे महल में जब हुए दाखिल, हुए सब लोग खुश, ब्राह्मण जिसने थे बुलवाये वशिष्ठे नुकता दौ।
और कहा है आजदिन अच्छा घड़ी भी नेक है, और सारे पंडितो ज्ञानी इकट्ठे हैं यहाँ।
सोच कर मुझको इजाजत दीजिए इस बात की, राम को मुल्के अवध का आज करदें हुक्मराँ।
यह गुरु की बात सुन कर लोग सब खुश हो गये, ताजपोशी राम की करने में सब थे हमजबाँ।
देर अब होने न पाये लोग सब कहने लगे, आये बुलनाने से उस जा तब मुमंते नुकतादौ।
की हिदायत जो गुरु ने सब वो तैयारी हुई, धूम से होने लगी हर बात की तैयारियाँ।
शहर सजने लग गया हरसू निहायत शौक से देवता भी चौ तरफ से हो रहे थे गुलफ़र्शा।
राम अपने सेवकों को तब बुला कर यों कहा, मेरे जो अहबाब हमराह आज आये हैं यहाँ।
उनको तुम स्नान करवाओ ये पहला काम है, सुनते ही अहकाम दीड़े, जिस कदर थे खादिमाँ।
हो गये स्नान से फ़ारिग जो ये अहबाब सब, सब को फिर याद फ़रमाया गया अपने यहाँ।
जो ज़टा बाँधी थी सर में राम ने खोली उसे, तीनों भाई की हुई हम्माम की तैयारियाँ।
राम ने अपनी जटा खोली फिर अपने हाथ से, खुद इजाजत ली, हुए स्नान करने को रवाँ।
जेवरो दोशाल शाहना हुए जब जेबे तन, शेष भी कासिर थे, खूबी उसकी करने से बयाँ।
जानकी जी को भी सासों ने कराया गुस्ल तब, जेवरो पोशाक पहनी जो कि थे शायानेशाँ।
बाई जानिब जानकी जी भी बरामद हो गई, राम जब आ कर सभा में हो गये जलबाकुनाँ।
ब्रह्मा और शिव और ऋषी सब थे विमानों पर चढ़े, देखते जाते थे वो इस ताजपोशी का समौ।
तस्त भंगवाया गुरु ने जो निहायत खूब था, जिसकी खूबी हो नहीं सकती है रावी से बयाँ।
ब्राह्मण से पूछ कर उस पर बरामद हो गये जानकी जी उनके बाजू हो गयीं जलबाकुनाँ।
देख कर जोड़ा वे दोनों का हुए सब लोग खुश, जय का नारा गूँज उट्ठा अज जमीं ता आसमाँ।
सब से पहले गुरु वशिष्ठ इनको दिये टीका लगा, बाद औरों ने लगाया जो ब्राह्मण थे वहाँ।
राज सिंहासन पे बैठे, देख कर फ़रजन्द के, शाद होती जा रही थी राम की हर एक माँ।
जो ब्राह्मण थे उन्हें वो दान देने लग गयीं, और सब मुद्दाम भी इनाम पाये बेकराँ।
और नक्कारे खुशी के सब बजाने लग गये, देवताओं ने जो देखा ताजपोशी का समौ।
आसमाँ पर भी तभी गन्धर्व गाने लग गये, नाचने सब लग गये हो कर वो शादो शादमाँ।
भरत लक्ष्मण शत्रुहन तीनों खड़े पीछे रहे, छत्र, पंखा और चबंत्र हाथों में ले कर बेगुमाँ।
अंगदो हनुमान विभीषण और सुग्रीव सामने, ढाल और तलवार शक्ति हाथ में धी बरछियाँ।
राम के चेहरे पे कितना था तजल्ला क्या कहूँ, ज़दं था पीतांबर जेबे तने आली निशाँ।
ताज सर पर और बाजू बन्द बाजू पर बँधे, और भी जेवर थे पहने जो कि थे जेबेशाँ।
आँख जिनकी थी कमल-सी, सीना चौड़ा जिनका था, जिनके बाजू ऊँचे ऊँचे शानशौकत का निशाँ।
अपने-अपने घर को जब देवता वापस गये, चार भाट आये उसी दम, जो मुजलिम्म वेदवाँ।
बस्तबस्ता यों मुबद्दिब हो के कहने लग गये, आपके औतार से सब हो गये हैं शादमाँ।
आपने रावण को मारा, एक बड़ा पापी जो था, और भी मारे गये जो थे निशाचर पहलवाँ।
लोग जो तकलीफ़ में थे उनकी कुलफ़त दूर की, आपके सेवक हैं हम, हैं आप दिल से क़दरदाँ।
देवता और राक्षस इनसान व दीगर जानवर, हैं फँसे जंजाल में आवा गमन के बेगुमाँ।
शादमाँ होता है वह छुटता है इस जंजाल से, आप अपने लुत्फ़ से हो जायें जिस पर मेहरबाँ।

आपकी चरमे करम हम पर भी हो जाये हुआ, आप से है इत्तेजा कीजे हमें भी कामरौ।
 ज्ञान से वाक्रिफ न हो और आप से शाफिल रहे, वह कभी रहता नहीं जीवन में चादो शादमा।
 छोड़ कर सब का भरोसा आप का तकिया करें, नाम ले कर आप का, होते हैं वो नुसरतनिशी।
 आपके चरणों में रखते ध्यान हैं हम सब मुदाम, जिसकी बरकत से अहिल्या पा गयीं थी फिर से जा।
 ब्रह्मा और शंकर भी जिसकी रात दिन हैं पूजते, और गंगा जी भी जिनकी बरकतों से ही रवा।
 मन, वचन और करम से हम आपको भजते रहें आपके जुज और कोई भी नहीं हो दिल में निहा।
 मानते जो लोग हैं ब्रह्मा को वह माना करें, लेकिन हम तो आप ही की याद करते हैं यहाँ।
 इस तरह कहते हुए वो लोग गायब हो गये, आये थे जिस जाय से वो हो गये वापस रवा।
 तब वहाँ शिव जी भी आये अर्ज यों करने लगे, मौत के डर से छुड़ा दें, आप शाहा मेरी जा।
 देवताओं के हो मुखिया और अवध के बादशाह, हे रमापति आप सुन लें, मेरी यह अर्जबया।
 वह था दस सिर का जो रावण आपने मारा उसे, अब न दुनियाँ में रहा बाकी है कुलफत का निशा।
 राक्षस जितने थे सब बन कर पतंगे जल गये, आपके जब बाण की आतिश हुई शोलाफशा।
 तीर और तरकस लिये जो हाथ में अपने हैं आप, आप जेवर है जहाँ के वास्ते एक बेकरा।
 लालच और उलफत की तारीफ मिटा देते हैं आप, आप मूर्ज की किरण बनते हैं और बरकतया।
 दाँव में शहवत के फँस जाते हैं इनसान सब, कीजिए उनकी हिफाजत ऐ मेरे शाहे गहाँ।
 लोग बीमारी में रहते हैं हज्जारो मुब्तिला, आपकी जो याद से रहते हैं भटके हर जमा।
 आपके चरणों में जिनका ध्यान रहता है नहीं, उनकी होती है जमाने में बहुत रसवाइया।
 आपका जिनको भरोसा है, वही रहते हैं खुश, संत और भगवान के रहते हैं हर दम मदहलवा।
 है न वो कमजोर, उनमें है न लालच और घमंड, चैन और तकलीफ है उनको बराबर बेगुमा।
 है यही कारण मुनी भी छोड़ देते योग को, आपकी सेवा में लग जाते हैं वो बाकलबो जा।
 सिदक़े दिल से आपकी करते हैं वह पूजा मुदाम इज्जत और जिल्लत का उनको कुछ नहीं रहता गुमा।
 आपकी मैं याद करता हूँ हमेशा राम जी, आप ही का नाम रहता है मेरे विरदे जवा।
 आप मगजन हैं गुणों के और पयबाँ लुफ़ के, आप लक्ष्मी के पति हैं, आप पर क़ुर्बान जा।
 आप पालन हार हैं दुनिया के ऐ आकाय मन्द, अहले दुनिया पर इनायत की नज़र हो जावेदा।
 मेरी यह ख्वाहिश है भवित आपकी मूझ में रहे, इस तम्मनाये दिली को कीजिएगा कामरौ।
 दस्त बस्ता स्तुती शिवजी ने अपनी खरम की, और फिर वह हो गये कैलाश को वापस रवा।
 मेहमानों के ठहरने का हुआ तब इन्तजाम, राम के हमराह जो आये हुए थे वानरौ।
 जो कोई सुनता कथा को है ये दिल और जान से, वो रहा करता है खुरम और हर दम शादमा।
 जो कोई गाता है इसको जिन्दगी भर शाद हो, और मर कर भी वह पाता है हयाते जावेदा।
 याद में भगवान की रहता है जिसका दिल लगा, ऐश और आराम होता है मयस्सर बेगुमा।
 खौफ और दुखदद इससे दूर होता है जरूर, पाप की दरिया में कस्ती है विला शक्कोगुमा।
 ब्राह्मण सब दान पाये, सीमोजर पाये फ़कीर, दाद और बरूशीश कितनी, कर नहीं सकता बया।
 जिस क्रदर मेहमान थे वो सब रहे आराम से, हर तरह वह शाद थे और हर तरह वो शादमा।
 छह महीने वह गुजारे इस क्रदर आराम से, याद उनको कुछ अजीज आये न कुछ अपना मका।
 जैसे संतों के दिलों में, दुस्मनी पैदा न हो, ख़वाब में भी उनको घर की याद आती थी कहा।
 एक दिन जब राम ने सब दोस्तों की याद की, हाज़िरे दरबारे आली हो गये सब मुखलिसा।

पास अपने सबको बिठलाया कहा यों प्यार से, आपको जहमत हुई मेरे लिए ऐ मेहरबाँ। आपकी तारीफ़ मुँह पर मैं कल्लूँ बेकार है, छोड़ कर घर बार सब आ कर रहे मेरे यहाँ। ये हुकूमत और असासा छोटे भाई जानकी, दीलत और घरबार अपना और अहले खानदाँ। सबसे मुझको है मुहब्बत, झूठ मैं कहता नहीं, उनसे बढ़ कर तुम से है मुझको मुहब्बत बेगुमाँ। सेवकों पर सब ही रखते हैं इनायत की नज़र, मैं तो खादिम पर रहा करता हूँ हरदम मेहरबाँ। दोस्तो, अब अपने-अपने घर को वापस जायें आप, याद मेरी अपने-अपने दिल के रखिये दमियाँ। ऐसी बातें सुनके वो सब हो गये पस्तो उदास, जानते थे कुछ न थे, हम कौन हैं अब हैं कहाँ। हाथ जोड़े वो खड़े थे और सब खामोश थे, प्रेम के मारे कहीं कुछ खुल न सकती थी जब। राम ने उनको नसीहत की हज़ारों तौर से, वो कहे कुछ राम को, यह उनमें जुरंत थी कहाँ। राम ने मँगवाये पोशाक और ज़ेवर भी वहाँ, हुकम की तामील की खुदाम ने फ़ौरन वहाँ। सबसे पहले भरत ने सुग्रीव को पहनाया सब, फिर विभीषण को पिन्हाया लक्ष्मण ने बेगुमाँ। अंगद बैठे ही रहे कहते न थे खामोश थे, देख कर उनकी अक़ीदत राम की चुप थी जब। जामवाँ को नील नल को राम ने पहनाया खुद, होके ममनूँ सब हुए तैयार होने को रवाँ। तब उठे अंगद जगह से आँख नम उनकी हुई, हाथ जोड़े राम जी से यों किये अज़बयाँ। ऐ मेरे आक्रा, मेरे मालिक, मेरे फ़रियादरस, हो शरीबों के मआवन और उनके क़दरदाँ। बाप मरते वक़्त मुझको आपको था दे दिया, आप ही का है भरोसा मुझको बे शक़ोगुमाँ। अपने चरणों से न कीजे दूर मुझको ऐ हुज़ूर, छोड़ कर मैं आपके चरणों को अब जाऊँ कहाँ। मेरे घर में मेरी अब क्या है ज़रूरत सोचिए, मैं हूँ नादाँ और बच्चा, मुझको रख लीजे यहाँ। घर में रह कर आपके अपना कल्लूँगा काम सब, आपकी खिदमत में रह कर मैं रहूँगा शादमाँ। राम के पैरों पर गिर कर इस तरह कहने लगे, अब न ये फ़रमाइएगा मुझसे तू भी हो रवाँ। रामने उनको उठया और खुद लिपटा लिया, उनकी आँखों से हुए आँसू मुहब्बत के रवाँ। हार जो पहने हुए थे वो उतारे राम ने, और अंगद के गले में ढाला हो कर शादमाँ। हर तरह तफ़हीम उनकी राम ने की बार-बार, उनको समझा कर मना कर, कर दिया वापस रवाँ। छोड़ने को शत्रुह्न और भरत और लक्ष्मण गये, हुकम की तामील में अंगद हुए आखिर रवाँ। देखते जाते थे वो हर दम पलट कर बार-बार, था यही दिलमें कि रुक जाऊँ तो बेहतर है यहाँ। राम के इखलाक़ की जो याद आती थी उन्हें, हुकम की तामील करके हो रहे थे शादमाँ। करके वापस वानरों को भरत जब वापस हुए, तब किया हनुमान ने सुग्रीव से अज़बयाँ। और कहा मुझको इजाजत हो अगर सरकार की, राम की खिदमत भी कर लूँ, रहे के मैं कुछ दिन यहाँ। यों कहा सुग्रीव ने, हनुमान तुम हो खुशनसीब, राम ने खिदमत में अपनी तुम को जो रक्खा यहाँ। जाओ तुम हरदम खुशी से राम की खिदमत करो, इस क़दर कह कर वो सब वानर हुए घर को रवाँ। यों कहा हनुमान से अंगद ने मेरी भी सुनो, राम को प्रणाम मेरा अज़ करना मेहरबाँ। ज़िक्र मेरा राम से हर वक़्त तुम करते रहो, याद ता मेरी रहे हर वक़्त दिलके दमियाँ। जब वो सब रखसत हुए, हनुमान वापस आ गये, राम से सब हाल वो करने लगे आ कर बयाँ। जो निषादों का था राजा उसको बुलवाया गया, सफ़राज़ी भी हुई, वह हो गया इज्जत निशाँ। और कहा अब जाओ घर को भूलना मुझको नहीं, धर्म के पाबन्द रहना तुम हमेशा मेहरबाँ। भरत के मानिन्द हो तुम भाई हो मेरे अज़ीज़, आने जाने का रखो जारी तरीक़ा तुम यहाँ।

की क्रमबोसी अदा, और घर को वापस हो गया, राम के अस्ताक का करने लगा आ कर बर्षा। राम के इखलाक से सब लोग थे मसरुशोश, मदह्रुवानी कर रहे थे सब अवध के साकिनी। राम की इस हुक्मरानी में रियाया शाद थी, कुलफते सब मिट गई, और लोग थे सब शादमा। बुरज और कीर्ना अदावत दिल से सबके मिट गये, रोग और दुःख दर्द का बाकी न था नामोनिशा। धर्म के पाबन्द थे सब अपनी-अपनी तज पर, कोई जिस्मानी वो रूहानी न थी दुस्वारिया। रखता था हर शरुस आपस में मुहब्बत का लिहाज, धर्म के चारों चरण पेशेनजर थे बेगुमा। ख्वाब में भी पाप के आसार मिलना था मुहाल, जागने में वह किसी सूरत नजर आते कहा। राम की भक्ति में थे मशगूल जुम्ला मर्दोजन, कमसिनी में उनके मरने का न था नामोनिशा। लोग सब आराम से थे कोई बीमारी न थी, कोई मुकलिस भी नहीं था, और न कोई नातवा। जहालत भी थी नहीं और नेक सब अतवार थे, फ़ैजरास फ़ैयाज सब थे, और मुहिदे बेकसा। मर्दोजन चालाक थे होशियार थे धर्मिमा, खुद भी लायक थे ये सब, और पंडितों के कदरदा। दूसरों के काम के रहते थे सब एहसानमन्द, रश्क और लालच बुराई थी न दिल के दर्मिया। काल का कोई न डर था, और न कोई खौफ था, उस तरह मुल्के अवध पर राम जी थे हुक्मरा। राम की लीला से वाकिफ कोई हो सकता नहीं, और जो है जानता, वह है हमेशा शादमा। किस तरह आरामदेह था हर किसी को राम राज्य, शेष से भी यह नहीं मुमकिन करें इसका बर्षा। एक बीबी के सिवा औरत न रखता था कोई, और कुर्बी मर्द पर करती थीं औरत जिस्म जा। चोर और डाकू न था, कोई न किसको था अदू, एक से था दूसरा खुश, राम जब थे हुक्मरा। फूल फल फलते थे बागों में थी शादाबी बहुत, शेर और हाथी फिरा करते थे बन कर मुखलिसा। एक तबके को न था कुछ दूसरे से कोई रंज, होके वो बेखौफ जंगल में थे फिरते शादमा। और परिन्दे भी खुशी से चहचहाते थे सदा, मीठी-मीठी बोलते जाते थे अपनी बोलिया। धीमी-धीमी, ठंडी-ठंडी चलती रहती थी हवा, पी के रस थी गूँजती भौरों की हरसू टोलिया। बेलें फलती थी, शजर देते थे सब अच्छे समर, फ़सल भी होती थी अच्छी, दूध देती गाइया। पर्वतों में खान थीं, ज़र और जवाहर से भरी, मीठे पानी की बहा करती थी सारी नहिया। और पाबन्दी में रहते थे सदा सारे बहर, फेंकते ला कर किनारे पर थे सीप और मोतिया। चाँद और सूरज की थी गर्मी और सर्दी मोतदिल, ता किसी इन्सान को होने न पावे कुछ जिया। और बारिश भी थी होती जब ज़रूरत उसकी हो, जिस कदर मतलूब हो जिससे न हो कोई जिया। राम ने अश्वमेध यज्ञ भी किये थे बाराहा, बाह्यण भी दान पाये थे हमेशा बेगुमा। धर्म के पाबन्द थे राम, और मर्यादा पुरुष, नेक सब औसाफ थे, और हर तरह की खूबिया। और सीता भी रहा करती थीं शौहर की मुनी, रात दिन करती थीं खिदमत उनकी बेशकोगुमा। आप खुद करती थीं खिदमत अपने शौहर की मुदाम, गो कई खुदाम भी हाजिर थे खिदमत पर वहा। काम करती वह न थीं शौहर के मंशा के खिलाफ, हुक्म की तामील में रखती थी हाजिर हर जवा। अपनी सासों की भी खिदमत जानती थीं फ़र्जे ऐन, रानी कौशल्या ही हो या और दीगर रानिया। देवता चश्मे करम पर जिनके रखते हैं नजर, यह वही सीता है, इनकी क्या कहें हम खूबिया। हुक्म के ताबे थे रहते भाई तीनों राम के, राम की खिदमत में रहते मुस्ताइद थे हर जवा। और हमेशा राम के अहकाम के थे मुन्तिज़िर, ता बजा लाए वो खिदमत इनकी बादिल और जा। राम की भी इनपे रहती थी इनायत की नजर, इनको बतलाते थे सीधी राह की सब खूबिया।

शहर के भी लोग सब बेफ़िक्र थे हर तरह से, दर्द, दुःख, तकलीफ़ उनकी थी नसीबे हुक़्मरों। वह हुआ करते थे हरदम राम का साया रहे, ज़िन्दगी अपनी गुज़ारें रह के हरदम शादमाँ। लौबकुश सीता के दो नूरे नज़र पैदा हुए, वेद और पुराण में है जिनका तफ़्सीली बयान। ख़ूब सूरत थे ये दोनों और निहायत ख़ुश नसीब, था कमाल इनको गुणों में, और दोनों पहलवाँ। और तीनों भाइयों को भी, हुए दो-दो पिसर, जिनके चेहरों से टपकते थे अमारत के निशाँ। इस तरह दुनिया की लीला कर रहे थे रामचन्द्र, जिनकी भाषा और गुण कुछ कर नहीं सकता बयान। ब्राह्मण के साथ सरजू में नहाते थे सुबह, और होते रोज़ थे दरबार में जलवा कुनाँ। जमा होते थे वहाँ दरबार में जब लोग सब, गुरु वशिष्ठ कहते कथाएँ, और पुराणों का बयान। भाइयों को साथ ले कर रोज़ खाते थे राम, तोर उनके देख कर होती थी ख़ुश हर एक माँ। शत्रुह्न और भरत जाते गुलशनों में जब कभी, अपने वह हमराह ले जाते थे हनुमान को वहाँ। दोनों भाई पूछते थे राम जी का हाल जब, तब किया करते थे हनुमान, अपने मुँह से सब बयान। सुनके उनकी ख़ूबियाँ होते थे दोनों शादकाम, हर दफ़ा वो पूछते जाते थे हो कर शादमाँ। सब घरों में राम का चर्चा था और होती कथा, ऐश और आराम में रहता था हर कस शादमाँ। जिस जगह के रामचन्द्र जी हों खुद राजा बने, उस अवध की कर ही क्या सकते हैं हम ख़ूबी बयान। नारद और सनकादिक आते थे अवध को बार-बार, देख कर शाने हुकूमत कुफ़ रहता था कहाँ। शहर में हर सिम्त रंगारंग थी दिलचस्पियाँ, और मकानों में बनी थी सीमोज़र की सीढ़ियाँ। और जो सड़कें बनी थीं, साफ़ थीं मिसले सदक़, दग़ हो जाते मुनी थे देख कर ये ख़ूबियाँ। कसरे शाही में जड़े थे सब जवाहिर सीमों ज़र, और मकानों की बुलन्दी का करें क्योंकर बयान। और दरीचे भी निहायत ख़ूबसूरत थे बने, जिसमें जलते ख़ूबसूरत सीमोज़र के शमादाँ। ज़र जवाहर के थे हर जगह आला सुतन, और थी दीवार सोने की महल के दमियाँ। ख़ूब सूरत थे महल सब, और कुशादा थे चमन, संगमरमर का हुआ था फ़र्श जिसके दमियाँ। और दरवाज़े जड़ाऊ काम के हीरे जड़े, नीज़ तस्वीरों में भी हर जा अयाँ थी ख़ूबियाँ। सब घरों में बाग़ बागीचे थे फूलों से लदे, जो कि ख़ूशबू से महकते थे और थे अम्बर फ़शाँ। दिलफ़ज़ा आवाज़ में भरी भी करते थे गुज़ार, और हवा आराम में हर सिम्त रहती थी रवाँ। मुख्तलिफ़ अक़साम के थे पालते बच्चे परिन्दे, ख़ूब थे उड़ने में जो, और बोलते थे बोलियाँ। तोता और मैना को बच्चे सब सिखाते थे यही, राम रघुनायक रघूपति जिनके था विरदे ज़बाँ। कसरे शाही का जो दरवाज़ा था आलीशान था, हो गली बाज़ार चौराहे की रीनक़ क्या बयान। और बाज़ारों में रहता माल था इफ़राद से, बैठते बनिये थे और सर्राफ़ लाखों थे जहाँ। हो गया था माल दौलत से हर एक मिसले कुबेर, ढूँढ़ने से भी नहीं मिलता था मुफ़लिस का निशाँ। मर्दौज़न सब नेक ख़ू थे और सब आराम से, नेक थे अतवार सबके, पीर हो या हो ज़बाँ। शहर के उत्तर तरफ़ बहती थी जो सरजू नदी, साफ़ पानी जिसका था धारें बनी जिस पर वहाँ। और किनारों पर नज़र आता न था दलदल कहीं, थे जुदा वो घाट जाते जानवर पीने जहाँ। और ज़नानी घाट पानी के लिए थे जा बजा, मर्द जाते थे न हरगिज़, गुसल करने को वहाँ। ख़ूब सूरत और आलीशान थे सब राजघाट, और किनारे आबे सरजू थे कई मन्दिर वहाँ। और कई रहते थे ज्ञानी और सन्यासी मुनी, साड़ तुलसी के भी मुनियों ने लगाये थे जहाँ। अन्दरूने शहर की तारीफ़ हो सकती नहीं, शहर के बेरून के रीनक़ थी हर दम हर ज़माँ।

देख ले शहरे अयोध्या पाप बिलकुल दूर हो, बावली तालाब बागीचे थे कसरत से जहाँ। बावली तालाब कुओं का भी पानी साफ था, बावली कुओं में जाने को बनी थीं सीढ़ियाँ। खूबसूरत थे कमल खिलते जहाँ तालाब में, गूँजते भौंरे, परिंदे चहचहाते थे जहाँ। बाग बागीचों में कोयल कूकती थी इस तरह, राहगीरों को बुलाती, ऐसा होता था गुमाँ। मालो दीलत की रूमी उस जाय कैसे हो सके, लक्ष्मी के खुद पती हों राम जिस जा हुक्मराँ। लोग होते थे फरागत जब कहीं वो बैठ कर, राम ही का जिक्र करते और उन्हीं की खूबियाँ। याद दिल में राम की ताजा रहे, कहते थे सब, उनकी हर-हर खूबियों का होता जाता था बयान। राम के औसाफ की तारीफ होती हर जगह, राम भी अपनी रियाया पर थे हरदम मेहरबाँ। राम के इकबाल का रोशन हुआ जब से चिराग, अब अँधेरा ही जमाने में रहा बाक़ी कहाँ। जहालत भी मिट गई और पाप भी बाक़ी नहीं, शहवत और गुस्से का भी बाक़ी नहीं नामोनिशाँ। धर्म के तालाब में है ज्ञान के फूले कमल, सन्न और आराम के चकवे रहा करते वहाँ। राम के परताप का सूरज है जिस दिल में उगा, चल बसी दिल से बुराई, आ गयी सब नेकियाँ। सैरे गुलशन को गये एक रोज़ जब रघुनाथ जी, साथ में हनुमान जी भी थे और थे सब भाइयाँ। झाड़ू पत्तों फूलफल से बाग वह शादाब था, देख कर मोक़ा मूनासिब आये सनकादिक वहाँ। देखने में तो नज़र आते थे गो कम उम्र वो, थे बड़े ज्ञानी, थी रौनक उनके चेहरे से अयाँ। चार सनकादिक मुनी थे या कि थे ये चार वेद, इनके गुण और शक्ति हो सकते नहीं हरगिज़ बयान। राम ने उनको जो देखा पेशवाई उनकी की, और बिठलाया उन्हें अच्छी जगह थी जो वहाँ। आप जो ओढ़े हुए पीताम्बर थे राम जी, फ़र्श उसका कर दिया सहने चमन के दमियाँ। तीनों भाई भी मिले हनुमान भी उनसे मिले, दिल के उनसे हो गये सब लोग बेहद शादमाँ। राम की सूरत जो देखी हो गये वो मस्त सब, टिकटिकी बाँबे हुए वो देखते थे बेगुमाँ। राम जी उनको बिठा कर इस तरह कहने लगे, आपके दर्शन से मेरे पाप बाक़ी हैं कहाँ! मैं हूँ खुशकिस्मत कि दर्शन हो गये मुझको नसोब, सोहबते देवषि हासिल हो भी सकती है कहाँ। संत की संगत से मिल जाती है दुनिया में नजात, और कामी की है संगत बाअसे बरबादियाँ। वेद का है यह मक़ूला और पुराणों में लिखा, पंडितों का क्रोल है और शायरों का है बयान। राम का सुन कर यह कहना शाद थे चारों मुनी, दस्तबस्ता इस तरह करने लगे अर्जें बयान। आप निगुण रूप हो और आप की जै है सदा, सब गुणों के घाम भी हो और सबके निगहबाँ। आप हो बेमिसाल प्रभु जी और सुख की खान हो, हिमों लालच से परे और भक्त के हो क़दरदाँ। जहालत को मिटा करके ज्ञान दे देते हैं आप, मुखतलिफ़ हैं नाम फिर भी, कुछ नहीं शानोगुमाँ। आप हर छोटे बड़े में, आपका हरजा वजूद, आप ही रहते है हर एक रूपो दिल के दमियाँ। ज़िन्दगी और मौत के जंजाल से दीजे नजात, दूर कर दीजे बुराई जो कि है सबमें निहाँ। चैन और आराम सबको बरुशने वाले हैं आप, आपकी भक्ति हमारे दिल में कर दीजें निहाँ। है हमारी आरजू यह इसको पूरी कीजिए, दीजिए वरदान हमको ताकि हम हों कामराँ। दिल में जो कुछ दुःख हों उनको दूर कर दीजें हुजूर, स्वाहिशाते नफ़सो खतरे हों न दिल के दमियाँ। मानसरवर दिल है मुनियों का और उसमें आप हँस, आप के चरणों को भजते शिव व ब्रह्मा हर ज़वाँ। काल कर्म और गुण के रक्षक आप हो रघुनाथ जी, आप रघुकुल के हो केतू वेद के हो निगहबाँ। इस्तेजा करके वो ऐसी, सर झुका कर बार-बार, हुए सनकादिक मुनी ब्रह्म लोक को वापस रवाँ।

जब गये वापस मुनी भाई थे सब बैठे हुए, राम से पूछे ये कुछ हिम्मत यह उनमें थी कहाँ। देखते जाते थे सब हनुमान के मुँह की तरफ, और सब यह चाहते थे. राम हो गौहर फर्शा। राम ने हनुमान से पूछा कहाँ क्या बात है, दस्तबस्ता यों किया हनुमान ने अर्जें बर्खा। आप से कुछ पूछने की भरत की है आरजू, है अदब माने, इसी से बन्द है इनकी जबाँ। यों मिला उनको जवाब हनुमान तुम वाक्कि ही हो, कुछ नहीं है फर्क मेरे और उनके दमियाँ। तब क्रदमबोस हो के उनके भरत यों कहने लगे, आप की चश्मे करम पर कुछ नहीं शक्कोगुमाँ। मैं हूँ सेवक आपका और आप मालिक हैं मेरे, बात एक मैं पूछता हूँ कीजिए मुझ से बर्खा। वेद और पुराण में संतों को भाया जिक्र है, आप ने भी बारहा तीसीफ उनकी की बर्खा। आपकी उन पर इनायत की नजर भी है मुदाम, इसलिए मैं उनकी सुनना चाहता हूँ खूबियाँ। संत की तारीफ क्या है और कोन है गैर संत, कीजिए मुझसे सहायत से ये दोनों का बर्खा। राम बोले, भाई संतों के हज्जारों वसफ हैं, वेद और पुराण भी संतों के हैं मदहत कुन। संत की तफसील पूछो या मिसाले गैरसंत, जैसे सन्दल और कुल्हाड़ी के है निस्बत दमियाँ। काटती छो है कुल्हाड़ी चोबे सन्दल को जरूर, काम इसका काटना है लकड़ियों को बेगुमाँ। उसके बदले में मूअत्तर करता है सन्दल उमे, इस तरह जाहिर वो कर देता है अपनी खूबियाँ। देवताओं के भी सर पर पा लिया इसने मुकाम, घन से वह पीटी गई और आग है उसका मकाँ। संत को स्वाहिश नहीं होती है कोई बात की, वह गुणों का है खजाना और गुणों का कदरदाँ। दूसरों के दर्द से तकलीफ होती है उसे, दूसरों के ऐश से होता है वह भी शादमाँ। है मुहब्बत उसको सबसे और कोई दुश्मन नहीं, हिमों नखवत खीफ गुस्सा उसमें होता ही कहाँ। रहमदिल होता है वह करता है आजिज पर दया, और भक्ति में लगा रहता है हर दम हर जमाँ। सबकी करता है वह खातिर खूद नहीं कुछ चाहता, ऐसे ही मैं संत का रहता हूँ दिल से कदरदाँ। अपनी कुछ जाती गरज उसको कभी रहती नहीं, सन्न और वैराग से रहता है हर दम शादमाँ। दोस्ती रखता है सबसे और ब्राह्मण से जरूर, जिममें यह औसाफ हों-हैं संत बेशक्कोगुमाँ। शम व दम और नेम नीति से कभी हटता नहीं, तलख वह कहना नहीं, रहता है वह शीरीदहाँ। उसपे तारीफ और शिकायत का असर होता नहीं, शाद रहता है करो तारीफ या दो गालियाँ। अब बुरों का हाल सुन लो मैं सुनाता हूँ तुम्हें, भूल कर भी साथ उसका है बहुत नुकसा रसाँ। साथदारी उसकी होती है बड़ी तकलीफदे, जैसे अच्छी गाय को सोहबत बुरी की हो गिराँ। उसके दिल में हर दफा रहती जलन है और तपस, दूसरे के चैन से आराम पाता है कहाँ। सुनके चुगली दूसरों की होता है वह शादकाम, जिस तरह होता है कोई पाके दीलत शादमाँ। हिमों शहबत गुस्साब नखवत से होते हैं भरे बुरज बेरहमी बुगई का वह होता है मकाँ। बेसबब सबसे अदावत, और भले से भी बरा, जे करे उसमे भलाई उसका यह कर दें जियाँ। झूठ उसका लेना देना झूठ उसके काम काज, उनकी शेखी सारी झूठी और झूठी है जबाँ। मोर का दिल जिस तरह होता निहायत सख्त है, देखने में वह बजाहर है बहुत शीरीदहाँ। उसकी बोली तो है मीठी जो कि सुनने में पसन्द. साँप जहरीले भी खा जाता है बेशक्कोगुमाँ। यह भी ऐसा ही है होता इसकी यह तफसील है, बोलता मुँह से है कुछ, दिल में बुराई है निहाँ। दूसरों का ऐब ढूँढ़े गैर औरत पर नजर, लालची रहता है जीवन से है रहता शादमाँ। राक्षस पैदा हुआ है, वह बशक्ले आदमी, हिंस ही उसके लिए है बाबसे आरामे जाँ।

उसका खाना मिसले हैवी, खोफे दोखल कुछ नहीं, गैर की तारीफ़ सुन कर होता है वह खस्ता जी। गैर की तकलीफ़ सुन कर इस कदर होता है खुश, जैसे दुनिया भर का अब वह हो गया हो हुकमरी। बाल बच्चे वाले जो होते हैं उनके यह खिलाफ़, शहवत और लालच व गुस्सा उसके दिल के दमियाँ। खुद तो होता ही बुरा है दूसरों को बद कहे, कुछ नहीं इज्जत गुरु वो ब्राह्मण या बाप माँ। अपनी बदनीयत से कर देता है 'गैरों' को खराब, उसको पूजा और संगत संत की भाती कहाँ। वह बुराई का है दरिया, जाहिल और ऐयाश भी, वेद की रहती बुराई है हमेशा बर जबाँ। दूसरों के माल पर रहती हमेशा है नज़र, दूसरों से बुज्जो कीना उसके दिल के दमियाँ। खास कर उसको ब्राह्मण से तो नफ़रत ही रहे, देखने में तो है अच्छा, है बदी दिल में निहाँ। नीच ऐसे लोग सतजुग में तो होते ही नहीं, और त्रैता युग में तो उनका नहीं नामोनिशाँ। वो द्वापर में हैं मुमकिन, हों कहीं थोड़े बहुत, और कलजुग में मिलेंगी टोलियों की टोलियाँ। दूसरों की जो किया करता कभी इमदाद है, धर्म कोई दूसरा ऐसा नहीं है भाई जी। गैर को तकलीफ़ देना है बड़ा दुनिया में पाप, है पुरान और वेद में लिक्खा किया तुमसे बयाँ। जिन्दगी पा कर जो देते गैर को तकलीफ़ है, जीने मरने की उन्हें पड़ती है सहनी सख्तियाँ। लोग लालच से किया करते हैं दुनिया में अज़ाब, आक्रैबत बरबाद हो जाती है उनकी बेगुमाँ। फल मिला करता है उनके काम के लायक उन्हें, और सज़ा भी उनको देता है बिना शक्कोगुमाँ। इसलिए लाजिम है सबको राम को भजते रहें, जो इसे समझे हुए हैं वो हैं बेशक नुक़तादाँ। है भलाई और बुराई सब ये माया से रची, जो भलाई को समझ ले, है वही बस नुक़तादाँ। राम के मुँह से यह सुन कर भाई सब शादाँ हुए, सर झुकाते थे अदब से, हो के बेहद शादमाँ। खास कर हनुमान के दिल में बड़ा आनन्द था, आखिरश वापस हुए रघुनाथ जी अपने मक़ाँ। इस तरह करते रहे हर रोज़ लीला वह नई, और नारद भी हमेशा आके होते मदहसवाँ। रोज़ आते थे मुनी और देखते थे हाल सब, जाके सब ब्रह्मलोक में करते थे उन सबका बयाँ। हाल सुन कर अयोध्या का ब्रह्मा भी मसरूर थे, और कहते थे कि गुण तुम राम के गाओ यहाँ। सुनते सनकादिक भी थे हालात सब रघुनाथ के, और सुन कर हाल हो जाते थे बेहद शादमाँ। ऐसे कामिल हो के वो भी छोड़ देते योग जब, राम ही का हाल सुनते और उनकी खूबियाँ। इसपे भी जो कोई इसमें दिल लगाते हैं नहीं, संग दिल हाँते हैं वो, इसमें नहीं शक़ओ गुमाँ। याद फरमाया गुरु को एक दिन रघुनाथ ने, गुरु वशिष्ठ आये महल में ले के सब हमराहियाँ। शहर के भी लोग आये और महल के लोग भी, अपने-अपने मरतबे से हो गये जलवाकुनाँ। राम बोले शहर के लोगों से कहना है मेरा, इसमें मेरा है न लालच और न मेरी इसमें शाँ। सब तबज्जो से जरा इस बात को पहले सुनें, हो मुनासिब तो अमल पँदा हो उस पर बेगुमाँ। है वही सेवक मेरा और मुझको प्यारा है वही, मानने में हुक़म मेरा जो लगा दे दिल व जाँ। और मेरी बात कोई हो तरीक़े के खिलाफ़, हो के बेखोफ़ो खतर वह रोक दे मुझको यहाँ। बुशनसीबी से मिला करता है यह इन्साँ का जिस्म, यह मुक़द्दर देवताओं को भी मिलता है कहाँ। है यही साधन का बाअस और मुक्ती की है राह, बनके इन्साँ जो न समझा फिर वह इन्साँ ही कहाँ। आक्रैबत में उसको अपना पीटना पड़ता है सर, मुखतलिफ़ अक्साम की वह झेलता है सख्तियाँ। मूल को अपनी समझता ही नहीं वह बेवकूफ़, काल कर्म और ईश्वर से होता है वह बदगुमाँ। जिस्मे इन्सानी नहीं है ऐश करने के लिए, याने जो दुनिया को समझे बाअसे आरामे जाँ।

वह तो ग्राफ़िल है बड़ा ग्राफ़लत का उसकी क्या कहें, नफ़े के बदले में हासिल होता है उसकी ज़ियाँ । स्वर्ग के आराम उसके सामने सब हीच हैं, इस जगत में ऐश का तो क्या करें हम कुछ बर्बा । खो के पारस जो कोई लेता है घुंघची हाथ में, क्या अक़लमन्द उसको कहता है कोई अहले जहाँ । जीव यह चक्कर लगाता लाख चौरासी दफ़ा, और माया से भटकता है यह हर दम हर ज़मा । ईश्वर ही की दया से जिस्मे इन्सानी मिले, शाज़ ही मिलता है यह, मिलता है यह मुमकिन कहाँ । पाप की दरिया का बेड़ा पार करने है जहाज़, और दया भगवान की वादे मुआफ़िक है यहाँ । और गुरु को समझिएगा, हैं खेदैया नाव के, जो नहीं उनको है समझा, कैसे हो वह कामरा । जिस्मे इन्सानी को पा कर जो नहीं पाता है ज्ञान, आदमी के क़तल की पाता सजा है बेगुमा । लोक और परलोक में गर चाहते हो सुख मिले, मेरी इन बातों को समझो रखो दिल के दमियाँ । मेरी भक्ति का तरीका है निहायत सूदमन्द, वेद और पुरान में भी है हुआ इसका बर्बा । ज्ञान मुश्किल शै है, हासिल उसका होना है मुहाल, झेल कर सख़्ती बड़ी पाता है कोई रम्ज़दा । फिर भी उसमें चूँकि भक्ति है नहीं, इस वास्ते, वह न मुझको है अजोब और मैं न उस पर मेहरबा । भक्ति है आज्ञाद और वह बाअसे आराम है, साथदारी संत की लाज़िम है उसको बेगुमा । संत का मिलना जभी होता है कुछ कर लो सबाब, संत की संगत से मिलती है हयाते जावेदा । और तुम गर पूछते हो, वह है क्या होता सबाब, ब्राह्मण की कीजे खिदमत, रहिए उनके कदरदा । सिदके दिल से जो करे खिदमत ब्राह्मण देव की, उससे रहते हैं मुनी और देवता सब शादमा । और भी एक बात है वह तुमसे कहता हूँ सुनों, शिव को भजने के बिना भक्ति मेरी मिलती कहाँ । और भक्ति में नहीं दुश्वारी है हायल कोई, योग, जप और बरत और तप का नहीं नामों निशा । सादगी दिल में हो और कोई न हो मकरो फ़रेब, जो मिले उस पर ही क़ाने रह के, रहना शादमा । मेरा सेवक हो के जो अग़ियार से रखे उम्मीद, क्या भरोसा उसका कीजे, है वह सेवक ही कहाँ । और ज़्यादा क्या कहूँ मैं, बात यह लम्बी न हो, मैं इसी से शाद रहता हूँ और इससे शादमा । बुराज़ और कीना किसी से वह कभी रक्खे नहीं, और तवक्को भी किसी से भी न रक्खे बेगुमा । ना किसी से दुश्मनी हो ना किसी से बुराज़ ही, ना किसी से आरजू ना हो खतर दिल में निहा । अपने कामों काज का जो चाहता बदला नहीं, जिसकी कुछ ख़्वाहिश न हो और हो न अपना मदहख़्वा जो कि पापों से हो ख़ाली और गुस्सा भी न हो, इल्म से वाकिफ़ भी हो और संत पर हो मेहरबा । ऐश और आराम जन्नत के न हों जिसको पसन्द, जाहिरी लज्जाते दुनिया उसको भाते ही कहाँ । जो कि भक्ति का हो कायल अपने मत पर हठ करे, दूसरे मत की नहीं भाती हों जिसको ख़ूबियाँ । जो है मेरा ध्यान करता और जपता मेरा नाम, ज्ञान पाता है वही, होता वही है कामरा । ज्ञान की बातें वे सुन कर लोग क़दमों पर गिरे, और कहा सबने हमारे आप ही हो बाप माँ । और मुहब्बत आप ही से हम सब करते हैं मुंदाय, जिस्मो दीलत के हमारे आप ही हो निगहबा । आपके जुब कोई हमको राह दिखलाता नहीं, इस तरह माँ बाप भी हमसे कहें मुमकिन कहाँ । दो ही हैं उपकारी जग में, एक तो खुद आप हैं, दूसरे वह हैं जो होते आप के हैं खादिमा । सब दिखावे के जहाँ में दोस्त होते हैं मगर, दोस्त हो सच्चा हकीकी, ऐसा मुमकिन है कहाँ । इस तरह जब लोग बोले राम भी खुश हो गये, फिर इज़ाजत ले के हर एक हो गया घर की रवा । शिव यह कहते हैं अवष के लोग हैं सब खुशनसीब, क्यों न हो तक्कीर वाले राम हों जब हुक्मरा । राम से मिलने को मेहमा आये थे एक दिन वशिष्ठ, राम ने खातिर बहुत की उनकी बन कर मेज़बा ।

यों कहा उनसे मुनी ने है ये मेरी इत्तेजा, आपके अतबार से है दिल मैं कुछ वहमोगुर्मा । आपकी जो मकदरत है वेद कह सकते नहीं, फिर मेरी ताकत ही क्या है जो कर्हें उसका बर्मा । लोग कहते हैं फरायज है पुरोहित के बुरे, शास्त्र और जो वेद हैं उसके लिए नफ़रत कुर्मा । सूर्यवंशी खानदा की जब पुरोहिताई मिली, मुझको नामजूर था, मैं चाहता था ही कहा । मुझको ब्रह्मा ने कहा यों तुम से कर लो कबूल, फ़ायदा ही होगा तुम को कुछ नहीं इसमें ज़िया । लेंगे बख़ुद अवतार भगवान आदमी के रूप में, सूर्यवंशी खानदा में और बनेंगे हुक्मरा । मैं इसी बाअस किया मंजूर ऐसे काम को, ताबआसनी उसे पा जाऊँ जो मिलता कहा । फिर तो इससे बढ़के कोई धर्म दुनिया में नहीं, जप व तप और नेम तीरथ में नहीं ये खूबिया । वेद और पुराण पढ़ने का यही है एक फल, आपके चरणों में अपना दिल लगा हो बेगुमा । मँले पानी से नहीं हो सकता कोई कपड़ा साफ़, और पानी को मधें तो दूध बनता है कहा । साफ़ पानी जैसा करले, अपने दिल को पहले साफ़, और फिर भक्ति में लग जाये बिला शक्कोगुर्मा । आपके चरणों में जिसका ध्यान है लायक है वह, है वही पंडित, वही ज्ञानी, वही है रम्जदा । आप से है अर्ज मेरी कीजिए इसको कबूल, हर जनम में आप के चरणों में दिल हो बेगुमा । इस क्रदर कह कर वशिष्ठ वापस रवाना हो गये, रामचन्द्र जी हुए खुश और वे थे शादमा । भाई सब हनुमान और खुदाम भी सब शाद थे, एक दिन रघुनाथ जो घर से हुए बाहर रवा । हाथी और रथ और घोड़ों को मँगाया उस जगह, जिसने जो माँगा दिया उसको बगैरे इनामा । एक दिन ठंडी हवा थी जब, गये अमराई में, भरत भी साथ उनके थे, हमराह थे सब भाइया । भरत ने पीताम्बर अपना बिछाया फ़र्श पर, और उस पर रामचन्द्र जी हुए जलवा कुर्मा । भाई सब खिदमत गुजारी के लिए मौजूद थे, और पंखा झल रहे हनुमान जी थे शादमा । क्यों न हो हनुमान की क्रिस्मत बड़ी है जोरदार, राम की खिदमत से जो हरदम रहे नुसरत निशा । राम ने तारीफ़ जिनकी की है सबसे बार-बार, उनकी खिदमत से हैं वह खुश और इनके मदहर्वा । आ गये नारद मुनी भी ले के वीणा हाथ में, और सना रघुनाथ की करने लगे मुँह से बर्मा । आपके दर्शन से रूढ़ होते हैं सब दर्दों अलम, हो दया की एक नज़र मेरी तरफ़ शाहेशर्मा । साँवला है रंग कैसी प्यारी सूरत आप की आप बसते हैं हमेशा शिव के दिल के दमिया । राक्षस की आप ने अफ़वाज का तोड़ा घमंड, और सुग्रीव को किया हर तरह खुरम शादमा । ब्राह्मण को खेत समझें गर, तो बारिश आप हैं, अपने खादिम और बेकस के मावन बेगुमा । आप ने दुनिया को तकलीफ़ों से छुटकारा दिया, खर व दूषण और विराध अब रह गये बाक़ी कहा । आप ने रावण को भी मारा है ऐ आली जनाब, राजाए दशरथ के घर हैं आप रूये खानदा । शास्त्रों, वेदों, पुराणों में सभी में जिक्र है, आप के औसाफ़ का इन सब में आया है बर्मा । देवता गाते इसे हैं और मुनी गाते इसे, और संतों के भी रहता है यही विरदे जबा । रहमदिल हो, दूर कर देते हो सब झूठा गरूर, पाक हैं औसाफ़, सब तुम में, अवध के हुक्मरा । इस तरह करके बर्मा नारद मुनी वापस गये, और गये वापस वहाँ, ब्रह्मा लोक है वाक़ी जहाँ । निव ने गिरजा से कहा, मैंने यह लासानी कथा, जिस तरह मुमकिन था मुझ से कर दिया तुम से बर्मा । सरस्वती से भी नहीं मुमकिन है, इसको कह सके, कारनामे राम के करना बर्मा, मुमकिन कहा । राम के हैं नाम लाखों और गुण हैं बेशुमार, इनके औसाफ़ हमीदा हो नहीं सकते बर्मा । क्रतरये दरिया को गिन ले रेत जंगल की गिने, राम के औसाफ़ को गिन ले, ये मुमकिन है कहा ।

ये कथा भगवान की भक्ति को देती है ज़रूर, सुनने वाले इससे हो जाते हैं शादो कामरा। वह कथा मैंने सुनाई है तुम्हें भगवान की, जो गरुड़ जी से किया था काग भुसुण्ड जी ने बर्षा। इस तरह शिव ने कही गिरजा से यह सारी कथा, और गिरजा हो गई सुन कर इसे बस शादमा। बोली शीहर से वे अपने हो गई मैं शादकाम, राम की सुन कर कथा मैं हो गई हूँ शादमा। राम की प्यारी कथा है यह, और सुनाना आप का, क्यों न ये दिल को लुभाये आप हैं शीरीं दहा। इसको सुनते ही रहें, है इस तरह जो चाहता, खत्म करते हैं इसे जो, वह मजा पाते कहां। व्हरे आलम से जिसे मंजूर हो जाना पार, वास्ते उसके कथा, किस्ती है बेशकोगुमा। यह बुरों के वास्ते भी है निहायत शाजगार, जिसको सुन कर साफ़ दिल हो और पाये नेकिया। कान रखने वाला इनसां कौन है दुनिया में वह, जो नहीं कानों से सुनता हो कथा की खबिया। राम की जिसको कथा भाती नहीं है शीक से, वह तो है नादान और है दुश्मने जां बेसुमा। आपने जो कुछ सुनाया मैंने उसको सुन लिया, और सुन कर हो गई हूँ कामगारो कामरा। सोच बस इस बात ही का दिल में मेरे रह गया, और इसी वाअस मेरे दिल में हैं कुछ शकोगुमा। काग भुसुण्ड जी थे कौवे, ज्ञान कैसे पाये वह, और कथा कैसे गरुड़ जी से उन्होंने की बर्षा। लाख इन्सानों में शायद एक ही ज्ञानी मिले, ब्रह्म में हो ज्ञान जिसका, कोई मिलता है कहां। ये कथा भगवान की कैसे उन्हें हासिल हुई, और गरुड़ ऐसे थे ज्ञानी क्यों गये उनके यहाँ। सुनके शिव जी खुश हुए बोले, कि तुम हो खुशनसीब, है कथा से प्रेम तुमको, मैं हूँ अब करता बर्षा। दक्ष की बेटी थीं तुम और तुमको कहते थे सती, हाल कुछ पिछले जनम का अपने तुम सुनलो यहाँ। बाप के घर तुम गई यज्ञ में, न कुछ खातिर हुई, आग में अपने को बस तुमने जला डाला वहाँ। उस जुबाई से तुम्हारी, मैं बहुत गमगीन था, फिरते-फिरते मैं वहाँ पहुँचा, भुसुण्ड जी थे जहाँ। एक पर्वत है सुमेर और उसमें है पीपल का झाड़, जिसके नीचे बैठ कर वे ध्यान करते हैं वहाँ। वे अमर हैं, मोत उनको है कभी आती नहीं, दिल लगा पूजा किया करते हैं हरदम और ध्या। बैठते हैं झाड़ के नीचे कथा कहने को ये, जिसको सुनने के लिए पंछी हैं सब आते वहाँ। हंस के मैं रूप में जा कर वहाँ सुनता रहा, चन्द दिन रह कर हुआ कैलाश को वापस रवा। अब गरुड़ कैसे गये उसका सुनाता हूँ मैं हाल, उनको कुछ भगवान की लीला में था शकोगुमा। अपना शक वह दूर करने जब गये ब्रह्मा के पास, उनको ब्रह्मा ने रवाना कर दिया मेरे यहाँ। मुझसे आ कर राह में जब वह मिले, मैंने कहा, तुम हरी के गुण सुनो जा कर भुसुण्ड जी के यहाँ। वे गये उनके यहाँ स्थान उनका देख कर, हो गये बेइन्तहा खुश, हो गये वे शादमा। उनको आते देख कर पक्षी जो सब थे खुश हुए, और भुसुण्ड जी ने कहा, क्यों आप आये हैं यहाँ। तब गरुड़ जी ने कहा जिस वास्ते आया था मैं, आपके दर्शन ही से सब मिट गये शकोगुमा। राम जी की अब कथा सुनने की है स्वाहिश मेरी, आप अपने मुँह से इसको कीजिए मुझसे बर्षा। काग भुसुण्ड जी हुए खुश और निहायत प्रेम से, पहले समझा कर किया मानस का सब रूपक बर्षा। मोह रावण को हुआ, रावण लिया औतार क्यों, शकले इन्सानी में क्यों भगवान हुए जलवाकुना। बाललीला और घनुष यज्ञ और विवाह फिर वन गमन, और सुनाया राजए दशरथ का मर्गे नागहाँ। भरत का इज्जत उलफ़त, उनका जाना चित्रकूट, राम की तफ़हीम से क्यों कर हुए वापस रवा। पंचवटी में शूर्पनखा की जो हुई दुर्गंत कही, किस तरह सीता को रावण ले गया अपने यहाँ। दोस्ती सुग्रीव से, बाली का मरना कह दिया, बाद बाली के हुआ सुग्रीव कैसे हुकमरा।

क्रुद कर कैसे किया हनुमान ने दरिया को पार, किस तरह पहुँचे ये सीता जी मुकन्द की जहाँ ।
 दे के सीता को निशानी किस तरह तफ़हीम की, किस तरह लंका जला डाली, किया उसका बर्बा ।
 वापस आ कर राम को सुनारा सुनाया माजरा, और विभीषण आके कैसे राम से माँगे अर्मा ।
 पुल का बनना और बाली पुत्र का जाना कहा, जंग में कैसे लड़े थे, राक्षस और वानरा ।
 कुम्भकरण मारा गया, मारा गया जो मेघनाद, और जो मारे गये थे जंग में सब वानरा ।
 राम ने जो युद्ध रावण से किया सब कुछ कहा, और रावण किस तरह मारा गया, उसका बर्बा ।
 रानी मन्दोदरी का गम, अक्रुद सब कहने के बाद, फिर कहा कैसे विभीषण हो गये थे हुक्मरा ।
 वापसी सीता की और मिलना श्री रघुनाथ से, बैठ कर पुष्पक पे कैसे थे अयोध्या को रवा ।
 शादमानी कैसे छाई थी अवध में कह दिया, और अयोध्या के हुए थे रामचन्द्र हुक्मरा ।
 तब गरुड़ जी ने कहा अब शक मेरा जाता रहा, आपसे सुन कर क्या मैं हो गया हूँ कामरा ।
 धूप की तेजी में जैसे झाड़ का साया मिले, मोह मुझको गर न होता आपसे मिलता कहा ।
 राम की किरपा से मेरा आपसे मिलना हुआ, आपके कारण हुआ सन्देह मेरा रायगा ।
 यों भुसुण्ड जी ने कहा ऐ नाथ क्या कहते हैं आप, आप तो जानी हैं, सन्देह आपको होता कहा ।
 यह बड़ाई मुझ को देने के लिए रघुनाथ ने, इस बहाने से है भेजा आप को मेरे यहाँ ।
 नारद और ब्रह्मा व शिव भी बच नहीं इससे सके, मोह ने सबको किया बरबाद हरदम बेगुमा ।
 कौन ऐसा है जो जीवन की न जद में आ गया, और ममता ने नहीं किस का किया बल रायगा ।
 काम से बचता है कौन, और क्रोध से जलता नहीं, दोलत और सरवत के मद से कौन छूटा है यहाँ ।
 डाह ने किसको नहीं बदनाम दुनिया में किया, क्रिअ और गम में रहा बाकी किसी का कब निशा ।
 माल की, औलाद की ओर मरतबे की आरजू, कौन ऐसा है जो इससे बच सका हो बेगुमा ।
 यह है सब माया ही जो है सब तरफ फैली हुई, शिव व ब्रह्मा को भी मिल सकती नहीं जिससे अर्मा ।
 ये जो माया है वह गोया फौजे लातादाद है, काम क्रोध और लोभ इस सेना के समझे अक्रुसरा ।
 और माया एक दासी है श्री रघुनाथ की, जिनकी किरपा के बिना, यह छूट सकती है कहा ।
 एक अदना से इशारे से श्री रघुनाथ के, ऐसी माया नष्ट हो जाती है दिल से नागहा ।
 राम अजन्मे, सच्चिदानन्द और बल के धाम हैं, वो हैं निर्गुण रहते है वो सबके दिल के दमिया ।
 वह फकत भक्तों के कारण जिस्मे इन्साना लिए, काम इन्सानों के जैसे कर दिखाये बेगुमा ।
 जैसे नट करता है नकलें मुखतलिफ़ अक्सामकी, दरअमल वह रंग और वह रूप उसका है कहा ।
 यों ही लीला राम की है, जो है लेकिन बेवकूफ़, राम की लीला पे होता है उन्हें शकगुमा ।
 आँख में जिसको पांडु रोग हो, वह चाँद को कहता है जद, नाव पर बैठा हुआ समझे कि चलता है जहाँ ।
 तपल चक्कर हैं लगाते, घर नहीं हैं घूमता, लेकिन वो कहते है आपस में कि फिरता है मका ।
 यों ही है भगवान की करनी गरुड़ जी तुम सुनो, जो है अज्ञानी उन्हें होता है बस शकगुमा ।
 काम क्रोध और मद के जो जंजाल में हैं फँस गये, वो अँधों में पड़े हैं राम को जाने कहा ।
 राम अपने दास में अभिमान रखते ही नहीं, जिसके बाअस झेलनी पड़ती है उसको सल्लिया ।
 जैसे माँ बच्चे के फोड़े को चिरा देती है खुद, कायदे के वास्ते, गो वह करे आहो फुगा ।
 राम ही हैं मेरे मालिक और मैं हूँ उनका दास, उनकी लीला देख कर रहता हूँ हरदम शादमा ।
 बाल लीला देख कर कुछ मुझको हैरत सी हुई, किस तरह भगवान ऐसे काम करते हैं यहाँ ।
 मुक सीता राम ही हैं जो हैं माया से बचे, और जड़ चेतन हैं सब माया के बस में बेगुमा ।

जीव को गर ज्ञान होता और होता एक रस, ईश्वर और जीव में फिर भेद रहता ही कहाँ । जीव तो हैं मुक्तलिङ्ग, भगवान की है जात एक, याद करने से भी पर, भगवान् मिलता है कहाँ । जैसे सूरज के बिना जलमत नहीं होती है दूर, चाँद तारें लाख चमकें कोह हो शोलाफशाँ । योंही जीवन से नहीं मिटते कलेश इन्सान के, जुड़ भजन भगवान् के मिलती नहीं दिल को अर्मा । राम ने जब मुझको हैरानी में पाया हँस दिये, भेद यह सबसे रहा, मखफ़ी रहा सब से निहान । मेरे पीछे दौड़ते जाते थे वह मानिन्दे तिल, भागता जाता था मैं, उनसे बचा कर अपनी जाँ । आखिरश जब हो गया बेजार मैं, वो हँस दिये, उनके मुँह की राह से पहुँचा शिकम के दमियाँ । कायनाते दहर को देखा मैं उनके पेट में, हो गया मैं महवे हैरत, देख कर सारा सर्मा । दी घड़ी में देख डाला मैंने यह सारा चरित्र, मुझको हैरानी हुई, और हँस दिये वो नागहाँ । ज्यों ही वो हँसने लगे, मैं मुँह से बाहर आ गया, लेकिन मिट सकते न थे दिल के मेरे शक्कोगुमाँ । मेरी रक्षा कीजिए कहते हुए मैं गिर पड़ा, हाथ सर पर रख के मेरे हो गये वो शादमाँ । और कहा मैं तुझ से खुश हूँ मुझसे जो चाहे सो माँग, मोक्ष और वैराग ज्ञान ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ । मैंने सोचा सब तो देने को कहा भगवान ने, अपनी भक्ति का नहीं कुछ मुझसे करते हैं बयाँ । सब हो गुण हासिल मगर भक्ति न हो भगवान की, बेनमक के है वह खाना, उसमें लज्जत ही कहाँ । मैं कहा मुझ पर दयालू आपकी किरपा हो गर, अपनी भक्ति का मुझे बर दीजिएगा बेगुमाँ । फिर कहा भगवान ने ऐ काग तू है होशमन्द, मैं तुझे देता हूँ यह वर होके तुझसे शादमाँ । योग की जो आग में अपना जलाते हैं शरीर, वे भी भक्ति पा सकें उनसे ये मुमकिन है कहाँ । तुझको भक्ति ज्ञान विज्ञान और वैराग और योग, सब बआसानी मिलेंगे कुछ नहीं दुश्चारियाँ । मेरी ही माया से सब संसार है पैदा हुआ, जिस क्रदर हैं जीवजन्तु सब में हूँ मैं मेहरबाँ । क्योंकि यह सब मेरी ही लीला से हैं पैदा हुए, लेकिन इन्सानों में है मेरी दया फोकुल बयाँ । द्विज भी हो और वेदपाठी धर्म का पाबन्द हो, उनमें भी वैराग्य जो ले, इससे मैं हूँ शादमाँ । और वैरागी हो ज्ञानी या कि विज्ञानी ही हो, उससे बढ़ कर दास पर हूँ मैं हमेशा मेहरबाँ । चाहे ब्रह्मा ही हो वह, भक्ति नहीं तो कुछ नहीं, नीच भी हो और वह हो भक्त, वह है मेरी जाँ । वेद में ऐसा लिखा है किसको वह प्यारा नहीं, दास जो होता है सुन्दर और पवित्रो बुद्धिमान । बाप के होते हैं बेटे मुखतलिङ्ग अक्साम के, कोई पंडित कोई दीलतमंद कोई पहलवाँ । कोई पाबन्दे धरम और कोई होता है गरीब, बाप को इन सबसे होती है मुहब्बत बेगुमाँ । लेकिन इनमें बाप की सेवा जो करता है मुदाम, उससे रहता बाप है हरदम निहायत शादमाँ । इस तरह ये जीवजन्तु और सारी कायनात, मेरी ही लीला से ये सब हैं हुए जलवाकुनाँ । और मेरी भी दया की सब पे रहती है नजर, लेकिन इनमें जो मुझे भजता है बादिल-बजाँ । बवाह वह औरत ही हो, नामदं हो या मर्द हो, जो मुझे भजता है मैं हरदम हूँ उससे शादमाँ । जब कहा यह राम ने मुझको बड़ा सुख मिल गया, किस क्रदर मैं शाद था, वह कर नहीं सकता बयाँ । वो तो सुख बस कान ही दिल ही मेरा हैं जानते, उसको कह सकने के काबिल है नहीं मेरी जबाँ । उनकी शोभा का जो सुख है आँख ही है जानती, कूवते गोयाई लेकिन आँख को हासिल कहाँ । इतना मुझको कह सुनाया, और फिर रघुनाथ जी, बाल लीला अपनी करने लग गये जा कर बहाँ । इस तरह से ऐ गरुड़ जी मैंने अपना हाल अब, कर दिया तफ़सील से है आपसे सारा बयाँ । प्रमता जाने बिना बिश्वास जग सकता नहीं, और बज्जु बिश्वास के प्रीत भी मिलती है कहाँ ।

जैसे चिकनाई कभी पानी की रह सकती नहीं, योंही प्रीति के बिना भक्ति का मिलना है अर्थात् । ज्ञान मिलता है गुरु से या कि वह बैराग्य से, और भक्ति से भी रहता भक्त भी है शारदा । शान्ति होती है हामिल सबो इस्तकलाल से, जल अगर होगा नहीं फिर नाव चल सकती कहाँ । स्वाहिशाते नपस से आराम मिल सकता नहीं, सब ही से स्वाहिशाते नपस होंगे रायगाँ । तेज को सप चाहिए, जल चाहिए रस के लिए, और न हो विद्वास तो सिद्धी भी मिली है कहाँ । स्वाह वह भक्त हो या वह हो गरुड़ जैसा परिन्द, यह नहीं मुमकिन कि उड़ कर जा सके ता आसमाँ । राम की महिमा का भी योंही ठिकाना कुछ नहीं, जिनका बल परकास तेज और शक्ति हो क्यों कर बयाँ । हम जो माँगें उनसे, वह देते हैं हमको बेहिचक, जिनकी ऊँचाई व नीचाई है नाकाबिल बयाँ । किस क्रदर दाना हैं वह हम कह नहीं सकते हैं कुछ, किस क्रदर उनका खजाना है, यह हैं बिलकुल निहाँ । कोई उनसा है नहीं है जात उनकी बेमिसाल, सोच कर यह दिल में उनकी याद कीजे हर जमाँ । बे गुरु की रहनुमाई के कोई इन्सान भी, पार भवसागर करे मुमकिन ये उससे है कहाँ । फिर गरुड़ जी ने यह पूछा आप कौवे क्यों बने, और मानस आपने पाया कहाँ कीजे बयाँ और मैं यह भी सुना हूँ आप मरते ही नहीं, क्या यह मुमकिन है कभी मुझको तो है शक्कोगुमाँ । आश्रम में आपके आते ही मेरा मोह सब, मिट गया है, हो गया हूँ मैं निहायत शारदा । क्या सबब है इसका मुझसे आप सब फरमाइये, मुझको सुनने की है स्वाहिश मुझसे कीजेगा बयाँ । बोले वह भक्ति न हो गर राम की वेसूद है, स्वाह वह ब्रह्मासा ही हो या कि हो वह हीचदाँ । मैंने भक्ति राम की पायी इसी एक जिस्म से, इसलिए मुझको बहुत भाता है यह तन बेगुमाँ । मेरा मरना इस्तियारी है मगर इस जिस्म को, मैं नहीं छोड़ूंगा, कि वेदों में हुआ है यह बयाँ । जिस्म का होना है लाजिम भक्त बनने के लिए, जिस्म ही होता नहीं गर, फिर भजन होता कहाँ । मुखतलिफ्र योनी में मैंने है लिया अपना जनम, मुखतलिफ्र मैंने किया है कर्म भी हर हर जमाँ । लुत्क मुझको कुछ न आया, पिछले जीवन में कभी, लेकिन मैं अब इस जनम में हूँ निहायत शारदा । एक दफ़ा कलजुग में मैंने भी जनम अपना लिया, और अवध में शूद्र बन कर, मैं रहा था उस जमाँ । मोह के बस लोग थे शुभकर्म होते ही न थे, इसलिए कलजुग का भी कुछ तुमसे करता हूँ बयाँ । धर्म रहता ही नहीं, रहते नहीं चार आश्रम, वेद बेचे ब्राह्मण, राजा करेंगे सलितयाँ । है नहीं कानून कोई जिसको जो चाहे करे, हैं वही पंडित व ज्ञानी जो करेगा शोस्त्रियाँ । बीग जो करता है कहलाता है साधू सन्त वह, झूठ जो कहता है अक्सर उसको कहते ज्ञानवाँ । दूसरे का धन व दौलत जो हजम कर ले कोई, उसको कहते हैं अक्रमन्द और उसको बुद्धिमाँ । है वही मशहूर कलयुग में तपस्वी और मुनी, जो दिखावे के लिए रखेगा लम्बी चोटियाँ । है वही योगी उसी को पूजते हैं लोग सब, जेवरो मलबूस पहने, खाये हर शं बेगुमाँ । दूसरों के जो मुमिद हों उनको कहते हैं बुरा, और जो झूठे हों उनको मानता है सब जहाँ । मर्द औरत के हों बस में, जिनको कहते जनमुरीद, नाचते वैया ही है, जैसे हैं कहती बीवियाँ । शूद्र जो होते हैं बह तो पहनते जुन्नार हैं, ज्ञान की बातें ब्राह्मण से करते हैं बयाँ । काम, क्रोध और लोभ होता आदमी में है बहुत, ब्राह्मण और देवता को मानते हैं वह कहाँ । गैर मदों से मिलाती अपना दिल हैं औरतें, अपने शीरह से रहा करती हैं हरदम बदगुमाँ । जो सुहागन हो उसे, नये जेवरो मलबूज है, और बेवा रहती है सिंगार ही से हर जमाँ । फ़क्रं कुछ होता नहीं शागिर्द और उस्ताद में, और गुरु भी लालची होते हैं जर के बेगुमाँ ।

अपने बच्चों को सिखाते काम हैं वह वालदेन, पेट बस भर जाय जिससे, है उसी से शादमा।
 कत्ल कर डाले ब्राह्मण और गुह उस्ताद को, इसके बदले में अगर मिल जाये उनको कौड़िया।
 शूद्र अपने को ब्राह्मण से हैं बढ़ कर मानते, और कहते हैं कि तुम में फ्रीक्रियत हमसे कहा।
 जो ब्रह्मा को समझ ले है वही एक ब्राह्मण, इस तरह कहते हुए करते हैं उससे शोखिया।
 गौर की औरत पे रखता है नजर जो बद कोई, और जो कपटी हो, कहता है उसे अच्छा जहाँ।
 खुद बुरे होते हैं करते दूसरों को हैं तबाह, नीच जाती सर मुंडा कर बनते हैं सन्यासिया।
 और खुद को ब्राह्मण से आप पुजवाते हैं वो, ब्राह्मण नीच औरतों से दिल लगा कर शादमा।
 शूद्र जप और तप हैं करते और कहते है पुराण, और हरामी नस्ल भी होती है पैदा बेगुमा।
 जो हैं सन्यासी सजाते अपने घर को हैं बहुत, ख्वाहिशाते नपस से बैराग्य उनका रायगा।
 और दुनियादार सारे हो गये धन से दरिद्र, रुपया पैसा जमा होता तपस्वी के यहाँ।
 नेक जो औरत को घर से लोभ देते हैं निकाल, दासियों को ला के रख लेते हैं वो अपने यहाँ।
 वालदेन होते हैं प्यारे पुत्र को उस वक्त तक, उसकी जब तक हो न शादी फिर बदलता है समा।
 मिलता है समुराल जब कुनबे से छूट जाते हैं फिर, और रियाया पर किया करते हैं सस्ती हुक्मरा।
 नीच ही हो और दौलतमन्द हो, वह है कुलीन, सिर्फ है जुझार बाकी एक ब्राह्मण का निशा।
 जो मुखालिफ रहते हैं वेदों के और पुराण के, उनको कहते है हरी के भक्त हर कस दर जहाँ।
 ऐब जो होते हैं अक्सर, नुक्तादा होता नहीं, शायरों के कुंद होते हैं, नहीं है कदरदा।
 काल पड़ते हैं बहुत हो जाती है अन की कमी, भूख की शिद्दत से मरने लगते हैं अहले जहाँ।
 बाल ही जेवर रहे बाकी हैं औरत के लिए, और गरीबी के सबब रहती दुःखी हैं हर जमा।
 चाहती आराम हैं चलती नहीं वह धर्म पर, आचरण अच्छे नहीं, बुद्धि भी अच्छी है कहा।
 मान, मोह, पाखण्ड और मद, काम फैलेगा बहुत, है यही आसार कलयुग के जमाने पर अया।
 दान जप तप जो करेंगे बादिले नाखास्ता, वक्त पर बारिश भी हो जाये ये मुमकिन है कहा।
 और पैदावार भी गल्ले की होती कुछ नहीं, फैलती जाती है हरसू मुस्तलिफ बीमारिया।
 ज़िन्दगी के दिन हैं थोड़े लेकिन फिर भी है घमंड, बहन बेटी की नहीं रहती है कोई इच्छोशा।
 रहम करना, दान देना और समझदारी नहीं, धर्म के जो आचरण हैं होते हैं सब रायगा।
 जाहिलियत और दगाबाजी जमाने में बढ़े, चाहते हैं लोग सब अपनी ही सब आसानिया।
 गो यह सब कठिनाइया हैं, एक गुण कलयुग में है, छूटना बन्धन से भव सागर के है आसा यहाँ।
 सतजुगो, त्रेता और द्वापर में तो फल मिलता है जब, जप व तप और भोग पूजा की सहें कठिनाइया।
 और कलयुग में फकत एक नाम से भगवान का, फल वही मिलता है और हो जाता है दिल शादमा।
 योग जप तप का कहीं भी नाम कलयुग में नहीं, नाम ही भगवान का लेना है बस आरामें जा।
 मानसिक पुण्य तो हैं होते, पाप होते ही नहीं, है यही परताप कलयुग का यही है एक निशा।
 गौर से देखो अगर कलयुग सा कोई जुग नहीं, नाम ही लेने से हो जाता है इन्सा कामरा।
 धर्म के चार आचरण सत्य तप दया और दान है, दान ही देने से कलयुग में हो इन्सा कामरा।
 ज्ञान ममता और सतो गुण है ये सतयुग के कमाल, कुछ रजोगुण और प्रीति ये हैं त्रेता के निशा।
 कुछ तपो गुण और झगड़ा खीफ द्वापर में भी हो, और कलयुग में तमो गुण हो ज्यादा ही अया।
 बाद इसके अपने पिछले जन्म की सारी कथा, काम भुसण्ड जी ने जी ठकसील से उनसे बया।
 किस तरह अपने गुरू का वह निरादर थे किये, शिव ने बदले में दिया क्यों शाप इनको बेगुमा।

जो कि गुस्ताखी किया करते गरू उस्ताद से, क्या गति होती है उनकी वह भी सब कर दी बर्बा। शिव की फिर अराधना से किस तरह वह खुश हुए, दूसरा वर देके कैसे कर दिये फिर शादमा। बाब इसके फिर जनम कैसे हुआ यह भी कहा, जीने मरने की न थी तक्रलीफ़, थीं आसानियाँ। इस जनम में ब्राह्मण हो कर के पाया कैसे इल्म, जब कि निर्गुण मत से हट कर, था सगुण में इनका ध्या। यह गये लोमस ऋषि के पास जो पर्वत पे थे, और कहा मुझ से सगुण का हाल कुछ कीजै बर्बा। गो मुनी ने सनको समझाया निहायत शौक से, और निर्गुण मत की समझाये बहुत-सी खूबियाँ। उनको यह भाया नहीं और अपनी ही हठ पर रहे, मानते हरगिज न थे उनका कहा यह बेगुमा। आ गया गुस्सा मुनी को शाप इनको दे दिया, जिस वजह से बन गये कौवा ये फ़ौरन नागहाँ। और लोमस ने दिया क्यों बाद इनको राममंत्र, जिसके बाअस हो गये यह किस तरह से कामरा। राम का मानस सुनाना, किस तरह खुद को मिला, शिव ने जो उनको किया था वह किया सारा बर्बा। इस क्रदर सुन कर गरू जी उनसे यों कहने लग, मोह मेरा मिट गया अब हो गया मैं शादमा। ज्ञान और भक्ति में क्या कुछ फ़र्क है बतलाइए, इसके सुनने की मुझे स्वाद्विश है बादिल और बर्बा। यों जबाब उनको मिला कुछ फ़र्क इनमें है नहीं, है नतीजा एक इन दोनों का सुन लीजै बर्बा। ज्ञान वैराग्य योग और विज्ञान यह आशिक-से हैं, और माया ही है एक मायूक उनकी बेगुमा। इश्क के जंजाल में फँसते हैं ज्ञानी भी कभी, यह वही माया है जो जन बन के होती हैं अर्था। जो कि साबिर और वैरागी है वह फँसता नहीं, और रखता राम ही का ध्यान है वह हर जर्था। हुस्न पर औरत के औरत है नहीं कुछ रीझती, यों ही भक्ति से कभी माया मिले मुमकिन कहा। मन के दीपक को जला कर दिल को जो रोशन करे, मोह से छुटता है वह, होता वही है राजदा। इन्द्रियों को ज्ञान की रगबत हुआ करती है कम, और बुद्धि बावली है कुछ नहीं शक्को गुमा। ज्ञान का जो मार्ग है मानिन्द एक तलवार है, इसमें जो गिरता है बच कैसे सकेगी उसकी जा। मैं हूँ सेवक और हैं भगवान ही मालिक मेरे, जो यह समझो, पार उसका होगा बेड़ा बेगुमा। जैसे पानी के लिए थल चाहिए जाहिर है ये, मोक्ष के भी वास्ते भक्ति का होना है अर्था। जो कि चेतन को करे जड़ और जड़ चेतन करे, उसको जो भजते हैं, धन्य कहता है उनको सब जर्था। भक्ति तो है एक ज्योती, दिल में चमकती है मुदाम, उसको घी बत्ती व दिये की जरूरत ही कहा। मोह का इफ़लास उसके पास आता ही नहीं, लोभ से भी यह चमक होती नहीं है रायगा। जाहिलीमत दूर हो जाती है जब हो यह चमक, काम क्रोध और लोभ यह होते हैं सब दिल से रवा। जिसके दिल में यह मणी हो स्वाब में भी दुख नहीं, चाहिए इन्सान को रखे बना कर हुजै जा। जहर अमृत का करेगा काम, दुश्मन दोस्त हों, कोई सहनी ही नहीं पड़ती उसे बीमारियाँ। कोई पाने का तजस्सुस इसके करता ही नहीं, वर्ना पा सकते हैं उसको, है ज़माने में अर्था। वेद और पुराण परबत, और कथाएँ काल हैं, जो कोई खोजेगा पालेगा मणी को बेगुमा। संत की संगत से हो जाता है भक्ति का द्रुसूल, जो कि मद और मोह को करती है दिल से रायगा। डाल है वैराग्य भक्ति के लिए तलवार ज्ञान, मोह और मद इसके दुश्मन, जिनको करदे बेनिशा। फिर मुखातिब होके उनसे यों गरू जी ने कहा, आपसे यह इत्तेजा मेरी है और अर्जै बर्बा। सबसे दुर्लभ कौन-सा होता है कहिएगा शरीर, दुःख व सुख है कौन-से सबसे बड़े कीजै बर्बा। संत हम किस को कहेंगे और कहें किसको असंत, पाप और पुण्य कौन-से सब में हैं अर्फ़ा मेहरबा। और मानस रोग भी हैं कौन-से फ़र्माइए, यह जबाब उनको मिला सुनिए मैं करता हूँ बर्बा।

सब शरीरों में है अच्छा, यह शरीर इन्सान का, चर अचर ताबे हैं जिसके, मोक्ष की है सीढ़ियाँ ।
जिस्मे इन्सानी को पा कर जो नहीं करता भजन, फेंक कर पारस को जैसे काँच से हो शादमाँ ।
दुख कोई होता नहीं बढ़ कर कोई इफ़लास से, साधवारी संत की आलातरी है सुख यहाँ ।
काम संतों का है औरों की करें इमदाद वह, और खुद सहते रहें तकलीफ़ सारी सख्तियाँ ।
दूसरों को दुख जो पहुँचाए वही होगा असंत, दूसरों की जो भलाई से न होगा शादमाँ ।
दूसरों की चीज़ को बरबाद कर देगा जरूर, स्वाह उसके वास्त उनकी निकल भी जाय जाँ ।
जैसे ओला खेत उजाड़े और खुद बरबाद हो, और चुगलखोरी व बदगोई बस उनकी बरज़बाँ ।
कत्ल भी जायज़ है लेकिन है चुगलखोरी बुरी, वेद में ऐसा लिखा है और है इसका बर्था ।
और मानस रोग भी है कौन-से सुन लीजिए, लोग जिससे झेलते तकलीफ़ हैं और सख्तियाँ ।
मोह जड़ है और पैदा उससे हैं लाखों कई, काम वात है, लोभ कफ़, और क्रोध है पित्त बेगुमाँ ।
गर ये तीनों हों इकट्ठा क्यों न हो सन्निपात फिर, और विषयों के मनोरथ दिल के हैं दर्द निहाँ ।
दाद ममता, दाह खारिश और हिरस हैं कण्ठमाल, दूसरों पर रसक करना क्षय की हैं बीमारियाँ ।
कोढ़ के बीमार हैं जो दिल के होते हैं बुरे, पान, मद, दम्भ और कपट हैं मुखतलिफ़ बीमारियाँ ।
एक ही जब रोग से इन्सान जी सकता नहीं, किस तरह वह सह सकेगा इन सबों की सख्तियाँ ।
नेम तप और धर्म और आचार हैं इनके इलाज, लेकिन इनसे फ़ायदा हासिल करे मुमकिन कहाँ ।
इस तरह हर एक इन्साँ रोग में है मुबतिला, मानते इसको नहीं सच, जानता है राजदाँ ।
मुबतिला जब इसमें हो जाते ऋषी भी और मुनी, फिर तो साधारण मनुज की इसमें गिनती ही कहाँ ।
जो कहा माने गुरु का, स्वाहिशों को छोड़ दे, हैं यही परहेज उसके वास्ते राहत रवाँ ।
राम की भक्ति को समझें आप है संजीवनी, रोग ये सब दूर हो जाते हैं इससे बेगुमाँ ।
कूवते वैराग्य हो और दुनिया को स्वाहिश न हो, तब तो समझो चल बसी हैं जिस्म से बीमारियाँ ।
जो कि नामुमकिन से नामुमकिन हो वह हो कर रहे, राम से हो कर मुखालिफ़ दिल न होगा शादमाँ ।
एक पल में जो बना सकता है मच्छर ब्रह्म को, और मच्छर को बना सकता है ब्रह्म नागहाँ ।
छोड़ कर सब कारे दुनिया राम को भजते रहो, और भजन करते रहो दिन रात बादिल और बर्जाँ ।
फिर भुसुण्ड बोले कि मैं नाचीज़ हूँ क्या-क्या कहूँ, मुझको जो मालूम था सब कर दिया तुम से बर्था ।
आप खुद जानी हो सब कुछ जानते हो ऐ गुरु, राम ने मुझको बड़ाई देने भेजा है यहाँ ।
यों गुरु कहने लगे ममनून हूँ मैं आपका, आप से सुन कर कथा मैं हो गया हूँ शादमाँ ।
आप पूरण काम है और आप-सा कोई नहीं, गैर के हित के लिए हैं मुस्तइद जो हर जगँ ।
सर झुका कर उसके आगे और कदम को पूज कर, हो गये उस जाय से वैकुण्ठ को वापस रवाँ ।
शिव यह कहते हैं कथा को जो कोई दिल से सुने, छूटता बन्धन से है वह और होगा कामराँ ।
राम के चरणों में जिसका ध्यान हो सर्वज्ञ है, है वही पंडित भी ज्ञानी भी गुणी भी बेगुमाँ ।
जिस घराने में कि पैदा हो कोई एक राम भक्त, क्राबिले तारीफ़ हो जाता है उसका खानदाँ ।
ये कथा अब तक छिपी थी और यह जाहिर न थी, मैं तुम्हारे ही तो खातिर कर दिया इसको बर्था ।
जो अधर्मी हों कि लोभी हों उन्हें कहना न ये, राम को भजते न हों सुनने का हक़ रखते कहाँ ।
जिसकी प्रीति उनके चरणों में हो वह इसको सुने, मोक्ष की पदवी मिलेगी होगा दिल से शादमाँ ।
दूर मल होता है मन का, पाप सब होते हैं नाश, राम की जो यह कथा सुनते हैं बादिल और बर्जाँ ।
जो कोई गाते हैं इसको छोड़ कर मन से कपट, कामना होती है पूरी और होंगे कामराँ ।

राम के जो हैं उपासक उनको होगी यह अजीब, कौन ऐसा होगा जो मुन कर न होगा शादमी।
जो कोई इसमें से थोड़ा भी अगर पढ़ ले कभी, नाम को भी पाप उसके रह सके बाकी कहाँ।
इस क्रंदर कह कर किया शिव जी ने क्रिस्ता खत्म ये, और गौरी जी भी बेहद हो गयीं खुश शादमी।
इस क्रंदर लिख कर किया वहमी ने रामायण को खत्म, क्रंद इसकी बी करेंगे जो कि होंगे क्रंदरवाँ।
क्रीम है कायस्थ माधुर और अलसंडोइया, हैदराबादी कहा जाता है मेरा खानदाँ।
था बतन हिंडीन अपना, जो है राजस्थान में, एक सदी से कुछ ज्यादा हो गया आ कर यहाँ।
यादगार अपनी यही छोड़ा है अहंकर वैसराय, अक्रो कर दें लोग इसमें हों अगर कुछ शक्तिवाँ।
राम ही के मत का पैरो, राम ही का भक्त हूँ, राम ही का नाम रहता है मेरे धिरदे जबी।
कीजिए मुझ पर दया मालिक मेरे रघुनाथ जी, दीन हूँ मैं और दुखी हूँ और हूँ मैं नातवाँ।
राम पर रख कर भरोसा, बाद तुलसीदास पर, लिखी है मैंने ये रामायण मिला कर दो जबी।



आरती

जी रघुनाथ दया के स्वामी, निर्गुण हो तुम अन्तर यामी।
दीनानाथ दया के सागर, सृष्टी के तुम ही हो उजागर।
राम अजन्मा पूरण कामा, दसरथ नन्दन बल के धामा।
आप धनुषधारी की, दाता, सिया पति कीसल्या माता।
आनन्द के और सुख के सागर, निर्गुण और सगुण परमेश्वर।
दुःखःहर्ता हो दीन दयालू, तुम रक्षक तुम ही कृपालू।
सुख सम्पत्त के देने वाले, पापों को हर लेने वाले।
आपकी लीला कोई क्या जाने, संतहि कुछ उसको पहचाने।
सियावर राम छमा कीजंगा, दास पे अपने दया कीजंगा।
तुम ही से कल्याण हमारा, तुम ही में है ध्यान हमारा।
कष्ट कलेश मिटा सब दीर्ज, ममता, मोह भगा सब दीर्ज।
पूजा रोज करे जो तुम्हारी, कष्ट हैं मिटते उसके भारी।
मन कर्म बचन से दास तुम्हारा, इस पापी का तुम ही सहारा।
चार पदारथ मैं नहीं चाहूँ, आपकी एक भक्ति बस पाऊँ।
मन में मेरे बस जाओ दाता, तुम और जनक दुलारी माता।
आरती आपकी हम करते हैं, चरणन में मस्तक धरते हैं।
जो कोई मंगल आरती गाये, जन्म—जन्म में वह सुख पाये।

गुण 'वहमी' के उजागर कर दो।

पार उसको भवसागर कर दो।

